॥ अथ ॥

॥ श्रीकर्मविपाक अथवा जंबू पृछानो रास आरंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ सकल पदारथ सर्वदा, प्रणमुं श्यामल पास ॥ नमियें तेहने ऊठि नित्य, परमानंद प्रकाश ॥ १ ॥ गोयम गणहर पय नमी, कर्मविपाक विधि जोय ॥ फल चाखुं कृत कर्मनां, सांजलजो सहु कोय ॥ २ ॥ सोहमस्वामी समोसस्या, चंपानगरीमांहे, जंबू प्रज्ञु प्रणमी करी, पूछे प्रश्न उत्साहें ॥ ३ ॥ कहो जगवन् धनवंत सुखी, शे कर्मे जीव थाय ॥ दारिद्री निर्धन डुःखी, कुण कर्मे कहेवाय ॥ ४ ॥ वलतुं बोले केवली, सुण जंबू सुविचार ॥ जला प्रश्न तें पूछिया, नेक जीव हितकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पेहेली ॥ देशी चोपाइनी ॥

॥ साधु जणि दीये बहुमान, पहेले जव जेणें दीधुं दान ॥ ऋद्धि वृद्धि पामे ते घणी, आशा पूरे सवि मन तणी ॥ १ ॥ दान न दीधुं जेणें नरें, ते पर

घर मागता फिरे ॥ मागंता पण न दीये कोय, अव
च तणां फल एहवां होय ॥ २ ॥ किण कर्मे अति खी
णु अग, किण कर्मे पुष्टसा प्रसंग ॥ गोली सरिखु मो
टुं पेट, दु ख देखतां चाखे नेट ॥ ३ ॥ छिद्र पारकां
जोतो फरे, विघन पारका हियडे धरे ॥ निंदा करतां
न धरे शंक, परजवमां ते थाये रंक ॥ ४ ॥ राजाना
फाव्या जंडार, रस तेहनां चोर्यां सार ॥ धूलदेह ते
करणी तणुं, नीर्से मांस मधे अति घणु ॥ ५ ॥ एक
दीकरी आवी रहे, पुत्र तणु नामज नवि लहे ॥ को
णे कर्मे सीधां वली, चलवु बोले एम केवली ॥ ६ ॥
विप्रजाति तव खेती करी, गाय एक ते जाये चरी॥
क्रोधें ब्राह्मण मारी गाय,तिण पापें एक पुत्री थाय॥
॥ ७ ॥ एक पुरुष जे नारी वरे, ते सघली जाये ज
मपुरें ॥ कोण कर्म पहोते तेहने, होवे न नारी एक
जेहने ॥ ८ ॥ पर[illegible]ति घणी, विण अ
पराध तेणें अवगणी ॥ शस्त्रघात विषघातें करी,
री पाप बुद्धि मन भरी ॥ ९ ॥ जेह जीवनें ऊप
जरम, तेहज पोतें कहो कोण कर्म ॥ उत्तम जाति
अनें गर्वियो, जांग अफीण सुरापान कियो ॥ १० ॥
ज्वर अति दाह ऊपजे,तेहने कर्म कहो कोण

जजे ॥ पोठी गाडां वाहे ऊंट, जरे जार अधिकी तस पूंठ ॥ ११ ॥ उनाले अग्नि ज्वले अति घणी, धन लो नें थाये ते जणी ॥ तापें पीड्यां आर्त्ति करे, तृषा करी पशु डुःखियां मरे ॥ एह पाप जाणो तस शिरें ॥ १२ ॥ चार पांच ठ मासें ऊरे, अधिको नारी गर्ज नहिं धरे ॥ कोण कर्म पोहोते तेहने, ते संबंध कहो हित वणे ॥ १३ ॥ आहेडी वनमांहे शोर, करे पापीया पाप अघोर ॥ पाडे हरिणने बहुला त्रास, गर्जपात तिणे गर्जनो नाश ॥ १४ ॥ विधवा बालपणे जे थाय, तेहने पाप कोण कहेवाय ॥ निज जरतारनें नारी हाथ, रमे रंगें बीजानी साथ ॥ १५ ॥ पुत्र जनम गामीने मरे, संतति एक नहिं तसु घरे ॥ कोण कर्म पूरव जव कस्यां, तेणे संतान विना अवतस्यां ॥१६॥ पहेली ढाल ए पूरी करी, कर्म विपाकथकी ऊद्धरी॥एहवां कर्म टाले नर नार, वीर सुखी थाये संसार॥ १७ ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ मृग वराह शंबर शशा, महिष ठाग बक मोर॥
तर पोपट चरकलां, हंस कपोत चकोर ॥ १ ॥
रे एहवा जीवने, हाथ सरासर नाडी ॥ मीनादि
क जलचर हणे, जाले पाशमां पाडी ॥ २ ॥ प

शु पखीमाणस तणां, जेह विणासे चाल, नाश करे जू लीखनो, ते वाळीया संजाल ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वाट जोवता आव्यांजी ॥ सुंदर साहेली ॥ मोरलीयें टहुकायाजी ॥ सुंदर गोरडली ॥ ए देशी ॥

॥ पुत्र पांच प्रकारना कहियेंजी ॥ शिष्य तुमें सांभलो ॥ जेहवां कीधां तेहवा फल लहियेंजी ॥ शिष्य० ॥ पहेलो थापणमोसो जाणोजी ॥ शिष्य० ॥ बीजो रणियो पुत्र वखाणोजी ॥ शिष्य०॥ १ ॥ त्रीजो वेरी पुत्र भणीजेंजी ॥शिष्य०॥ चोथो उदासीन गणीजेंजी ॥ शिष्य० ॥ पुत्र पांचमो ते सुखकारीजी ॥ शिष्य० ॥ ते जाणो तुमो निरधारीजी ॥ शिष्य० ॥ २ ॥ थापणमूकी जाये कोइजी ॥ शिष्य० ॥ लंपटीनें राखे सोइ जी ॥शिष्य०॥ धणी आवीने जब मागेजी ॥ शिष्य० ॥ कहे ताहारु कांहि न लागेजी ॥ शिष्य० ॥ ३ ॥ में हाथो हाथें दीधीजी ॥ शिष्य० ॥ तुमें घरमें मूकी लीधीजी ॥ शिष्य० ॥ तु वात भूल्यो ते भाईजी ॥शिष्य० ॥ ताहरे महारे कोण सगाइजी ॥ शिष्य०॥ ४ ॥ क्रोधें ते अतिधडधडताजी ॥ शिष्य० ॥ दरबारें जाय ते वढताजी ॥शिष्य०॥ साखी विण कहे रायजी

॥ शिष्य० ॥ अमथी कांइ न कहेवायजी ॥ शिष्य०
॥ ५ ॥ प्राणांत लगें दुःख व्यापेजी ॥ शिष्य० ॥
तोही लोची पाबुं नापेजी ॥ शिष्य० ॥ ते मरण
पामे तसु दुःखेंजी ॥ शिष्य० ॥ आवी उपजे ते कु
खेंजी ॥ शिष्य० ॥ ६ ॥ पहेली अघरणी कीजें जी
॥शिष्य० ॥ द्रव्य बहुलुं तिहां खरचीजेंजी॥शिष्य०॥
घर पुत्र थई जब आवेजी ॥ शि० ॥ तव आशा पूरी
कहावेजी ॥ शि० ॥ ७ ॥ वधामणि दीधी जेणेंजी ॥
शि० ॥ लखमी पामी बहु तेणेंजी ॥ शि० ॥ जन्मो
तरी जोपीयें कीधीजी ॥शि०॥ बगशीस घणी तस दी
धीजी ॥शि०॥८॥ रूपवंत घणुं गुणवंतोजी ॥ शि० ॥
सघले लक्षणें संजुत्तोजी ॥ शि० ॥ नाट नोजक नां
रू नवाया जी ॥ शि० ॥ गीत गाये नाचे सवाया
जी ॥ शि० ॥९॥ दान देइ घणुं संतोषे जी ॥ शि० ॥
निजनाति कुटुंब सहु पोषे जी ॥ शि० ॥ पान फोफ
ल नारीयर दीधां जी ॥ शि० ॥ पहेरामणी करी रा
जी कीधां जी ॥ १० ॥ शि० ॥ कुलवर्द्धन नामज
दीधुं जी ॥ शि० ॥ जाणे कारज माहरुं सीधुं जी ॥
शि० ॥ माथे नवरंगी टोपी जी ॥ शि० ॥ जरफाग
फिरंगी ओपी जी ॥ शि०॥११॥आंगलां दरीयाइ दीसे

जी ॥ शि० ॥ माय बाप तणां मन हींसे जी ॥ शि० ॥ हाथ पगें सोनानी कमली जी ॥ शि० ॥ श्रणिश्रा ली श्रांखडली जी ॥ शि० ॥ १२ ॥ कानें मो तीनी लालडी सोहे जी ॥ शि० ॥ केडें कंदोरो मन मोहे जी ॥ शि० ॥ पगें राती पगरखी घाले जी ॥ शि० ॥ ठमकतो श्रागण चाले जी ॥ शि० ॥ १३ ॥ जेमरूप नंदननु निरखेजी ॥ शि० ॥ तेम हियडामां घणु हरखे जी ॥ शि० ॥ मुऊ भाग्यदशा सपराणी जी ॥ शि० पुत्र बोले मधुरी वाणी जी ॥ शि० ॥ १४ ॥ पांच वरस लगें लाले पाले जी ॥ शि० ॥ पठी भणवा मेल्यो निशालें जी ॥ शि०॥ श्रापे निशालीया ने खडीया जी ॥ शि० ॥ रूपा सोनाना ते घडीया जी ॥ शि० ॥ १५ ॥ वतरणां विणा जवफूली जी ॥ शि० ॥ श्रापे सुखडली बहु मूली जी ॥ शि० ॥ खी रोवक शणियां चकमा जी ॥ शि० ॥ पांमरी पीतांब र थकमां जी ॥ शि० ॥ १६ ॥ पंकितनें बहु धन श्रा पे जी ॥ शि० ॥ जाणे कीर्त्ति माहारी व्यापे जी ॥ ॥ शि० ॥ भणी गणिने थयो ते पोढो जी ॥ शि०॥ सहु कहे पिताथी दोढो जी ॥ शि० ॥ १७ ॥ माता पण वचन न लोपे जी ॥ शि० ॥ कुवचन कहे तो

ही न कोपे जी ॥ शि० ॥ एम प्रीति देखाडी पूरीजी ॥ शि० ॥ जो थापण होवे अधूरी जी ॥ शि० ॥ १८ ॥ रोग उपजे तेहने अंगें जी ॥ शि० ॥ वात पित्त प्रबल कफ संगें जी ॥ शि० ॥ तव वैद्य तेडे तसु काजें जी ॥ शि० ॥ धन नहिं तो काढो व्याजें जी ॥ शि०॥ १९ ॥ जुआ धूणे ने कहे जूतो जी ॥ शि० ॥ ऊजणी नाखी अवधूतो जी ॥ शि० ॥ दोरा मंत्री बहुला बांधे जी ॥ शि० ॥ आयु त्रूटुं कोइ न सांधे जी ॥ शि० ॥ २० ॥ आपे वली गोली काथ जी ॥ शि० ॥ करे कारज सघलां साथ जी ॥ शि० ॥ निज थापण सघली लेइ जी ॥ शि० ॥ सुत पोहोंचे परजव तेइ जी ॥ जी० ॥ २१ ॥ नंदन तुं प्राण आधार जी ॥ शि० ॥ कांइ मेली गयो निरधार जी ॥ शि० ॥ एम करे अनेक विलाप जी ॥शि०॥ उदय आव्यां जे कीधां पाप जी ॥शि० ॥ २२ ॥ ढाल बीजी पूरी कीधी जी ॥ शि० ॥ राग सोरठमांहे सीधी जी ॥ शि० ॥ एहची करणी जे टाले जी ॥शि०॥ वीर पापपंक पखाले जी ॥ शि० ॥ २३ ॥ ४८

॥ दोहा ॥

॥ ऋण संबंधें ऊपजे, पुत्र कुपुत्र कुमित्र ॥ पशु त्रेहिन जाइ वहू, मात पिता कुकलत्र ॥१॥ साथैं रण

कोइ मत करो, रण जूनु नवि थाय ॥ परजव जीव
आये तिहा, रण जाणो फुःखदाय ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ देशी कुवखडानी ॥

॥ रखे कोइ रण करो ॥ ए आंकणी ॥ सुणजो हवे
आदर करी रे, रणिया सुतनी वात ॥ रखे कोई रण
करो ॥ जे दिनथी ते ऊपजे, ते दिनथी तिरजात ॥रखे०
॥१॥ कोइ गुण माने नहि, बोले निठुरी वाण ॥ रखे०॥
मीतुंमीतु सवि जखे रे, कोइ न माने आण ॥ रखे० ॥
॥ २ ॥ वस्तु जली जे घरे होवे रे, ते चोरी करी लेय ॥
रखे०॥जो वारे माता पिता रे, तो गाली तसु देय ॥रखे०
॥ ३ ॥ राठ पीठ जे घर तणां रे, वेची खाये सोइ ॥
रखे० ॥ जांजे हांमलां कुमखा रे, जो तेहने कहे कोइ
॥ रखे० ॥ ४ ॥ ए बालक कोइ नवि लहे रे, करशे
घर तणा काम ॥ रखे० ॥ मा बाप तेहनां इम कहे,
मोहोटो थाशे जाम ॥ रखे० ॥ ५ ॥ शोल वरसनो
जब थयो रे, परणाव्यो मन रंग ॥ रखे० ॥ विवाहें ध
न खरची घणु रे, बहू अर आणी चग ॥ रखे० ॥६॥
मास एक परण्या थयो रे,मांमी तब वढवाढ ॥रखे०॥
सासु ससरो एम कहे रे, आवी नही कुहाड ॥रखे०॥
॥ ७ ॥ जंजेरयो जरतारने रे, सासु मूकी रांम ॥रखे०॥

खांउं पीसुं जल वहुं रे, मुजने ज्ञांके ज्ञांक ॥रखे० ॥ ॥ ७ ॥ नारायण वश नारीने रे, माणसनुं शुं ज्ञान ॥ रखे० ॥ अंतसमय सहु एम कहे रे, नारीनां जूउं प्राण ॥ रखे० ॥ ए ॥ वयण सुणी नारी तणां रे, कोप्यो ते परचंम ॥ रखे० ॥ हणवा ऊठे माय तायने रे, लेई मूशल दंम ॥ रखे० ॥ १० ॥ माल मंदिर ए माहारां रे, एहमां नथी तुम लाग ॥ रखे० ॥ जाली जंटीयां मा बापनां रे, काढे ते निर्जाग ॥ रखे०॥ ११॥ एम दुःख देइ तेहनें रे, पामे मरण अकाल ॥रखे०॥ मुह आगल मूकी जाय, विधवा वहूनुं शाल ॥ रखे० ॥१२॥ पेहरी उंढी नवि शके रे, कांइ न सूजे काम ॥ रखे० ॥ लेणिआयत जो आवशे रे, किहांथी देशुं दाम ॥ रखे० ॥१३॥ शंकातो निशि दिन रहेरे,ऊठी जाये परदेश ॥ रखे० ॥ घरनी नारी दुःख सहे रे, बाली जोबन वेश ॥ रखे० ॥१४॥ इह जव परजव रण तणां रे, जाणी दूषण टाल ॥रखे०॥ वीरमुनि श्रीजी कहे रे, कुंबखडानी ढाल ॥ रखे० ॥ १५ ॥ स० ॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ हसे रमे मीठुं चवे, मोहे मन माय ताय ॥ वैरी सुत ते जाणीयें, बाल पणे मरी जाय ॥ १ ॥ वली

कोइ मत करो, रण जूनु नवि थाय ॥ परजव जीव जाये तिहां, रण जाणो फुःखदाय ॥ २ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥ देशी फुवखडानी ॥

॥ रखे कोइ रण करो ॥ ए आंकणी ॥ सुणजो हवे आदर करी रे, रणिया सुतनी वात ॥ रखे कोई रण करो ॥ जे दिनथी ते ऊपजे, ते दिनथी तिरजात ॥रखे० ॥१॥ कोइ गुण माने नहिं, बोले निठुरी वाण ॥ रखे०॥ मीतुमीतु सवि जखे रे, कोइ न माने आण ॥ रखे० ॥ ॥ २ ॥ वस्तु जली जे घरे होवे रे, ते चोरी करी लेय ॥ रखे० ॥जो मारे माता पिता रे, तो गाली तसु देय ॥रखे० ॥ ३ ॥ राठ पीठ जे घर तणां रे, वेची खाये सोइ ॥ रखे० ॥ जांजे हांमलां कुमलां रे, जो सेहुने कहे कोइ ॥ रखे० ॥ ४ ॥ ए बालक कोइ नवि लहे रे, करशे घर तणा काम ॥ रखे० ॥ मा बाप तेहनां इम कहे, मोहोटो थाशे जाम ॥ रखे० ॥ ५ ॥ शोल वरसनो जब थयो रे, परणाव्यो मन रग ॥ रखे० ॥ विवाहें ध न खरची घणु रे, बहूअर आणी चंग ॥ रखे० ॥६॥ मास एक परण्या थयो रे,मांमी तव वढवाढ ॥रखे०॥ सासु ससरो एम कहे रे, आवी नहीं कुहाढ ॥रखे०॥ ॥ ७ ॥ जंजेख्यो जरतारने रे, सासु जूमी रांम ॥रखे०॥

खांडुं पीसुं जल वहुं रे, मुजने त्रांके त्रांक ॥रखे० ॥ ॥ ७ ॥ नारायण वश नारीने रे, माणसनुं शुं ज्ञान ॥ रखे० ॥ अंतसमय सहु एम कहे रे, नारीनां जूठं प्रा ण ॥ रखे० ॥ ए ॥ वयण सुणी नारी तणां रे, कोप्यो ते परचंम ॥ रखे० ॥ हणवा ऊठे माय तायने रे, लेई मूशल दंम ॥ रखे० ॥ १० ॥ माल मंदिर ए माहारां रे, एहमां नथी तुम लाग ॥ रखे० ॥ काली जंटीयां मा बापनां रे, काढे ते निर्जाग ॥रखे०॥११॥ एम दुःख देइ तेहनें रे, पामे मरण अकाल ॥रखे०॥ मुइ आगल मूकी जाय, विधवा वहूनुं शाल ॥ रखे० ॥१२॥ पेहरी ऊढी नवि शके रे, कांइ न सूजे काम ॥ रखे० ॥ लेणिआयत जो आवशे रे, किहांथी देशुं दाम ॥ रखे० ॥१३॥ शंकातो निशि दिन रहेरे,ऊठी जाये परदेश ॥ रखे० ॥ घरनी नारी दुःख सहे रे, वाली जोबन वेश ॥ रखे० ॥१४॥ इह जव परजव रण तणां रे, जाणी दूषण टाल ॥रखे०॥ वीरमुनि त्रीजी कहे रे, कुंवखडानी ढाल ॥ रखे० ॥ १५ ॥ स० ॥७०॥

॥ दोहा ॥

॥ हसे रमे मीठुं चवे, मोहे मन माय ताय ॥ वैरी सुत ते जाणीयें, वाल पणे मरी जाय ॥ १ ॥ वली

ऊपजे वलि वलि मरे, गर्ने आव्यो सोय ॥ नाश करे धन धान्यनो, एम दुःखदायी होय ॥ २ ॥ जो कदाच महोटो थयो, घणो करे हेराण ॥ विषप्रयोग शर्खे हरे, मात पितानां प्राण ॥ ३ ॥ सुख दुःख कांई न वि करे, नवि आपे नवि लेय ॥ रूसे तूसे जे नही, उदासीन गणो तेय ॥ ४ ॥ जात मात जे प्रिय करे, क्रीडा करतो रंग ॥ यौवन वय जे सुख दिये, जक्ति तणे पर संग ॥ ५ ॥ संतोषे माय बापने, मीठे वचनें जेह ॥ कथन कदा लोपे नहिं, सुत ए पंचम नेय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नेमिराय तुं धन्य धन्य अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कांणां कांणां जामणां लाला सघले कीसे रे थाय ॥ जीहो पूछे जंबु सुधर्मने, लाला कुण कर्म कहेवाय ॥ कृपानिधि मुजने जाखो तेह ॥ जेम जांगे मन संदेह ॥ कृपा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो सर्व विषस मुनिने दिये, लाला सतीने करे संताप ॥ जीहो तेणें पापें करी ऊपजे, लाला कोढ रोगनो व्याप ॥ कृपा० ॥ २ ॥ जीहो केणें कर्मे सुत वासना, लाला दुर्गंध होय असराल ॥ [illegible] आंगुलि, लाला जे दिये मुनिनें [illegible] जीहो रातु-

अंग रोम उज्ज्वलां, लाला पांपण जेहनी श्वेत ॥ जीहो
पिंगल नर ते जांखिया, लाला कवण कर्मनो हेत ॥
कृपा ॥ ४ ॥ जीहो चैत्य सूरज सन्मुख सदा, लाला
जे करे लघु वड नीत ॥ जीहो तेणे पापें करी प्राणी
या, लाला पिंगला धरजो चित ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ जी
हो धोलो पीलो रातलो, लाला नानाविध परमेह ॥
जीहो करणी तेहनी कोण लहे, लाला धातु क्षीण
होय देह ॥ कृ० ॥ ६ ॥ जीहो सूत्र रजत कंचन त्रं
बु, लाला हीरा विद्रुम जेह ॥ जीहो धातु सकल
चोरी ग्रहे, लाला बहु मूत्रता निःसंदेह ॥ कृपा० ॥
७ ॥ जीहो सूकर कूकर गर्दज्ञा, लाला कूकड महि
ष मांजार ॥ जीहो काक उलूक अहि वृश्चिका, लाला
कहो कोण पाप प्रकार ॥ कृपा ॥ ८ ॥ जीहो दान
दया तप व्रत नही, लाला यात्र न पर उपकार ॥ जी
हो रात्रिजोजन जे करे, लाला तेहथी ए अवता
र ॥ कृपा० ॥ ए ॥ जीहो चंरू कुशीला कर्कशा, ला
ला कलह करे दिन रात ॥ जीहो रूप कुरूप काली
घणुं, लाला जेंशलंकी सुविख्यात ॥ कृपा० ॥ १० ॥
जीहो घूकस्वर खरगामिनी, लाला माथे बाबरवाल ॥
जीहो क्रोधमुखी बडबड करे, लाला दांत जिस्या को

ऊपजे वलि वलि मरे, गर्भे आव्यो सोय ॥ नाश करे धन धान्यनो, एम दुःखदायी होय ॥ २ ॥ जो कदाच महोटो थयो, घणो करे हेराण ॥ विषप्रयोग शर्त्रे हरे, मास पिताना प्राण ॥ ३ ॥ सुख दुःख कांई न वि करे, नवि आपे नवि लेय ॥ रूसे तूसे जे नही, उदा सीन गणो तेय ॥ ४ ॥ जात मात जे प्रिय करे, क्रीडा करतो रंग ॥ यौवन वय जे सुख दिये, भक्ति तणे पर सग ॥ ५ ॥ संतोषे माय बापने, मीठे वचनें जेह ॥ कथन कदा लोपे नहि, सुत ए पचम जेय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नेमिराय तुं धन्य धन्य अणगार ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो कासा कासा, जामणा लाला सघले मीलें रे थाय ॥ जीहो पूछे जबु सुधर्मने, लाला कुंण कर्म क हेवाय ॥ कृपानिधि मुजने भांखो तेह ॥ जेम भागे मन संदेह ॥ कृपा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो सर्प विवस मुनिने हणे, लाला सतीने करे संताप ॥ जीहो तेणें पापें करी ऊपजे, लाला कोढ रोगनो व्याप ॥ कृपा० ॥ २ ॥ जीहो केणें कर्मे मुखे वासना, लाला दुर्गंध होय असराल ॥ जीहो संकट मे वसी आंगुलि, लाला जे दिये मुनिनें गाल ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ जीहो रातुं ~

निदान ॥ कृपा० ॥१९॥ जीहो अणजाण्यो जय ऊपजे, लाला सूतां बेगं रे आव ॥ जीहो अणदीठुं दीठुं कहे, लाला तसु फल मन संजाव ॥कृ०॥२०॥ जीहोए उपदेश सोहामणो,लाला सांजलि टालो रे दोष ॥ जीहो चोथी ढाल पूरी थइ, लाला वीर कहेपुण्य पोष ॥ २१ ॥ ए७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चार पांच पुत्री हुवे, ते सघली रंमाय ॥ पूरवज व तिण प्राणीयें, कीधा कोण अन्याय ॥ १ ॥ चैत्य कूप सर वावनां, करे विघन धन खाय ॥ ग्रामादिक बाले वली, जनमांतर नर हाय ॥ २ ॥ मेद वाय पीडा करे, पाप तेहनां जांख ॥ मद्य मांस जे नर जखे, मरणांत फल अजिलाख ॥ ३ ॥ कानें कांइ न सांजले, कोण कर्यां कुकर्म ॥ कहो पूज्य ! जंबू जणे, वलतुं कहे सुधर्म ॥ ४ ॥ साधु वचन नवि सांजले, सुणे नहीं सिद्धांत ॥ अणसांजल्युं कहे सांजल्युं, बहेरो थाय इम भ्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ पुण्य प्रशंसियें ॥ ए देशी ॥

॥ वात गुल्म होये जेहने रे, पेटें थाये रे पीड ॥ खाधुं धान्य जरे नहीं रे, कवण कर्मनी जीड रे ॥ १॥ कर्मकथा कहो ॥ ए आंकणी ॥ गणधर गुण जंमार रे

दालि ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ जीहो चाडु पाडु पाडवे, लाला पतिने करे प्रहार ॥ जीहो पहथी नारी जेहने, लाला कमण कर्म अविकार ॥ कृपा० ॥ १२ ॥ जीहो नणद देराणी जेठाणीयां, लाला सासू ससरो जेठ ॥ जीहो वडसासू देवर वहू, लाला कर्म करे नहिं वेठ ॥ कृपा० ॥ १३ ॥ जीहो जे जिनवर पुजे नहि, लाला करे आशातन धूल ॥ जीहो निंदे जनने जे सदा, लाला जाणे ए पापनु मूल ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ जीहो पांच सात पुत्री हुवे, लाला पुत्र तणु नहिं नाम ॥ जीहो तेहतणो परकाशियें, लाला पूरव भवनां काम ॥ कृपा० ॥ १५ ॥ जीहो आहेडी सर्वे जंगले, लाला रोके जलनां ठाम ॥ जीहो कूप नदी द्रह वावडी, लाला पशु पखी आवे आम ॥ कृपा० ॥ १६ ॥ जीहो कनाले अति आकरो, लाला तडके दाके रे देह ॥ जीहो तरस्या ते पाणी मले, लाला पाप घणुं तसु हो य ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ जीहो आरंभ्यु निःफल होये, लाला सीके नहिं कोइ काज ॥ जीहो विघन घणां होय तेहनें, लाला कोण कर्मे महाराज ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ जीहो मात पिताने पीडवे, लाला माने नही गुरु आण ॥ जीहो कारज गुरुनु नवि करे, लाला तेहनु पह

ष्ट रे ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ एक नर दान बहुविध दिये रे, आपे ऊलट आणि ॥ निंदे तेहनें नित्यप्रत्यें रे, उंरुमुखो ते जाण रे ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ गर्भे शाल थई रहे रे, वधे नहिं जे बाल ॥ पूरव जव तेणें आद स्यां रे, कवण कर्म विकराल रे ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ जा तमात्र ते बालने रे, विवाहनी धरे शंक ॥ मारे पाडे गर्भनें रे, तेहनें शाल निःशंक रे ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ स्थानभ्रष्ट नर जे हुवे रे, पामे नहि किहां ठाम ॥ पापप्रकृति कोण तेहने रे, ते संजलावो स्वाम रे ॥ ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ मारग अथ जल थानकें रे, वृक्ष महाफल जार ॥ पशुपंखी पंथी जिहां रे, ल्ये विशराम अपार रे ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ कापे एहवा वृक्षनें रे, ते हनें ठाम न होय ॥ जिहां जाये तिहां डुःख सहे रे, बेसण न दिये कोय रे ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ कोढ रोग घट जेहने रे, धोळुं थाये गात्र ॥ मोहोटा माणस जेह शुं रे, बोले नहीं क्षणमात्र रे ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ लो पे वृत्ति जे साधुनी रे, गोवध चोरी जूठ ॥ कन्या ध न जे वावरे रे, कूलां कूंपल डुठ रे ॥ कर्म० ॥ १९ ॥ खूटे खातें ख्यालशुं रे, ते नर कोढी रे थाय ॥ कीधां कर्म न छूटीयें रे ॥ जब तब डुःख दे आय रे॥कर्म०

॥ कर्म० ॥ अमृत वाणी वरसता रे, जगजीवन हितकार रे ॥ कर्म० ॥ २ ॥ कोमो विणठो जे होय रे, कोइ न बांधे जास ॥ ते वहोरावे साधुने रे, ए फल जाणो तास रे ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ खयन व्याधि तस ऊप जे रे, रोग सहुनो रे वास ॥ रात दिवस खूं खूं करे रे, कफ तणो आवास रे ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ हाड तणो विक्रय करे रे, जे वली विष व्यापार ॥ मधु पाडे वनमां जइ रे, क्षयरोगी निर्धार रे ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ जन्मथकी जे आंधलो रे, परुख प्रवालां गाय ॥ नेत्र रोगी बहुजातिना रे, कवण कर्म अंतराय रे ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ परस्त्री निरखे रागशु रे, परनारीशु प्रीत ॥ काज विणासे पारकु रे, आख तणी ए रीत रे ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ आधा शीशी अतिघणु रे, माथे पीड करत ॥ ऊंचु जोइ नवि शके रे, कोण अशुभ आचरंत रे ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ अग्नि सार्से आदरे रे, श्यामा आयत कीन ॥ चिच ताहरुं ने माहरु रे, भिन्न गणवा लयलीन रे ॥ कर्म० ॥ ॥ ए ॥ परणी नारी परहरी रे, पररमणीशु रंग ॥ घरना वे जे आपणे रे, तिण शिर दुःख प्रसंग रे ॥ कर्म० ॥ ॥ १० ॥ सूयर सरखु जेहने रे, मुखडुं होये अनिष्ट ॥ तेणें स्यां पाप समाचर्यां रे, ते भांखो मुज इ

व तेणें जीव रे ॥ सो० ॥ मुखरोगें करी मानवी, पाडे
घणी घणी रीव रे ॥ सो०॥२॥ गांठ छोडे जे पारकी, धूता
वी लीये माल रे ॥ सो० ॥ कंठमाला होय तेहने, गं
ममाल रुंममाल रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ स्वाद करे जे न
व नवा, खावानो होय वाढ रे ॥ सो० ॥ आठम पां
खी नवि गणे, दूःखे दांत जीज दाढ रे ॥ सो० ॥४॥
जिव्हा वश राखे नहिं, बोले बहुलां कूड रे ॥सो०॥
संयम सहितं सूधा यति, कूड करे तस मूढ रे॥सो०॥
॥ ५ ॥ ते परजव थाये बोबडो, होये वली मुखना रोग
रे ॥ सो०॥ आप कमाइ छुःख सहे, बूटे न कर्मना जो
ग रे ॥ सो० ॥ ६ ॥ श्रवण वहे जेहना सदा, रुधिर
परु निकसंत रे ॥ सो० ॥ कानें नाखे फाटका, कव
ण कर्म विकसंत रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ जांम जवाई सां
जले, चाडि चुगलनी घात रे ॥ सो० ॥ आदर
करी आदरे, कान तणी ए वात रे ॥ सो० ॥७॥ दी
र्घदंत मुख नीकले, दीसे घणुं विरूप रे सो० ॥ प
र अपवाद घर घर करे, ए तसु कर्म स्वरूप रे॥सो०॥
॥ ए ॥ पगरहित होये पांगलो, पगलुं एक न खसा
य रे ॥ सो० ॥ पूरव जवनुं तेहनें, कवण कर्म छुःख
दायरे ॥ सो० ॥ १० ॥ पग जांगी वाहे पशु, दया र

॥ २० ॥ मात पिता नारी तणो रे, बेटा बेटी वियोग ॥ जेहनें आवी ऊपजे रे, कवण कर्मनो भोग रे ॥ कर्म० ॥ २१ ॥ गाय वत्स माय वापनो रे, पखी पुत्र विछोह ॥ पाडे पापी तेहने रे, मखवाने होये रोह रे ॥ कर्म० ॥ २२ ॥ सूत्रनी वाणी साजली रे, टाले दूषण दूर ॥ वीर कहे ढाल पांचमी रे, पामे सुख भरपूर रे ॥ कर्म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नंदन अथवा नंदिनी, जन्म पामे माय बाप ॥ मरण धर्म पामे तुरत, कवण कर्म संताप ॥ १ ॥ शरणें आव्या जीवने, जे शरण नवि थाय ॥ परभव तेहना पापथी, शरण विना सीदाय ॥ २ ॥ जखो दरें करी जे दुःखी, पेट न भोवे नर्म ॥ तेणें संध्या कोण पाठले, भवमा अधिक अधर्म ॥ ३ ॥ जाति पांति गणे नहिं, खाये भक्ष अभक्ष ॥ विरति नहि कोइ वस्तुनी, जखोदर थाये प्रत्यक्ष ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

॥ कंठनाल रुकमाल जे दांसें जीजें दुःख रे ॥ सोहम स्वामी कहो ॥ संघ होठ होय थोथरो, पाके जेहनु मुख रे ॥ सो० ॥ १ ॥ अकारज कीधां किस्यां, पूरव भ

कहे वीरजी, दूषण नहि लवलेश रे ॥ सो० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूल व्याधि जे नर लहे, फावी जमणी कूख॥ औषध को मानें नहि, कवण कर्मनुं दुःख ॥ १ ॥ पशु पंखी मानव प्रतें, बेठां बाण हणंत ॥ शूलरोग त स ऊपजे, सोहम एम जणंत ॥ २ ॥ कारण चार विना मरे, जे नरनां संतान ॥ तेह तणां गुरुजी कहो, कवण कर्म विन्नाण ॥ ३ ॥ सूरजने सन्मुख थई, देवालयमां जाय ॥ द्रव्य लोज मनसा धरी, साधु तणा सम खाय ॥ ४ ॥ सम खातो शंके नहि, ऋषिमाथे कर दे य ॥ मृषासम कीधायकी, संतति नाश करेय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ हांसलानी ॥ ऋषजजिणं-
दशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ ठुंठा जेहोय मानवी, बेहु हाथें हो न कराये का ज के ॥ पूज्यजी कहे कवियण सुणो ॥ ए आंकणी ॥ जव पहेलो जे जांखियें, तेहने होय हो जे कर्मनो साज के ॥पूज्य०॥१॥ सुधर्मा वलतुं एम कहे, सुण जंबू हो तसु कर्मनी साख के ॥ रसीयो पाप तणे रसें, जे छेदे हो पंखीनी पांख के ॥पूज्य० ॥२॥ मात पिता गुरु साधुने, निजहाथें हो ताडना करे तिरक के ॥ परजव करम उद

हित रखइंत रे ॥ सो० ॥ आंवली वड आवली, को पें कुमति पडत रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ श्वेतारकादिक औषधि, काढे तेहनी जडंत रे ॥ सो० ॥ पाप उद य जब आवियां, लूलो पगु होक्त रे ॥ सो० ॥१२॥ मूत्र कृच्छ्र करी महा दु खी, पथरी रोग प्रचन्ड रे॥सो०॥ अतर्गल शोफो होय, कवण कर्मनो दंड रे ॥ सो०॥ ॥ १३ ॥ जे राजानी रमणीशु, सेवे विषयनां सुख रे ॥सो०॥ मूत्रकृच्छ्रनु तेहने, परनव थाये दु ख रे॥सो०॥ १४॥प्रेम करी परनारीशु, काम राग विलसंत रे॥सो०॥ परदाराना पापथी, पथरी प्रबल वमत रे ॥सो०॥१५॥ गुरुणीशुं रंगें रमे, कामविषयना राग रे॥ सो० ॥ अ तर्गल होय तेहने, किहां न लहे सोभाग रे ॥सो०॥ ॥१६॥ महिला मित्रनी जोगवे, वारे सेहशुं वढंत रे॥ सो० ॥ नवि थीये अपवादथी, शोफो तास थढंत रे ॥ सो० ॥ १७ ॥ दीसंतो अति फूटरो, बोली न शके बोल रे ॥ सो० ॥ मूंगो गुंगो मूलथी, कवण कर्म नो रोल रे ॥ सो० ॥ १८ ॥ अनिर्वचन गुरुने कहे, महोटातु हरे मान रे॥सो०॥ कूडी साख तिहा दीयें, गुंगो थये अभिमान रे ॥ सो० ॥ १९ ॥ ए दूषण जे लहों, सांजली ए उपदेश रे ॥ सो० ॥ ढाल ढही

खास कफ फूटणी, कये दुःखें हो एम होवे भोग के ॥ पूज्य० ॥ ११ ॥ साप सरीटी सापणी, वींछी वींछ ण हो मारे पुण्यहेत के ॥ गोह छछुंदरीनें हणे, तेणे करणी हो मुख तस फल हेत के ॥ पूज्य० ॥१२॥ मंद वाड थाये चीकणो, घरमांहे हो थोडी होये तोण के॥ जनमांतर तेणें पापीयें, पाप संच्यां हो जगवन् कहो कोण के ॥ पूज्य० ॥ १३॥ धर्मतणे थानकथकी, साज लेइ हो सहु दूषण लेह के ॥ जीवदया पाले नहिं,व्याधि सघलो हो व्यापे तस देह के ॥ पूज्य० ॥ १४ ॥ हितउपदेश हियावटें, सांजलीने हो सहु दूषण टाल के ॥ पुण्यवशें प्राणी घणो, सांजलजो हो सहु सातमी ढाल के ॥ पूज्य० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पीनस रोग पीडा करे, शोणित नाक स्त्रवंत ॥ वांकी बेसे नासिका, कीटक प्राणी दमंत ॥ १ ॥ केहेवां कर्म कस्यां तेणें, पूरवले जवें स्वाम ॥ जविक जीव तुमें सांजली, करो न एहवां काम ॥ २ ॥ चलीमार जवें चरकलां, पापी जे मारंत ॥ मोरचकोर कोकिल सुआ, पीनस तेणे धरंत ॥ ३ ॥ यक्ष राक्षस ने किंपुरुष, जूत प्रेत गंधर्व ॥ पिशाच महोरग किन्नरा, ए

य होय, कर्म पाखें हो मागे ते भीख के ॥ पूज्य० ॥
॥ ३ ॥ अगर्भंग हुवे जेहनें, जठीनें हो वेगानी न
आय के ॥ पाप जनम पूरव तणां, मुज तेहनां हो
सुणवा उजमाय के ॥ पूज्य० ॥ ४ ॥ चैत्यभंग करे
पापिने, अधमाधम हो करे प्रतिमा भंग के ॥ तेणे
कर्में करी पामियो, परभव नर हो थाये अंग भंग के
॥पूज्य० ॥ ५ ॥ वड घोर लींबु जेवडा, मसा मोहोडे
हो होये आखे शीस के ॥ रसोली ठोटी वडी, थदनें व
ली हो थाये आखे सीस के ॥ पूज्य० ॥ ६ ॥ करणि
कोण ते आदरी, ते दाखो हो गुरुजी गुणखाण के ॥
गाढे घायें ढोरने, खर श्वानने हो मारे पाषाण के ॥
पूज्य० ॥ ७ ॥ गड गुवड न टले कदा,कान हेठल हो
थाये करणक मूल के ॥ गुति अरुऊ चांदी होये, कोण
तेहने हो करम प्रतिकूल के ॥ पूज्य० ॥ ८ ॥ वाडी अ
ति रलीयामणी, देखीने हो हरखे सहु लोक के ॥
भोरे फल फूल तेहनां, गुंथढालो हो पामे ते शोक
के ॥ पूज्य० ॥ ९ ॥ पग फाटी थाये भीरीयां, खर
खूखस हो अगें थाये दाड के ॥ उपचारें उरसे नहीं, दु
ख देखे हो कोण करम प्रसाद के ॥ पूज्य० ॥ १० ॥
[illegible]पासें पडे ऊपजे, ठमासें हो वरसें थहु रोग के ॥

उनाले ले आतापना रे ॥ सु० ॥ शीयाले सहे शीत रे सु० ॥ मांस मसानां दुःख सहे ॥ सु० ॥ शत्रु मित्र समचित्त रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुनिवर समता रस जस्यो ॥ सु० ॥ कांचन उपल समान रे ॥ सु० ॥ डुक्कर तप संजम धरे ॥ सु० ॥ न करे तासु निदान रे ॥ सु० ॥८॥ हसे थुंके हेला करे रे ॥ सु० ॥ मलमलीन तनु देख रे ॥ सु० ॥ ए दुर्गंध दोजागीया ॥ सु० ॥ ॥ करे घणो विद्वेष रे ॥ सु० ॥ ए ॥ रूप मदें मोह्यो थको रे ॥ सु० ॥ धर्मबुद्धि उवेख रे ॥ सु० ॥ कर्म उदय सब ते हुवे ॥ सु० ॥ थाय कुरूप विशेष रे ॥ सु० ॥१०॥ आदरशुं ढाल आठमी ॥ सु० ॥ सुणतां होय आणंद रे ॥ सु० ॥ देवचंद वाचक तणो ॥ सु० ॥ शिष्य कहे वीरचंद रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुःखे आंख रहि रहि, तेहनुं कहो कुण पाप॥ परगुण देखी नवि शके, तेहथी आंख अदाप ॥ १ ॥ शिर कर कंपे जेहना, गात्रें थाय प्रस्वेद ॥ अंग सघलां शूनां होये, कवण कर्म संवेद ॥ २ ॥ मारगमांहे हींडतां, शस्त्र हाथमां होय ॥ वाहे जिहां तिहां काम विण, कंपरोग तेणें जोय ॥ ३ ॥ पक्षाघात पराजवें, कवण क्र

कोण कर्मे सर्व ॥४॥ जलमांहे बूडी मरे, परवत पडी पडंता॥अग्नि सर्प विष शस्त्र मृत,व्यंतर ए सवि हुत ॥५॥
॥ ढाल आठमी ॥ मनमोहन लाल ॥ ए देशी ॥
॥ कुत्सित रूप वीहामणुं ॥ कह्यो केवली लाल ॥ माथु मोहु ठीब रे ॥ कह्यो केवली लाल ॥ कपिल केश आंख चीपडी ॥ कह्यो० ॥ वचनकटुक जिम नींब रे ॥कह्यो० ॥ १ ॥ नाक वेढु कान सूपडां ॥कह्यो०॥ लांबा होठ हसकंत रे ॥ कह्यो० ॥ श्याम वदन दंत वंकडा ॥कह्यो०॥ स्वर जेम श्राडुकत रे ॥कह्यो०॥२॥ केहने वी ढुं नवि गमे ॥ कह्यो० ॥ गर्दभ मुह जाणे पूठ रे ॥ कह्यो० ॥ महिष कंध मातो घणो ॥ कह्यो० ॥ सूरवाल दाढी मूठ रे ॥ कह्यो० ॥ ३ ॥ कुंण करम कीधां तेणें ॥ कह्यो० ॥ जेहथी एहवुं कुरूप रे ॥ कह्यो० ॥ उप कारी सोहम कहे ॥ कह्यो० ॥ तेहनु सर्व सरूप रे ॥ कह्यो० ॥ ४ ॥ पचमहाव्रत सूधां धरे ॥ कह्यो० ॥ सौम्यवदन सुकमाल रे ॥ सुणो धारणी नंद ॥ करे रक्षा छकायनी ॥ सुणो० ॥ जेम पाले माय बाल रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ममता माया नवि करे ॥ सुणो० टाले दूषण बायाल रे ॥ सु० ॥ चारित्रथी चूके नहिं ॥ सु० ॥ परिसह वेखी नयाल रे ॥ सु० ॥ ६ ॥

उनाले दे आतापना रे ॥ सु० ॥ शीयाले सहे शीत रे सु० ॥ फांस मसानां दुःख सहे ॥ सु० ॥ शत्रु मित्र स मचित्त रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुनिवर समता रस जस्यो ॥ सु० ॥ कांचन उपल समान रे ॥ सु० ॥ दुक्कर तप सं जम धरे ॥ सु० ॥ न करे तासु निदान रे ॥ सु० ॥८॥ हसे थुंके हेला करे रे ॥ सु० ॥ मलमलीन तनु देख रे ॥ सु० ॥ ए दुर्गंध दोजागीया ॥ सु० ॥ ॥ करे घणो विद्वेष रे ॥ सु० ॥ ए ॥ रूप मदें मोह्यो थको रे ॥ सु० ॥ धर्मबुद्धि उवेख रे ॥ सु० ॥ कर्म उदय सव ते हुवे ॥ सु० ॥ थाय कुरूप विशेष रे ॥ सु० ॥१०॥ आदरशुं ढाल आठमी ॥ सु० ॥ सुणतां होय आणंद रे ॥ सु० ॥ देवचंद वाचक तणो ॥ सु० ॥ शिष्य क हे वीरचंद रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुःखे आंख रहि रहि, तेहनुं कहो कुण पाप॥प रगुण देखी नवि शके, तेहथी आंख अदाप ॥ १ ॥ शि र कर कंपे जेहना, गात्रें थाय प्रस्वेद ॥ अंग सघलां शू नां होये, कवण कर्म संवेद ॥ २ ॥ मारगमांहे हींड तां, शस्त्र हाथमां होय ॥ वाहे जिहां तिहां काम विण, कंपरोग तेणें जोय ॥ ३ ॥ पक्षाघात पराजवें, कवण क

रम संयोग॥हाथे स्त्री हत्या करे,अर्ध अग दुखे रोग॥४॥
॥ ढाल नवमी ॥ नदी जमुनाके तीर, ऊमें दोय पखिया ॥ ए देशी ॥

॥ व्रण थाहे नासूर, क्रूर मुख कीडमें ॥ पवित्रपणुं नही होय, रहे कुचीलमें ॥ कवण कर्मे तेणें कीध, सिरू नही औषधें ॥ गिरुआ गुणह निधान, कहो करुणा बुद्धें ॥ १ ॥ कान नाक विंधीने, परोइ दोरडां ॥ कौतक कारणे कान, कापे कठोरडा॥ पशु पखी प्रत्यें एम, पीडे जे पापीया ॥ नासुरें करी तेह, होय संतापीया ॥२॥ रक्त पित्तनो रोग, लहे जे जीवडा ॥ गले अंग उपांग,पडे मांहे जीवडा ॥ भवांतरें तेणें पाप, कीधां प्रभु केहवां ॥ मनुष्य तणो भव पामी, पामे दु ख एहवां ॥३॥मद्दिप मद्दिषी ने ठाग,ठागीनें बखदीया॥फासुं घाली तास,गले मारे पापिया॥ मरी नरकमांहे जाय,महा अहमी दलें ॥ करे खरो खरू, पारानी परें मिले ॥४॥ जो कदाच वलि ते, मनुष्यमांहि अवतरे॥पामे बहुला दुःख, गलित कोढें मरे ॥ हरस रोगें करी जेह,आतुर होये आतमा ॥ पाप तेहनां कोण, कहो पुण्यातमा ॥५॥ फोडे सरोवर पाल, नदी द्रह शोषवे ॥ जलविण सहु जल जतु, घणा दु खीया होवे॥ तेह कर्मेनें पाप,

पीडा होवे हरसनी ॥ चित्तें दया नवि कीध, थावरने त्रसनी ॥६ कुटुंब तणी होये हाण, के जेहने सरवथा ॥ तेह तणां जे पाप, कहो जे होये यथा ॥ माछीनें जवें आवी, मारे जे माछलां ॥ तेणे कुटुंबनो नाश, जाणो फल पाछलां ॥ ७ ॥ रातें नवि दीसंत, दीहें आंख निर्मली ॥ रातअंधो केणें पाप, कहो मुज केवली ॥ अरुणोदय मध्यान्ह, संध्यायें जे जमे ॥ खाय पीये मध्य रात्रि, रात्यंधो तसु दमे ॥ ८ ॥ रांघण वायनी पीड, हाथे पगें आकरी॥ कीधां कहेवां कर्म, कहो करुणा करी ॥घोडा घोडी उंट, फेरे जे दुर्मति ॥ रांघण तेहने पाप,जाणो होये छती ॥९॥ वली जगंदरनो व्याधि, राध निकले घणी ॥ असुख आठे पोहोर,थाय जे रेवणी ॥ फोडे कूकड इंरू, पीये रस रसें करी ॥ तेह पापनें रोग, होये जगंदरी ॥ १० ॥ एहवुं जाणी प्राणी, जे दूषण टालशे ॥ श्रीजिनवरनी आण, सूधी जे पालशे ॥ ते लेहेशे शिवसुख, दुःख नहिं ले कदा॥ नवमी ढालें वीर, लहे सुखसंपदा ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बेठां फिरतां बोलतां, जिहां तिहां अंतराल॥ वाइ आवे दुःख दीये,कवण कर्मनी चाल ॥ १ ॥ जइ

रम संयोग॥हाथे स्त्री हत्या करे,अर्ध अग हुवे रोग॥४॥
॥ ढाल नवमी ॥ नदी जमुनाके तीर, ऊडे दोय पंखियां ॥ ए देशी ॥

॥ व्रण वाहे नासूर, क्रूर मुख मीलमें ॥ पवित्रपणु नही होय, रहे कुचीलमें ॥ कवण कर्म तेणें कीध, सिरू नही ओषधे ॥ गिरुआ गुणह निधान, कहो करुणा बुद्धे ॥ १ ॥ कान नाक विंधीने, परोइ दोरडां ॥ कौतक कारणे कान, कापे कठोरडा॥ पशु पखी प्रत्यें एम, पीडे जे पापीया ॥ नासुरें करी तेह, होय संतापीया ॥२॥ रक्त पित्तनो रोग, लहे जे जीवडा ॥ गले अंग उपांग,पडे मांहे जीवडा ॥ भवांतरें तेणें पाप, कीधां प्रभु केहवां ॥ मनुष्य तणो भव पामी, पामे दुःख एहवां ॥३॥महिष महिषी ने ठाग,ठागीनें वखदीया॥फासु घाली तास,गले मारे पापिया॥ मरी नरकमांहे जाय,महा अहमी दहें ॥ करे खरो खरू, पारानी परें मिले ॥४॥ जो कदाच वलि ते, मनुष्यमांहि अवतरे॥पामे बहुला दुःख, गलित कोढें मरे ॥ हरस रोगें करी जेह,आतुर होये आतमा ॥ पाप तेहनां कोण, कहो पुण्यातमा ॥५॥ फोडे सरोवर पाल, नदी द्रह शोषवे ॥ जलविण सब जल जंतु, घणा दुःखीया होवे॥ तेह कर्मनें पाप,

नें रे, थाये लोही ठाण॥ नाखे मलमूत्र आगमां रे, ए तसु कर्म निदान ॥ सो० ॥ ६ ॥ ना० ॥ जे थाये नर कूबडो रे, ढींके बेवड होय ॥ कोण कर्म कीधां तेणें रे, नगवन् जांखो सोय ॥ सो० ॥ ७॥ ना०॥ ऊंट बलद नैंसा ठालकां रे, घार्ता तेहनां चर्म ॥ लोनें नार घणा नस्था रे, कीधां एह कुकर्म ॥ सो० ॥ ८॥ ॥ ना० ॥ नपुंसक पणुं जे लहे रे, कोण करणी करि हीन ॥ पुरुष नहि नारी नहि रे, माणसमांहे दीन ॥ सो० ॥ ए ॥ ना० ॥ माणस घोटक ढोरने रे, समारे सुख काम ॥ कुमति गलकंबल ठेदनें रे, वेद नपुंसक पाम ॥ सो० ॥ १० ॥ ना० ॥ नरकें जाये जीवडा रे, पामे बहुलां फुःख ॥ अनंत शीत तापवेदना रे, अनंती सहे तृष नूख ॥ सो० ॥ ११ ॥ ना० ॥ तेणें जीवें कोण कीधला रे, कर्मना बंध कठोर॥सुरवेदना खेत्रवेदना रे, जे पामे फुःख रोर ॥ सो०॥१२॥ना०॥ महारंन महामूर्छना रे, असत चोरी परदार ॥ पंचेंड्यिवध फल नखे रे, नरक लहे अवतार ॥ सो० ॥ १३ ॥ ना० ॥ दोष टाले जो एहवा रे, नविय ए हैडे आण ॥ दशमी ढाल पूरी थइ रे, वीर तणी ए वाण ॥ सो० ॥ १४ ॥ ना० ॥

शिकारें जीवने, मारे विण अपराध ॥ तेह कर्मउदयें हुये, तब मरगीनी व्याध ॥२॥ संघे भारटखे नहि, करणी केही कीध ॥ स्वामी अर्थ सारे नहिं, आप स्वार्थमें लीध ॥ ३ ॥ कादी मूठ होये नहिं, पापपणा जाये बाल ॥ मारे जे भाणेजने, हणे कन्यानो बाल ॥

॥ ढाल दशमी ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥

॥ ए देशी ॥

॥ हाड गंभीर हिया होडी रे, मोहोटा रोग कहाय ॥ जेहने आवी ऊपजे रे, कवण कर्म सहाय ॥ सोभागी सोहम, भाखो कर्मनी वात ॥ जे केवली विण न कहात ॥ सोभागी सोहम ॥भा०॥१॥ ए आंकणी॥ बालक परनां लेहने रे, वेचे परदेशें जाय ॥ महिमाइना मोहथी रे, हाम गंभीर तस थाय ॥ सो० ॥२॥ भा०॥ धन पाम्युं थिर नवि रहे रे, जिहां तिहांथी जाय॥जन्मांतरना तेहना रे, कवण कर्म उपाय सो० ॥ ३ ॥ भा० ॥ सैन्यासी योगी जती रे, अथवा लिंगी कोय ॥ द्रव्य संच्यां खाये रही रे, पामे धन नही सोय॥ ॥ सो० ॥ ४ ॥ भा० ॥ जो कदाच धन संपजे रे, अति घोर अन्याय ॥ नृप सघलुं लूंटी लीये रे, अंतें खेद थाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ भा० ॥ अतिसार होये जेह

प्रश्न० ॥ ३ ॥ जणे गुणे कह्यो गुण किश्यो, एम क ही वंदे प्राणी रे ॥ अजगरमांहे ऊपजे, मूरख मनु ष्य निशाणी रे ॥ प्रश्न० ॥ ४ ॥ रहे सदाये बीहतो, थोडे घणे कडाके रे ॥ पशु पंखीने त्रासवे,बंधुक मेहे ली जडाके रे ॥प्र०॥५॥ पामे दास दासीपणुं, आद र न लहे रेख रे ॥ निवृंछे सहु तेहने, कवण कर्म ना लेख रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाति मदें मातो फरे, विन य नहीं तसु पास रे ॥ दानादिक पामे नहीं, हाड विक्रयी थाय दास रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वाला जेहने नी कले, एक बे त्रण चार पंच रे ॥ पामे वेदन अति घणी, कवण कर्मनो संच रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अणगल जल जे वावरे, गली संखारो नाखे रे ॥ गलतां टुंपो जे दीये, ए वालानी साख रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ नीच जा तिमां ऊपजे, कुण करणीथी तेह रे ॥ अनाचार रा तो सदा, निरख सरखमां रेह रे ॥प्र०॥ १० ॥ कूडां तोल कूंडां मापले, अधिकुं लेइ उंछुं आपे रे ॥ क्रि याहीन कोइ नवी लहे, नीच जाति तेणे पापें रे ॥ प्र० ॥११॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र क्रिया श्रेष्टा, तत्र तत्र नरोत्तमाः ॥ यत्र यत्र क्रिया नास्ति,तत्र तत्र नराधमाः ॥ १ ॥ क्रिया बलवती लोके, सर्वे धर्मानुसारिणी ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिर्यंचमांहे ऊपजे, जीव सहे डुःख जोर ॥ ते ऎं संच्यां पूरवें, केहां कर्म कठोर ॥ १ ॥ आप का जें जी जी करे, परनें कामें अपूठ ॥ मननो पार न को लहे, मुख मीठु चित्त डुठ ॥२॥ जे घूतारे लो कनें, हेये होय रोमांच ॥ कर्म करे जे एहवां, पूरव जव तिर्यंच ॥ ३ ॥ पुरुष वेद तजी स्त्रीपणुं, कोण पार्पे पामंत ॥ कूड कपट ठल चपलता, मायायें म हिला हुंत ॥ ४ ॥ जोग न पामे ते रति, ठती वस्तु न खवाय ॥ करे अतराय आपे नहि, जोग रहित ते थाय ॥ ५ ॥ रीशें धड हडतो मरे, मातो मान विशेष ॥ लोज लेहेरमां काल करी, कुगति करे प्रवेश ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ चरणाली चामुंडा रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ वाघ सिंह क्रोधें होय, मानें गर्दन श्वान रे॥ नोल साप होय लोजथी, काणो केणें निदान रे ॥ १ ॥ प्रश्न उत्तर गुरुजी कहे, सांजलजो सहु कोय रे ॥ पांति जेदना पापथी, आंखे काणो होय रे ॥ प्र०॥ ॥ २ ॥ अजगर केणें कर्में होये, पेट घसंतो चाले रे ॥ विद्यामद अति घणो करे, कोइने अक्षर नाखे रे॥

प्रश्न० ॥ ३ ॥ जणे गुणे कहो गुण किश्यो, एम क
ही वंदे प्राणी रे ॥ अजगरमांहे ऊपजे, मूरख मनु
ष्य निशाणी रे ॥ प्रश्न० ॥ ४ ॥ रहे सदाये बीहतो,
थोडे घणे कडाके रे ॥ पशु पंखीने त्रासवे,बंधुक मेहे
ली नडाके रे ॥प्र०॥५॥ पामे दास दासीपणुं, आद
र न लहे रेख रे ॥ निचूंढे सहु तेहने, कवण कर्म
ना लेख रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ जाति मदें मातो फरे, विन
य नही तसु पास रे ॥ दानादिक पामे नही, हाड
विक्रयी थाय दास रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वाला जेहने नी
कले, एक बे त्रण चार पंच रे ॥ पामे वेदन अति
घणी, कवण कर्मनो संच रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अणगल
जल जे वावरे, गली संखारो नाखे रे ॥ गलतां टुंपो
जे दीये, ए वालानी साख रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ नीच जा
तिमां ऊपजे, कुण करणीथी तेह रे ॥ अनाचार रा
तो सदा, निरख सरखमां रेह रे ॥प्र०॥ १० ॥ कूडां
तोल कूडां मापले, अधिकुं लेइ उंछुं आपे रे ॥ क्रि
याहीन कोइ नवी लहे, नीच जाति तेणे पापें रे ॥
प्र० ॥११॥ श्लोक ॥ यत्र यत्र क्रिया श्रेष्ठा, तत्र तत्र
नरोत्तमाः ॥ यत्र यत्र क्रिया नास्ति,तत्र तत्र नराधमाः
॥ १ ॥ क्रिया बलवती लोके, सर्वे धर्मानुसारिणी ॥

श्रद्धा दया क्षमा लज्जा, शांतिमेधाप्रवर्द्धिनी ॥२॥ क्रिया सत्संगति सिद्धि, सेवा प्रतगतिर्धृति ॥ एता स्त्रयोदशापत्या, धर्मस्य गृहचारिण ॥३॥ढाल॥ ढाल सोहे अग्यारमी, सांजलतां सुखदाय रे ॥ कारण पा प तणां तजे, वीर सुखी ते थाय रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए फल जांख्यां पापनां,हवे कहुं पुण्य विपाक ॥ सुकृत संच्यां सुख होय, आंबे न थाये आक ॥ १ ॥ जीव लहे जव मनुष्यनो, किणे पुण्ये करी पूज्य ॥ सो हम बोले शुन्न परें, जंबु एम तुं बूझ ॥ २ ॥ सरस चित्त सुकुमाल पणुं, नहिं मन क्रोध लगार ॥ जीव तणी जयणा करे, न्यायें वणिज व्यापार ॥ ३ ॥ सा त खेत्र धन वावरे, पूजे जिनवर देव ॥ साधु तणी सेवा करे, लहे नरजव ततखेव ॥ ४ ॥ नारी मरी न र नीपजे, सुकृत कहियें तास ॥ सत्य शील संतोष दृढ, विनय पुरुष विखास ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ दीठा देव अनेक, हांजी दीठा देव अनेक, न कोइ मन वसे रे ॥

न कोइ० ॥ ए देशी ॥

॥ स्वर्ग लहे सुख सार ॥ हांजी० ॥ स्व० ॥ अनु

पम सुरवरा रे ॥ अ० ॥ थइ थइ रंग रसाल ॥ हां० ॥
नाचे वहु अपछरा रे ॥ ना० ॥ गर्भ नहीं सुख सेज
॥ हां० ॥ तिहां ऊपजे सदा रे ॥ ति० ॥ आणंदे स
हु देव ॥ हां० ॥ कहे जय जय तदा रे ॥ क० ॥ १ ॥
मन मान्यां करे रूप ॥ हां० ॥ स्वरूप विविध परें रे
॥स्वा०॥ जरा न व्यापे वाल ॥हां०॥ के स्वेद नहिं शि
रें रे ॥ के० ॥ कहो स्वामी शे पुण्य ॥ हां० ॥ के किहां
कीधां मुदा रे के ॥ कि० ॥ २ ॥ तजी घरना व्यापार
॥ हां० ॥ के पंचेंद्रिय दमे रे ॥ के पंचें० ॥ डुक्कर
तप बार भेद ॥ हां० ॥ सत्तर भेद संजमें रे ॥ स० ॥
भावें भद्रक चित्त ॥ हां० ॥ आणा जिननी वहे रे ॥
॥ आ० ॥ दान दया दाक्षिण्य ॥ हां० ॥ अमर पद-
वी लहे रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ नानाविधना भोग ॥ हां० ॥
भला जे भोगवे रे ॥ भ० ॥ डुःख नहीं लव लेश ॥
हां० ॥ दीर्घ आयु जोगवे रे ॥ दी० ॥ सोभागी शिर
दार ॥ हां० ॥ सहु माने घणुं रे ॥ के स० ॥ जगगुरु
भाखो तेह ॥ हां० ॥ कारण कोण पुण्यनुं रे ॥ का० ॥
॥ ४ ॥ वस्त्र पात्र अन्न पान ॥ हां० ॥ शय्या मुनिने
दीये रे ॥ श० ॥ अभय दान दातार ॥ हां० ॥ जीवदया

हीये रे के जी० ॥ ॥ लोपे नही गुरुआण ॥ हां० ॥
मीठु मुख उचरे रे ॥ मी० ॥ जोग संयोग सौजा
न्य ॥ हां० ॥ आयु घणु ते धरे रे ॥ आयु० ॥ ५ ॥
केणे पुर्ये बहु बुद्धि ॥ हां० ॥ चतुरता अति घणी
रे ॥ च० ॥ जणे गणे सिद्धांत ॥ हां० ॥ जणावे
सहु जणी रे ॥ ज० ॥ देवगुरुना गुण गाय ॥ हां० ॥
भक्ति गुरुनी करे रे ॥ भ० ॥ तेणें पुर्ये करी तेह
॥ हां० ॥ पंडित होय शिरें रे ॥ प० ॥ ६ ॥ लखमी
रहे स्थिरवास ॥ हा० ॥ कोडी विणासे नही रे ॥
को० ॥ परजव तेणें पुण्य ॥ हां० ॥ कर्यां कोण उ
म्मही रे ॥ क० ॥ देह दान शुजपात्र ॥ हां० ॥ पढता
घो नवि धरे रे ॥ प० ॥ तस घर ऋद्धि समृद्धि ॥
हां० ॥ सवा वासो करे रे ॥ स० ॥ ७ ॥ पौत्रा पु
त्र प्रधान ॥ हां० ॥ होय जेहनें घरे रे ॥ के हो० ॥
नारी होय सुपात्र ॥ हां० ॥ केणें पुर्ये अनुसरे रे
॥ के० ॥ जीवदया मन शुद्ध ॥ हां० ॥ पाले नही
कारिमी रे ॥ पा० ॥ वीर कल्याणनी कोडि ॥ हां० ॥
लहे लाख धारमी रे ॥ ल० ॥ ० ॥

॥ दोहा ॥

॥ केणे सकर्मे दात्री होये, केणे सकर्मे छिजे

जात ॥ वैश्य केणे लक्षणें होय, केम होये शूद्रजात ॥ १ ॥ संग्रामें शूरो होय, पाछो पग नवि देय ॥ शरणें राखे अवरने, क्षत्री जाणो तेह ॥ २ ॥ जनम जातिथी शूद्र होय, संस्कारें द्विज जाण ॥ वेद अभ्यासें विप्र होय, ब्राह्मण होय गुण खाण ॥ ३ ॥ दान दयाने सत्य तप, शौच संयम संपन्न ॥ ब्रह्म विनय विद्या निपुण, ते ब्राह्मण गण धन्न ॥ ४ ॥ कांकर कनक समान मति, तजे शूद्रनुं दान ॥ करे शुश्रूषा धर्मनी, विप्र तणां एंधाण ॥ ५ ॥ दया दान उपकार मति, असत्य तणो परिहार ॥ बोले वचन विमासिने, वैश्य तणो व्यवहार ॥ ६ ॥ हीनाचारी क्रोध युत, धर्म रहित जे होय ॥ श्रद्धा दया न जे हनें, शूद्र गणीजें सोय ॥ ७ ॥ प्रश्न जे जे पूछिया, भांख्या सोहम सूरि ॥ ते चित्त धरो एक मनें, दुरिय पणासे दूर ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुणजो जंबु पूछा भवियण, इह परभव हितकारी ॥ एह सांभलतां कर्म निर्जरा, होय सही सुखकारी ॥ १ ॥ सुणजो० ॥ सोहम स्वामी जंबु तिका भरी, जंबु पर उपगारी ॥ बारह परखदा बेठा पूछे, प्रश्न

सर्व सुविचारी ॥ २ ॥ सुण० ॥ सज्जन जन ए सुण तो हरखे, दुर्जन चित्त विकारी ॥ ए ऊपर प्रतीति न आवे, जाणो ते बहुल संसारी ॥३॥सुण०॥ श्रीपासचंद सूरीसर पाटें, समरचंद गुणधारी ॥ तेने पाटें श्री राजचंद सूरि, सुरती सोहे सारी ॥ ४ ॥ सुण० ॥ शिष्य शिरोमणि तेहना कहियें, पंचम काल आहारी ॥ देव चंद्र वणारसी दीपे, प्रागवंश शिणगारी ॥ ५ ॥ सु० ॥ जंबूपृछा भणशे गुणशे, सुणशे जे नर नारी ॥ मानव भव ते सफल करीने, थाशे सुर अवतारी ॥६॥ सु० ॥ सोल सत्तर अठावीशे, पाटण नगर मोझारी ॥ जंबुपृछा श्री मनरंगें, वीरजी मुनि सुखकारी ॥ ७ ॥ सुण० ॥ इति श्रीवीरजी मुनिकृत जंबुपृछा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

...पृछानी चोपाई प्रारंभ ॥

...रथ पूरवे, चोवीशमो जिण ... पेखे परमानंद ॥१॥ सम ... ग्राम. ॥ पद्मासन ... ॥ वेगा मनिवर के

मे
गर
के
रे
स
न
॥
रहे
को
स्मर
वो न
हां० ॥
त्र प्रधान
नारी होय
॥ के० ॥ जीव
कारिमी रे ॥ पा
सहे ढाल वारमी
॥ केणे सद्दर्णे

वी, बेठी परखद बार ॥ ३ ॥ तव गोयम मन चिंत वे, जीवितनो ए सार ॥ जे कांई आपणथकी, कीजें पर उपकार ॥ ४ ॥ गोयम हियडे जाणतो, आ णी पर उपकार ॥ सन्ना सहुको सांनले, पूछे इश्यो विचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाइ ॥

॥ पहेला वीरजिणेसर पाय, प्रणमी गोयम गण हर राय ॥ कर जोडीनें आगल रहे, सुललित नाषा एणी परें कहे ॥ ६ ॥ तुं जिन नक्ति मुक्ति दातार, तुज गुण कोइ न पामे पार ॥ में सेव्यो त्रिनुवननो देव, पुण्य पाप फल पूछुं हेव ॥ ७ ॥ नलतुं बोले वीर जिणंद, गोयम तुं आणे आणंद ॥ पूछे पृछा जे तुज गमे, तस हुं उत्तर आपीश तिमे ॥ ८ ॥ आगें मय गलनें मद नस्यो, एक पंचायणनें पाखस्यो ॥ आगें गोयमनुं जग वान, लाधुं वीर तणुं वली मान ॥ ॥९॥ नवियण नाव नलेरो धरी, अंग तणी आलस परहरी ॥ सुणजो हर्ष हिये उल्लसी, गोयमपृछा पू छे किसी ॥ १० ॥ नगवन् ! जीव नरक शें जाय, ते हज अमर नुवन सुर थाय ॥ तिरियमांहे ते डुःख केम सहे, किशे कर्में मानव नव लहे ॥ ११ ॥

सर्व सुविचारी ॥ २ ॥ सुण० ॥ सज्जान जन ए सुण तो हरखे, दुर्जन चित्त विकारी॥ ए ऊपर प्रतीति न आवे, जाणो ते बहुल ससारी ॥३॥सु०॥ श्रीपासचद सूरीसर पाटें, समरचद गुणधारी ॥ तेने पाटें श्री राजचद सूरि, सुरती सोहे सारी ॥ ४ ॥ सु० ॥ शिष्य शिरोमणि तेहना कहियें, पंचम काल आहारी ॥ वेव चंद वणारसी दीपे, आगवश शिणगारी ॥ ५ ॥ सु० ॥ जम्बूपृछा जणशे गुणशे, सुणशे जे नर नारी ॥ मानव भव ते सफल करीने, थाशे सुर अवतारी ॥६॥सु०॥ संवत सत्तर अठावीशे, पाटण नगर मोझारी ॥ जंबुपृछा रची मनरगें, श्रीरजी मुनि सुखकारी ॥ ७ ॥ सुण० ॥

॥ इति श्रीवीरजी मुनिकृत जम्बुपृछा संपूर्णा ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीगौतमपृछानी चोपाई प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल मनोरथ पूरवे, चोवीशमो जिण चंद ॥ सोवनवान सोहे सदा, पेखे परमानंद ॥१॥ सम वसरण देखे मली, रचीयुं उत्तम ठाम ॥ पद्मासन पूरी करी, बेठा त्रिभुवन स्वाम ॥ २ ॥ बेठा मुनिवर के वली, गणहर वर अगियार ॥ सुर नर किन्नर मान

नर केम थाये कुरूप ॥ २० ॥ किशें कर्में वेदना अ नंत, वेदन विण केम थाये जंत ॥ ढांकी तन पंचेंद्रि य तणुं, केम पामे एकेंद्रियपणुं ॥ २१ ॥ शीपरें था ये थिर संसार, केम पामे वहेलो जवपार ॥ शे सं सार सोहेलो तरी, पुण्यवंत पामे शिवपुरी ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव सवे जगती तणा, तुं तस बंधु समान ॥ जाव मनोगत सवी लहे, होय अनंतुं ज्ञान ॥ २३ ॥ पुहवी पदारथ जे अछे, ते देखे मुनि देव ॥ कृपा क री जगवन् कहो, कर्म फलाफल हेव ॥ २४ ॥ गुण गिरुउं गणधर जलो, हर्षे जोडी हाथ ॥ सफल करो मुज विनति, जतिय जणी जगनाथ ॥ २५ ॥ गोयम गणहर वीनव्यो, एणी परें वीरजिणंद ॥ नमे निरं तर पय कमल, जेहना चोशठ इंद ॥ २६ ॥ वीतराग वलतुं वदे, वाणी सरस अपार ॥ सुण गोयम गण धार तुं, पूठ्या तणो विचार ॥ २७ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ गोयमपृछा पूठी रहे, वलतुं वीर जिनेसर क हे ॥ सावधान सवि परषद हुइ, निसुणे निज जाषा जूजूइ ॥ २७ ॥ वरसे स्वामि वचन विलास, पोहोंचे

तेहिज पुरुष पणे संसार, कीशे कर्मे ते थाये नार ॥
कह्यो जिनवर पूरो मन रसी, तेहज किशे नपुसक
थसी ॥ १२ ॥ थोड्डु आयु होय सेह तणु, किशे क
र्मे होये ते घणु ॥ भोग रति शे नवि जोगवे, तेहि
ज भोग भला भोगवे ॥ १३ ॥ किशे कर्मे सोभागी
होय, किशे कर्मे दोभागी जोय ॥ तेहिज बुद्धि तणो
भंमार, किशे कर्मे नवि बुद्धि लगार ॥ १४ ॥ तेहि
ज पण्डितमांहे प्रधान, शे कर्मे थाये अज्ञान ॥ भी
रु धीरु कोण कर्मे सोय, विद्या सफल नि फल केम
होय ॥ १५ ॥ नासे धन वाधे थिर थाय, जन्म्या पु
त्र न जीवे कोय ॥ पौढा पुत्र घणा शे स्वामि, बहि
रपणुं शे कर्मे विराम ॥ १६ ॥ जात्यधो नर शें अ
वतरे, के कर्मे भोजन नवि जरे ॥ किशे कर्मे कोढी
कूबडो, दासपणु पामे बापडो ॥ १७ ॥ किशे कर्मे
दारिद्रि जत, किशे कर्मे तेहज धनवंत ॥ रोगें पीड्यो
पाडे रीव, रोग रहित शें थाये जीव ॥ १८ ॥ गोय
म पूछे कह्यो जिनवीर, शे कर्मे होये हीन शरीर ॥
तसु परजव शु पडीयो चूक, जे पणे भवें थाये ते
मूक ॥ १९ ॥ किणे कर्मे दूलो पांगलो, किशे कर्मे
रूपें आगलो ॥ विकट कर्मनु कह्यो स्वरूप, तेहिज

नर केम थाये कुरूप ॥ २० ॥ किशें कर्मे वेदना अ नंत, वेदन विण केम थाये जंत ॥ ठांमी तन पंचेंद्रि य तणुं, केम पामे एकेंद्रियपणुं ॥ २१ ॥ शीपरें था ये थिर संसार, केम पामे वहेलो जवपार ॥ शे सं सार सोहेलो तरी, पुण्यवंत पामे शिवपुरी ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जीव सवे जगती तणा, तुं तस बंधु समान ॥ जाव मनोगत सवी लहे, होय अनंतुं ज्ञान ॥ २३ ॥ पुहवी पदारथ जे अछे, ते देखे मुनि देव ॥ कृपा क री जगवन् कहो, कर्म फलाफल हेव ॥ २४ ॥ गुण गिरुऊ गणधर जलो, हर्षे जोडी हाथ ॥ सफल करो मुज विनति, जतिय जणी जगनाथ ॥ २५ ॥ गोयम गणहर वीनव्यो, एणी परें वीरजिणंद ॥ नमे निरं तर पय कमल, जेहना चोशठ इंद ॥ २६ ॥ वीतराग वलतुं वदे, वाणी सरस अपार ॥ सुण गोयम गण धार तुं, पूछ्या तणो विचार ॥ २७ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ गोयमपृछा पूछी रहे, वलतुं वीर जिनेसर क हे ॥ सावधान सवि परषद हुइ, निसुणे निज जाषा जूजूइ ॥ २७ ॥ वरसे स्वामि वचन विलास, पोहोचे

नविपण जन मन आश ॥ आषाढो सासाढो मेह, करी गाजीनें आव्यो एह ॥२९॥ तेणे अवसर नाठी तृष भूख, नाठा डुरिय सरीसां डुःख ॥ मधुरी वाणी सुणी जब कान, मधुर पण नहि कहेने मान ॥३०॥ सरस कवण कहीयें सूखडी, जेणे खाधे भांगे भूख डी ॥ जिनवर वाणी निसुणी जाम, ते विपरीत व खाणे ताम ॥ ३१ ॥ जे शेखडी सरस रस बडी, ते पण कहेनें चित्तें नवि चडी ॥ जाति अने ठजाति दे खवे, गोस्र खांम खारी लेखवे ॥ ३२ ॥ सुधा मुधा सवि कहे मन थाय, साकर कांकर सम तोलाय ॥ नी ली डाख न गमे सराख, एकज मीठी जिननी भाख ॥ ३३ ॥ इसी वाणी जिन मुखें उच्चरी, गोयम पो लाव्यो हित करी, एकज जीव लहे डुःख घणां,सुण गोयम कारण तेह तणां ॥ ३४ ॥ जीव विणासे जपे अली, जे नर परधन चोरे बली ॥ परनारीशुं रंगें रमे, पाप परिग्रह ऊको गमे ॥ ३५ ॥ रात्रि दिवस रीशें धडहडे, अभिमानें मानवनें नडे ॥ क्रोध तणो आणे आकार,नीचा नमणा नहि लगार ॥३६॥ मुखमीठे मन माया करे, कहो ते किम जवसागर तरे॥ हियडे निठुरो वयण कठोर,पापी पाप करे अति घोर ॥३७॥

जोवे छिद्र कुमतिनो धणी, मनमां मूर्छा धरे अति घ णी ॥ जे अधमाधम विण अपराध, गोठें बेठो निंदे साध ॥ ३८ ॥ जे मानवनें एहवो ढाल, प्रायें दीये अणहुंतां आल ॥ एवी मति जस पोतें छती, गुण की धो नवि जाणे रति ॥ ३९ ॥ वीर जणे सुण गोयम वा त, इस्यां कर्म जे करे निघात ॥ दोहिलां डुःखमांहे तड फडे, ते नर मरी नरकें रडवडे ॥ ४० ॥ तप संयम दानें चोशाल, जावें जद्रक अनें दयाल ॥ शीषे वहे सद्गुरुनी आण, ते नर पामे अमर विमान ॥ ४१ ॥ मानव सरसी मांडे प्रीत, काज आपणुं चाले चित्त ॥ वांछित काज सखुं ततकाल, वेहेली प्रीति करे विसरा ल ॥ ४२ ॥ जोतां दरिसण क्रूर अपार, कोइ न पा मे मननो पार ॥ कीधां कर्म जीवशुं करे, तिहांथी म री तिरिय अवतरे ॥ ४३ ॥ सरल चित्त सुकुमाल अपा र, क्रोध लोज मन गहीय लगार ॥ जीव तणी नि त्य जयणा करे, साते खेत्रें धन वावरे ॥ ४४ ॥ वोहो रे विणजे न्यायें करी, मूके पोतुं पुण्यें जरी ॥ साधु त णा पाय सेवे घणुं, लहे जीव ते मानव पणुं ॥ ४५ ॥ संतोषी विनयें गुण वहे, सरल चित्त शीलें दृढ रहे ॥ सत्य वचन जे बोले नार, थाये पुरुष मरी संसार

॥ ४६ ॥ चपल पणे धूतारे लोक, मूरख पातक थां पे फोक ॥ कूड कपट मायायें बहु, सगा सणीजांथ ऋे सहु ॥ ४७ ॥ मन विश्वास नही केह तणो, वी र भणे गोयम तुमें सुणो ॥ एहवा कर्म करे नर जे ह, परभव महिला थाये तेह ॥ ४८ ॥ मानव तुरी समारे ढोर, वींधे नाक परोवे दोर ॥ गल कंबल छे दे अज्ञान, कौतुक कारण कापे कान ॥ ४९ ॥ इस्यां कर्म जे करे नवीन, सविहु माणसमांहे हीन ॥ न वि नारी ते नहि नरमांय, गोयम सोय नपुंसक था य ॥ ५० ॥ जीव विणासे निठुरजपणे, जे परलोक न माने गणे ॥ चित्तमांहे जस घणो कलेश, ते नर आयु लहे लवलेश ॥ ५१ ॥ राखे जीवदया नर थई, अजयदान ऊपर मति रही ॥ काकु आयु लहे नर ते ह, गोयम ए तुं स धर संदेह ॥ ५२ ॥ ढतुं अन्न देवा मांकें व्याप, देइने मनें करे संताप ॥ मुजने पडियो ध रांसो घणो, आप्यो अर्थ शोक आपणो ॥ ५३ ॥ आपणने मति देवा टली, बीजा देतां वारे वली ॥ गोयम एहवे कर्में जोय, जोग रहित जव पूरे सोय ॥ ५४ ॥ वारु वस्त्र पाटो पाटला, जात पात्रनें पाणी जलां ॥ रूपिनें वे हियडे गहगही, परजव जोग स

उवेखे मूरख पणे ॥ कर्म तणी गति विषमी जोय,
ते परन्नव जात्यंधो होय ॥ ७३ ॥ निखर अन्न ने वि
रुर्ज वारि ॥ साधुनें दीये जे नर नारि ॥ मन जाणि
कृपणायें करे, परन्नव तस न्नोजन नवि जरे ॥
॥ ७४ ॥ पाडे मध जे दव दीये वेड, तेहनी दैव करे
शी केड ॥ पाप तणी मन नाणे शंक, जे नर जीव
प्रत्यें दिये श्रंक ॥ ७५ ॥ बालां कुलां नीलां हरी,
खांतें खुंटे लीलां करी ॥ कीधां कर्म जीवशुं करे,
मरी पुरुष कोढी श्रवतरे ॥ ७६ ॥ उंट बलद नैंसा
ढालकां, न्नारें पीडे लोन्नी थकां ॥ इम पापें पूराये
घडो, ते परन्नव थाये कूबडो ॥ ७७ ॥ जातिमदें मद
मातो फिरे, जीव तणो जे विक्रय करे ॥ जे कृतघ्न श्र
वगुण श्रावास, ते नर परन्नव थाये दास ॥ ७८ ॥ वि
नय हीन वर्जित चारित्र, दान तणा गुण नहिय प
वित्र ॥ मनसादिक जे नवि संवरे, ए नर दारिड्री श्र
वतरे ॥ ७९ ॥ विनयवंत दानें उल्लसे, चारित्रना गुण
वासें वसे ॥ लोकमांहे तस कीर्त्ति घणी, महोटी रु
ड्डि तणो ते धणी ॥ ८० ॥ विश्वासी पाडे संताप,
सूधे मन न श्रालोवे पाप॥गोयम इसे कर्में मन नडे,
ते नर रोगें पीड्यो रडे ॥ ८१ ॥ विश्वासी राखे हित

आणे भरी, बीकण होये सदा ते मरी ॥ ६४ ॥जीव
नथि ऊपर हित सदा, भय न करे न करावे कदा॥
पीड पराइ वर्जे जेह, गोयम धीर होवे नर तेह ॥
॥ ६५ ॥ लीये बारु विद्या विज्ञान, कूडो विनय करे
अज्ञान ॥ विद्यागुरुनें अपमाने बहु, तेहनुं जाणु नि
फल होय सहुं ॥ ६६ ॥ विद्यागुरुनी नकियें नख्यो,
माने विनय गुणें परिवख्यो ॥ एणी परें जे जे विद्या
जाणी, सघली सफल होवे तेह तणी ॥ ६७ ॥ देई
दान हीये न समाइ, मन चिंते में दीधुं कांइ ॥ तस
घर लक्ष्मी वहेली मले, गख्या दिवसमांहे पण टले
॥ ६८ ॥ थोडे धन निस्य थाये व्याइ, दीये देवरावे
जे पर प्राइ ॥ पुण्यथकी परजव रंगरोल, तसु घर क
मला करे कल्लोल ॥ ६९ ॥ जे जेहनें मनगमतुं होय,
भाव सहित रूपिनें दिये सोय ॥ देई मन उच्चाट न
जास, तस घर लक्ष्मी रहे थिरवास ॥ ७० ॥ पशु पं
खी माणसनां बाल, जे पापी पीडे विकराल ॥ तस
घर गोरु न होये शिरे, जो होये तो निश्चय मरे ॥
॥ ७१ ॥ जेह तणे मन दया प्रधान, गोयम तस घर
बहु संतान ॥ अणसांनख्युं सुणुं कहे जेह ॥ परजव
बहेरो थाये तेह ॥ ७२ ॥ अणदीठानें दीठुं जणे, धर्म

सोय ॥ ए० ॥ मन वांकडो करे नित्य पाप, होशें जीव विराधे आप ॥ जेहनें देवगुरुशुं खेश, रूप न पामे ते लवलेश ॥ ए१ ॥ यंत्र तंत्रनें नाडी दोर, खङ्ग कुंतें करी कठोर ॥ जे पापी पीडे पर जंत, ते पामे वेदना अनंत ॥ ए२ ॥ प्राणी संकट पड्यो अचिंत, वंधन मरणें थयो जयजीत ॥ दया करी मूकावे कोय, तसु शिर वेदन निखर नवि होय ॥ ए३ ॥ हियडे नेहने निविड परिणाम, अति अज्ञान महाजय जाम ॥ कर्म आशातावेदनी घणुं, तव पामे एकेंडिय पणुं ॥ ए४ ॥ पुण्य पाप पर लोक न आज, त्रिजुवन को नथी ऋषिराज ॥ जे नर माने ईश्यो विचार, गोयम तेहनें थिर संसार ॥ ए५ ॥ पुण्य पाप बे लोक मझार, ठे जिन सेवित सुगुरु नर नार ॥ महिमंरूल मुनिवर बे सही, माने ते संसारी नही ॥ए६॥ निर्मल ज्ञान अठे चारित्र, दर्शन जूषित देह पवित्र ॥ ते नर मरी तरी संसार, थाये शिवपुर तणो शिणगार ॥ए७॥

॥ दोहा ॥ जं जं गोयम पूबियुं, वीरजिणेसर पास॥ तं कहियुं त्रिजुवन गुरें, गिरुआ वचन विलास ॥ ए७ ॥ जविक लोक तुमें सांजली, वाणी बहुत विचार ॥ पुण्य पापफल प्रगटवे, प्रीबो हृदय मझार ॥ एए ॥

करी, आलोयण आलोये खरी ॥ परभव तसु महि
मा ए वडो, रोग न आवे घर ढुंकडो ॥ ८२ ॥ करे
जे बहु लाघव केटला, हुं जाणुं नर नहीं ते भला ॥
कूडे तोलें करे कुंसाट, अधिक लेइनें आपे घाट ॥८३॥
प्रत्यक्ष पुरुष न वीहे पाप, वली वरांसे पाडे माप ॥
लोभे लेवा हिंडे बहु, नखर क्रियाणुं वेचे सहु ॥८४॥
जेह तणे मन अति अभिमान, माने अवरने तृण स
मान ॥ लेइ आपतां करे जे खांच, मुख बोलतां नहिं
खल खांच ॥ ८५ ॥ पाप बहुल मांके विवसाय, इस्या
अवर जे करे उपाय ॥ ते नर परभव दुःखियो दी
न, सघलां अंग हुवे तसु हीन ॥ ८६ ॥ संयम स
हित गुणें गहगहे, जे सुसाधु शीखें दृढ रहे ॥ तास
पूठ करवे पडवडो, ते परभव थाये बोबडो ॥ ८७ ॥
जेहनें धर्म तणी नहीं आंख, ठेदे पंखी जातिनी
पांख ॥ तेहनुं जब आयुखु पते, थाये तूठो भव आ
वते ॥ ८८ ॥ दया रहित करे दिन रात, पशु कुमा
री प्रत्यें कुजाति ॥ गाये घाय करे गलगलो,
परभव ते थाये पांगुलो ॥ ८९ ॥ सरल स्वभाव
धर्म अहिठाण, जीव जतन जे करे सुजाण ।
जिन गुरु पाय भक्तो नित्य होय, रूपें मदन सरीखें

सोय ॥ ए० ॥ मन वांकडो करे नित्य पाप, होशें जीव विराधे आप ॥ जेहनें देवगुरुशुं खेश, रूप न पामे ते लवलेश ॥ ए१ ॥ यंत्र तंत्रनें नाडी दोर, खड्डे कुंतें करी कठोर ॥ जे पापी पीडे पर जंत, ते पामे वेदना अनंत ॥ ए२ ॥ प्राणी संकट पड्यो अचिंत, बंधन मरणें थयो जयजीत ॥ दया करी मूकावे कोय, तसु शिर वेदन निखर नवि होय ॥ ए३ ॥ हियडे नेहने निविड परिणाम, अति अज्ञान महाजय जाम ॥ कर्म आशातावेदनी घणुं, तव पामे एकेंद्रिय पणुं ॥ ए४ ॥ पुण्य पाप पर लोक न आज, त्रिनुवन को नथी ऋषिराज ॥ जे नर माने ईश्यो विचार, गोयम तेहनें थिर संसार ॥ एए ॥ पुण्य पाप ठे लोक मकार, ठे जिन सेवित सुगुरु नर नार ॥ महिमंरुल मुनिवर ठे सही, माने ते संसारी नही ॥एद॥ निर्मल ज्ञान अठे चारित्र, दर्शन जूषित देह पवित्र ॥ ते नर मरी तरी संसार, थाये शिवपुर तणो शिणगार ॥ए७॥ ॥ दोहा ॥ जं जं गोयम पूठियुं, वीरजिणेसर पास॥ तं कहियुं त्रिनुवन गुरें, गिरुआ वचन विलास ॥ ए८ ॥ जविक लोक तुमें सांजली, वाणी बहुत विचार ॥ पुण्य पापफल प्रगटवे, प्रीछो हृदय मकार ॥ एए ॥

पृछा उत्तर वेहु मली, अडचालीश प्रमाण ॥ अरथ घहुल तुमें जाणजो, जग जयवंता जाण ॥ १०० ॥ पळ्या गुण्या प्रीछ्या तणो, कवि कहे एहज मर्म ॥ द या सहित आदर करी, कीजें जिनवर धर्म ॥ १०१ ॥

॥ चोपाइ ॥

॥ वीरविमल केवलनु गेह, जांज्या जविक तणा संदेह ॥ हरख्यो तव गोयम गणधार, सजा सहु जंपे जयकार ॥ १०२ ॥ समयरत्न जयवंत मुणीश, एम जंपे जग तेहनो शिष्य ॥ सुणजो वर्णावर्ण अक्षर, ठति सारु करजो उपकार ॥ १०३ ॥ लहे अरथ गोयम गणधार, तो पण आणी पर उपकार ॥ वीर कन्हे बहु पृछा कीध, जविक प्रत्यें प्रतिबोधज दीध ॥ १०४ ॥ एम जाणी कवि करे विचार, जूठं एह सं सार असार ॥ पुत्र कलत्र पोढां घरबार, रहेशे सो वन धन शणगार ॥ १०५ ॥ जातां जीव न लागे वा र, काया कूटी कीजें ठार ॥ जनमतणुं एहिज फल सार, कीजें कांई पर उपकार ॥ १०६ ॥ हियडे अवर म धरजो जर्म, ते उपकार कहीजें धर्म ॥ पुण्य पाप साथे आवशे, सहु आपणे काज लागशे ॥ १०७ ॥ कवि कहे हुं शुं बोलुं बहु, जिणवर तो जाणे ठे सहु ॥

पुण्यकाज करशो एक ससा, शिवसुख लेहशो वीशे व
सा ॥१०८॥ श्रीमुख गौतम पूछा करे, वीर सरीखा सं
शय हरे॥ वेहुनी वाणी अमृत समान, अमृत वाणी
एहनुं अभिधान ॥१०९॥ एह चोपाइ रची चोशाल,
कोण संवतनें केहो काल॥ वरस मास कहिशुं दिन
वार, जोई लेजो जाण विचार॥११०॥पहेली तिथिनी
संख्या आण, संवत जाणो एणे अहिनाण ॥ बाण वे
द जो वांचो वाम, जाणो वरष तणुं ते नाम ॥१११॥
वासुपूज्य जिनवर जे नमो, चैत्रथकी मासज तेत
मो ॥ अजूआली अगीयारस सार, तिहां सुरगुरु गिरु
उ गुरुवार ॥११२॥ डुहा सवे बाणुं चोपाइ, एक जप
माला पूरी थाइ॥ऊपर अधिको पाठ वखाण,ते संख्या
ना मणिया जाण ॥ ११३ ॥ एम गणतां जे आवे दो
य, सहस लाखनी संख्या होय॥ एक रहे सविहुकोनो
वतु, ते ऊपर फरके फूमतुं ॥ ११४॥ उ जपमाली एक
गुण वहे, एहना गुण कोइ पार न लहे॥ पगपग बिंदु
हुये वली तिहां, गणतां छिद्र नही वली जिहां॥११५
॥ जोतां गुण दीसे अति घणा, वारु वर्ण अछे तेह
तणा ॥ पढतां गुणतां सुणतां सार, सविहुं ऊपर सुख
दातार ॥ ११६ ॥ मानव मन माया परिहरो, मेली

काया निर्मल करो ॥ आ जपमाली हीयडे धरो, मु
क्ति वधू जिम लीलायें वरो ॥ ११७ ॥ ध्यान धरीनें
गाप उद्धरो, कूडी कुबुद्धि ते परिहरो॥मोह मूको ना
णो अभिमान ॥ एक मना ध्याओ धर्म ध्यान ॥ आ
श अन्याय्यान परिहरो, रयणी भोजन ते मत करो
॥ ११८ ॥ श्रीसमकेतशु धारे व्रत, भाग्यवंत पाले ए
चित्त ॥ अतीत अनागतनें वर्त्तमान, ए त्रण काल
करे जिन ध्यान ॥ ११९ ॥ कीधां कर्म जो बूटे तोय,
दान शील तप मति जो होय ॥ मन शुद्धि
विण सहु ए आल, जेम जो जाणो होय इद्रजाल
॥ १२० ॥ कर्म करे जीव काया सहे, हीये विचारी
जोइ ते लहे ॥ एक मना समरो नवकार, पूरव चौ
दमांहे जे सार ॥ १२१ ॥ ए संसार असारह अछे,
विगतें जाणेशो तमे पछें ॥ आ जपमाली हियडे धरो,
मुक्तिवधु जेम लीला वरो ॥ १२२ ॥ जपमालीशु सं
ख्या कही,को जाणे को जाणे नही ॥ कवि कहे कुणही
मकरशो रीश, सर्वे मलीनें होये एकवीश ॥१२३॥आण
जाणतां कछु होये अलि,अविकु ठेहुं समजो वली ॥
मुनि लावण्यसमय कहे इस्यु,धन्य मन जे जिन वचनें
वस्युं ॥ १२४ ॥ इतिश्री गौतमपृछा चोपाइ संपूर्ण ॥

ॐ

॥ श्री गौतम गुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ श्रीअंजनासतीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ शियल समोवड कोइ नहीं, शीयल सबल आ धार ॥ शिवसुख पामे शियलथुं, पामे भवनो पार ॥ १ ॥ जीव जगतमां ऊद्धर्या, जेहनुं अविचल नाम ॥ शियलवती अंजनातणो, रास भणुं अभिराम ॥२॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ तो जीहो पहलेने कम्वे हो पाय नमुं, भव दुःख भंजन जे भगवंत तो ॥ कर्म काया तणां का पशुं, परभव पापनो आणशुं अंत तो ॥ रास भणुं सती अंजना, दान दया गुण शियल संतोष तो ॥ विरहिणी वली रे वैरागिणी, संयम साधीने गइ सु रलोक तो ॥ तो जीहो सती रे शिरोमणि अंजना ॥ १ ॥ तो जीहो सती रे शिरोमणि गायशुं, उपनी वंश विद्याधर मांय तो ॥ नामेंहो नव निधि संपजे, एनुं भजन करतां भवदुःख जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ ब्राह्मीने सुंदरी वंदियें, राजा हो रुष

न तणे घरे पीयतो ॥ घालपणे तप वन गइ, काम
भोग न मांला जेह तो ॥ सती रे वंदू सुलोचना, मे
घ सेनापतिने घरे नार तो ॥ अजना सती रे सीता
भली, तारा न चूकी रे शील लगार तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ३ ॥ तो० ॥ पांचशे किसन कुमारिका, इण बाल
कुमारीने लागुजी पाय तो ॥ जादव जान जाणी क
री, द्वारिका दाझ देखी तप वन जाय तो ॥ हरि
तणी अगना वंदीये, जेणे राग छोडी मन धरियो
वैराग्य तो ॥ राजिमती पाय पूजीयें, जोणें घोर सं
सारनो कीधो ठे स्यागतो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥
चंदन बाला हो चिरंजीवो, जेणे आहार दीधो म
हावीर तो ॥ बाल कुमारी रे साधवी, अनशन सा
धी पामी भव तीर तो ॥दमयंतीयें बहु दुःख सह्यां,
सतीय पणे रही से वनमांय तो ॥ माता मदालसा
वंदिये, ते तो कुटुंब तारि करी शिवपुर जाय तो ॥
तो०॥स०॥ ५ ॥ तो० ॥ मयणरेहा रति सुंदरी, जेणे
नयण काढी दीयां रास्युं ठे शील तो॥ ठपन्न सहस
सार्थे तप वन गइ, मेहली मंदोदरी लंकानी लील
तो ॥ शील उपदेश शास्त्रें करी, (इमे) शुद्ध शुद्ध
कया ठे एम अनेक तो ॥ तेह वांदू सरवे साधवी,

रूडी अंजनाना गुण केटला कहिश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ वंश वग्गो रे रलियामणो, राज करे त्यां रावण जगपाल तो ॥ अंजनाना गुण सांभली, ए कथा उपरे अति घणो ख्याल तो ॥ चित्त वसी रंग रायने, तेवारें सभामां पूछे वारोवार तो ॥ कविजन रास प्रकाश जो, अक्षर आणजो अतिघणा सार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ महेंद्र पुरी रे जग जाणीयें, राजा हो महेंद्र वसे तिण ठाम तो ॥ तस पटराणी छे रूअमी, मनोवेगा छे तेह तणुं नाम तो ॥ पुत्र सो रायना निर्मला, रूपें ते रूडाने दर्शन काम तो ॥ केडेथी जाइ एक कुंअरी, अंजना सुंदरी तेह तणुं नाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ८ ॥ तो० ॥ बापने वाहाली रे बालिका,मायने जीव थकी घणुं हेत तो ॥ सो बंधव वच्चें एक बेनडी, लाडकी नानकी गुणतणी गेह तो ॥ सर्व विद्या भणी सुंदरी, चाले जेम गजगति गेल तो ॥ स्वजन सहुने सोहामणी, दिन दिन वाधे जाणे चंपक वेल तो ॥तो०॥स०॥९॥

॥ दोहा ॥

॥ भर जोबनमां ते थइ, कुंअरी चतुर सुजाण ॥ जैन मार्गमां दीपती, बोले मधुरी वाण ॥ १ ॥ एक

समे शणगार करी, पुहति पितानी पास ॥ पुत्री देखी राजवी, पर जोवन सुविलास ॥ २ ॥ ए वेटी सुज वल्लही, केने परणावुं जोय ॥ घर वर सरखुं जो मळे, तो जगमां यश होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तो जीहो रायें प्रधान तेडावियां, अंजना वरतणो करो रे विचार तो ॥ एक कहे रावणने दीजीयें, बीजो कहे दीजीयें मेघ कुमार तो ॥ वर ठे हो प्रभुजी रूयडो, जोवन जरते साधशे जोग तो ॥ व र्षे अढारमें तप करी, वर्षे ठव्वीशमां पामशे मोक्ष तो ॥ ते मारें कन्याने सुख नहीं, शरीरें उपजे अति घणु दुःख तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ रतन पुरी तणो राजीयो, राय प्रल्हाद विद्याधर जाण तो ॥ तस घर पुत्र ठे दीपतो, पवनजी लग्न कीधु रे प्र माण तो ॥ अंजनाना गुण सांजली, देश विदेशे या यी ठे विख्यात तो ॥ पवनजी मित्रने एम कहे, आ पणे रूप जोवुं जइ नखि जाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥२॥ तो० ॥ पवनजी लाग्यो रे निरखवा, पुरोहित नीची घाली रह्यो दृष्ट तो ॥ निरखतां तृप्ति पामे नहीं, ना री नदीठी भूतल हेठ तो ॥ दरिसण जाणु रे देवां

गना, बोलतां बोले छे सुललित वाण तो ॥ चंपक व
रणी हो सुंदरी, एहनां नयन जाणे मृगलणां बाण
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ बेठी सिंहासनें अं
जना, बेहु पासें सोहे सखी तणां वृंद तो ॥ वस्त्र आ
ज्ञरण अंगें धर्यां, तारामां शोने जेम पूनम चंद तो
॥ वसंतमाला एम उच्चरे, बाइ योग्य जोऊं मव्युं
एणे संसार तो ॥ जेहवा हो पवनजी जाणीयें, ते
हवी हो पामी छे अंजना नारतो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥
तो० ॥ बीजी सहियर एम उच्चरे, बाइ पेहलो वर
मन चिंतव्यो जेह तो ॥ तेवो हो पवनजी वर नहीं,
वर्ष अढारमां तप करशे तेह तो ॥ पांच इंद्रिय ति
हां जीपशे, वर्ष छव्वीशमां पामशे मोक्ष तो ॥ ते
णे करी विवाह वर्जियो,कन्याने होवे वर तणुं दुःख
तो ॥ तो०॥ स० ॥५॥तो०॥ अंजना आनंदें एम उच्च
रे, बाइ धन धन ते नरनो अवतार तो ॥ कर्म का
यातणां कापशे, वेहेलो पामशे ज्ञव तणो पार तो ॥
पाय वंदूं ते पूज्यना, बे कर जोडीने नामुं बु शीश
तो ॥ पवनजी कोपें रे धम हडयो, मनमां आणी छे
अति घणी रीश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ पवनजी
कोपें रे परजव्यो, धनुष्य चढावीने साध्युं छे बाण

तो ॥ मारा रे अवगुण बोलती, पर पुरुषनां करे रे वखाण तो ॥ मन्त्रीयें आवीनें वाहे धस्यो,जोरें नारीने नर नवि घाले रे घाय तो ॥ पाये लागी करी प्रीछ व्यो, ओरणे घालीने मार्गे लेइ जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ पवनजी मन मांहे चिंतवे, एतो रूपें रूडीनें दर्शनें काल तो ॥ मनमांहे मेली रे पाप णी, पनु चित्त चोखुं नहीं कर्म चंमाल तो ॥ पुरुष परायाशु मन रमे, पवनजी चिंते एसो रे उपाय तो॥ मेहलु तो एहने रे वर घणा, परणीने परिहरु ए सम नहीं कोइ दाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ८ ॥ तो० ॥ लगन लयो दिन आवियो, ढोल ददामाने घूरे नि शाण तो ॥ राय राणा हो सर्वे मल्या, हवे व्यापियुं तिमिरने आथम्यो भाण तो ॥ महेंद्रराय आव्यो सामइ ए, पवनजी देखीने आनंद थाय तो ॥ धवल मंगल गावे गोरडी, हवे अजनानो वर जोवाने जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ तोरणें वरराय आ वियो, अंजना उपरें अति रे अजाव तो ॥ सांजल तां शिश चटको चढे, नाम लेतां चढे हृरु हुड ताव तो ॥ धवल मगल गावे गोरडी, पोखणां सासु करे बहु भावतो ॥ वरने विमासण अति घणी, जाणे ए

धन शाखामां लेइ जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥
तो० ॥ रूपा तणो रे मंडप रच्यो, सोनाना कलश
सोना तणी वेल तो ॥ सोवन पाट मोती जड्या, अं
जना पवनजी वेठां वेहु हेल तो ॥ हाथ मेलो तिहां
संचरे, नयणें निहाले विद्याधरी नार तो ॥ अंतर प
ट पाछो करी, जाणीयें कर मांहे ग्रह्यो रे अंगार तो
॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ तो० ॥ परणी पसटी उतस्थां,
करे पहेरामणी अंजनानो तात तो ॥ गज रथ आ
प्या रे अति घणा,ताजा तुरंगम देश विख्यात तो ॥
धन कंचन मोती रे आपीयां, आपी छे रयण तणी
बहु क्रोड तो ॥ वसंत माला रे आदें करी, पांचशे
साहेली पूठें छे जोड तो ॥ तो० ॥ स० ॥१२॥ तो०॥
रतन पुरी मांहे संचस्या,साहामो हो आव्यो छे राय
प्रल्हाद तो ॥ अंजना पाय पूजी करी, सकल मनो
रथ मुऊ फल्या आज तो ॥ सासुनां पाय तिण पूजी
या,आप्यां छे आजरण रयण अमूल्य तो॥पांचशे गाम
राये दीयां,ए वहू अर मारी जीवन तुल्य तो ॥तो०॥१३

॥ दोहा ॥

॥ परणी मेली पदमिणी, मूकी महोल मोझार ॥
अहिनी कांचलीनी परें, फरी न पूछी सार ॥१॥ अं

तर हेत हुवे नहीं, तों नयणा नेह न होय ॥ नेहवि हूणी तेहनी, वात गमे नहीं कोय ॥ २ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥

॥ तो० महोटांरे मंदिर मालियां, आपी वहूने सो एम कहे राय तो ॥ कुलवहू लीला इहां करो, सुख संयोग विलसो एणे ठाय तो ॥ पवनजी सार पूछे नहीं, अंजना आर्त्ति हैये न समाय तो ॥ कहोने कारण किशुं वेहेनकी, सूध न सार कीधी अम तणी नाह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ दीयरणी आवी रे सुखकी, वसंत माला कर मोकली सोय तो ॥ छड करी स्वामी आगल धरी, गायंता गांधर्वने दीधी ठे तेह तो ॥ वस्त्र आभरण जे मोकल्यां, जाणुं महारा स्वामीने शोजशे अंग तो ॥ वस्त्र फाकीने कटका करी, आभरण लेइ आप्या ठे मतग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंत माला रे विलखी थइ, आवीने अंजनाने कही ठे वात तो ॥ जे वस्तु स्वामीने मोकली, आपण ऊपर किश्यो रे अचाव तो ॥ अंजनाने आंखे आंसु करे, शु चूकी ठे नकि अनेकतो॥ए नर वीसे ठे निर्मलो, कांइक आपणा कर्म विशेक तो०॥३

॥ दोहा ॥

॥ बोल कुबोल न वीसरे, शल्य समा सालंत ॥ क्षिण एक रति नवि उपजे, अरति घणि आणंत ॥ १ ॥ नजर न मेले नाहलो, उपजे अति उच्चाट ॥ आवटणुं लागे घणुं, विरहज वांकी वाट ॥ २ ॥ मातपितानी लाडकी, सासु ससरा शुद्धदिठ ॥ कंत भया विण कामिनी, उंगो देखे नीट ॥ ३ ॥ पवनजीनी पदमिणी, परम महासुखकार ॥ नाह नेह नीपट नहीं, मेली माथे जार ॥ ४ ॥ प्रीतम मन मेल्यो परखे, आदर न करे उर ॥ दोष गाठोरि दाखवे, सासु ससरा जोर ॥ ५ ॥ आदर विण दिन अंजना, काढे करी घणे कलेश ॥ मात पिता मन मूकवे, विण अपराध विशेष ॥ ६ ॥ दिन पलट्यो पलट्यां सजन, जांगी हैयानी हाम ॥ जेना करती उबरा, ते नवि ले मुज नाम ॥ ७ ॥ प्रीतम विण विलखी फरे, जलविन नागर वेल ॥ वणजारानी पोठ ज्युं, गयो धुखंती मेल ॥ ८ ॥ बोले अंजना सुंदरी, नागरि चतुर सुजाण ॥ प्रीतम विण विलखी फरे, गुण विण लाला कबाण ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ तो० अंजना बेठीरे मालीये, पवनजी तुरिय

खेलावन जाय तो ॥ आवतो जावतो निरखती, तेम
तेम हरख वाधे हैयामांय तो ॥ पवनजी कोपे रे प
रजल्यो, अंजना आणे छे अति घणी प्रीत तो ॥ जा
णे रे नारी निरलखशे, तेयारें गौख आडी करावी
भींत तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ पांचशें गाम
पोलें लीयां, राय राणी वेठ वरजे छे पुत्र तो ॥ अज
ना सती रे सुलखणी, ए वहूने सोंपीयें निज घर
सूत्र तो ॥ महोटा रे कुलतणी ऊपनी, राजा हो म
हेंद्रतणी बहुलाज तो ॥ अजना आदर कीजीए, ए
म कहे केतुमतीने राय प्रस्ताव तो ॥ तो० ॥ स
॥ २ ॥ तो० ॥ आयां घणां पाछां वालीयां, एणे रे
आणे आव्यो वरो वीर तो ॥ अजना कहे रे नवि
आविये, अन्यथादूषण मोकल्यां चीर तो ॥ स्वामी
रे मन मान्यां नहीं, हुं तो पियरें आवीने शुं क
वात तो ॥ बंधव पाछो रे वालीयो, मान पिता दुःख धरे
दिन रात तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ बारवरस
वरशें वहि गयां, इण कथा उपर एटलो संबंध तो
॥ रावण वरुण वेहु कटक करी, मांहोमांहे ऊपन्यो
छे अति घणो दंदतो ॥ गज रथ घोडा पालख्या, पा
खरे बखतर शोभे शरीर तो ॥ शूराने सुभट शण

गारिया, हवे जोतस्या रथ वाजे रणभेर तो ॥ तो० ॥स०॥४॥तो०॥ तेकुं विद्याधरने मोकल्युं, एक तेकुं आ व्युं राय प्रल्हाद तो ॥ जेटले राय सान्निध्य करे, प वनजी कहे स्वामी अमतणुं काम तो ॥ आयुध शा लामांहे संचस्यो, करमांहे धनुष्य लीधां जइ बाण तो ॥ तमें घेर बेठा लीला करो, पुत्रजाया तणुं ए बे प्रमाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ पवनजी चा ल्यो रे कटकमां, स्वामियें कीधी न अम तणी सार तो ॥ दूर थकी पाये लागशुं, जाव कुजाव जोशुं ए कवार तो ॥ वसंतमाला माहारी बेनमी, शुद्ध शीख दिये मुज देव तो ॥ दहिनो रे डवो जरी करी, मा रगमां उजी अंजना देव तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ कनक कचोलुं रे दहिंए जस्युं, शकुन मिशे मही लेइ जाय तो ॥ कटकें जातां पियु वांदशे, त्यारें नमण करी लागिश पाय तो ॥ जाणशे अंजनाने आ दरी, राजजवनमां देखशे लोक तो ॥ ज्यां लगें स्वा मी आवे नहीं, त्यां लगें मनमांहे करुं रे संतोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ गयंद बेसी संचस्यो, मात पिताने नामियुं शीश तो ॥ सज्जन सहुने सं तोषिया, अंजना उपरे अति घणी रीस तो ॥ दूर

थकी रे इणें थकी, चतुर चितारानु जुर्ठ चित्राम तो ॥ पूतली खरी रे रंभा जिसी, चतुर चितारानुं जा णु ए नाम तो ॥ तो०॥ स०॥ ए ॥ तो० ॥ मंत्रीकहे नहिं पूतली, जीव ठंतगे ठे अजना नार तो ॥ सां जली राय रातो थयो, मार्ग जातां स्वामी मली अ ठार तो ॥ दूर ठेली ते अलगी पडी, मारग मेलीने चाल्यो ठे साथ तो ॥ वसंतमाला मोढे करकका, बा इ मूरख दीसे ठे तम तणो नाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥ए॥तो०॥थांइ साहीने वेठी करी, ठोरडे घालीने घर माइ तो ॥ कटक चाल्यु हो रावण तणुं, ठीकर्ता चा ल्यो ठे माहरो नाह तो ॥ जीवने जोखम अति घणुं, पहोच्यु ठे माहरे अति घणु पाप तो ॥ वेली रे गा ल न दीजियें, कटकें चालतां केम दीनो ठे शाप तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ अंजना कहे सुण सुंदरी, डुःख मांहे डुःख मुऊ उपन्युं आजतो ॥ पा णीवीणकरी पातली, ससरा वच्चें मारी निगमी लाज तो ॥ सासुने मुख केम दाखबु, घर वेसी जिनतणु नाम जपीश तो ॥ चरित्र मनमांहे चिंतवुं, अवसर आवीने संयम लेइश तो ॥ तो०॥ स०॥११॥तो०॥ नगर थकी दूर दीधुं मेलाण तो ॥ चकवो ने चकवी त्यां टलव

ले, व्याप्युं तिमिरने आथम्यो जाण तो ॥ पवनजी मंत्रीने एम कहे, नारी तणुं नहिं लीजीयें नाम तो ॥ पुरुष परायशुं मन रमे, एने चकवीनी पेरें मूकी में गाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १२ ॥ तो० ॥ मंत्री कहे सुणो विनति, एवको कांइ आणो हैयडे जर्म तो ॥ महासती मांहेरे मूलगी, अहोनिश सेवती जिन तणो धर्म तो ॥ पुरुष परायो वांछे नही, वचन वरांसे कांइ करो रीश तो ॥ शीयल सरोवरें झीलती, एणें मोक्ष गामी जाणी नाम्युं शीश तो ॥तो०॥स०॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणि मंत्री तणां, कोमल जयो निज चित्त ॥ पवनजी मंत्रीने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥१॥ खोटुं कारज ए में कस्युं, संतापी निज नार ॥ वचन वरांसे डुहवी, करवो कवण विचार ॥ २ ॥ मो मनमें प्यारी वसे, जाणुं मलियें जाय ॥ लोकें लाज रहे नहिं, मनही मनमें मूंजाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ तो० पवनजी मित्रने प्रीछवे, कटकें चालुं तो नारी मास्यानुं पाप तो ॥ पाछो वलुं तो प्रजा हसे, महोलमां लाजशे मुज तणो बाप तो ॥ मित्र कहे

ठानारे जायशु, तेढी सेनापतिने दीधी ठे शीख तो ॥ जात्रा करी अमें आवशु, त्यां लगे कटकनो करजो प्रेख तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो ॥ प्रह्लाद गर्से त्यां आवीया, आवीने अजनानां ठोम्यां कमाम तो ॥ वसतमाला भोगल देइ करी, पवन उतावला बोल ती गाल तो ॥ शूरारे पुरुष कटकें गया, संपट लोक रह्या ठे रखवाल तो ॥ ज्हायें हुं रायने वीनवी, तेह तणी रे कहावीश लाख तो ॥ तो० ॥ स०॥२॥ तो॥ पुरोहित मंत्री एम उच्चरे, वाइ ए ठे राय प्रल्हाद ना नद तो ॥ अजना केरोरे शिर धणी, वंश विद्या धर उपन्यो चद तो ॥ वसंतमाला आवी उंलख्या, नयणें निहाले तो आपणो स्वाम तो ॥ सती रे सा माथिकें ज्यां लगें, त्यां लगे राय रहो इणे ठाम तो॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ धर्म क्रिया करि अंजना, आवीने पवनजी बोले ठे मर्म तो ॥ माहा सतीमांहे रे मूलगी, अहोनिश सेवती जिन तणो धर्म तो ॥ वचन वरासें में डूहवी, में तुने कीधो अजाण अगा ध तो ॥ हाथ जोमीनें नीचो नम्यो, खमो खमो अं अना मारो अपराध तो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥ अंजना आवीने पाये नमे, एवा हुलवा कांबोलो उ

चार तो ॥ जेवी रे पग तणी मोजमी, तेहवी होवे रे पुरुष तणी नार तो ॥ हाथ जोमीने आगल रही, व चन सोहामणां बोले ळे दीन तो ॥ प्राप्ति विना केम पामिए, एणें पत्थर फोडीने कीधो ळे मीण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ त्रण दिवस तेहने घरे रह्या, खट रस जोजन पिरसे पकान्न तो ॥ विंऊणे वायु बेठी करे, बीमां वालि वालि आपे ळे पान तो ॥ नाटक नाचीने रीऊवे, वीणा वजाइ गावे जिन गीत तो ॥ पवनजी आनंद पामी रह्या, अंजना हरखुं ळे राय तणुं चित्त तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ प्रछन्न गतें जिम तुमें आवीया, रायराणीने करजो जाण तो ॥ आशा पहोंचे सहु अम तणी, बाहानुं आजरण दीधुं सहि नाण तो ॥ वसंतमाला रे तेडी करी, अंजना महारे चिंतामणिरत्न तो ॥ दांतने जी ज शी जलावजी, रात दिवस एनुं करजो जतन तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ वसंतमाला रे बोलावी ने, राजा हो पवनजी कीधो जुहार तो ॥ धण कंचण मोती रे आपीयां, हवे कुंची सहित आप्या ळे जंडार तो ॥ पुरोहित मंत्रीने एम कहे, रणमांहे राजानी राख जो देह तो ॥ वेहेला ते घेर पधारजो, वाट जो

छ जाणे श्रावण मेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥८॥ तो० ॥ शीख दीर्ध अजना चालीए, रणमां जाइ देखाम्जो भुज तो ॥ पुत्र सो श्रावशी वरुणना, ते श्रागल रखे देखाम्रो पूवतो ॥ दुर्जन कटक ठे घरुणनुं, घोहतणा स्यां पढशे श्रंगार तो ॥ सहियर वचन प हवां कह्यां, मरण जखु पण नहीं जली हार तो ॥तो०॥ स०॥ए॥

॥ दोहा ॥

॥ राय पराया गोरमें, मत जागो राज कुमार ॥ खंडण लागे दो कुलें, मरवुं एकज वार ॥ १ ॥तो० ॥ पोलघकी रे पाठी वली, नयणे वछूटी ठे जलतणी धार तो ॥ कठिन वचन कह्यां कतने, मुख ढांकी रुए ठे वारो वार तो ॥ वसंतमाला श्रावी वीरज दीए, वाइ हमणां श्राव्यो सामायिक काल तो पव मिणी पडिक्कमणुं करो, घळवे नियमनी करो शुद्ध निहाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ शुद्ध सामायिक उच्चरे, करे ध्यान धर्मनु घली दोइ घार तो ॥ पांचे पर्वी तप उच्चरे, वारे हो व्रत पच्यां तिण वार तो ॥ सांजे वेसीने सफ्ताय करे, जावना घार चिंतवे मनमांय तो ॥ पाठली रातें तो पढे गुणे एणी पेरें श्रंजनाना दिन आय तो ॥ तो०॥स०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सेनाऐं करी परिवस्त्यां, लंका नयरी जाय ॥ नृप नली परे नेटिया, अति रहियायत थाय ॥ १ ॥ रावणनो आदेश लइ, शुजवेला सुविचार ॥ वरुण उपर ततूक्षण चढ्यो, दल सबल अनुसार ॥ २ ॥ ह वे ते अंजना सुंदरी, गर्न रह्यो ते रात ॥ गुप्तपणानुं काम हे, कोइ न जाणे वात ॥ ३ ॥ गर्न तणे शुज लक्षणें, गर्न जणाणो जाम ॥ केतु मती सासू कहे, केवुं कस्युं ए काम ॥४॥ पवनजी तो परदेशमें, वहू ए वधास्युं पेट॥हुं जाणती एमज होशे,सोइ होयुं नेट॥५

॥ ढाल छठी ॥

॥ तो० उदर उंधान जाणी करी, बिहु जणें मांडी हे दाननी शाल तो ॥ साध वेला नित्य साच वे, छुःखीया दोहिलानी करे हे संजाल तो ॥ नित्य पात्रने पोखती, शेरीयें शेरीयें मांड्यों सत्रुकार तो ॥ नाव नले मनें उलटें, दिन दिन दीसे हे चमतो प्र ताप तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ राणीजी रा यने वीनवे,सांजलो स्वामि मुज वीनति आज तो ॥ अंजना करे रे उमावणा, धुर लगें धणीयें न कीधी सार तो ॥ घर फोमीनें वित्त वावरे, कटकें जातां एनुं

मरश्यु छे मान तो ॥ घरे जाइ करी नहि प्रीछवुं, न
हीं तो करशु एहनु अपमान तो ॥ तो० ॥ स० ॥२॥
तो० ॥ शीख मागीरि स्वामी कने, पालखीयें बेठी आ
रोगे छे पान तो ॥ आगल पात्र नचावती, जाचक
जोइ जोइ आपे छे दान तो ॥ साथें रे सहीयर अ
ति घणी, सरखे सादें गांधर्व गीत गाय तो ॥ आगें
थकी जण मोकल्यो, हुवे सासु वहु तणे घेर जाय
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ शेरी शेरीयें सुर
तरु पाथस्या, आंगणे पटोळांने पाथस्या पाट तो ॥
फुलना पगर उपर धस्या, जाणे सासुजी आवशे ए
णी वाट तो ॥ साहामी आवीने पायें नमी, वरिसण
दीठे दारिद्र जाय तो ॥ वेणीना वाल छोडी करी,
तेणे करी लूवे छे सासुना पाय तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ४ ॥ तो० ॥ पालखी आगें पाली चले, सासुनी
भक्ति करे मन धीर तो ॥ सुवर्ण पाट बेसाडीया, च
रण पखालीने पीये छे नीर तो ॥ पाय पुजी दीये प्र
दक्षिणा, सासरे पीयरें मुज वाधी छे लाज तो ॥ स
कल मनोरथ मुज फल्या, माणस मांहे महोटी करी
आज तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वहूजीना
नेह देखी करी, केतुमती राणीये मन धरी रीश तो ॥

अंगनां चिन्ह फरी गयां, कहे वहू तारुं रूप केवुंआ दीस तो ॥ महोटा रे कुलतणी उपनी, वंश विद्याधर ज्योति छे नार तो ॥ साचो अक्षर मुजने कहे, ता हरे उदरें उंधानके विकार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो०॥आजरण मेली पाये,नमी कुअर तमारे मुज की धी छे सार तो ॥ विरहिणी जाणी पाछा वल्या, मुज घेर आविया रयणी मोजार तो ॥ त्रण दिवस मुज घेर रह्या, तुम पुत्रथी मुऊ पूगी छे आशतो ॥ जेम आव्या तेम पाछा वल्या, तेणे करी माहारे छे सात मो मास तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूठ म बोल तुं पापिणी, मोहोटे कुलें कुनार॥ एह अनर्थज तें कस्यो, तेणे तुऊने धिक्कार ॥ १ ॥ अकार्य मोटुं तें कस्युं, लोपी कुलनी लाज ॥ तुं कुल खंपण उपनी,प्रत्यक्ष दीठी आज ॥२॥ तारुं मुख दीठां थकां, लागे अमने पाप ॥ उलटां कर्म समाचस्थां, उपजाव्यो संताप ॥ ३ ॥ वात सुणी सासु तणी,मूर्च्छा णी तव नार ॥ उठे जल जिम माछली, करती दुःख अपार ॥ ४ ॥ सुण सासू मुऊ वीनति, में नवि कीधुं कर्म॥आ सहिनाणी जोइ ल्यो, राखो मारी शर्म॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ तो० वहूना रे वचन कानें सुणी, केतुमती मन धरियो रे रोष तो ॥ परणीने तुजने हो परिहरी, तुज मुज पुत्रनो किध्यो रे संतोष तो ॥ आज लगी रे अलखामणी, चोर्यां आजरणशु निर्मली तो ॥ वंछ्यु रे दूष शु कीजीयें, सहियर सार्थे पीयर तु जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पियर जारे पापिणी, नहीं राखु एक रात ॥ दूर जा तु देशांतरें, जेमही विगसे वात ॥ १ ॥ फाल्यु फुल शा कामनु, विणठा माननो त्याग ॥ करवं सही उतावला, न गणाबु सगपण लाग ॥ २ ॥ कञ्च न तणी छुरी होये, पण पेटें मारी न जाय ॥ मेंते तुजने परिहरी, जोइ अवगुण समुदाय ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तो० सासुना वचन कानें सुणी, अजना उपर पड्यो घणो दाह तो ॥ बाइजी पुत्र तमारो पाछो वले, त्या लगें मने राखो घरमांह तो ॥ सासुने ससरा हो तम तणी, अहिंया रहीने एवज खाउ तो ॥ चरण कमलने ग्रहि रहु, कलंक लइ केम पियर जा

ऊं तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ केतुमती राणी
जी हठ चढी, पगें करी क्रोधशुं ठेलीयुं शीश तो ॥
अंग मोमीने उज्जी थइ, थर थर ध्रुजे मनमां घणी
रीश तो ॥ आंख थकी रे अलगी करो, जिहां लगें
माहारा नगरनी सीम तो ॥ जिहां लगें अंजना इहां
रहे, तिहां लगें अन्न पाणी तणुं नीम तो ॥ तो० ॥
स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंतमालाने झाली करी, बांधी
ठे बंधनें दीधो ठे मार तो ॥ चोरयां आजरण मारा
पुत्रनां, चोर देखाडो कां मारशुं ठार तो ॥ तेर घडी
रे टेरी रही, वागे ठे ताजणाने बूटे ठे सेड तो ॥ व
लती हो सहीयर एम कहे, चोर तो पवनजी सही
हतो तेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ कालो रे
रथ अणावियो, काला तुरंगम जोड्या ठे रे दोय तो
॥ कालां रे वस्त्र पहेरावियां, काली धोंसरी दीधी
ठे सोय तो ॥ काली रे मस्तकें राखमी, काला हो
बाजुबंध बांध्या ठे दोय तो ॥ अंजना पियरें हो चा
लीयां, जो जो जाइ कर्मतणां फल एह तो ॥ तो०
॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ जुहार करी रथ संचस्यो, स
हीयरशुं बेठी ठे अंजना देव तो ॥ पवनवेगें रथ चा

---

१ सहियरशुं बेठी ठे अजना एह तो एवो पण पाठ ठे.

लीधो, थापनी चूमिका आवी ततखेव तो ॥ हरर्ष धवल घर देखिया, सारथी बोल्यो हे ततखेव तो । पेट फोडीने पथरा जरु, में वनमा मेल्यु तु अजन देव तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूख दूपण माहारु नहीं, जोर न मुज कइ म य ॥ कथन कर्युं नृपकामिनी, क्रोध थकी विलसार ॥ १ ॥ पर्गे लागी पाठो वल्यो, दीन वचन मुख वेण ॥ दिन आथमियो एटले, थई अधारी रेण ॥ २ । दूपणको केनु नहिं, संच्या कर्मज सोय ॥ वध शुज शुज आपणा, अब रोयां शु होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तो० सांज पमी दिन आथम्यो, रयण हामणी घोर अधार तो ॥ नाम जपुं रे जगनाथनु आणी मेला मुजनें एह आधार तो ॥ हाथो रे हाथ सूझे नहीं, केम करी निर्गमशु दुःख जरी रात तो ॥ शुद्ध सामायिक उच्चरे, एटले सूरज उग्यो थयो प्रजात तो ॥ तो० ॥ स० ॥१॥ तो०॥ अजना कहे सुण सुंदरी, माह मारे हैयडे घणो रे संताप तो ॥ हां रे कलंक चढावियां, मुख केम दाखवुं एम ता

बाप तो ॥ माता हो मन केम मेलशे, जाइ जोजाइ शुं केम वधशे नेह तो ॥ जिहां लगें स्वामी आवे नही, तिहां लगें केम करि निर्गमशुं दीह तो ॥तो० ॥ स० ॥२ ॥ तो० ॥ वसंतमाला वलती कहे, जिहां लगें निर्मल उज्ज्वल आप तो ॥ तिहां लगें सज्जन सोहामणा, हर्षे बोलावशे तम तणो बाप तो ॥ माता रे मनोरथ पूरशे, जाइ जोजाइ मलशे जर उमंग तो ॥ ज्यां लगें पवनजी आव्या नही, त्यांलगे पियरे पोषजो अंग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनुक्रमें वाटे चालतां, चरण थया चय चोल ॥ मन संकोचती पद्मिणी, आवि नगरनी पोल ॥१॥ नगरमांहे पेठी तिहां, लज्जा अतिही मन्न ॥ शेरी मारग संचरी, कंपति फोले तन्न ॥ २ ॥ मनमां शोचे पग पगे, केम करि दाखुं मूख ॥ कालो वेश न शोजतो, दीठे आवे दुःख ॥३॥ पीयरनी आशा घणी, पुत्रीने तो होय ॥ जो ते मन खंची रहे, उंठो जोवे सोय ॥४॥ वसंतमाला धीरज दिये, आणे मन विश्वास ॥ चाली आवे शहेरमां, आणी पियरनी आश ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ तो० नगरमाहे शेरीयें संचर्यां, आडो घूघट ने नीची वे दृष्टि तो ॥ हंस मयगल गतियें चालती, नगर तणा सहु जुवे ठे शेठ तो ॥ राजविठोड कोड कामिनी, नाथ विहूणी दिसे निटोल तो ॥ पाठल प्रजा हो परवरी, पणी पेरें पहोंची ठे बापनी पोल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ पोलीयो जनी रा खी पूठवा गयो, मोहोलमा जइने वीनव्यो राय तो ॥ हाथ जोडीने नीचो नम्यो, वाहार आवी ठे अ जना धीय तो ॥ साजली राय राजी थयो, नगर शणगारो ने तोरण बांधे तो ॥ साहामी रे मेलो जी पालखी, तेडाव्यो साथ महेंद्रनाथ तो ॥ तो० ॥स० ॥ २ ॥ तो० ॥ कानमा जइ करी विनति, अंजना सासरे परिहरी जेह तो ॥ साजली राय कांखो थयो, मूर्ला आवीने कुर्ठ रे अचेत तो ॥ बाहे साहीने वे ठो कर्यो, निर्मल वंशे कीधो अनाचार तो ॥ मत्सर चढावी राय बोलियो, पापिणी परिहरो पोलनी बा हार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पोलीए आ वीनें ठगारडया, बाइ तने रूठ्यो विद्याधर राय ॥ तो बांहे झालीने वेठी करी, मनमाय चिंतवे आणीए

माय तो ॥ अंजना मार्गे संचर्यां, शरीर शून्नुं थयु शुद्ध न सार तो ॥ आधाने पग पाछा पडे, एणी प रें पहोची छे मातने द्वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ मंदिरमांहे माता रमे, सोवर्ण हिंमोले हिंचे छे खाट तो ॥ घुमरी घाले रे कामिनी, माणकमोती हीरे जड्या पाट तो ॥ फूलनो परिमल महमहे, चं दन घसी घसी चर्चे छे अंग तो ॥ कोट वाली करी निरखीयुं,आंगणे दीठी छे अंजना चंग तो ॥ तो०॥ स० ॥५॥ तो०॥ होठ सुका रे खरी पडे, जीभ शूकी नहीं तालवे नीर तो ॥ एणी पेरे चालती बालिका, ढीचण पग तणे फाट्युं छे चीर तो ॥ कालो रे वेश शोभे नही, नयणें झरे जाणे मोतीनां वृंद तो ॥ मु ख करमायुं रे कामिनी, जाणे राहु ग्रह्यो जिम चंद तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ मंदिरमांहे माता गइ, सरले सादें हो रोवे छे माय तो ॥ हुं कां न स रजी रे वांझणी, एणें कलंक चढाव्युं छे महारा कु लमांय तो ॥ रायने मुख केम दाखवुं, लइ कटारीने वोधशुं कूख ता ॥ तेणें कुखें अंजना उपनी, माराकु लने लगाड्यो एणे दोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ राणीनुं रुदन सुणी करी, चार चेटी मली आ

चे ठे पास तो ॥ आदर विहूणी केम उभी रही, तुं कांरे उभी ठे अजना नार तो ॥ ससराने सासु लजा वियां, लजव्यां पियरने माय मोशाल तो ॥ वश वि गोवणी उपनी, घाइ तारु मुख देखतां लागे ठे आल तो ॥ सो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चेटी चार भली करी, आवी अंजना पास ॥ वचन अतुल कह्या अति, बोले सबली दास ॥ १ ॥ लाज विहूणी पापिणी, कीधो उज्जल हीण ॥ कुलने कलंक चडावियु, बोले एवां वेण ॥ २ ॥ जाति ल जावी मायनी, कुल लजाव्युं तात ॥ कुल खापण तु उपनी, हवे तु परही जात ॥ ३ ॥ वलती आवी गो रडी, जेम तेम बोलण हार ॥ मुख नवि देखु ताहरु, तुजने पडो धिकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ तो० वसंतमाला रे वलती इम कहे, एवा कांइ बोलो ठो हलवा रे बोल तो ॥ जे वारें पवनजी आवशे, सासरे पियरें मुख पडशे धूल तो ॥ संजम साधी हो तप करे, हजीय लगे ठे गर्जनो पाश तो ॥ काया हो कामिनी नवि धरे, हजीय ठे पवनजी

पुरुषनी आश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ वल
ती हो बेहु जाणी संचरी, ज्येष्ठ ज्ञाइ तणे घेर जाय
तो ॥ बांधव घरमां बेसी रह्यो, आंगणे आवी छे ते
तणी नारय तो ॥ आवी जोजाइ सामी मली, मन
विहूणी तेणें आपी छे बांह तो ॥ अंगुली दश दांते
धरे, जाजी अन्न दीठे थया दिन दश तो ॥ तो० ॥
स० ॥ २ ॥ तो० ॥ एम अंजना घरोघर हिंरुती,पग
कुंकुम वरण कमल सम देह तो ॥ खूंचे ते कांटा ने
कांकरा, तेणें रंगें जूमि राती थइ तेह तो ॥ दीन व
चन मुखें बोलती, नयणे रूरे जाणे श्रावण मेह तो
॥ जूख तृषायें करी व्याकुली, जाजी दीठां हुवां वर
स दस दोय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ वल
ती जोजाइ इम कहे, सामी रही रही बोले छे बोल
तो ॥ धुर थकी रे डाह्यां हतां, एहवुं कां कर्म कर्युं
निटोल तो ॥ अमें अबला रे शुं कीजीयें, आंगणे
आवो रखे घरमांय तो ॥ अम घेर आव्यां जो जा
णशे, तम तणा वीरनुं फेडशे ठाम तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ४ ॥ तो० ॥ आश मूकीनें ऊजी थइ, बंधव बीजा
तणे घेर जाय तो ॥ पाछली रातें पहोरो जेम फरे,
घेर घेर हिंडे छे अंजना धाय तो ॥ बंधव केणे नहीं

पूठीयु, सज्ञान कोणे नव कीधी छे सार तो ॥ दीठी रे अजना जावती, पुरोहित प्रधानें देखाड्या छे बार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ आंगणे रमती रे बालिका, मेडीयें चडी चडी जूवे छे लोक तो ॥ जिहां अजना संचरे, तिहां तिहां उपजे अति घणो शोक तो ॥ कूडां रें वयण काने सुणी, जाणे वागे छे खड्गनी धार तो ॥ दु खमां दुःख साले घणु, कहे कवि जेहनी बळी छे व्हार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ अजना तरपें रे टलवले, जब लह आव्यो कोइ ब्राह्मण धीर तो ॥ पक्षिणी पाणी रे वावरो, शीतल ज्ञरीयु छे आमां नीर तो ॥ पाणी छो बांधव शु करु, नगरमांहे हुतो नही पीयु नीर तो ॥ पोल बाहेर पाणी वावरु, पोलमांहे मारा बापनी आण तो॥तो॥स०॥७॥

॥ दोहा ॥

॥सज्ञान नेह आणे नहीं, बोले मसकु मोस ॥ सज्ञान आदर नवि दिये, मनमा न आवे रोप ॥ १ ॥ पाणी साथ जेम माछली, साचो स्नेह सुजाण ॥ जो कीजें जलथीजुआ, तो तृणमां छोडे प्राण ॥२॥ डुंगर केरा वोकला, ओछा तणो सनेह ॥ व्हेतां वहे ताछतावला, झट देखाडे छेह ॥ ३ ॥ माता पीयर सज्ञाना, धरतां

चहुली प्रीत ॥ छेडे छेह वतावियो, ओछांकी ए रीत ॥ ४ ॥ सज्जन कीजें आंवसें, अवगुण गुण करि देत ॥ ओ ततक्षण पत्थर हणे, ओ ततक्षण फल देत ॥५॥ सज्जन एसा कीजियें, जेसा चोल मजीठ ॥ आप रंगें पर रंगवे, दीठी करे अदिठ ॥ ५ ॥ आंवा जंबु कर्मदा, चोथा कहीयें बोर ॥ उपर नरम दिसे घणां, मांहे कठिनने कठोर ॥७॥ आण देवरावी नगरने, सुणलो जोशी वीर ॥ नीर मले जो शहेरमां, हुं नवि पीयुं नीर ॥ ८ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ तो० नगर बाहेर जल वावरुं, वसंतमाला वनमां मुनि लेइ जाय तो ॥ उज्ज्वल अटवीरे आगलें, उचा रे पर्वत विषम घणाय तो ॥ सूरज किरण नवि संचरे, जेणे वन तरुवर छांय अपार तो ॥ माणस मुखदीसे नही, तेणे वने बाइ मने लेइ संचार्‍य तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ आश मेली रे पियर तणी, सिंह तणी पेरें मन कीधुं छे धीर तो ॥ शूरा क्षत्री जेम वण चढे, शरीर संभालीने साचव्यां चीर तो ॥ उजरू वनमांहे संचर्‍यां, दीठा छे पर्वत अचल उत्तंग तो ॥ स्कंधे चढावी रे कामिनी, लइ

चढी तेणे पर्वत शृंग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ अजना वनमांहे संचरया,लोक पियरने देवे ठे गाल तो ॥ नगरनां लोक फूरे घणा, पहवो रायने ठपज्यो ख्याल तो ॥ आण देवरावी रे घर घरें, एह वुं कर्म न करे चकाल तो ॥ पेटनी पुत्रीने परहरी, वनमांहे काढी ठे अजना नार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ मातायें साहेली मोकली, जइ जूओ अजना रही कोण गाम तो ॥ साहेली कहे ते तो वन गइ, हा हा ! ! दैव शुं कीधु ए काम तो ॥ माहारी रे कुखें ए उपनी, बालपणे बेटी पर अति घणो राग तो ॥ वनमाही वाघ विदारशे, रात दिवस बले पेटमां आग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनमांहे गइ अजना, एह वचन सुणी माय ॥ कुमरी माहारी लाडकी, वसी जइ वनमांय ॥ १ ॥ मनवेगा मन चिंतवे, करे आरति बहु शोक ॥ इह लोके निंदा हुइ विणसायो परलोक ॥ २ ॥ नारी तणी मति पाठली, न कस्यो कोइ विचार ॥ काम पस्यो बगडया यका, शोच करे रे अपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ तो जीहो नित्य भोजन करती बापपें, भाइ भोजाइनें न आपती भाग तो ॥ उत्संगें रमती रे अम तणे, ते केम सहेशे लूह जाल अंग तो ॥ अन्न पाणी केम पामशे, में जाएयुं कोइ राखशे वीर तो॥ माता रे मूर्छा वश थइ, शरीर संभालीने साचव्यां चीर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ राजा आवी राणीने प्रीछवे, राज संबंध न जाण्यो रे भेद तो ॥ कटकथी पवनजी आवशे, नासिका कर्ण तणो करशे छेद तो ॥ केम करी लोकनें प्रीछवुं, केम करी राखशुं देशनी कार तो ॥ जो घर आणुं रे अंजना, नगर नर नारी हिंडे अनाचार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वसंतमाला एम उच्चरे, बाइ तारो बाप छे क र्म चंडालतो ॥ मूर्ख माता रे तम तणी,बंधवें कीधुं छे कर्म विकराल तो ॥ आंगणे राखी न अध घडी, क लंक चढावीने दीधुं छे आल तो ॥ वसंतमाला वली एम कहे ,बाइ तारुं पीयर पड्युं रसाताल तो ॥तो०॥ स० ॥३॥तो०॥ अंजना कहे बाप माहरो निर्मलो,एणे कोइने नवि दीधुं आल तो॥माता छे महारी माहास ती, पतिव्रता धर्म तणी प्रतिपाल तो ॥ बंधव भकतो

ठे थापना, एमने कोहने नव दीजियें दोष तो ॥ पूर वें पुण्य कीधा नहीं, ए सहु आपणा कर्मनो दोष तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ गिरि गुफा सती रे निहाळती, तिहा दीठा ठे मुनिवर ध्यानें धीर तो ॥ पंच महाव्रत पाळता, तप जप संयम सोहे शरीर तो ॥अवधि ज्ञाने करी आगळा,जाइ करी अंजना वांद्या ठे चरण तो ॥ अति दुःख माहे आनंद हुओ, भवो भव होजो रे तम तणुं शरण तो ॥तो०॥स०॥५॥तो०॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा भावशुं, वंदण विधिशुं करत ॥ सुखें वेठा पूठे सती, अधिको हर्ष धरत ॥ १ ॥ पूठे चारण ऋषि-भणी, वसंततिलका नाम ॥ कोण कर्म दोषथी, साचू जणु स्वाम ॥ २ ॥ ऋषि भाखे शुभ भावशुं, कर्मकथा नहिं पार ॥ थोडामा भाखु घणुं, सुणजो एह विचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पठदमी ॥

॥ तो० ध्यान दीपाथी ऋषि बोलीया, सुखी ठे अंजना महेंद्रनी धीय तो ॥ सुखें स्वामीजी तमने लह्या, सासरे मुझ दीधो ठे ठेह तो ॥ कोण कर्मे स्वामी दुःखकरी, कोण कर्मे महारी तूटी ठे आश

तो ॥ कोण कर्मे माता ए परहरी, कोण कर्मे मारो वनमांहे वास तो ॥ तो० ॥ स० ॥१॥ तो० ॥ ऋषि कहे तमें सांजलो, शोक्य तणे जवें कीधुं बे कर्म तो ॥ तूं हती धर्मनी द्वेषिणी, अहोनिश करती जिन धर्मनो द्वेष तो ॥ साधु तणो उंघो चोरीयो, तेर घडी रा ख्यो पाडोसणें एम तो ॥ जिहां लगें साधु वोहोरे नहीं, तिहां लगे अन्न पाणी तणो मुऊ नेम तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ साधवी आवी तमनें कहे, ताहरे मन वसियो वैराग तो ॥ आपी उंघो ने पाये नम्या, मांहो मांहे उपन्यो धर्मनो राग तो ॥ संयम साधीने तप कस्युं, आलोयणा विण हुवो एटलो फेर तो ॥ कीधां रे कर्म नवि बूटियें, तेर घडीनां हुवां वर्ष तेर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ तिहां थकी चवि तमें सुर थयां, स्वर्गथकी हुआं राज कुमारी तो ॥ साथें पाडोसण दुःख सहे, कूखें तमारे बे पु ण्यवंत जीव तो ॥ शूरवीर सोहामणो, आगल होशे ते धर्म आधार तो ॥ पवनजी वरुणशुं रण जडे, घर आवी कुशलें मलशे अनुहार तो ॥ तो० ॥ स० ॥४॥ तो० ॥ एटलुं कही ऋषि संचस्या, एटले गाज्यो गु फा मांहे सिंह तो ॥ त्रास पाम्यां सरवे सावजां, जा

घोके आपाडो गाज्यो ठे मेह तो ॥ अजना कहे अ
लगी रहे, वसंतमाला कहे मरण वियो माय तो ॥
जाणशे पियु परदेशे गया, ए संदेह टालजो अम त
णो जाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वसंतमा
ला रे सूर्ढे चढी, अजना आसन दृढ करी गाय तो
॥ नाम जपे जगदीशनु, जाणे के ध्याने चढ्यो मुनि
राय तो ॥ चिहुं गति जीव खमावती, चारे हो शर
णां चिंतवे मन माय तो ॥ केशरी रूठो रे शु करे,
मुज तणो धर्म न लेइ शके कांय तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ६ ॥ सो० ॥ वसंतमाला सूर्ढे टलवले, धाउं धाउं
अजना ठे निरधार तो ॥ बूम पाडे ने घरका करे,
धाउं शियल तणा प्रतिपाल तो॥ धाउं धाउं सज्जन
जे हुवे, धाउं धाउं वनसणा वनपाल तो ॥ कुंवरीने
वाघ विदारशे, धाउं धाउं जिन धर्म तणा रखवाल
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ तेणे वने व्यतर य
क्ष रहे, चार जोजन तणो रखवाल तो ॥ यक्षणी
यक्षने एम कहे, आपणे शरणे आवी ठे वे बाल तो
॥ शार्दूल रूप यक्षे करि, नखें करी केसरी ठेद्यो ठे
देह तो ॥ शार्दूलें सिंह पराजव्यो, दोडीने काढ्यो
ठे वन तजी ठेह तो ॥ सो० ॥ स० ॥ ८ ॥ देवता

सहायशीलें हुए, आनंदें शीयल तणा गुण गायतो ॥ नारी सर्वेमांहे निर्मली, बेकर जोरी देवलाग्यो बे पाय तो ॥ शीयलें हो शिवसुख संपजे, शीयलथी म लशे तमारो कंथ तो ॥ शीयलें हो मामोजी आव शे, तिहां लगे नारी रहो निश्चिंत तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ देवता सहाय शीयलें हुउ, वनमांहे अवला रहे अबीह तो ॥ वनफल वावरी वन रहे, जिनतणा धर्मनी लोपे न लीह तो ॥ अखंरु पणे व्रत बारह धरे, धुर लगें धर्मनी सकल सुजाण तो ॥ शुरू सामायिक उच्चरे, अविचल दान दया गुण खाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ चैत्र मास वदि अष्टमी, पुष्प नक्षत्र ने सोमवार तो ॥ पाछलो पहोर बे रयणिनो, अंजना जायो बे हनुमंत कुमार तो ॥ जाणे के सूरज प्रगटियो, स्वर्गथी सुर कहे ज यजयकार तो ॥ राक्षस रोलण उपन्यो, रामनो सेव क धर्मनो धार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ तो० ॥ स हीयरें पुत्र पखालीयो, निऊरणामांहे पखालीयां चीर तो ॥ पुत्र पोढाड्यो रे पाथरे, सीतानो वारु हनुमंत तो ॥ निरखतां तृप्ति पामे नहीं, मांहो मांहे बेहु स खी एम करे वात तो ॥ जन्म महोत्सव कोण करे,

कटकें चाल्यो छे कुअरनो तात तो ॥ तो० ॥ स०
॥ १२ ॥ तो० ॥ चांदनी रात पूनम तणी, अंजना बे
ठी छे पुत्र कर धरंत तो ॥ चचल चपल सोहामणी,
अति रलीयामणो बहुगुणवंत तो॥ हर्षे बोलावे रे माव
डी, कुवर तणो छे लघु वर वेश तो ॥ ताराने ताके
रे बालुडो,जाणे के चांदलो रूपीने लेश तो ॥ तो०
॥ स० ॥ १३ ॥ तो० ॥ मामो अजनानो तिण समे,
शूरसेन राजा छे तेहनु नाम तो ॥ यात्रा करीने पा
छो मल्यो, आवी विमान थर्‍यु तेणें ठाम तो ॥ वन
माहे दीठी वे बालिका, अचरिज पामीने मोकली
नार तो ॥ मामीयें अजनानें ओलखी, नयणें वछूटी
जलतणी धार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १४ ॥ तो० ॥ को
टें वलगी रे वेलु आरडे, पटले मामोजी आव्या तत्
खेव तो ॥ आवी जाणेजी साथे मल्यो, अति दुःख
आणे छे अजना देव तो ॥ कंठ थकी रें बूटे नहीं,
बालकनी परें भरी रही सास तो ॥ खोले बेसाडीने
धीरवे, बाइ हमणां पूरु तारा मननी आश तो॥तो०
॥ स० ॥ १५ ॥ तो० ॥ बांह टूटी जब बापनी, आप
देवडावी गामोगाम तो ॥ त्यारे छठी अमे वन गया,
त्यारें सुइ के जीवती न लीधी सार तो ॥ पूरवें प्री

ति हती घणी, जाइ जोजाइ केणे न कीधी सार तो ॥ मामाजी पाप पोहोते घणो, करुणा न आवी कोइनें लगार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १६ ॥ तो० ॥ विमान वेसाकी रे संचस्यां, अंजनाने उत्संगें हनुमान कुमार तो ॥ दीठां जब मोतीनां कुमखां, उन्नली चंचल दीधी हे फाल तो ॥ त्रोमी मोतीने जूमि पड्यो, अंजना मूर्छित शुरू नहि सार तो ॥ मामोजी पुत्र लेइ पाछो वल्यो, आप्यो अंजनाने तेणी वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥१७॥ तो० ॥ बांहे साहीने बेठी करी, पुत्र परीक्षानो महिमा तुं जोय तो ॥ देश विदेशे हो हुं जम्यो, एहवो सबलो न दीठो रे कोय तो ॥ सघले शरीरें प्राये जलो, कारणिक पुरुष कोइ अव तस्यो शूर तो ॥ शाल जांगी रे महा वृक्षनी, पथ्थर जांगीने कीधो चक चूर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूर्ण पराक्रमी प्रगटियो, कपि कुल रावण माम ॥ द्युतिये शशि सम दीपतो, थयो वज्रंगी नाम ॥१॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ तो० हनु पाटण मांहे संचस्या, तरियां तोरण बांध्यां हे बार तो ॥ याचक दान देवराविया, जन्म

महोत्सव कीधा छे सार तो ॥ सोवनपाट वेसारिया, भुवने पधराव्या उत्तम ठार तो ॥ पाखे मलीने प्रकाशियो, हण्यो पापाण जयी हनुमंत कुमार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुतना मुखने निरखती, फरि फरि अति अफोस ॥ सास सारीखा सा खहे, जे शिर चढ्या कुदोस ॥ १ ॥ ते दिन क्यारे आवशे, घरे आवशे भरतार ॥ शोकमांहि मने उल्लासी, कब करशे किरतार ॥ १ ॥

॥ ढाल शोखमी ॥

॥ तो० अजना हनुमंत तिहां रहे, पवनजी कट के पहोता छे सनूर तो ॥ जइ करी रावणने मल्या, फाल्गु बीडुने घाल्यो छे शूर तो ॥ साथे हो सेना ते अति घणी, मेघपुरी जइ करीयु मेलाण तो ॥ धांध्या खर दूषण ओरावजो, तिहां मनावजो महारी आण तो ॥ वरुण राजा तिहां आवियो, चउरंगी सेनाने वखवख पूर तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो० ॥ मेघपुरी वस संचर्यु, सामा हो वरसे छे बाणना मेहतो ॥ पवन जी पाय न पातरे, मांहो मांहे सुभट जूके छे तेह तो ॥ वरस दिवस झघडो छुटे, मांहो

मांहे वेहु जणे कीधो छे मेल तो ॥ वांध्या हो खर
दूषण छोडव्या, तिहां रे मनावी रावण तणी आण
तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ कटक आव्युं लंका ज
णी, राजा हो रावणे कीधो जूहार तो ॥ वस्त्र ने वा
घा वहु आपियां, शोजता आप्या शरीरे शणगार
तो ॥ मास वे चार राखी करी, मोहोलमां आवे तें
ड्यो विद्याधर साथ तो ॥ ज्यारें तेडावुं त्यारें आव
जो, तुमें वेहेला विद्याधरनाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥
॥ ३ ॥ तो० ॥ कटकथी कुंवरजी आविया, मात पि
ता तणे लागो छे पाय तो ॥ जेटले माता जोजन क
रे, तेटले अंजनाने घेर जाय तो ॥ शूनांरे मंदिर दे
खियां, शूनांरे मंदिर कलकले काग तो ॥ पूरव वात
कानें सुणी, तेटले पवनजीने शिर चढी आग तो ॥
तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ केडेथी माता टलवले,
आवीने पवनजीनी झाली छे बांहि तो ॥ पाछा वलो
पुत्र जोजन करो, पियरेंथी वहूने तेडावशुं आंहि तो
॥ धरणी सामुं रे देखी रह्यो, बोले न चाले न लीये
मायनुं नाम तो ॥ माताजी खोला रे पाथ रे, बांहि
नाखी चाल्यो महेंद्रने गाम तो ॥ तो० ॥ स० ॥५॥
तो० ॥ माता रोवे मुख ढांकीने, मेंतो वात विमासी

न कीधु काम तो ॥ दश जणी जण नहि मोकल्यो, तिहा सर्गे पहूनें न राखी रे ठाम तो ॥ पाठली बु द्धि नारी तणी, वातें विचारी न कीधु रे यतन्न तो ॥ केतुमती करे कूरणा, रांकने हाथथी गयु रे रत्न तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ६ ॥ तो० ॥ पवनजी मंत्री ने एम कहे, राय राणीने केम करू रे प्रणाम तो ॥ माता ए स्त्रीने परहरी, सासरा पच्चें माहारी निर्ग मी माम तो ॥ बरस दिवस झगडो हुओ, राजा हो वरुणाछु चयोजी सुक तो ॥ बाध्या खर दूषण ठेरा लिया, तेह तणी ते आगल केम करशु गुज्झ तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ७ ॥ तो० ॥ मंत्री कहे सती निर्मली, अवगुण आपणा घर छे सोय तो ॥ गुण तो परतणा शिर वहे, एहवी नारी नव दीठी कोय तो ॥ पहे ला रे मंदिर किम जाइयें, आगलथकी कहेवरावो जुहार तो ॥ पवनजी आवे रे आवियो, अंजना पी यरें पक्ष्यो रे पोकार तो ॥ तो० ॥ स० ॥०॥ तो० ॥ मित्रनां वचन सुणी करी, पवनजी चाल्या छे म होटे मंडाण तो ॥ मित्र प्रधान् साथें लीया, नग रने गोंदरे दीधु छे मेलाण तो ॥ पवनजीए दूतज मोकल्यो,आगलथकी रे कहेजो जुहार तो ॥ पवनजी

आणे रे आवियो, महेंद्र राजा सुणी करे रे विचार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ महेंद्र कहे हुं मा हा पापियो, में तो कर्म कसाइनुं कीधुं ए जाण तो ॥ हाजिया लोक माहारे छे घणा, डाह्यो नर नहीं कोइ दीठो प्रमाण तो ॥ शीखनी वात न कोणे क ही, मनमांहे माहारे उपनी छे रीश तो ॥ नरक नि याणुं में बांधीयुं, केम करी कर्म छुटीश जगदीश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १० ॥ तो० ॥ पवनजी आणे रे आ विया, सांचली मातानें उर पमी फाल तो ॥ पेट कू टे दोय हाथशुं, उदरछंधान तु किहां गइ बाल तो ॥ उचां थकां शिर आफले, जाणे बल चस्यां लागे छे घाण तो ॥ माता रे मनमांहे चिंतवे, केम देखाकुं जमाइने मुख जाण तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ११ ॥ ता० ॥ सेना मेहेली करी संचस्या, ससरो जमाइनी सा हामोरे जाय तो ॥ अति दुःख रायने सांचरे, मनमां हे पुत्रीनो अति घणो दाह तो ॥ पुरोहित पवनजी आविया, कालुं मुख करी मलियो नरेश तो ॥ पवन जी इहां पधारिया, महेंद्र कहे हुं केवो उत्तर देश तो ॥ तो० ॥स०॥१२॥ तो० ॥ नगरमांहे पधराविया, मर्दनिया मर्दे छे तेल चंपेल तो ॥ निर्मलनीरें अंघो

लिया,वेसणे वेठा ठे वे जणा वेस तो ॥विध विभ जो
जन पिरसिया, थाल पीरसी करी मूक्यो ठे पाट तो
॥ पवनजी हाथ खेंची रह्यो, चउदिशे जुवे ठे अज
नानी वाट तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १३ ॥ तो० ॥ अज
ना जोइ दीकरी, पुत्र जायो हुसे सो वधामणी खाय
तो ॥ वसंतमाला नवि देखियें, ते पण किहां रही
ठे उपाय तो ॥ सासूने घेर पठ्यु पीटणुं, मांहोमां
वे जणा एम करे वात तो ॥ अंजना सासूए दुहवी
पीयरें आवी कीधो आपघात तो ॥ तो० ॥ स० ॥
॥१४॥ तो०॥ साला तणी सुता न्हानडी, खेड उत्संगे
वेसाडी बाल तो ॥ कहे तारी फुइ रे शु करे तेवारे
रुदन करी बोली ततकाल तो ॥ मातपितायें पणे
वधवें, पापीये कीधु ठे कर्म चकाल तो ॥ आंगणे न
रासी रे अध घडी, कलंक चढावीने दीधु ठे आ
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १५ ॥ तो० ॥ बालिका वचन
सुणी करी, माथापर फेरवी नाख्यो ठे थाल तो ॥
महेंद्रराय आवी पाय नमे, पुरोहित कहे तुं तो क
में चकाल तो ॥ उठो स्वामी शु वेसी रह्या, मूइ के
जीवतीनी कीजीयें खोज तो ॥ सासू रे आवी आ
डी फरी, तुम मुख दीठा मुज लगे ठे लाज तो ।

तो० ॥ स० ॥ १६ ॥ तो०॥ वनमांहे कुंवरी टलवले, किहां गइ दान दया तणी वेल तो ॥ किहां गइ धर्मनी धोंसरी, किहां गइ शीयल संतोषनी वेल तो ॥ आवोने नारी आगल रहो, जेम जोउं तुम तणा मुखनुं स्वरूप तो ॥ कटकेथी कुशलो हुं आवियो, एम कही रुदन करे बहु भूप तो ॥ तो० ॥ स० ॥१७॥ तो० ॥ महेंद्रराजा तिहां आवियो, नारी सहित आव्यो राय प्रल्हाद तो ॥ आवी पवनजीने बांहे धरी, कांरे कायर तें मूक्यो आल तो ॥ कर्मेशुं बलियो रे कोइ नहीं, पेट बलुरती आवी अंजनानी माय तो ॥ राजा वरुणशुं रण जझ्यो, अति दुःख करतां रे उपरे घाय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १८ ॥ तो० ॥ अनेक विमान लंबावियां, ए पलाण्या केइ करे तुरंग असवार तो ॥ केटलाक नर पाला फरे, सांढिया दोरुव्या दिशोदिश ठार तो ॥ ए सती दीसे तो जीववुं, नहिंतर खड्ग मारी करुं काल तो ॥ देशविदेशे जोवतां, अंजना उमटी छे माय मोसाल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १९ ॥ तो० ॥ आगलथी पवनजी जालिया, पूठेथी आव्यो छे सघलो साथ तो ॥ आवतो सहियरें ओलख्यो, ए कहिए स्वामिनी तुमतणो नाथ तो

॥ अजना आवी हो पाये नमी, खोले वेसाड्यो हे हनुरे कुमार तो ॥ क्षण एक पुत्र सामु जूए, क्षण एक जूए हे अजना नार तो ॥ पवनजी आनंद पामी रह्या, प्राह एहवा सुख नही रे संसार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २० ॥ तो० ॥ वसंतमाला रे पाये नमी, उछले घाली लही हैया मझार तो ॥ कहे घाइ तमें डुःख केम सह्या, केम करी सह्यो मारी मायनो मार तो ॥ केम करी वनफल वीणियां, केम करी पर्वत रह्यां निराधार तो ॥ अजनाए केम पुत्र जनमीयो, केम करी डुःख भरी निर्गम्यो काल तो ॥ तो० ॥ स०॥२१॥ तो० ॥ ज्यारे स्वामी तमे सैन्ये गया, त्यारे सासरे पियरे दीधो हे छेह तो ॥ त्यारे उठी अमे वन गयां, वनफल आवरी राख्यो हे देह तो ॥ वनमाहे मुनिवर भेटिया, देवताये कीधी हे अम तणी सार तो ॥ रात्रि दिवस धर्म ध्यावतां, अजना गुण तणो नवि लहु पार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साची उतरी ते सती, जगें आव्या जरतार ॥
कर्लंक टल्युं कामिनी तणु, प्रमोज निकल्यो तार॥१॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तो० धन्य मुख दीठुं हो तुम तणुं, बेउ सवी बोले बे मधुरी वाण तो ॥ केम करी सेना मांहे संचस्या, केम करी झाल्यां राजा वरुणनां बाण तो ॥ बांध्या खर दूषण ढोडाविया, सामा हो सुजटना सह्या घणा घाय तो ॥ जुऊ करी अति उगस्या, अति सुख उलट अंग न माय तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ अंजना साहामी रे संचरी, जइ करी ससराने लागी रे पाय तो ॥ ससराने आंखे आंसु ऊरे, तने वहू कहुं के माहरी माय तो ॥ सतीने में कलंक चढावियुं, पढी सासूने जइ लागी बे पाय तो ॥ में वहु वगोवणमें तुऊ करुं, सासु कहे खमजो मारो अपराध तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ मात पिता आवीने मल्यां, जाइ जोजाइ अति घणो नेह तो ॥ पीयरियां मुख ढांकी रुवे, वस्त्र पाढां करी निरखे बे देह तो ॥ आवोने बाइ सघली मली, मन मांहे माहरी मत आणो लाज तो ॥ कर्म माहारे हुं वन गइ, हर्ष वचन थइ सहु बोलावो आज तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दादा दादी देखी पोतरो,हनुमंत निजकुल ही र ॥ ए सहि होशे एहवो, वंश विद्याधर वीर ॥१॥ भक्ति युक्ति बहु जावशु, मामे करि मनुहार ॥ स ज्जन सहु संतोषिया, पवनजीने अति प्यार ॥ २ ॥ पांच सात दिन प्रीतिथी, रह्या घणे रस रंग ॥ शी ख मागी पोहोच्या सहु, निज निज घर उछरंग॥३॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ तो० हनु रे पाटणथकी संचरया, अजनाने आपी ठे अति घणी आथतो ॥ मामोजी आव्यो व लावणें, रत्नपुरी लगें आव्यो सहु साथ तो ॥ प्रजा रे होपरवरी,हवे पधराव्या थई उत्तम ठाय तो॥पव नजी पाटें खेलाडीने, राय राणी वेठ लपवन जाय तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ १ ॥ तो० ॥ पवनजी पाटें बे सारीया, अजना राय वेठ अति अभिराम तो ॥ हनुमंत कुवर विद्या जणे,वानरविद्या पाम्या ठे भली भात तो ॥ वीजी हो विद्या अति जथो, देशवि देशे थयी ठे विख्यात तो ॥ पवनजी पृथ्वी रे जोग वे, वसंतमालाने पूठीकरे ठे वात तो ॥ तो०॥सती० ॥ २ ॥ तो० ॥ वरुण लंकेसर उपन्यो, वरुण वेगो

वजडावे वाजिंत्रतो ॥ पुत्र सो देखी रे आपणा, पर तणी सेना न आवेरे चित्त तो ॥ लंका त्तणी जण मोकल्यो, जोतांरे जूऊ करवा तणो त्तावतो ॥ बीजा सुत्तट बहु मोकले, एक वार मुख जोवाने आव तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ ३ ॥ तो० ॥ रावणे सेना मेली घणी, एक तेकुं मोकल्युं पवनजी रायतो ॥ हनुमंतकहे अमें जाईशुं, तात कहे तारी लघुत्र्र कायतो ॥ अंजनायें ऊंकुं आलोचियुं, मनमांहे उपन्यो अति घणो शोचतो ॥ राजा जाय तो रण रहे, कुंवर मारो नहीं वरुणनी तोल तो ॥ तो० ॥ सती० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वरुण प्रत्यें रावण वली, मेले कटक अपार ॥ प्रति सूर्यने पवन नृपटबोल्या तेणी वार ॥ १ ॥ दोई जूपति चालता, निःखेदें हनुमान ॥ चाल्यो आडंबर घणे, तव रीजयो राजान ॥ २ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥

॥ तो० हनुमंत हठ करी चालीयो, मर्हेंद्रपूरी जई दीधुं मेहेलाए तो ॥ त्रण पहोर दल आफळ्युं, बंधणें बाध्यां ठे मायने बापतो ॥ मामायें आवी ठोडावीया, ठोडी बंधन ने कस्यो ठे प्रणाम तो ॥

॥ मारी माताने वेला पडी, तेवारे कोणे नव दीधु रे ठाम तो ॥ सो०॥स०॥२॥ तो० ॥ हनुमंत चाल्यो स का जणी,सादमों आव्यो ठे रावण चूजाण तो॥ जा ली वींडु ने पाठो चल्यो, मेघपुरे जई कीधु मेठेला णतो ॥ साहामा हो सुजट ते आविया, खेंचे ठे ष नुष्य ने मुके ठे वाण तो ॥ रोष जस्थारण आकर्षे, एवा सुजट पाडे रणमा जाण तो ॥ सो० ॥ सती० ॥ २ ॥ सो० ॥ रावण सेना देखी करी, पुत्र सो वरु णना रण चढ्या सोय तो ॥ आगना जकेरे अगारि या, सोहना वाण तिहां आफले दोय तो ॥ जाल शु जाल वांधी लके धनुष्य दीसे जाणे कुंडलाकार तो ॥ रावण सेना नासी गई, आगल जन्ो ठे हनु रे कुमार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥वजरंगी वरुण सुत कहे, वालक तारो वेश ॥ कोण पिता तुम कुवरजी, कोण तमारो देश ॥ १ ॥ वधे तेजें दीपतो, पवन कपिभुज नाम ॥ लघुवेशे हुं नानडो, देखो मारा काम ॥ २ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ तो० मातारे वेरण तम तणी, वापने अल

खामणो नानमो बालतो ॥ जो मुख आव्यो रे वरु
णने, ईण दिन खूट्यो ठे तम तणो काल तो ॥
वलतो हनुमंत बोलियो, बंधव सो मली आव्या
रे साथ तो ॥ बोल सही करी मानजो, जाणशुं रण
मांहे वावरशो हाथ तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो०
वानरी विद्या साधी करी, वानर रूप कीधुं तेणिवार
तो ॥ हाक करी दल हरावीयुं, जोजन, बारलगे वा
जे धुकार तो ॥ हाकें सेना सहुथरहरे, वृक्ष उखे
मीने नाखे ठे घाय तो ॥ पूंठे फरी कस्या एकठा,
वरुणना पुत्र बांधी नाख्या रणमांय तो ॥ तो० ॥
स० ॥ २ ॥ तो० ॥ वरुण राय तिहां आवीयो, आ
वीने हनुमंतने दीधीठे हाक तो ॥ वानरी विद्या मे
ली करी, मूलगे रूपें रह्यो रणमांय तो ॥ कोप चढ्यो
कर वावरे, लागठ बाण मूके ततकाल तो ॥ वरुण
राजाय विमाशियुं, ए बालक दीसे ठे जुमनी जाल
तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ रथथकी राजा रे
उतस्यो, आवीने हनुमंतने दीधी ठे बाथ तो ॥ वे
णीना वाल ते कर ग्रह्या, मूठीना प्रहार वाजे ठे हा
थ तो ॥ चपल चपेटा रे वावरे, केडेथी आवीयो रा
वण धाइ तो ॥ आवी हनुमंतने उपर कस्यो, बांधी

वरुणने नाख्यो रथमाहि तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ बंधन ठोड्या हो वरुणना, आवीने रावणने कीधो जुहार तो ॥ वळतो वरुण राय बोलियो, मारे शीश नमे जगदाधार तो ॥ संयम लेवा हो संचख्यो, आपणा धर्म तणुं करे काज तो॥सेना हो वरुण वखाणियो, तेहना पुत्रने वेसाख्यो राज तो ॥तो०॥स०॥५॥

॥ दोहा ॥

॥ जीत्यो वरुण विशेषथी, नृपने करे जुहार ॥ थाप्यो स्थानक तेहने, अब नहीं खुनस लगार ॥१॥ वरुण घरे छे कन्यका, सत्यवती तस नाम ॥ परणावी हनुमतने, जाणी वर अभिराम ॥ २ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ सो० रावणे हनुमत प्रशसियो, शूरपणेथी हो लघुवर काय तो ॥ मोटप आणी मनाविया, पराक्रम देखीने कख्यो पसाय तो॥ काननां कुंडल आपीया, वळी आप्या छे अति घणा देश तो ॥ दीधी छे भाणेजी आपणी, परणयो छे पद्मिणीने आप्या छे देश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ सो० ॥ वळी रे घरी विद्याधरी, सहस कन्या परी हनुमत वीर तो ॥ बेटी परणी छे सुग्रीव तणी, तेह पीयु उपरें अति घ

णो राग तो ॥ ससराने घेर कारण पड्युं, मांहो मांहे उपज्यो अति घणो धंध तो ॥ सुग्रीव हनुमंत रामनी, ए कथा चालशे रामायण मध्य तो ॥ तो० ॥ स० ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ पुत्री स्वरूप अनंग तणी, अनंग कुसुमा नाम ॥ हनुमंतने व्याहे सही, रावण जाणी सकाम ॥१॥ अन्नेरी विद्याधरी, पुत्री एक हजार ॥ परणावी हनु मंतने, धर्म सदा जयकार ॥ २ ॥ रावणनो आ देश लइ, परणी नार उमेद ॥ हनुमंत आव्यो निज घरे, मात पिता आणंद ॥ ३ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तो० पवनजी पृथ्वी रे जोगवे, बेठा सिंहा सन छत्र धरंत तो ॥ हनुमंत कुंवर छे दीपतो, जे ज णी डुर्जन झूर नासंत तो ॥ परजा सहु सुख जोगवे हवे दान पुण्य धर्मनी वाट तो ॥ याचकने दान दे वाळियां, एणी पेरें पवनजी जोगवे पाट तो ॥ तो० ॥ स० ॥ १ ॥ तो० ॥ मृगमद चंदन महकता, सुगंध अतिशय चर्चे छे अंग तो ॥ नित्य नाटक निरखि यां, फलने पान तंबोलनो रंग तो ॥ सहस वहूअर रे सेवा करे, पांच इंद्रिय तणा जोगवे जोग तो ॥

अंजना मनमांहे चिंतवे, धन्य धन्य ते नर शिर वडे जोग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥पाछलो पहोर ठे रयणनो, धर्म चिंता करे अजनादेव तो ॥ पा रिअ मनमांहे चिंतवे, पवनजीने पाये लागी ततखेव तो ॥ जन्म मरण फुख दोहिलां, रोगवियोग संसार कलेश तो ॥ विषयना सुख पूरा हुआं, शिख थो स्वामी हुं संयमलेश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पवनजीवलतारे एम कहे, घेर वेगा देवि क रजो धर्म तो ॥ हजीयवालपणु नाहानहा, संयम ले जो हो चोथे आश्रम तो ॥ तुम साथे अमे पण आवशु, दान देवा तणी करजो हो चाल तो ॥ अ जना थई रे उतावली, विलवशु करो थोफो रखो काल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ विलंघ स्वा मीजी जे करे, जेहने मरण तणो नहिं त्रास तो ॥ विलव स्वामीजी हु केम करु, मरण आयाकिहां जायशु नाशि तो ॥ कर्म क्रिया विणनवि टले, ते भणी लेश्शु संजम भार तो ॥ काची रे काया का रमी, पणसंतां नवि लागे हो वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वचन सुणी राय रीकियो, मन संवे गीने आण्णो वेराग तो ॥ हनुमन् कुंवर तेकावियो,

तेहने राय उपर घणो राग तो ॥ मातानां चरण ध
री रह्यो, अंजना उपरे अति घणो मोह तो ॥ सह
स वहू रे सेवा करे, पुत्र न बोडे माता तणो मोह
तो ॥ तो०॥ स० ॥६॥ तो० ॥ पुत्रने माता रे प्रीति
यो, अथिर आउखानो नथी विश्वास तो ॥ धन
कण जोवन कारिमुं, मूरख जे जाणे आणे रे आश
तो ॥ मात पिता परिवारनें, मारुं मारुं करे सहु को
य तो ॥ वाउला जे नर बापडा, अंतकालें केम कर
शे सोय तो ॥ तो० ॥ ७ ॥ तो० ॥ तिलक करीनें
त्यांथी संचस्या, अंजना राय खमावती सोय तो ॥
बेहुंनो बोमी करी संचस्यां, हम तम लेवुं देवुं नहिं
कोय तो ॥ राय खमावी संयम लियो, तप करी पा
मशे शिवपुर ठाम तो ॥ अंजना गुरुणि पासें गइ,
वसंतमाला पण साथे थइ ताम तो ॥ तो० ॥ स०
॥ ८ ॥ तो० ॥ काननां कुंडल परिहस्यां, नासिका
नकवेशर हार तो ॥ केड तणी कटिमेखला, चूआ
चंदनने सर्व शरणगार तो ॥ पगतणा कांभर परिह
स्यां, बांहे सोनातणी परहरी बे चूडि तो ॥ लोच क
री त्यांथी चालियां, कर्म तणी बहु तोडे बे कोडि तो
॥ तो० ॥ स० ॥ ए ॥ तो० ॥ खोले घाली सुत सं

अजना मनमांहे चिंतवे, धन्य धन्य ते नर शिर वहे जोग तो ॥ तो० ॥ स० ॥ २ ॥ तो० ॥ पाछलो पहोर छे रयणनो, धर्म चिंता करे अजनादेव तो ॥ धा रिअ मनमांहे चिंतवे, पवनजीने पाये लागी ततखेव तो ॥ जन्म मरण दुख दोहिलां, रोगवियोग संसार कलेश तो ॥ विषयनां सुख पूरा हुआं, शिख द्यो स्वामी हुं संयमलेश तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ३ ॥ तो० ॥ पवनजीवललारे एम कहे, घेर बेठां देवि क रजो धर्म तो ॥ हजीयबालपणु नाहानडा, संयम छे जो हो चोथे आश्रम तो ॥ तुम साथे अमे पण आवशु, दान देवा तणी करजो हो चाल तो ॥ अ जना थई रे उतावली, विलवशु करो थोडो रखो काल तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ४ ॥ तो० ॥ विलंब स्वा मीजी जे करे, जेहने मरण तणो नहिं त्रास तो ॥ विलंब स्वामीजी हु केम करु, मरण आयाकिहां जायशु नाशि तो ॥ कर्म क्रिया विणनवि टले, ते भणी लेइशु संजम भार तो ॥ काची रे काया का रमी, वणसंतां नवि लागे हो वार तो ॥ तो० ॥ स० ॥ ५ ॥ तो० ॥ वचन सुणी राय रीझियो, मन संवे गीने आण्यो वेराग तो ॥ हनुमंत कुंअर तेडावियो,

खी पातक टले, एहनुं जजन करतां जव दुःख छेह तो ॥ तो० ॥ स० ॥१३॥ तो० ॥ अधिकुं ओछुं जे में कह्युं, मिछामि दुक्कड होजो मुज तेह तो ॥ शीयल तणा गुण वर्णव्या, सती साधवीअंजना जेह तो ॥ एह संबंध पूरो थयो,आगल चालशे सीता आख्याय तो ॥ विरहिणी वली रे वैरागिणी, रामनी जार्या जगत्रयनी माय तो ॥ तो० ॥स०॥१४॥ तो० ॥इति॥

॥ इति श्री अंजना सतीनो रास समाप्त ॥

॥ अथ हरीआली ॥

॥ बांजणानें कुल उतपनीरे नवि जग वालकुंआरी ॥ अतिथि वेला पाय पखाली, चंफाली घेर दीधी ॥१॥ हुं तुम पूढुं पंडिता पंडित, पहेढुं पुरुषके नारी ॥ ए आंकणी॥ ब्रह्मा विष्णु महेसरु रे, ए त्रणे में जाया ॥ तेह तणी घेरणी जणीजें, जेह जणीयें मोरी माया॥ हुं० ॥ २ ॥ शालिखांडतां जनम गयो रे, चावल दांते न लागो ॥ सासु सुसरा हुं वहुयारी, अवगुण अंग न लागो ॥ हुं० ॥ ३ ॥ उंचेरे आसन बेठी अछुंरे, सही ए में कौतुक दीठे ॥ चार बेटा कुंआरीयें जाया, पुरुष न आंखें दीठे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ जइ रे मोरो पिता हिंडणु रे, माता कान्ह कुंआरी ॥ तेहिं

चर्यो, अजना आजरण शिर तणा वाख तो ॥ घरे जइ करी पूजशु, एम करी निर्गमशु आपणो काल तो ॥ अति दु ख आणे जूरे घणु, मात पिता तणी परहरी आश तो ॥ बेटी सुग्रीवनी एम कहे, केशरी केम रहे घाच्या पास तो ॥ तो० ॥ स० ॥१०॥ तो० ॥ मास मास करे पारणु, शरीर सूकाणुं ने कीधु नि काम तो ॥ शीत शीयालानी शिर वहे, ज्येष्ठना तावडा शिर पडे ताम तो ॥ हाडने नस दीसे जूजवां, (पाठांतर) द्वादश मास ते तप करे, समस्त जीव तणी प्रतिपाल तो ॥ मांस, ने लोही सुकी गयां, लीख री चरम दीसे नसा जाल तो ॥तो०॥स०॥११॥ तो० ॥ पृथ्वी पूजी करे साथरो, अनशन लीधु ठे अज ना माय तो ॥ चोगति जीव खमावती, चार हो शर णां चिंते मनमांय तो ॥ नारीनुं लिंग ठेदी करी, आ गल पामशे, पुरुषनो वेश तो, दीक्षा लइ मुगतें रे जायशे, एम कहे शीयल प्रष उपदेश तो ॥ तो० स० ॥ १२ ॥ तो० ॥ शीयल सतोष गुणें आगली. दान दया उपशमनी लाण तो ॥ सयम साधीने सुर थयां, रास सती अजना आण तो ॥ वंशे विद्याधर उपनी, नामें हो नव निधि संपजे तेह तो ॥ दर्शन दे

॥ श्रीशांतिनाथाय नमोनमः ॥

॥ अथ श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ नेमजिणंद समोसर्या, त्रणे कालना जाण ॥ भविक जीवनें तारवा, प्रभु बोल्या अमृत वाण ॥ १ ॥ वाणी सुणी श्रीनेमनी, बूज्या छए कुमार ॥ मात पिताने पूछीनें, लीधो संयम भार ॥ २ ॥ वैराग्यें संयम लीउं, धर्म सामग्री नीव ॥ छठ छठने पारणे, प्रभु कर दीउंजावजीव ॥ ३ ॥ निरंतर तपस्या करे, छए महोटा अणगार ॥ आज्ञा लेइ भगवंतनी, करे आतम उद्धार ॥४॥ नेमजिणंद समोसर्या, द्वारिका नगरी मझार ॥ एक दिन छठने पारणे, वयरागी अणगार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वीर वखाणी राणी चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ आगना लेइ भगवंतनी जी, छए ते बंधव सार ॥ गोचरी करवाने नीकल्या जी, द्वारिका नगरी मझार ॥ साधुजी भलें रे पधारिया जी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अनेकसेन आदे करी जी, छए सरिखा अ

गार ॥ रूप सुंदर अति शोभता जी, नल कुबेर अनु हार ॥ सा० ॥ २ ॥ अण संघाडे करी संचरया जी, मुनिवर माहा गुणधार ॥ ईरिया समितियें चालतां जी, षट कायने हितकार ॥ सा० ॥ ३ ॥ पाडे पाडे फिरतां थका जी, गोचरीयें मुनिराय ॥ मुनिवर दो य तिहां आविया जी, वसुदेवजीना घरमांय ॥ सा० ॥ ४ ॥ देवकी देखी राजी हुइ जी, भलें पधार्यां मु निराय ॥ सात आठ पग साहमा जइ जी, भली भ ली लागे जी पाय ॥ सा० ॥ ५ ॥ हाथ जोडीने वंद न करे जी, तरण तारण मुनिराय ॥ दरिसण दीठा स्वामी तुम तणां जी, भव भवनां दुःख जाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ आज भली रे जागी दिशा जी, धन्य दिवस माहरो आज ॥ मुनिवर अम घर आविया जी, तर ण तारण जहाज ॥ सा० ॥ ७ ॥ मुह माग्या पासा ढल्या जी, दूधडे वूठा मेह ॥ आज कृतारथ हुं थइ जी, आणी घणो धरम सनेह ॥ सा० ॥ ८ ॥ मोद क थाल भरी करी जी, वहोराव्या उलट भाव ॥ कृ ष्ण जिमण तणा लाडूनें जी, देवकी हर्षित थाय ॥ सा० ॥ ९ ॥ जाताने वली पोहोंचाडीयां जी, मुनि वर गया पोल बार ॥ थोडीसी वार ॥ हुइ जिसें जी,

वली आव्या दोय अणगार ॥ सा० ॥ १० ॥ देवकी
राणी मन चिंतवे जी, भूली गया छे अणगार ॥ व
डीय पुण्याइ छे माहरी जी, भूलें आव्यां दुसरी वार
॥ सा० ॥ ११ ॥ सात आठ पग सामी जाइने जी,
वली वली लागेजी पाय ॥ आज कृतारथ हु थइजी,
मुनिवर धस्या घर पाय ॥ सा० ॥ १२ ॥ मोदक थाल
जरी करी जी, वहोराव्या दूसरी वार ॥ कुस जिमण
तणा लावीने जी, हैयडे हरष अपार ॥ सा० ॥ १३ ॥
जाता नें वली पोहोंचाविया जी, मुनिवर रूप अगा
ध ॥ थोडीसी वार हुइ जिसें जी, त्रीजे संघाडे आ
व्या साध ॥ सा० ॥ १४ ॥ देवकी तव राजी हुइ जी,
मन मांहे उपनो विचार ॥ आहार नवी मल्यो एह
नें जी, के भूलें आव्या अणगार ॥ सा० ॥ १५ ॥ भू
ल्यानुं तो कारण ए नहीं जी, दीसंता महोटा अण
गार ॥ तीसरी वार ए आवीया जी, नहीं ए तो सा
धु आचार ॥ सा० ॥ १६ ॥ रूपकला गुणे आगला
जी, दीसंता सम आकार॥ पहेलां जो एहने पुछशुं
जी, तो नही ले अम घर आहार ॥ सा० ॥ १७ ॥
मोदक थाल जरी करी जी, वहोराव्या तीसरी वा
र ॥ कुस [illegible] तणा लावीनें जी, देवकी

भाव उदार ॥ सा० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि प्रत्यें प्रतिलाभिनें, निरखी मुनि दीदार ॥ मनमा संशय ऊपनो, ते सुणजो सुविचार ॥ १ ॥ वात ए अचरज सारखी, मुखथी कही न जाय ॥ क्षा विण स्वाद न नीपजे, विण कर्युं केम रहेवाय ॥ २ ॥ देवकी एम मन चिंतवी, प्रणमी बे कर जोडी ॥ साधु प्रत्यें पूछती हुवी, आयस आपणु छोडी॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ मृगापुत्रनी देशी ॥

॥ मुनिवर नगरी द्वारिका जी रे, बार जोयणनें मान॥ कृष्ण नरेसर राजीयो जी रे, जेहनी त्रण खरु आण ॥ मुनिसर एक करु अरदास ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहोतेर कोड घर बाहेर छे जी रे, माहे छे साठ करोड ॥ लोक बहु सुखीया वसे जी रे, मांहे राम कृष्णनी जोड ॥ मु० ॥ २ ॥ लाख कोडांरा भणी वसे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ माहरे पुण्य तणे उदयें जी रे, मुनिवर आव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ३ ॥ बीय पुण्याइ छे ताहरी जी रे, एम बोल्या मुनिराय ॥ देवकी मनमां जाणीयुं जी रे, एहने खबर न कांय

॥ मु० ॥ ४ ॥ हुं पूछुं इण कारणे जी रे, साधां न ली
धो आहार ॥ माहरे पुण्य तणे उदय जी रे, मुनिवर
आव्या त्रीजी वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनिवर उत्तर एम
कहे जी रे, नयरीमां बहु दातार ॥ त्रण संघाडाशुं
निकल्या जी रे, अमें छए अणगार ॥ मु० ॥ ६ ॥ व
लतो मुनिवर एम कहे जी रे, तुं शंका मत आण ॥
ताहरे पहेला वहोरी गया जी रे, ते मुनिवर छुजा जा
ण ॥ देवकी लोच नहीं छे कांय ॥ ए आंकणी ॥ ७ ॥
देवकी मन अचरिज थयुं जी रे, ए किण मायें जाया
रे पूत ॥ रूप सुंदर अति शोभता जी रे, मुनिवर का
केमी जूत ॥ मु० ॥ ८ ॥ आडी करीनें एम कहे जी रे,
सांभलजो मुनिराय ॥ उत्पत्ति तुमारी किहां अछे जी
रे, ते दिउ मुज बताय ॥ मु० ॥ ए ॥ कोण नयरीथी
कल्या जी रे, तुमे वसता कोण ग्राम ॥ केहना छो
ने दीकरा जी रे, कहेजो तेहनुं नाम ॥ मु० ॥ १० ॥
ग शेठना अमे दीकरा जी रे, सुलसा अमारी माय
जद्दिलपुरना वासिया जी रे, संयम लीधो छए जा
॥ मु० ॥ ११ ॥ बत्रीशें रंभा तजी जी रे, बत्रीश व
शि दाय ॥ कुटुंब मेल्यो अमे रोवतो जी रे, विल वि
करती माय ॥ मु० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनि वचन श्रवणे सुणी, चिंते चीत्त मजार ॥ एहवो परिवार तजी करी, लीधो संयम भार ॥ १ ॥ हाथ जोडीने वीनवे, सांभलजो मुनिराय ॥ किस्या दुःखथी तुमे निकल्या, ते वियो मुज बताय ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ खम खम मुज अपराध ॥ ए देशी ॥

॥ जातो काल न जाणतां, सांभल रे बाइ ॥ रहे तां महोल मकार ॥ दास दासी परिवारशु जी, वली बत्रीश बत्रीश नार ॥ सांभल रे बाई, म करीश मन उचाट ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ भगवत नेम पधारिया ॥ सां० ॥ साधुनें परिवार ॥ अमें भगवंतने वांदिया जी, वली सुणीयो धर्म विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ २ ॥ वाणी सुणी वैरागनी ॥ सां० ॥ जाण्यो अथिर संसार ॥ सुख आप्यां सहु कारमां जी, अमें लीधो संयम भार ॥ सां० ॥ म० ॥ ३ ॥ चार महाव्रत आदर्या ॥ सां० ॥ धारे मेरु समान ॥ त्यजी संसार संयम लीधो जी, दीधो छकायनें अभयदान ॥ सां० ॥ म० ॥ ४ ॥ माता मेली अमे झूरती ॥ सां० ॥ तजी बत्रीसे नार ॥ सघला वलवलतां रह्या जी, में तो छोड

दीयो संसार ॥ सां० ॥ म० ॥ ॥५॥ छठ छठनें पारणे ॥ सां० ॥ जाव जीव निरधार ॥ अंतर इमारेको न हीं जी, छे ए तप तणो विचार ॥ सां० ॥ म० ॥ ६ ॥ आज छठनें पारणे ॥ सां० ॥ आव्या नयरी मझार॥ दोय दोय मुनिवर जूजूआ जी, एम आव्या त्रीजी वार ॥ सां० ॥ म० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलि वलि कीधी वीनति, तुमे महोटा मुनिरा य ॥ घरमां त्रोटो श्यो पड्यो, ते दियो मुज बताय ॥ १ ॥ वलता मुनिवर बोलिया, तुमे सुणो मोरी मा य ॥ घरमां त्रोटो जे पड्यो, ते देउं तुज बताय ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए देशी ॥

॥ ऊंचा महोल सोहामणा, रचिया विविध प्रकार रे माई ॥ तद्‌वद् रूपें सारखी, परणावी बत्रीशे नार रे माई ॥ पुण्य तणां फल मीठां रे जाणो ॥ ए आं कणी ॥ १ ॥ परणीनें जब घर आवीयां, सासुने लागी पाय रे माई ॥ तव वहूने ऋद्धि घणी जे, आपी ते मुज माय रे माई ॥ पुण्य० ॥ २ ॥ बत्रीश क्रोड सोनै या जाणो, बत्रीश रुपैया सार रे माई ॥ बत्रीश वस्त्र

नाटकना टोला ऋद्धि तणो नहीं पार रे माई ॥पुण्य० ॥ ३ ॥ बत्रीश मुगुट मुगुट परवारु, हेम कुण्डनें हार रे माई ॥ एकावली मुक्तावली जाणो, कनक रयण वली सार रे माई ॥ पुण्य० ॥ ४ ॥ बत्रीश हार मोती तणा, बत्रीश रतन तणा जाण रे माई ॥ तीसरा चौसरा हार अने वली, एम कडगने तुडीय जाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ५ ॥ बत्रीश सोनाना ढोलीया, बत्रीश रूपाना जाण रे माई ॥ बत्रीश सिंहासन सोनाना, इमहिंज कुम्भश वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ बत्रीश सोनानी कथरोटी, बत्रीशु रूपानी जाण रे माई ॥ बत्रीशे वली तवा सोनाना, तिमहिंज थाल वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ हय गय रथ दासनें दासी, बत्रीश गोकुल जाण रे माई ॥ बत्रीश सोना रूपाना दीवा, वली आरीसा वखाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ ८ ॥ बत्रीश पीठ सोना रूपाना, इमहिंज घरेणा अमूल्य रे माई ॥ पर्गे परर्ता सासुयें दीधां, एकशो बाणु बोल रे माई ॥ पुण्य० ॥ ९ ॥ एम ठप बधवनी मली नारी, एकशो बाणुं जाण रे माई ॥ एकशो बाणुने ऋद्धि अपाणी, आगम वचन प्रमाण रे माई ॥ पुण्य० ॥ १० ॥ एणी परें अमे सुख भोगवता, निर्गमता दिन रात रें

माई ॥ ओटो तो अमने कांइ न हूंतो, ए अमे छए
भ्रात रे माई ॥ पुएय० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वारंवार एम वीनवे, तुमे महोटा मुनिराय ॥
वैराग पाम्या किए विधें, तेदीर्छ मुज बताय ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ श्रेणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥
नेम जिणंदनी में वाणी सांजली, जाएयो अथिर सं
सारो जी ॥ काया मायारे जाणी कारिमी, कारिमो
कुटुंब परिवारो जी ॥ १ ॥ मुनिवर जांखे तुं शंका
मत करे ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशीरे जीवायो
निमां, जमीयो अनंती वारो जी ॥ जन्म मरण क
रीने घणुं फरसियो, न रही मणा लगारो जी ॥ मुनि०
॥ २ ॥ करम नचावेरे तेम ए नाचीयो, विविध व
नावी वेशो जी ॥ पातक कीधांरे जीवें अति घणां,
(पाठांतरे ॥ जन्म मरणे करी बहु वेदन सही,) न
वि सुण्यो धर्मोपदेशो जी ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ एहवी दे
शना अमे सांजली, जाणी सर्व असारो जी ॥ छए
बंधव ततखण बूझीया, लीधो संयम जारो जी ॥
मुनि० ॥ ४ ॥ ˎ ˋ जोगेरे नरजव पामीया, लेइ

धर्मनी आयो जी ॥ ए सुख जाण्या रे अमेतो कारि मां, कीधो मुगतिनो साथो जी ॥ मुनि० ॥ ५ ॥ ए छवा वयणां रे मुनिनां सांभळी, देवकी करे विचारो जी ॥ बाळक वयमां रे संयम आदर्यो, धन्य एहनो अवतारो जी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥ छप्पन कोडी रे माहे री साहेबी, साडात्रण क्रोड कुमारो जी ॥ दीठा स घळा रे माहरा राज्यमां, कोइ नहीं छये अनुहारो जी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ इणेइण वयमां रे संयम आदर्यो, पाळे निरतिचारो जी ॥ धन्य धन्य माता रे ताहरी कुखनें, जाया रत्न अमुलक सारो जी ॥ साधुजीना दरिसण दीठां राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ ८ ॥ अग उपांग रे सघळा सुंदरू, सौम्य वदन सुखशीशो जी ॥ जोळी पातरां लीधां हाथमां, तनु सुकुमाळ मुनि शो जी ॥ साधु० ॥ ९ ॥ गज जेम चाले रे मुनिवर मलपता, बोले वचन विचारो जी ॥ राजकुमरनी रे दीजें उपमां, जाणे कोइ देव कुमारो जी ॥ साधु० ॥ १० ॥ धन्य धन्य माता रे जेणे ए जनमिया, वर शणे दोखस थाय जी ॥ नाम लीधाथी रे नवनिधि सपजे, पातक दूर पलाय जी ॥

॥ दोहा ॥

॥आडी फरि फरि निरखिया, धन्य एहनो अवतार ॥छए सहोदर सारिखा, नहीं देखुं एहने अनुहार ॥१॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ धारणी मनावे रे मेघ कुमारनें रे ॥ ए आंकणी ॥ नयणे निहाले रे राणी देवकी रे, मुनिवर रूप रसाल ॥ लक्षणं गुणें करीनें शोभता रे, वाणी जेहनी विशाल ॥ नय० ॥ १ ॥ जिणे घरथी ए पुत्र नीकल्या रे, शुं रह्यो होसे लार ॥ दीसंता दीसे घणु सोहामणा रे, नल कुबेर अनुहार ॥ नय० ॥ २ ॥ एणे अनुहारे रे माहरा राजमां रे, अवर न दीसे कोय ॥ जो छे तो एक माहरो कृष्ण छे रे, एम मन अचरिज होय ॥ नय० ॥ ३ ॥ सीधुं सग पण कोइ दीसे नहीं रे, माहरुं हवणां जेम ॥ सूधी खबरज कोइ न वी पडे रे, एम किम जाग्यो माहारो प्रेम ॥ नय० ॥ ४ ॥ श्रावकनो साधुने उपरें रे, होवे छे धरम सनेह ॥ में घणा दीठा साधु पूरवें रे, ब शुं जाग्यो केम पूरव नेह ॥ नय० ॥ ५ ॥ जातां दीठां राणी देवकी रे, घणु थइ दिलगीर ॥ हियडुं फाटे तेहनु अति घणु रे, नयणे विछूटे नीर ॥ नय० ॥ ६ ॥ स० ॥ ७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बालपणे बोलाव्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीस बाइ देवकी, बीजी नहीं भरत मझार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या विना, केम थाये आवं द ॥ माहरे संशय छे घणो, ते भांगे नेम जिणंद ॥ २ ॥ देवकी मन सासो थयो, जइ पूछु इणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय भांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वदण श्रीजिनराय ॥ सा मग्री सर्व सजी करी, हरष धरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांरे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हरि लाल चाकर पुरुष तेडावीनें, देवकी राणी बोले वाय रे लाल ॥ क्खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, तु रथ वेगो जोतराय रे लाल ॥ नेम वंदवानें जायशुं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जइनें सज्ज कर्यो, रथ रूडो विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ २ ॥ ॥ हां० ॥ चार छतावली अति घणी, वली उपगरण एहवां जाण रे लाल ॥ बाहिरली उवठाण शालमें, ल्या उभो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

॥ धोलानें माता घणां, वली छोटी सींघडीआ जाण रे लाल ॥ दीसे घणुं ए सोहामणा, एहवा वृषभ तुं आ ण रे लाल ॥ नेम० ॥ ४ हां० ॥ सरिखाने चांदी नही, जोवा सरखी बलदनी जोड रे लाल ॥ चाले चाल उतावली, जेहनें शिंगें पुंछे नही खोड रेलाल ॥ नेम०॥५॥हां० ॥ बलदनें जूलां शोजती, वली सो नानी नाथ रसाल रे लाल ॥ सोनानी चली शिंगडी, वली गले ते घूघर माल रे लाल ॥नेम०॥६॥ हां० ॥ खेंचित सोनानी रासडी, वली सोना पट्टाला जोत्र रे लाल ॥ माथे ते घाल्यो सेहरो, तुं एणीपरें कर उद्यो त रेलाल ॥ नेम०॥७॥हां०॥ वली ते रथ शणगारीयो, ते सूत्रें छे विस्तार रे लाल ॥ बलद जुगतशुं जोतरी, लाव्यो उवहाण शाला मकार रे लाल ॥ नेम० ॥८॥ हां०॥ न्हाइ धोइ मज्जन करी, वली पहेरया नव नवा वेश रे लाल ॥ माणिक मोती मुद्रिका, वली घरेणा हार विशेष रे लाल ॥ नेम० ॥ ए ॥ हां० ॥ आरुंबर क री अतिघणो, आवी बेगा रथ मांय रे लाल ॥ आग ल बांधी झीकरी, रथ बेठी दृढ थाय रे लाल ॥ नेम० ॥ १० ॥ हां० ॥ साथें ते लीधी साहेलीयां, वली चाल्या ते मध्य ज रे लाल ॥ चतुर ते बेठोसांघ

॥ दोहा ॥

॥ बालपणे बोल्यो हतो, अइमंतो अणगार ॥ आठ जणीस बाइ देवकी, बीजी नहीं भरत मकार ॥ १ ॥ एहवा पुत्र जनम्या बिना, केम थाये आनंद ॥ माहरे संशय ले घणो, ते भांगे नेम जिणंद ॥ २ ॥ देवकी मन सांसो थयो, जइ पूछुं इणी वार ॥ केवल ज्ञानी मन तणा, संशय भांगण हार ॥ ३ ॥ एम चिंतवी राणी देवकी, वंदण श्रीजिनराय ॥ सामग्री सर्व सजी करी, हरष धरी मन मांय ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ हांरे लाल शीयल सुरंगा मानवी ॥ ए देशी ॥ हांरे लाल चाकर पुरुष तेडावीनें, देवकी राणी बोले वाण रे लाल ॥ खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया, तु रथ वेगो जोतराय रे लाल ॥ नेम वंदणनें जायशु ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे लाल चाकर सुणी हर्षित थयो, गयो जिहां यानशाल रे लाल ॥ तिहां जइनें सज्जा कर्यो, रथ रूडो विसराल रे लाल ॥ नेम० ॥ २ ॥ ॥ हां० ॥ चार छतावली अति घणी, वली उपगरण हखवां जाण रे लाल ॥ बाहिरली उवठाण शालमें, रथ उनो राखी आण रे लाल ॥ नेम० ॥ ३ ॥ हां०

ण तारण कहाज ॥ मनना मनोरथ हो प्रभुजी मा हरा रे देखी रे, रह्या छो महाराज ॥ सांसो० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देइ प्रदक्षिणा वांदता, बोल्या श्री जिनराय ॥ जिण कारण तुमें आवियां, ते सुणजो चित्त लाय ॥ १ नेम कहे सुणो देवकी, सांसो उपनो तुज्झ ॥ छए मुनिवर देखीनें, तुं पुछण आवी मुज्झ ॥ २ ॥ तहत्ति कहे तव देवकी, जोडी दोनुं हाथ ॥ हा स्वामी सांसो पड्यो, ते भांगो जगनाथ ॥ ३ ॥ ए छए ताहरा दीकरा तुं शंका म करे कांय ॥ छए वोरण जे आवीया, तेहनी तुं छेमाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ रूडे रूपरे पुत्र तुमारा राणी देवकी ॥ ए आंकणी ॥ तीन संघाडे तुम घर मुनिवर, आव्या त्रीजी वार ॥ ते देखीनें सांसो पडीयो, छए एकण अनुहार ॥ रूडे० ॥ १ ॥ नागशेठ सुलसा घर वधिया, मकरो शंका लगार ॥ देवकी राणीताहरा जनम्या, नल कुबेर अनुहार ॥ रूडे० ॥ २ ॥ नही निश्चें सुलसाना जाया, मानो वात अमारी ॥ उदर तमारे ए आलोव्या, नही कोइ मात अनेरी ॥ रूडे ॥ ३ ॥ किण

डी, ए रहस्यानो आचार रे लाल ॥ नेम० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर मध्ये थइ नीकळ्या, साथें बहु परिवार ॥ नेमजिणंद जिहां समोसर्या, चाल्या तिण दिज ठार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ धजाने पताका हो दीठा राणी देवकी रे, प्रभु अतिशयनी वात ॥ विनयतो आदरी हो उत्तम साधुनो रे, एतो जगत विख्यात ॥ १ ॥ सांसो निवारो हो प्रभु नेमजी रे ॥ ए आंकणी ॥ रथने उपरथी हो हेठे ऊतरी रे, दासीयोनें परिवार ॥ पायनें अणु आवे हो राणी देवकी रे, साचवी अभिगम सार ॥ सांसो० ॥ २ ॥ देइ प्रदक्षिणा हो वांद्या नेमजी रें, पांचे अंग नमाय ॥ वो गुडा दो हिथण हो भूतळें थापीनें रे, मसक भूइ लगाय ॥ सांसो० ॥ ३ ॥ उप मुनि देखी हो संशय ऊपनो रे, हुं एम थइ रे उदास ॥ सांसो तो निवारण हो कारण आवीया रे, नेम जिणेसर पास ॥ सांसो० ॥ ४ ॥ गुण अनंता हो प्रभुजी तुम तणा रे, जो होये जीभडी अनेक ॥ राग द्वेष वेहुनें हो स्वामी निवारीया रे, सहु माथे मन एक ॥ सांसो० ॥ ५ ॥ धन्य दिवस हो धन्य वेळा घडी रे, भेट्या तर

॥ दोहा ॥

॥ तिण कालें ने तिण समे, नद्दिल पुर छे गाम ॥ नागशेठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥ १ ॥ धणकण कंचणछे घणो, रुद्धितणो नहीं पार ॥ पण मृतवच्छा ते सही, शोचे हृदयमकार ॥ २ ॥ तव ते छोरु कारणें, हरिणगमेषी देव ॥ श्राराधे ते एक मने, नित्य नित्य करती सेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले कालें सेवा करतां, तूठो देव तिहां श्राय रे माइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी छे तुज चाय रे माइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठां रे जाणो ॥ ए श्रांकणी ॥ वलती सुलसा एणी परें बोले, जो डी दोनी हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजनें श्रा राध्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥२॥ धनतो माइरे नरिया नंमारा, तेहनी गरज न कांय हो देवा ॥ मुवा बालक जीवता थाय, ते मुज श्रापो वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणीप रें बोले, तुं सांनल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बाल क जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ ॥ पु ण्य० ॥ ४ ॥ वलती सुलसा एणीपरें बोले, सांनल

विध पुत्र अमारा प्रभुजी, जोडी दोनु हाथ ॥ ए जा थानुं मरम न जाणु ते भाखो जगनाथ ॥ रूडे० ॥ ॥ ४ ॥ जीवतसा ताहरी जोजाइ, घोली ते अण वि मासी ॥ अइमतो रुषि आवतो देखी, तेहनी कीधी हासी ॥ रूडे० ॥ ५ ॥ धन जोबनने मदनी मासी, बोली ते खोटी रीत ॥ आवोनें अइमंता मुनिवर, म लीने गाइयें गीत ॥ रूडे० ॥ ६ ॥ मुरखडी गीतानी मानी, खबर पडे शी थारी ॥ देवकी गरज जे सातमो थाशे, ते तुज कुलक्षय कारी ॥ रूडे० ॥ ७ ॥ जरा संघनी तु बइ पुत्री, कस तणी भणीयाथी ॥ मारु बोल्युं पाछुं न फरे तें ते वात न जाणी ॥ रूडे० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणीनें काने, कसनें जाइ पुका री ॥ अइमंते रुषियें वचन कह्यां जे, ते मुजनें दुःख कारी ॥ रूडे० ॥ ९ ॥ तेह वयण सुणीनें कसें, की धो एक उपाय ॥ वसुदेव पासे बोलज लीधो, देवकी गर्भ जे थाय ॥ रूडे० ॥ १० ॥ ते बालक तो अमघ र थावे, तब माने वसुदेव ॥ कंसराय तिहां राजी हु ठे, सुख जोगवे निस्य मेव ॥ रूडे० ॥ ११ ॥ जे जे गर्भ धरे ठे देवकी, तब तिहां ते कंसराय ॥ सात चो की ते उपर मूकी, कपटें सेवे दाय ॥ रूडे० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण कालें ने तिण समे, चद्दिल पुर छे गाम ॥
नागशेठ ते तिहां वसे, सुलसाघरणी नाम ॥ १ ॥
धणकण कंचणछे घणो, रुद्धितणो नहीं पार ॥ पण
मृतवञ्ञा ते सही, शोचे हृदयमकार ॥ २ ॥ तव
ते छोरु कारणें, हरिणगमेषी देव ॥ आराधे ते एक
मने, नित्य नित्य करती सेव ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ केटले कालें सेवा करतां, तूठो देव तिहां आय
रे माइ ॥ किण कारण तुं मुजने सेवे, शानी छे तुज
चाय रे माइ ॥ १ ॥ पुण्य तणांफल मीठां रे जाणो
॥ ए आंकणी ॥ वलती सुलसा एणी परें बोले, जो
डी दोनी हाथ हो देवा ॥ जिण कारण में तुजनें आ
राध्यो, ते सुणजो तुमे नाथ हो देवा ॥ पुण्य० ॥२॥
धनतो माहरे जरिया जंमारा, तेहनी गरज न कांय
हो देवा ॥ मुवा बालक जीवता थाय, ते मुज आपो
वाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ३ ॥ वलतो देवता एणीप
रें बोले, तुं सांजल मोरी वाय रे माइ ॥ मूवा बाल
क जीवता होवे, ते मुज शक्ति न कांय रे माइ॥ पु
ण्य० ॥ ४ ॥ सुलसा एणीपरें बोले, सांजल

मोरा जाय हो देवा ॥ मूवा बालक जो तुजथी न जीवे, तो थो अवर उपाय हो देवा ॥ पुण्य ० ॥ ५ कोथळीमां जे नाणु घाले, तेटलु ते निकळाय रे माइ ॥ पूरव पुण्यना संचजो होवे, तो सवि वातु थाय रे माई ॥ पुण्य० ॥ ६ ॥ वळती सुलसा एणी परेंबोले, सांजल तुं चित्त लाय हो देवा ॥ तूठो पण अण तूठासरखो , माहारी गरज सरी नही कांयहो देवा ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ वळतो देवता एणी परें बोले, तुमें सुणजो चित्त ठाय रे माइ ॥ ततकालना जे बालक जनमे, ते तुजने देउं लाय रे माइ ॥ पुण्य० ॥ ८ ॥ वळती सुलसा एणी परें बोले, सांजल तु सुखदाय हो देवा ॥ हुं शु जाणुं तुं केहना लावे, ते मुजनें न सुहाय हो देवा ॥ पुण्य० ॥ ए ॥ कंसराय जे मारण माग्या, देवकी केरा नंद रे माइ ॥ ते तुजने हुं आपी देइश, करी देशां आनंद रे माइ ॥ पुण्य०॥१०॥ सुलसा सुणीने राजी हुइ, देव गयो निज ठाणरे माइ अवधिज्ञानें विचारी जोवे, अनुकपामन आण रे माइ ॥ पु० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकीनें सुलसा तणा, गर्ज समकालें कीध ॥

जनम समय जाणी करी, तुज कुमरां तेणें लीध ॥१॥ ते लेइ सुलसानें दीया, कुमर अति सुकुमाल ॥ मृतक बालक सुलसा तणां, ते देव लीये ततकाल ॥२॥ ते लेइ तुज पासें ठव्या, छए एणी परें जोय ॥ निद्रा मूकी गर्ज पालव्या, ते नवी जाणे कोय ॥ ३ ॥ मृतक बालक कंसें लीया, ते जाणे सहु कोय ॥ छए कुमर महोटा थया, जणी गणी पंमित होय ॥ ४ ॥ बत्रिश बत्रिश कन्या वस्या, एक लगन सुखकार ॥ पंच विषय सुख जोगवे, दोगंदक अनुहार ॥ ५ ॥ वांणी सुणी वैरागथी, छयें लियो संयम जार ॥ ए छये पुत्र बे ताहरा, तुं शंका म कर लगार ॥ ६ ॥ तव शंका सहु ए टली, वांदी नेम जिणंद ॥ साधु समीप आव्या सही, आणी घणो आणंद ॥ ७ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ धन्य धन्य जे मुनिवर ध्यानें रम्या जी ॥ ए देशी ॥

॥ देवकी ते आवी नंदन वांदवा जी, हैयडे उल्लसि हरषित थाय रे ॥ निज बालुआने देखी करी रे, जेम नव प्रसूता गाय रे ॥ देव० ॥१॥ ए आंकणी ॥ देह प्रफुली तिहां अति घणी जी, रोम रोम उल्लसी तन सार रे ॥ त्रटके तो त्रुटी कश कंचुआ तणी रे

स्तने विछूटी दुधां केरी धार रे ॥ देव० ॥ २ ॥ बस हैयामांहे तो मावे नहीं रे, जोतां लोचन तृप्ति न थाय रे ॥ तन मन रोमांचित हैयडु उल्लस्युं रे, नज र न पाछी खेंची जाय रे ॥देव०॥३ ॥ एह सहोदर वीरा सारिखा रे, देवकी तो रही सामी निहाल रे॥ नेत्र भरियां आंसुडायकी रे, जाणे त्रूटी मोति केरी माल रे ॥ देव०॥४॥ वली नीज अंगजनें निरखी करी जी उल्लस्यो अति घणो घणो नेह रे ॥ घर जातां प ग लाहामा वहे नहीं जी, फरी फरीने वांदे तेह रे ॥ देव० ॥ ५ ॥ वांदी भगवंतनें भले भावशु जी, वी रा वेगनें उजाय रे ॥ अधन्य अपुण्य अकृत चिंतवे रे, मोहवशेंथी दुःख थाय रे ॥ देव० ॥ ६ ॥ घरें आ वीने राणी देवकी जी,आर्त्तरौद्र मन ध्याय रे ॥ एह वे अवसरें कृष्णजी आविया रे, माताना वांदवा पा य रे ॥ देव० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृष्णें दूरथी देखीया, आज खरी दिलगीर ॥ पगें लाग्यो जाण्यो नहीं, नयणे करे तस नीर ॥१॥ कहो माता किणे दुहव्या, केणे लोपी तुज कार ॥ वली वली कृष्णजी वीनवे, पण उत्तर नदीये लगार

॥२॥ हाथजोडी माधव कहे, सांजजो मोरी माय॥
तुजने वात कह्या विना, गरज न सरशे कांय ॥ ३॥

॥ ढालबारमी ॥

॥रहो रहो राजेसरा केसरीया लाल ॥ ए देशी ॥
हुं तुज आगल सी कहुं कानैया लाल, वितक दुःख
नीवातरे ॥ गिरधारी लाल ॥ दुःखणीनारी छे घ
णी ॥ कानैया लाल ॥ पण दुखणी ताहरी मात रे
॥गि० ॥हुं०॥ए आंकणी ॥१॥ जनम्या में तुज सारि
खा ॥ का० एकणनार्ले सातरे ॥ गि०॥ एके हुलरा
व्यो नहीं ॥ का० ॥ गोदलेइ किण मात रे ॥ गि०॥
हुं ० ॥ २ ॥ ए छये वाध्या सुलसा घरें ॥ का०॥ हु
नजरे आवी देख रे ॥ गि० ॥ वात कही प्रज्ञु नेमजी
॥ का० ॥ जिणमें मीन न मेष रे ॥ गि० ॥ हुं०
॥ ३ ॥ छए तो नाग घरें उछर्या ॥ का० ॥ सुलसानी
पूरी आस रे ॥ गि० ॥ राजऋद्धि छोडी करी ॥ का०
॥ दीक्षा लिधी प्रज्ञु पास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ४ ॥छ
ए तोहवे अलगा रह्या ॥ का० ॥ एक आव्यो तुं म
हारे पास रे ॥ गि० ॥ तुजने में नवी सांचव्यो॥का०
॥ माहरे आव्यो तुं छहे मास रे ॥ गि० ॥५॥
शोल वरस अलगो रह्यो ॥ का० ॥ तुं पण यमुनानें

तीर रे ॥ गि० ॥ नंद यशोदानें घरें ॥ का० ॥ नाम धरावी आहीर रे ॥ गि० ॥ हु० ॥॥ ६ ॥ शोल वरस ठानो वध्यो ॥ का० ॥ पठी ठघर्ख्यां तहरां भाग्य रे ॥ गि० ॥ जल यमुनामें जाइने ॥ का० ॥ सेंनाथ्यो कालीनाग रे ॥ गि० ॥ हु० ॥ ७ ॥ बालपणा नाबोलडा ॥ का० ॥ में एके न पूरी आश रे ॥ गि०॥ आशा विलूली हु रही ॥ का० ॥ भारें मुज सवा नव मास रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ ८ ॥ हलक न दीधो हालरो ॥ का० ॥ पालणीयें पोढाय रे ॥ गि० ॥ हाल रुया गावा तणी ॥ का० ॥ माहरी होंश रही मन मांय रे ॥ गि० ॥ हु० ॥ ए ॥ जगमां मोहटी मोहनी ॥ का० ॥ ठदय थइ माहरे आज रे ॥ गि० ॥ ते जीव जाणे माहरो ॥ का० ॥ के जाणो जिनराज रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १० ॥ आंगणीयें न करी घडी ॥ का० ॥ आंगलीयें वलगाय रे ॥ गि० ॥ साही साही ना मिल्यो ॥ का० ॥ हु आपण केम कराय रे ॥ गि० ॥ हुं ॥ ११ ॥कीधां याव आवे नहीं ॥ का०॥ में केइ करम कठोर रे ॥ गि० ॥ जवांतरें कीधां हशे ॥ का० ॥ मेंकिहां पाप अघोररे ॥ गि० ॥हु०॥१२॥ के पंखी माला भोडीया ॥ का० ॥ के बाल विठो

हा कीध रे ॥ गि० ॥ जीव जयणा कीधी नहीं ॥ का०॥ के कूडा आलमें दीध रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १३ ॥ में जीवाणी ढोलीयां ॥ का० ॥ के में मारी जू लीख रे ॥ गि० ॥ तडके जीव में शेकीया ॥ का० ॥ बहु जीव कीधो संहार रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १४ ॥ कठिन कर्म ते में कीयां ॥ का० ॥ के तोडी सरोवर पाल रे ॥ गि० ॥ इांणे विंढी चांपीया ॥ का० ॥ न करी में शील संज्ञाल रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १५ ॥ पांति ज्ञेदज में कीया ॥ का० ॥ ईर्षा निंदा शराप रे ॥ गि० ॥ कामनी गर्ज्ञज गालीया ॥ का० ॥ के में कीधां प्रौढां पाप रे ॥ गि० ॥ हुं॥ १६ ॥ अणगल नीर में वावस्यां ॥ का० ॥ के में पाड्या अंतराय रे ॥ गि० ॥ के साधुनें संतापीया ॥ का० ॥ ते फल आव्या धाय रे ॥ गि० ॥ हुं० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ १६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माता वयण श्रवणें सुणी, तव ते यादव राय ॥ हाथ जोडी विनयें करी, बोले मधुरी वाय ॥ १ ॥ पूर्व संबंधी देवता, तेडावुं मोरी माय ॥ ताहरा मनोरथ पूरवा, करीस हुं एह उपाय ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ चंद्राउलानी देशी ॥ वलता कृष्णजी एम कहे हो, माजी म करो चिंता लगार ॥ जेम तुम नंदन थायशे हो,तिम हु करीश विचार॥ तिम हु करीश विचार रे माइ, मनमें चिंता म करो कांइ ॥ देजो मुजने भलीय वधाइ, जब जनमे माहारो न्हानो भाइ॥ जीउं माताजी जीउं॥ १॥ माता चरण नमी करी हो,आव्यो पोषध शाल ॥ हरिणिगमेषी देवता हो, मन समस्यो त तकाल ॥मन समस्यो ततकाल मुरारी, अठम भकज चित्तमें धारी॥ देवता आवी कहे तिण वारी,पड्यो क ष्ट किंउ केम भारी॥ जीउं कानाजी जीउं॥२॥देव कहे कृष्णजी प्रते हो, केम तेडाव्यो मुज ॥ कारज कहो मुजने सही हो, जे करवु होये तुज ॥ जे करवुं होये तुज काम भारी, अमे छउं तुजने उपगारी ॥ आदेश द्यो अमने सुखकारी, काम करशोने ते शुभसारी ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ३ ॥ देव प्रत्ये कृष्णजी कहे हो, सुणो तुमे चित्त धार ॥ लघु बांधव मागु सही हो, कृपा करो हरिणगमेषी सार॥ कृपा करो हरिण गमेषी सारी, होवे बालक लीलाकारी ॥ मुख पामे ज्यु मात अमारी, जादव कुलमांहे जयजय कारी ॥

जीउदेवाजी जीउं ॥ ४ ॥ देवकी नंदन आठमो हो, जेम थाये तेम जेम॥ इण कारण तुम समरियो हो, उंर नहीं कोइ प्रेम ॥ उंर नहीं कोइ प्रेम हमारे, बालकनी लीला चित्तमें धारे ॥ एह स्त्रीने होये जग आधारे, पुत्रने देखे माता जिवारे ॥ जीउं देवाजी जीउं ॥ ५ ॥ अवधिज्ञानें प्रयुंजीनें हो, देव कहे तेणी वार ॥ देव लोकथी चवी करी हो, देवकी कुखें अवतार ॥ देवकी कुखें अवतारज थाशे, सवा नवमास जेवारें जाशे ॥ पुत्र जनम्याथी सुख पाशे, दरिसण जेहनो सहुने सुहाशे ॥ जीउं कानाजी जीउं ॥ ६ ॥ जरजोबन वय पामशे हो, पुत्र होशे महा महोटो ॥ पण दीक्षा लेशे सही हो, वचन नहीं अम खोटो ॥ वचन अमारो खोटो न थाइ, मातानें आवी दीध वधाइ ॥ माता हीयडे हर्ष न मावे, कृसजी मनमां आनंद पावे ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ ७ ॥ वलता कृसजी एम कहे हो, सांजलजो मोरी माइ ॥ देवरूप कुंवर होशे हो, देजो मुज वधाइ ॥ देजो मुज वधाइरे माता, पुत्र होशे, तुम जगत विख्याता ॥ मनमां राखो तमें सुखशाता, माताजी थाशे मुज लघु भ्राता ॥ जीउं माताजी [illegible] ॥ ८ ॥ वयण सुणी कृसजी

हो, उपन्यो मन आणंद ॥ वछती देवकी एम कहे हो, तुं सो मुजकुलचंद ॥ तुंतो मुजकुलचंद रे जाइ, माहरी चिंता दूर गमाइ ॥ कुले संतोषी निज माइ, पठी सुख विलसे आवासें जाइ ॥ जीहो कानाजी जीउं ॥ ए ॥ एणे अवसर देवथी चवी हो, देवकी उदर उपन्न ॥ सिंह सुपन देखी करी हो, मनमां हुइ सुप्रसन्न ॥ मनमा हुइ सुप्रसन्न सोजागी, जाइ पी युने पूछवा लागी ॥ पीयु कहे सुण तुं वडजागी, पुत्र होशे तुम गुणनो रागी ॥ जीउं माताजी जीउं ॥ १० ॥ तेह वचन देवकी सुणी हो, सुखमां गमावे काल ॥ सवा नवमासें जनमियो हो, कुंअर अति सुकुमाल ॥ कुंअर अति सुकुमाल देखीने, नाम दीयो गजसुकु माल हरखीनें ॥ हरख पामे देवकी निरखीनें, रीके सहु कोइ गुण परखीने ॥ जीउं कुंअरजी जीउं ॥ ११ ॥ हवे माता निज पुत्रशु हो, रमे रमाडे बाल ॥ मनना मनोरथ पूरवे हो, हाथो हाथ विसाल ॥ हाथो हा थ विसाल रे थाइ, रमाडे माता हरख उमाइ ॥ हा लरीडा हूलरीडा गावे, दिन गमावे राजी थावे ॥ जी उं कुंअरजी जीउं ॥ १२ ॥ गजसुकुमाल महोटो थ यो हो, बहु उछरंगे जणाय ॥ रूप विचक्षण जाणी

नें हो, शोमलघर मनाय ॥ शोमल धर विवाह मनायो, देवकी माता आणंद पायो ॥ दिन दिन वाधे तेज सवायो, जातो न जाणे काल गमायो ॥ जीउ कुंअरजी जीउ ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणें अवसर श्रीनेमजिन, करता उग्र विहार॥ नविक जीव प्रतिबोधता, ओडवता संसार ॥ १ ॥ एक दिन नेम पधारिया, सोरठ देश उदार ॥ द्वारिका नयरी आविया, नंदन वनह मजार॥२ ॥आज्ञा लेइ वनपालनी, उतरिया तिणे ठार ॥ संयम तपे करि नावता, बहु गुण तणा नंमार ॥ ३ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ राणपुरो रलिआमणो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ नेमजिणंद समोसस्या रे ॥ लाल, निर्लोनी निर्माथ रे ॥ नविकजन ॥ दरशन दीठे तेहनुं रे लाल, नव नवनां कुःख जाय रे॥ न० ॥ १ ॥ नेमजिणंद समोसस्या रे लाल॥ए आंकणी ॥ सहस अढारें साधुजी रे लाल, साधवी चालीश हजार रे ॥ न० ॥निज आणाने मनावता रे लाल,शासनना शिरदार रे ॥ न० ॥ ने० ॥ २ ॥ चोत्रीश अतिशयें विराजता रे

पांत्रीश वाणी सार रे ॥ ज० शुभ लक्षण शोहाम
णां रे लाल, आठनें एक हजार रे ॥ ज० ॥ ने०॥३॥
प्रभु दर्शन देखी करी रे लाल, हरपे वांद्या पाय रे॥
ज० ॥ वनपालक उतावलो रे लाल, कृष्णपासें ते जा
य रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ४ ॥ वनपालक आवी करी रे
लाल, जोडी दोनुं हाथ रे ॥ ज० ॥ कृष्णनरेसरने क
हे रे लाल, सांजलजो नरनाथ रे॥ सुगुणिजन ॥ने०
॥ ५ ॥ वरिसण जेहेनुं इछता रे लाल, करता मनमें
चाह रे ॥ ज० ॥ पीयरीया उकायना रे लाल, श्रीने
मि जिनराय रे॥ज० ॥ ने० ॥ ६ ॥ नाम गोत्र सुणी
रीजता रे लाल, धरता मन अभिलाष रे ॥ ज० ॥
ते श्री नेम पधारिया रे लाल, वनपाले एम दाख रे॥
ज० ॥ ने० ॥ ७ ॥ दीजीयें देव वधामणी रे लाल, पा
मी मन आणंद रे ॥ ज० ॥ तेह वयण सुणी करीरे
लाल, तव हरख्या गोविंद रे ॥ ज० ॥ ने० ॥ ८ ॥
आसनथी तव उठीयो रे लाल, सात आठ पग सामो
जाय रे ॥ ज० ॥ प्रभुनें कीधी वंदना रे लाल, पठी वे
ठो निज गाय रे ॥ ज० ने० ॥ ९ ॥ कृष्णे दीधी
वधामणी रे लाल, बोले मधुरी वाण रे ॥ सुगुणिज
न ॥ सोनैया दीधा सामटा रे लाल, साढी बारे लाख

रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १० ॥ वनपालकनें विदा करी रे ला
ल पढी चाकरनें तेडाय रे ॥ सु० ॥ कौमुदी जेर वजा
डीनें रे लाल, सांजली सहु सज्ज थाय रे ॥ सु० ॥ ने०
॥ ११ ॥ उगो रे लोको सिताबशुं रे लाल, रखे अवे
ला थाय रे ॥ सु० ॥ एक घडी दर्शन विना रे लाल,
क्षण लाखीणो जाय रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १२ ॥ कोइ
कहे दरिसण देखशुं रे लाल, कोइ कहे सुणशुं वाण
रे ॥ सु० ॥ कोइ कहे संशय ठेदशुं रे लाल, कोइ
कुतूहल जाण रे ॥ सु० ॥ ने० ॥ १३ ॥ स० ॥ १०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम विविध परें चिंतवी, बहु नारीना वृंद ॥
स्नान करी शिणगारीया, मनमां धरी आणंद ॥ १ ॥
नगर मध्यें थइ निकल्या, चढी हय रथ गयंद ॥ पंच
अजिगम साचवी, वांद्या नेमजिणंद ॥ २ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिजुवन सिरताज ॥ एदेशी ॥
॥ सोरठ देश मकार, द्वारिका नगरी सार, आ
ज हो वसुदेव रे राजा राज्य करे तिहां जी ॥ १ ॥
जाइ दशे दसार, बलजद्र कान कुमार, आज हो दीपे
रे सोहागण राणी देवकी जी ॥ २ ॥ तसु पुत्र

रसाल, नामे गजसुकुमाल,आज हो मात पितानें वा
ल्हो कुंवर प्राणथी जी ॥३॥ सुणी आव्या नेमजिणंद,
साथें सुरनर वृंद, आज हो सेव्यां रे सुखदायक स्वा
मी समोसख्या जी ॥ ४ ॥ जादव बहु परिवार, मन
धरी हर्ष अपार, आज हो कृष्णादिक सहु उछरंगें
संचख्या जी ॥ ५ ॥ करी बहु अति माम, वंदन नेमी
स्वाम, आज हो गज सुकुमाल ते साथें लेइनें जी॥६॥
विधिशु वांदी जिनपाय, तव ते बोनुं जाय, आज हो
उचित थानक तिहां आवी बेठा सही जी ॥ ७ ॥
तव ते जिनहित आण, जापे मधुरी वाण, आज हो
धर्म कथा कही बहु विस्तारशु जी ॥ ८ ॥ देशना सु
णी तेणी वार, बूज्यां सहु नर नार, आज हो वांदी
रे व्रत ग्रहीनें निज निज घर गया जी ॥ ए ॥ वाणी
सुणी कृष्णराय, वांदी जिनवर पाय, आज हो जेम
आव्या तेम निज नगरें गया जी ॥ १० ॥ स० ॥ १००॥

॥ दोहा ॥

॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, बूज्यो गजसुकुमाल
॥ घरें आवी माता जणी, बोले वचन रसाल ॥ १ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए दे

शी ॥ वाणी सुणी जिनराज तणी कानें पडी ॥ रे मा
डी श्रंतर हैयडानी श्रांख माहेरी उघडी ॥ वलती मा
ता बोले हुं वारी ताहेरी ॥ रे जाया ॥ सुणी ए प्रभुजी
नी वाणि पुण्याइ पूरी ताहरी ॥ १ ॥ कही श्री जिन
राज ते साची में सद्दही ॥ रे माइ ॥ लागी मीठी जेम
साकर दूधनें दही ॥ दीजें श्रनुमति मुज संयम लेशुं
सही, न करो श्राज्ञानी ढील पुत्रें ऐसी कही ॥ २ ॥
श्राज सन्नामां जैनधर्म वखाण्यो जिनवरें, मुजने रु
च्यो छे तेह छेह दुःखनो करे ॥ ए संसार असार
के ठार समो लख्यो, जन्म मरण दुःखकरण जल
ण जालें धख्यो ॥ ३ ॥ श्री जिनमारग ठारण कार
ण उंलख्यो, ए विना अवर न कोइ सकल शास्त्रें ल
ख्यो ॥ कारागार समान श्रागार विहार छे, तजवो को
इकवार श्राखर पहेलां पछे ॥ ४ ॥ एक इहां श्रणगा
र पणुं सुखकार छे, माता द्यो श्रनुमति वात न को
करवी श्रछे ॥ नंदन वचन सुणी एम जननी जल फ
ली, हित वाणी दुःख श्राणी चाखे थइ गलगली
॥ ५ ॥ वाणी अपूरव वात पुत्रनी सांजली, घणुं मू
र्छागत थाय धसकी धरणी ढली ॥ जांगी हाथांरी चू
ड माथें केश वीखस्या, वली हुई उंठणो दूर धस

की घरणी पड्या ॥ ६ ॥ मोह तणे वश आय सूरत जाणी थइ, शीतल वाय सचेत थइ बेठी जइ ॥ कुअरनां मुख साहमु रहीनें जोवती, मोह तणे वश बोले माता रोवती ॥ ७ ॥ तुज मुख मार्हेथी वहमाणी ए केम पडी, माहरे ठे तुजऊपर आशा अति वडी ॥ हु मुखथी तुज नाम न मेलु श्रब घडी, रे जाया तुं जीवन श्रधा लाकडी ॥ ८ ॥ चारित्र ठे वत्स डुक्कर असीधारा सही, सुरगिरितोलवो बांह के तरवो जलवहि ॥ उपाडी लोह भार के गिरि चढवो वही, तुं सुवर सुकुमाल पाले केम थिर रही ॥ ए ॥ दोष बेंतालीस टाली करवी गोचरी, भमरुं भमरा जेम चिंतामाने लोचरी ॥ कनक कचोला ठोड लेवी वत्स काचली, जाव जीव सर्गे खाट न जोवी पाठली ॥ १० ॥ जे इह लोके आसंस के परलोकें परमुहा, कायरनें कुपुरुपनें ए सविडुक्करहा ॥ धीर वीर गंजीरनें शी डुक्कर कहा, मान करी ए वात धीहावो शु मुहा ॥ ११ ॥ परीसह केरी फोज आवी जब लागशे, संयम नगर सचाय कोट तव भांगशे ॥ तहारे बल तुज जोर कांइ नहीं फावशे, पुत्र श्रमारु ताम वचन मन आवशे ॥ १२ ॥ कोटें शुज मनोरथ सुजट वेसाडशु,

सत्य रूप पडकोट तेमांहे समारशुं ॥ समता नालें ज्ञा
न गोला नरी मारशुं, परिसह केरी फोज आवंती वा
रशुं ॥ १३ ॥ राग द्वेष दोय चोर जोरावर लूटशे, पु
ण्य खजानो माल अमूलक लूंटशे ॥ काल्युं पीञ्युं व
स्त्र कपासते थायशे, मन केरी मनमांहे के होंस स
मायशे ॥ १४ ॥ पहेरी उत्साह सन्नाह पराक्रम धनु
ष ग्रही, थिरता पणच वैराग के बाण पुंखी करी ॥
साहमांपहेली मुठें हणशुं ते सही, वीरजननी तुज
नाम कहावीश ते वही ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ २२४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलती माता इम कहे, जोगवो जोग संसार ॥
जुक्त जोगी हुआ पठी, लेजो संयम जार ॥ १ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मांकण मूढालो ॥ ए देशी ॥ सांजल रे मोरी
माता, एतो विषयारस डुःखदाता हे ॥ निज मन सम
जाय लो ॥ मन समजाय लो मोरी माता, एतो जनम
मरण डुःख दाता हे ॥ निज० ॥ १ ॥ जेणे न कियो
धर्म लगार, तेतो पहोता नरक मकार हे ॥ निज० ॥
जे जे कीधां एणे संसार, ते तेहनी आवे लार हे ॥
निज० ॥ २ ॥ इण नव पीडा पावे, तेतो मूल कोय न मि

टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सहु आवे, पण दुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निज० ॥ ३ ॥ तो परजव कु ण आसी, जीव कीधा पाप पुण्य वासी हे ॥ नी० ॥ ते एकलडो दुख पासी, बीजो आडो कोइ न थासी हे ॥ निज० ॥ ४ ॥ इण जवथी हुं दरियो, लख चो राशीमां फरियो हे ॥ नि० ॥ बाल मरणे हुं मरियो, वार अनंती अवतरियो हे ॥ निज० ॥ ५ ॥ रमणी रंग पतग, नही पासे प्रीत अजंग हे ॥ नि० ॥ रमणी करावे बहु जग, सेहशु कुण करे संग हे ॥ निज० ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगडो कूडो, मेंतो जिन मारग पायो रूडो हे ॥ निज० ॥ ७ ॥ हुं राचु न हीं एमां ठंडो, जेम पांजरामांहे सूडो हे ॥ निज० ॥ ८ ॥ माताजी अनुमति दीजें, घडी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजें, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज० ॥ ए ॥ श्री नेमीसर पाश, हुंतो पूरीश मननी आश हे ॥ नि० ॥ मायें जा एयो कुंअर उदास, करे वली उत्तर तास हे ॥ नि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक बहु मंत्रवी, ...

॥ ते विस्तार तो छे घणो, अंतगड मांहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ वलती कहे राणी देवकी, रे पुत्र तुं लघुवेश ॥ संयम डुक्कर छे सही, तेतुं केम पालेस ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ लाछल दे मात मह्लार ॥ ए देशी ॥ वली एम कहे कुमार, आणी प्रेम अपार, आजहो अमीयरे समाणी वाणी सांजली जी ॥ १ ॥ उपनो मन वैराग, संयम उपर राग, आजहो धन सज्ञान सहु दीसे कारिमो जी ॥ २ ॥ में जाण्यो सर्व असार, एकज धर्म आधार, आजहो बेकर जोडी मातानें एम वीनवे जी ॥ ३ ॥ माता पिताना पाय, प्रणमे सुत सुखदाय, आजहो अनुमति दीजें माता मुज जणी जी ॥ ४ ॥ सुण वत्सतुं लघुवेश हुं केम देउं उपदेश, आजहो सुत पाखे मावडी एकली किम रहे जी ॥ ५ ॥ वचन अपूरव एह, श्रवणे सुण्या गहगेह, आजहो जल जर नयणे बोले राणी देवकी जी ॥ ६ ॥ ते पुत्र न पाले दिक्क, पालवी सुगुरु शीख, आज हो घर घरनी जिक्षाजमंता दोहिली जी ॥ ७ ॥ जावजीव निरधार, चालवुं खंमा धार, आजहो बावीश परिसह बलवंत जीतवा जी ॥ ८ ॥ शाल दाल घृत गोल, कोण देशे

टावे हे ॥ नि० ॥ कुटुंब मिली सहु आवे, पण दुःख कोय न वेहेंचावे हे ॥ निज० ॥ ३ ॥ तो परजव कुण आसी, जीव कीधां पाप पुण्य थासी हे ॥ नी० ॥ ते एकलडो दुख पासी, बीजो आडो कोइ न थासी हे ॥ निज० ॥ ४ ॥ इण जवथी हु डरियो, लख चो राशीमां फरियो हे ॥ नि० ॥ बाल मरणे हुं मरियो, वार अनंती अवतरियो हे ॥ निज० ॥ ५ ॥ रमणी रंग पतग, नहीं पाले प्रीत अजंग हे ॥ नि० ॥ रमणी करावे बहु जग, तेहशु कुण करे संग हे ॥ निज० ॥ ६ ॥ एमां जे प्राणी माच्या, ते तो मूरख कहीये जाचा हे ॥ नि० ॥ इण संसाररो जगडो कूडो, मेंतो जिन मारग पायो रूडो हे ॥ निज० ॥ ७ ॥ हुं राचु न हीं एमां ठंडो, जेम पांजरामांहे सूडो हे ॥ निज० ॥ ८ ॥ माताजी अनुमति दीजें, घडी एकनी ढील न कीजे हे ॥ नि० ॥ माताजी मया करीजें, जेम मुज कारज सीजे हे ॥ निज० ॥ ए ॥ श्री नेमीसर पाश, हुतो पूरीश मननी आश हे ॥ नि० ॥ मायें जा एयो कुंअर उवास, करे वली उत्तर तास हे ॥ नि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनादिक बहु मेंत्रवी, उत्तर पत्रुत्तर बहु कीध

रहे जी ॥ १९ ॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काज
ल समान, आज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो
जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो
होय, आज हो मुज मन वाल्हो अति घणो तुं सही
जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरन सुकु
माल आज हो जोग योग्य ठे अवस्था ताहरी जी
॥ २२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गा
त्र, आज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी
॥ २३ ॥ मीठी प्रजु अमृत वाण, में कीधी मातप्र
माण, आज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी
॥ २४ ॥ जाण्यो में अथिर संसार, लेशुं संयम जार,
आज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो
जी ॥ २५ ॥ पछें लेजो संयम जार, आदरजो आचा
र, आज हो कन्या विचक्षण परणो लाडकी जी
॥ २६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाल, जाणुं रमाडीश
बाल, आज हो तुज उपर मुज आशा ठे घणी जी
॥ २७ ॥ मात पितानें जाय, घणुंक मोह लपटाय,
आज हो कह्युं रे न माने कुंअरसुलक्षणो जी॥२८॥
घणुं रे थइ दिलगीर, नयणे विछूटे नीर, आज हो
विलाप करे ठे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर

बोल, आजहो केशरीये वाघे रे कस कोण बांधशे जी ॥ ए ॥ नित्य नवा वस्त्र सिणगार, करवा मनोहर आहार, आजहो अरस निरस आहारनें मेलां काप ां जी० ॥ १० ॥ सहेज विगाड फूल सार, तोहे ना वे निंद लगार, आज हो भाज संथारे सुवुं दिन दिन दोहिलु जी ॥ ११ ॥ पीवुं उनु नीर, सेहेवुं दुःख शरीर, आज हो भुजायें करीनें सागर तरवो दोहिलो जी ॥ १२ ॥ बावल देवी बाथ, लोह चणा लेइ हाथ, आज हो मीण तणे रे दांते चावण दोहिलो जी ॥ १३ ॥ बलतो कुमर अबीह, वचन कहे जेम सिं ः, आज हो कायरनुं हीयडुं रे कंपे अति घणु जी ॥ १४ ॥ हुंतो सिंह जेम शूर, पालु संयम पूर, आज हो चारित्र पाली शिवरमणी वरू जी ॥ १५ ॥ इन्द्र च न्द नरिंद, दानव देव मुणिंद, आज हो अथिर संसा रमें सघल केइ आवछे जी ॥ १६ ॥ तीर्थंकर गणधा र, वासुदेव चक्री सार, आज हो एहवा थीरपणा थी र कोइ नवि रह्या जी ॥ १७ ॥ तो अवरां कुण वात एम अवधारो मात, आज हो मोह निवारण वार्टे माढी मुज तणो जी ॥ १८ ॥ तो शुं अत्यत स्नेह, ए क जीव दोय देह, आज हो तुज विहुणी माता केम

रहे जी ॥ १९ ॥ तुं मुज जीवन प्राण, कीकी काज ल समान, आज हो उंबर फूल परें सुणतां दोहिलो जी ॥ २० ॥ इष्ट कंत पीयु मोय, तुं मुज विसामो होय, आज हो मुज मन वाल्हो अति घणो तुं सही जी ॥ २१ ॥ तुं पुत्र नाहनो बाल, केलि गरज सुकुमाल आज हो जोग योग्य छे अवस्था ताहरी जी ॥ २२ ॥ रूप कला गुण पात्र, निरुपम निरमल गात्र, आज हो सोमलरी बेटी परणो पदमणी जी ॥ २३ ॥ मीठी प्रभु अमृत वाण, में कीधी मातप्रमाण, आज हो मायाशुं मन मोरो उतरी गयो जी ॥ २४ ॥ जाण्यो में अथिर संसार, लेशुं संयम जार, आज हो मात मया करी अनुमति मुजने आपजो जी ॥ २५ ॥ पछें लेजो संयम जार, आदरजो आचार, आज हो कन्या विचक्षण परणो लाडकी जी ॥ २६ ॥ पुत्र मुज मन हुंति चाल, जाणुं रमाडीश बाल, आज हो तुज उपर मुज आशा छे घणी जी ॥ २७ ॥ मात पितानें जाय, घणुंक मोह लपटाय, आज हो कह्युं रे न माने कुंअर सुलक्षणो जी॥२८॥ घणुं रे थइ दिलगीर, नयणे विछूटे नीर, आज हो विलाप करे छे वसुदेव देवकी जी ॥ २९ ॥ हलधर

माधव जाय, ततक्षण विगर बुलाय, आज हो मधुर वचनशु माधव एम कहे जी ॥ ३० ॥ टालु जाइ ताहरु दुःख, विलसो मनोहर सुख, आज हो वायविना दुःख निवारु ताहारु जी ॥ ३१ ॥ जनम मरण वारो मोय, सुख मानी रहु तोय, आज हो दुःख हरण सुख करण तुमें थांभवा जी ॥ ३२ ॥ देव दाणव इन्द्रराय, ए केणेही न मिटीय, आज हो कर्म क्षय थकी सहुए टले जी ॥ ३३ ॥ क्षय करवा निज कर्म, लेशु संयम धर्म, आज हो अनुमति दीजें यथवमुज जणी जी ॥ ३४ ॥ कृष्ण कहे एम वाय, सुण सुण मोरा जाय, आज हो राजे बेसाड्ड द्वारामतिनु ए सही जी ॥३५॥ वरतावुं ताहरी आण, करु हु हुकम प्रमाण, आज हो आणा वरतावु सघले ताहरी जी ॥ ३६ ॥ मौन रह्या तेणी वार, कृष्ण हरख्या निरधार, आज हो सज्जन परिवार सहु राजी हुआ जी ॥ ३७ ॥ करवा ते कृष्ण काज, लेइ बेसाड्या राज, आज हो हुकम चलावे गज सुकुमालनो जी ॥ ३८ ॥ कृष्ण कहे एम वाण, राय हुकम प्रमाण, आज हो हाथ जोडीने केशव एम कहे जी ॥ ३९ ॥ वरतावो माहरी आण, करो हुकम परिमाण, आज हो दीक्षा

महोत्सवरी अब तइआरी करो जी ॥ ४० ॥ खजंना
र खोलाय, तीन लाख नाणुं कढाय, आज हो वेगे
रे मंगावो रजोहरण पातरा जी ॥ ४१ ॥ नारायणें
तेमहिज कीध, आज्ञा सेवकनें दीध, आज हो सा
मग्री सरवे संयमनी सज्ज करे जी ॥ ४२ ॥ कुंअरनें
निश्चल जाण, माता अमृत वाण, आज हो आशीष
दीये छे राणी देवकी जी ॥ ४३ ॥ धन्य दाहाडो मा
हरो आज, सफल फल्यां मुज काज, आज हो चरण
ना शिष्य थाशुं श्रीनेमनाथनां जी ॥ ४४ ॥ वाजांने
नीशाण, बेसारी शिबिका आण, आज हो आणीनें
सोंप्या छे श्रीजगनाथनें जी ॥ ४५ ॥ रहेती एहनें
तंत, हुंतो इष्टनें कंत, आज हो तुमनें रे सोंपुं हुं प्रज्ञु
जी शिष्य जणी जी ॥ ४६ ॥ प्रज्ञुजीयें दीक्षा दीध, कुंअर
नुं कारज सीध, आज हो माता पिता रे कुंअर प्रत्यें क
हे जी ॥ ४७ ॥ धरजो मन शुजध्यान, दिन दिन चडते
वान, आज हो सिंह तणी परें संयम पालजो जी
॥ ४८ ॥ तव ते देवकी नार, कहे प्रज्ञुने वारवार, आ
ज हो तप करतां एहने तमें वारजो जी ॥ ४९ ॥ ए
णे ए जवह मकार, डुःख नवि दीठुं लगार, आज
हो देव तणा परें सुखएणे जोगव्यां जी ॥ ५० ॥ ज्ञ

स्यां तरस्यानी चाह, करजो पहनी संजाल, आज हो जालवजो पहनें रूडीपरें घणु जी॥५१॥ माहरं. हसी पोथीनें आय, से पीधी तुम हाथ, आज हो जेम जाणो तेम हवे तमे राखजो जी ॥ ५२ ॥ स० ॥२०९॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही पाठा वल्या, देवकीनें परिवार ॥ पठी कृष्ण पण वांदीने, पहोता नगर मकार ॥ १ ॥ प्रभुजीयें दीक्षा देइ, शीखव्यो सर्व आचार॥ प्रभु पासें विनयें करी, जण्यो अग इग्यार॥ २ ॥ इर्या स मिति शोजता, थया गज अणगार ॥ ठकाय तणी रक्षा करे, पाले पंचाचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ठंगणीशमी ॥

॥ सोरठ देश सोहामणो ॥ ए देशी ॥

॥ दीक्षा दिन प्रभु वांदीने, मशाणे संध्याकाल रे ॥ पडिमा ठाइ काउस्सग्ग रह्यां तिहां सोमल आव्यो चाल रे ॥ सोनागी शुक्ल ध्यानें चड्यो ॥ ए आंकणी ॥१॥ मुनि देखी वेर उल्लस्यो, थयो कोपांतर काल रे॥ विण अवगुण मुज पुत्रीनो, जनम खोयो तें आल रे ॥सो०॥२॥ एम बहु रीसें परजली, बांधी माटीनी पा ल रे ॥ केसु वरणा माथे धर्या, धगधगता खेर अंगा

र रे ॥ सो० ॥ ३ ॥ तापें तुंबडी खदखदे, फडफड
फूटे हाड रे ॥ चाम चडचडे नसा तड तडे, लोही
वहे निह्राड रे ॥ सो० ॥ ४ ॥ धीर वीर मुनिध्यानें
चड्या, करे निज धर्म संभाल रे ॥ जे दाजे ते माह
रुं नहीं, पण नाण्यो मने करी काल रे ॥ सो० ॥ ५ ॥
अनादि कालनो जीवडो, कर्यो प्रकृतिनो संग रे ॥
पुजल रागें रीजीउं, नव नवें ते रंग रे ॥ सो० ॥ ६ ॥
कुमति सेनानें वश पड्यो, जीव रल्यो तुं संसार रे॥
अनादि कालनो नूली गयो, हवे करो निज विचार
रे ॥ सो० ॥ ७ ॥ सुमति निवृत्ति अंगी करी, टाली
अनादि उपाधि रे ॥ क्षमा नीरे आतम सिंचीयो,
आणी परम समाधी रे ॥ सो० ॥ ८ ॥ अपूरव कर
ण शुक्लध्याननो, त्रीजो पायो क्षपक श्रेण रे ॥ परम
शुक्ल लेश्या वरी, तो शुं वालें अग्नि तृण क्षीण रे
॥सो०॥ ए ॥ घाति कर्म खपावियां, टाल्यो कर्म वि
कार रे॥ करम टाली केवल लही, पहोता मुक्ति म
झार रे॥ सो० ॥ १० ॥ केवल महोत्सव सुरें कर्यो,
पछी पूछ्यो देवकी मोरार रे ॥ सुर वृत्तांत सवे कह्यो,
ते सूत्रें छे विस्तार रे ॥ सो० ॥ ११ ॥ सात सहोद
र मुक्ति गया, वांदी नेम जिणंद रे ॥ नित्य एहवा

मुनि संभारियें, लहियें परमानंद रे॥ सो० ॥१२॥ धरम दलाली कृष्णें करी, खरच्यु द्रव्य अपार रे। चार तीर्थनें साह्य करी वली वधामणी दीधी सा रे ॥ सो० ॥ १३ ॥ तिणे तीर्थंकर गोत्र बांधीयुं, सु णजो सहु नर नार रे ॥ श्रीजीथी निकली अममना में, जिन होशे जग आधार रे ॥ सो० ॥ १४ ॥ कर्म खपावी केवल लही, पहोंचशे मुक्ति मझार रे॥ एहवु जाणी जे धर्म आदरे, ते लेशे भवजल पार रे ॥ सो० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०७ ॥ समाप्त ॥

इती श्रीदेवकीजीना षट्पुत्रनो रास समाप्त ॥

॥ अथ मूर्खशतक प्रारम्भ ॥

मूर्ख जनमां आ नीचे लखेलां एकसो अपलक्षण मां हेला घणांक अपलक्षण दीठामां आवे छे, तेनां नाम

१ उद्यम करवा समर्थ छतां उद्यम न करे.
२ विद्वानोनी सभामां पोतानी प्रशंसा करे.
३ वेश्याना वचन उपर विश्वास राखे
४ पांखंडी कृत आडंबर देखी प्रतीत आणे
५ जूगार रमी धन पेदा करवानी आशा राखे

६ कर्षणथी धन पेदा करवानो संदेहथी आणे.
७ निर्बुद्धि छतां महोटा कार्य करवानी वांछा करे.
८ वणिक छतां एकांतें कोइ छंदमां रसिक होय.
९ लहेणुं करी अणखपती वस्तु वेचाती लीये.
१० पोतें वृद्ध छतां दश वर्षनी कन्या परणे.
११ अण सांजल्या ग्रंथोनुं व्याख्यान करे.
१२ जगत्मां जे प्रत्यक्ष वस्तु होय तेने छानी ढांके.
१३ पोतानी स्त्री चपल छतां ईर्ष्या राखे.
१४ समर्थ वैरी छतां तेनाथी शंकाय नहीं.
१५ धन आपीने पछी पश्चात्ताप करे.
१६ महोटा कवीश्वरनी साथें विवाद करे.
१७ अप्रस्तावें परवडुं बोले.
१८ बोलवाने प्रस्तावें मौन धारण करे.
१९ लाज थवाने अवसरें कलह करवा वेसे.
२० जोजन वेलायें रोष करें.
२१ घणो लाज थतो देखी धनने विखेरी मूके.
२२ ज्यां सामान्य जाषा बोलवी जोइयें, तिहां कठिण संस्कृत जेवी जाषा बोले.
२३ पुत्राधीन पणायें अने धने करी दयामणो थाय.
२४ स्त्रीना पीयर पक्षवाला पासें प्रार्थना करे.

२५ स्त्रीने हास्यें रीसाणो थको विवाह करे
२६ पुत्र ऊपर रीशाणो थको तेने बंधनमां घाले
२७ कामुकनी स्पर्द्धायेंकरी दातार थाय
२८ देणदारनी प्रशंसाथी अहंकार करे
२९ बुद्धिना गर्वेंकरीने हितनां वचन न सांजले
३० कुलने मदें करी कोइनी चाकरी न करे.
३१ कामीथको घणु दुर्लज एवुं इव्य वीये
३२ इव्य वगेरे उधारे देइने पाछुं मागे नही
३३ लोजी राजानी पासेंथी लाजनी वांछा करे
३४ दुष्ट राजा उतां तेनी पासें न्यायनी इछा करे
३५ आप मतलबी साथें स्नेहनी आशा राखे
३६ दुष्ट मित्र उते पोतें निर्जयपणें रहे
३७ कृतघ्ननो उपकार करवा माटे प्रयास करे.
३८ नीरसमाणसने अर्थें पोताना गुण वेचे
३९ पोताने समाधि उतां वैद्य औषध करे
४० पोतें रोगी थको कुपथ्य करवा जाय
४१ लोजें करी पोताना स्वजननो त्याग करे
४२ वचनेकरी पोताना मित्रने दुहवे
४३ लाजनी वेलायें आलस करे.
४४ ऋद्धिवंत उतां प्रिय साथें कलह करे.

४५ ज्योतिषि निमित्तियाना कहेवाथी राज्यने वांछे.
४६ मूर्ख साथें एकांत करवामां आदर करे.
४७ दुर्बलजनने पीडवा शूरवीर थाय.
४८ प्रत्यक्ष दोषवाली स्त्री साथें राचे रतिसुख करे.
४९ गुणनो अभ्यास करवामां क्षणेक रागी न होय.
५० द्रव्यादि संचय करीने पारके हाथे व्यय करावे.
५१ राजानी प्रशंसा करवा मौन धारण करे.
५२ लोकोनी आगल राजादिकनी निंदा करे.
५३ दुःख पडे थके दयामणो थाय.
५४ सुखमां वर्त्ततो छतो दुःख दारिद्रने वीसारी मूके.
५५ अल्प वस्तुनुं रक्षण करवामाटे घणो व्यय करे.
५६ वस्तुनी परीक्षा करवाने अर्थे विष खाय.
५७ धातुर्वादें करी कमाववा माटे धननो नाश करे.
५८ क्षयरोगी थको रसायणनो रसीयो थाय.
५९ पोताना मुखें पोतानी महोटाइ करतो फरे.
६० रीशें करी आपघात करवानी इछा करे.
६१ निरर्थक फेरा खाय व्यर्थ जमतो फरे.
६२ तीर वागे तो पण ऊनो ऊनो युद्ध जोया करे.
६३ शक्तिमान साथें विरोध करी निश्चिंत सूवे.
६४ स्वल्प धन होय तोपण घणो आडंबर करे.

६५ हु पन्ति हुं एम चिंतवतो वाचाल थाय
६६ हुं सुभट हु एवा गर्वथी निर्भय थको रहे
६७ अतिस्तुतियें वखाण्यो थको उचाट आणे
६८ थडवाडना वचन बोलतो मर्म प्रकाशे
६९ जे दारीद्री निर्धन होय तेना हाथमां धन आपे
७० जे कार्य सिद्ध थवानो संदेह होय तेवा कार्यमां धनव्यय करे.
७१ धननो व्यय करी नामु करतो वेलायें लेखु जं तां संदेह आणे जे अटलु द्रव्य केम खरचाइ गयुं
७२ जे दैव करशे ते थाशे एवी आशा करी बेशी रहे परंतु पुरुषार्थ कांइ पण करे नहिं
७३ दरीद्री छतो जणजणनी पासें बेसे वाचाल थाय
७४ बीजायें वार्‍यो थको जमवुं वीसारी मूके
७५ गुणहीण छतो आपणा कुलने प्रशंसे
७६ सभामां बेठो थको अरूचर्मे ऊठी जाय
७७ दूत थइ जाय अने संदेशो वीसारी मूके
७८ उधरसनो व्याधि होयने चोरी करवा चाले प्रवर्त्ते
७९ कीर्त्तिने अर्थे महोटो भोजननो वरो करे.
८० पोतानी प्रशंसा माटे थोडुं जमे भूख सहे
८१ स्त्रीना भयथी याचकने आवता वारे.

७२ कृपणताने लीधे अपयश उपार्जन करे.
७३ प्रत्यक्ष दोषवाला माणसनां वखाण करे.
७४ साद घोघरो छतां गीत गावा बेसे.
७५ थोडुं जमे अने जमवानुं अतिरसयुक्त करे.
७६ चाटुक वचन बोलतो साहामानुं निराकरण करे.
७७ वेश्यानो जे यार तेनी साथें कलह करे.
७८ बे जण मंत्र आलोच करतां होय तिहां तेमनी पासें जइ वचमां ऊनो रहे.
७९ राजानो प्रसाद पामे छते जाणे जे ए प्रसाद म-हारे निरंतर निश्चें रहेशे.
८० अन्याय करीने महोटाइनी वांछा करे.
८१ धन हीण छतो जेजे कार्य धनथी थता होय तेवा तेवा कार्यों करवानी वांछा करे.
८२ लोकोनी आगल पोतानुं तथा पारकुं गुह्य प्रका-श करतो फरे.
८३ कीर्त्तिने अर्थें अजाण्या माणसनो हामी थाय.
८४ जे हितशिक्षा करे, तेनी ऊपर मत्सर आणे.
८५ सर्व कोइनो विश्वास करे एटले जेटलुं धोलुं तेट-लुं सर्वे दूधज छे, एम जाणे.
८६ लोक व्यवहार लोकाचारनी वात न जाणे.

९७ पोतें भीखारी छतां चन्दु जमवा वांछे
९८ पोतें गुरु होय, पूज्य होय, मह्होटो होय, तेम छता क्रियामां शिथिल थाय, परंतु सक्रियपणे न चाले
९९ कुकर्म करी निर्लज्ज थाय, लोक लाज न करे.
१०० पोतेंज वात करे अने पोतेंज हसे
ए उपर लखेला लक्षणें करी जे युक्त होय ते मूर्ख जाणवो ए मूर्खना सो लक्षण कह्या

॥ इति मूर्खशतक समाप्त ॥

९७ पोतें जीखारी उतां छन्दु जमवा वाढे
९८ पोतें ग्रुरु होय,पूज्य होय,मझेटो होय, तेम उत क्रियामां शिथिख थाय, परंतु सक्रियपणे न थाखे
९९ कुकर्म करी निर्खज्ज थाय, खोक खाज न करे.
१०० पोतेंज वात करे अने पोतेंज हसे
ए उपर खखेखा खक्षणों करी जे युक्त होय ते मूर्ख जाणवो ए मूर्खनां सो खक्षण कह्या

॥ इति मूर्खशतकं समाप्त ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीधर्मबुद्धि अने पापबुद्धिनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिन सरस्वती संतने, प्रणमुं तजी प्रमाद ॥ पाप बुद्धि धर्मबुद्धिनो, सुविधें कहुं संवाद ॥ १ ॥ हीर रतन सूरि सांनिध्यें, सद्गुरुने सुपसाय ॥ रास रचुं र लियामणो, जेहथी पातक जाय ॥ २ ॥ श्रोताजन सु णजो सहु, विकथा वर्जी वात ॥ तन मन वाचा नय णनें, थिर करी तजी व्याघात ॥ ३ ॥ वक्ता वचना मृत जरि, श्रोता ऊखर खेत ॥ बीज वाव्युं जाये वली, तिहां केम ऊपजे हेत ॥ ४ ॥ श्रोता जीहां रस वे लडी, वक्ता वाणी नीर ॥ सुमतिनीके करी सींचतां, थाये गहेर गंजीर ॥ ५ ॥ रसीया सहुको रासना, र सनी न लहे रीत ॥ नवरसना जे अति निपुण, पामे ते सुणि प्रीत ॥ ६ ॥ श्रोता वक्ता बे जिहां, सरखा होय सुजाण ॥ कवि चतुराई तो लहे, प्रगटे रसनी खाण ॥ ७ ॥ धर्मथकी जस विस्तरे, धर्में लहे शिव श्रेणि ॥ धर्में होय सुख संपदा, धर्म करो सहु तेणी ॥

॥०॥ सुरतरु सुरमणि सुरलता, जे सुरधेनु समान
साधो ते सूधे मनें, धर्म सदा धीमान ॥ ए ॥

॥ ढाल पहेली ॥ आठेकालनी देशी ॥

॥ श्रीपुरनगर सुथान, जितारि राजान, आ
लाल मंत्री तेहने मति सागरु ॥ महोटा द्विज सम
न, नही कोइ तेह समान ॥ आ० ॥ उत्तमगुणनो '
गरु ॥ १ ॥ एकदिन जांखे राय, पापतणा महिमा
॥ आ० ॥ राजाधिक ऋद्धि पामीयें ॥ मंत्री कहे मार
राज, ए शुं बोल्या आज, आ० ॥ विपरीत मति ए
मीयें ॥ २ ॥ वाहलाशु होय वियोग, शत्रुना साथे
योग, आ० ॥ सुख न हुए माय बापनां ॥ कुशम
थाये सज्जन, घृत विण लहे जोजन, आ० ॥ प्रीत
ए फल पापनां ॥ ३ ॥ धर्मे धन सुख होय, जीज
करे सहुकोय, आ० ॥ जे जे मनमां कामीयें ॥ तुर
पदारथ तेह, लहीयें नही संदेह, आ० ॥ पुएयें म
फल पामीयें ॥ ४ ॥ यत ॥ न देवतैर्थिनं परात्र
मेण, न मत्रतंत्रेर्न सुवर्णदानें ॥ न सेवया नैव सु
कुमार्थे०, विना सपुएयैरिह वांछितार्था ॥ १ ॥ पू
ढाल ॥ वाद वदंतां आम, पापबुद्धि सेणे गाम, आ० ।
नाम थयुं ते नृपतनुं ॥ प्रधानतुं प्रधान, धर्मबुद्धि अभि

धान, आ० ॥ आपगुणें तव ऊपनुं ॥ ५ ॥ सदा स
ज्ञामां सोय, वाद वदे एम दोय, आ० ॥ पाप अने पु
एयना मति ॥ लजवी केता लोक, नृपनें नाखे टोक,
आ० ॥ तोपण नृप न वली रति ॥ ६ ॥ अवनीपति
एक दिन्न, मंत्री ने कहे वचन्न, आ०॥ जो तुं माने
ठे धर्मनें ॥ तो लखमी ठे लवलेश, जो माने मुज उप
देश, आ० ॥ तो पामे सर्व शर्मनें ॥ ७ ॥ राज्यादिक
माह्यऋद्धि, तो ठे माह्यरे नवनिधि, आ० ॥ जो हुं मा
नुं हुं पापनें ॥ धर्माधर्म फल बेह, प्रगट पेख तुं एह,
आ० ॥ जो धर्मं धरेठेतुं आपनें ॥ ८ ॥ तो तुं तजी
धन गेह, एकाकी ससनेह, आ०॥ परदेशे जइ पुएय
थी ॥ आथ उपाई अठेह, जो तुं लावे गुणगेह,
आ०॥ तोधर्मे जेडुं हुं मन्नथी ॥ ए॥ मंत्री कहे महीं
नाथ, सत्य कही ए वात, आ० ॥ माह्यरा पण मनमा
वसी॥ जोतां ए दृष्टांत, जांगशे मननी भ्रांत, आ० ॥
पुएयनी गति परखी इसी ॥ १० ॥ अवनीपति आ
देश, प्रधान ते परदेश, आ०॥ चोंप धरीनें चालीयो॥
उदयरतन कही एम, पहेली ढाले प्रेम, आ० ॥ पर
मारथ प्रीठी लियो ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥अटन करंतो एकदा,रातमां राक्षस एक॥ जेठथी महा भूखाकूलो, खाउ खाउ करतो टेक ॥१॥ मंत्री कहे तमने कहुं, मामा मुज प्रणाम ॥ मामा कहे मूकु नहीं, फरी राखस कहे ताम ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥२१॥

॥ ढाल बीजी ॥ रूमीरानी देशी ॥

॥ तव मंत्री कहे तेहने, करवा कारज एक मामा जी ॥ जाउं हुं तेणे जीवसो, मेहेलो मुने सुविवेक मा माजी ॥ तव० ॥ १ ॥ कारज तेह करी पाछो, फरी आवु इणे गार ॥ मा० ॥ खाउं तव खांतें वही, मुजनें तमें निरधार ॥ मा० ॥ त० ॥ २ ॥ काचा मायानां मानवी, तेहनो शो विशवास ॥ भाणेजा ॥ राखस कहे मरवा फरी, तु केम आवे मुज पास ॥ भाणेजा॥ तव राखस कहे तेहने ॥ ३ ॥ परनर सार्थे परवरि, गर्भ गमावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मुने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ तव० ॥ ४ ॥ आगलथी व्रत उच्चरी, मलतां विराधे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ५ ॥ मावित्रनें ने अवगणि, गुरुनें ठेलवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥

॥ त० ॥ ६ ॥ विशवासघात करे वली, पांतें वंचो करे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक ला गजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ७ ॥ संखारो जे सूकवि, दव लगाडे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ८ ॥ पाप स्था नकने आचरे, अढार नेदें जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मनें, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ ए ॥ जाइ हणे जगिनी प्रत्यें, मुनि हत्या करे जेह ॥ ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ ॥ मा० ॥ त० ॥ १० ॥ साते व्यसनने सेवतां, अन रथ उपजे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पा तक लागजो तेह ॥ मा०॥त०॥ ११ ॥ बाल धेनु स्त्री वंजनें, जगमां मारे जेह ॥मा०॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १२ ॥ गोत्र गमन करे गेलशुं, जू लीख मारे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा०॥ ॥ त० ॥ १३ ॥ रोकी मारग धर्मनो, अढता कर करे जेह ॥मा०॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥मा०॥ त० ॥ १४ ॥ धर्मी थई धूरत पणे, लो कने धूते जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने,पा

तक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १५ ॥ कीधो गुण जाणे नहीं, कुपथ चलावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ १६ ॥ गुरु देवनु द्रव्य वावरे, पूज्यने पराजवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लाग जो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १७ ॥ इत्यादिक करी अ गंला, राक्षसनी लइ शीख॥श्रोताजी ॥ मन्त्री मन मोदें करी, आगें चरी तेणे बीख॥श्रोताजी ॥ त० ॥ १८ ॥ उदयरतन एम उच्चरे, बोली ए बीजी ढाल ॥ श्रो०॥ बु बलिहारी तेहनी, वचनां जे प्रतिपाल ॥ श्रोताजी॥ ॥ त० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोपश्शु आगल चालतां, कोइक नगर नजीक॥ देवल रुपजजिर्णदनु, दीतु अति रमणीक ॥ १ ॥अ तिशय आनंद ऊपनो, पेखी ते प्रासाद ॥ चावेंशु जग मंतनें, एम ते स्तवे आल्हाद ॥ २ ॥ यत ॥ न याति दास्यं न दरिद्रजावं, नप्रेष्यतां नैवच हीनयोनि ॥न चापि वैकल्यमर्थेंद्रियाणां,योऽकारयन्मार्गेजिनेंद्रपूजा ॥१॥ दोहा॥इत्यादि स्तवना सुणी, कपर्दीनामा यक्ष॥ रक्षक ते जिनचैत्यनो, प्रीत्रें थइ प्रत्यक्ष ॥३॥ मन्त्रीश्व

रनें कामघट, आप्यो जेह दुर्लंज ॥ सचिव कहे हुं शुं करुं, किहां थापुं ए कुंज ॥ ४ ॥ कुंज शोहे शिर नारिने, पुरुषनें लागे लाज ॥ तेमाटे ए कामघट, कहो आवे शे काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ शोरठीरागें चाल ॥

॥ तव देव कहे घट एह, अदृश्य पणे गुणगेह ॥ तुज पूंठे वहेशे वहेलो, गुरुनी पूंठें जेम चेलो ॥१॥ तिहारे मंत्रीये मानी वाण, कुंजशुं कीधुं प्रयाण ॥ गेलें आवंतो निज गेह, वचमां आव्युं वन तेह ॥२॥ मांडजे कहेवानो मामो, ते राखस आवी साहामो ॥ ॥ ३ ॥ मंत्री तव बोल्यो वाणी, ते पणमां न जेहे पाणी ॥ सापुरुषें बोल्या बोल जेह, प्राणांतें न बदले तेह ॥४॥ पण सांजलो एक विचार, मुज तनु ए अशुचि अपार ॥ रस लोही मांसनें मेद, अस्थि मज्जा शुक्र अमेध्य ॥५॥ मलमूत्र तणो जंडार, केम कीजें तेहनो आहार ॥ रसालनी पाउं रसोई, स्वादे जिमो तमे सोई ॥६॥ तव राक्षस कहे थइ राजी, तुं आप रसोई ते ताजी ॥ तेणे राखस कुंज पसार्ये, जिमाड्यो यथेष्ट उझाहें ॥ ७ ॥ तव तेह रीजी मनमांथी, कहे रसोइ आपी ए किहांथी ॥ मंत्री कांइ अलिक न बोल,

तक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १५ ॥ कीधो गुण जाणे नही, कुपथ चलावे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लागजो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ ॥ १६ ॥ गुरु देवनु द्रव्य वावरे, पूज्यने पराजवे जेह ॥ मा० ॥ जो फरी नावुं तो मने, पातक लाग जो तेह ॥ मा० ॥ त० ॥ १७ ॥ इत्यादिक करी श्र गेला,राक्सनी लइ शीख॥श्रोताजी ॥ मत्री मन मोदें करी, आगें चरी तेणे वीख॥श्रोताजी ॥ त० ॥ १८ ॥ उदयरतन एम उच्चरे, वोली ए बीजी ढाल ॥ श्रो०॥हुं बलिहारी तेहनी, पण्नां जे प्रतिपाल ॥ श्रोताजी॥ ॥ त० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोंपशु आगल चालतां, कोइक नगर नजीक॥ देवल श्रृषचजिर्णदनु, दीतुं अति रमणीक ॥ १ ॥अ तिशय आनंद ऊपनो, पेखी ते प्रासाद ॥ जावेंशु जग वंतनें, एम ते स्तवे आल्हाद ॥ २ ॥ यत ॥ न याति दास्य न दरिद्रजावं, नप्रेष्यता नैवच हीनयोनिं ॥ न चापि वैकल्यमथेंद्रियाणां,योऽकारयन्मार्गे जिनेंद्रपूजां ॥१॥ दोहा॥इत्यादि स्तवना सुणी, कपर्दीनामा यक्॥ रक्क ते जिनबिंबनो, प्रीसें थइ प्रत्यक्ष ॥३॥ मत्री श्र

करुं हुं तहकीक ॥ तवमंत्री कहे कामघट, आणो ते रमणीक ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जटीआणीनी देशी ॥ आज नें उमंगें हो रंगें मज्जन आदरे ॥ ए देशी॥

॥ हा हुं आणीश तेह,इम कहीनें नजपंथें हो सं चरीयो दंडते नेगशुं ॥ पलाद पासें जइ तास, मुहकम मारीनें हो जांजी बारनें वेगशुं॥१॥तुरत लेइ घट ते ह, मंत्रीश्वर समीपें हो मोद जरें आव्यो वही ॥पूछे तव परधान,कुंजनें पेखीनें हो मनशुं महाशाता ल ही ॥२॥ तिहां तुजने हूती समाधि, एम सुणिनें घ ट जंपे हो जे तेनें सोंपी मुनें ॥ पापी नरनें हाथ,तो समाधि मुनें किहांथी हो साचुं हुं जांखुं तुनें ॥३॥ धर्मी नर हुवे जेह, तेहनें समीपें हो रहेतां हुं सुखी यो सदा ॥ अधर्मीनें आश्रम, अऊघरी पण वसतां हो मुजनें रति न होवे कदा ॥४॥ कुंज पसायें तेह, जोजन करीनें मंत्री हो वलतो आगें चालीयो ॥ जा तां मारगमांहे,एक गाम समीपें हो कोइक संग निहा लीयो ॥५॥ शेत्रुंजी गिरनार, तीरथ जइनें हो पाछो ते वलीयो जिसे ॥ आवंता पंथ विचाल, मंत्रीश्वर म हापुण्य हो,साहामो तिहां मलीयो तिसें ॥ ६ ॥ सम

सत्य गुह्य हैयानु खोल ॥ ८ ॥ कामकुंभ पसायें कामी, रसोई पूरी में स्वामी ॥ सब राक्षस कहे काम कुंभ, मुजनें ए आपो अविलंब ॥ ए॥ एह कोरी स धारण काम, केम आपु मत्री कहे ताम ॥ जो तुं आपे कुंभ करारे, तो हु हिंसा नकरु क्यारे ॥ १० ॥ पसाव कहे ते पुण्य, तुजनें होशे अगण्य ॥ हुं मानीश तुज उपकार, भली सांजल एक विचार ॥ ११ ॥ हुं पण तु जनें निरधार, रिपु शस्त्र निवारण हार ॥ साधीजें अ रथ असरू, ते आपीश माहारो दंड ॥ १२ ॥ जो आपु ए तुजने उह्लासें, तो पण तुज हिसक पासें ॥ कुंभ न रहे मत्रीसर जासे, तेणे पभ्यो हुं हु सासे ॥१३॥ उ दयवदे श्रीजी हाल,श्रोता सुणजो उजमाल ॥ धर्म कर शे जे धसमशिया, वरसे ते शिवधघू रसीया ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षीश हुं रूडी परें, राक्षस कहे धरी राग॥ इम सुणीनें आप्यो घणो, मंत्रीश्वरें सही लाग ॥ १ ॥ दंड ग्रहीनें दिव्य ते,पये घणो प्रधान ॥ बीजे दिन धू स्यो थयो, मत्रीते मतिमान ॥ २ ॥ बोलावी कहे पं रूनें, जोजन दे तुं आज ॥ ते कहे हुं समरथ नथी, क रवा ए तुम काज ॥३॥ काम को बीजु जो कहो, ते

करुं हुं तहकीक ॥ तवमंत्री कहे काम घट, आणो ते रमणीक ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ जटीआणीनी देशी ॥ आज नें उमंगें हो रंगें मज्जन आदरे ॥ ए देशी॥

॥ हा हुं आणीश तेह, इम कहीनें नन्नपंथें हो सं चरीयो दंडते नेगशुं ॥ पलाद पासें जइ तास, मुहकम मारीनें हो चांजी बारनें वेगशुं॥१॥तुरत लेइ घट ते ह, मंत्रीश्वर समीपें हो मोद जरें आव्यो वही ॥पूछे तव परधान,कुंजनें पेखीनें हो मनशुं महाशाता ल ही ॥२॥ तिहां तुजने हूती समाधि, एम सुणिनें घ ट जंपे हो जे तेनें सोंपी मुनें ॥ पापी नरनें हाथ,तो समाधि मुनें किहांथी हो साचुं हुं चांखुं तुनें ॥३॥ धर्मी नर हुवे जेह, तेहनें समीपें हो रहेतां हुं सुखी यो सदा ॥ अधर्मीनें आश्रम, अरूधर्मी पण वसतां हो मुजनें रति न होवे कदा ॥४॥ कुंज पसायें तेह, जोजन करीनें मंत्री हो वलतो आगें चालीयो ॥ जा तां मारगमांहें,एक गाम समीपें हो कोइक संग निद्दा लीयो ॥५॥ शेत्रुंजी गिरनार, तीरथ जइनें हो पाछो ते वलीयो जिसे ॥ आवंता पंथ विचाल, मंत्रीश्वर म हापुण्य हो,साहामो तिहां मलीयो तिसें ॥ ६ ॥ सम

य सहीनें संघ, सचिवें ते सघलो हो अमण कार्जें नो तरयो॥तेहनें असंघल देखी, रसोइ करवानो हो उद्यम सहु संघें कस्यो ॥७॥ चरी एक जलनो कुंज,संघ वालुनें चूसे हो सघले जल रेली तदा ॥ कहे मत रांध शो कोय, मुज पामरनें करो पावन हो मत्री इम तां खे मुदा ॥ ८ ॥ असमंजस अवदात, अवलोकी संघ पाल हो मनमांहे चिंते इस्युं ॥अशन पखनुं रहो दूर, पोतानुं पण जोजन हो आज न करी शकीयें किस्युं ॥ ॥ ए ॥ सहु मली संघनां लोक, मांहोमांहे आलोचे हो हवे शुं करशु अवे ॥ पोतानुं जरवा पेट, समरथ ए नहीं हो फोकट वयण महोटां वदे ॥१०॥ कहे क वि उदयरतन, चतुरनर सहु सुणजो हो कहुं हुं चो थी ढालमां ॥ सुपुरुष साचा होय, आडंबर देखाडी हो कुपुरुष पाडे जालमां ॥११॥ सर्वगाथा ॥ ७५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ एकदिन एकपरदेशीयो ॥ ए देशी ॥ अथवा नमो नमो मनक महामुनि ॥ ए देशी ॥ अथवा चरणाली चामुंड रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ जोजनवेलानें समे, मंत्री कोट नमावी रे ॥संघपति सहु लोकनें, तेडां करे तिहां आवी रे ॥जोज०॥ ॥ १ ॥ संदेह हिंडोलें चड्यो, वनमांहे संघ वालू रे॥ तेहनी पूंठे परिवर्यो, अति आतुर उजमालू रे ॥ ॥ जो० ॥ २ ॥ आगल जातां अनुक्रमे, पटकुलमें विस्तारो रे ॥ मनोहर दीठो मांडवो, ऊपनो हर्ष अपारो रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ विस्मय पामी सहुजना, पूछे मांहो मांहे रे ॥ए साचूं के स्वपनुं सही, के मृगतृष्णा प्राहें रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ के ए नर छे कारिमो, के दीसे इंद्र जालो रे ॥ आपण पाड्या पाशमां, रखे वधे जंजालो रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ हाथें फरसे मांकवो, पासें जइ जन केता रे ॥ परगट पेखी पारखूं, सहु थया हर्ष समेता रे ॥ जो० ॥ ६ ॥ ते कामकुंज तणे बलें, मांड्या सोवन थालो रे ॥ पांतें चाल्या प्रीसणां, दीसे काक जमालो रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ अष्टोत्तरशत अंगना, विध विध पहेरी वेशो रे ॥ पिरसे प्रेमें रसवती, जपे रूप अ

शेपो रे ॥ जो० ॥ ८ ॥ अन्योन्यें एम उचरे,अहो र सोइ एहथी रे ॥ कहो केणे दीठी किहां, अमर आ रोगे तेहथी रे ॥ जो० ॥ ९ ॥ अशनांतें आजूपणे, वि विध वसनें चारू रे ॥ सघलो संघ पहिरावीयो,मंत्रीयें मनोहारु रे ॥ जो० ॥ १० ॥ पूछे अचरिज पामीनें, मन्त्रीनें श्रीसंघो रे ॥ कहो एवडो केहनें बलें,पूरो पच्यो उछरगो रे ॥ जो० ॥ ११ ॥ कामकुंजें सहु कामना, पूरी ते कहे एहो रे ॥ संघवी घट याचे सदा, लोचें क रीनें तेहो रे ॥ जो० ॥ १२ ॥ जो तु आपे ए मुनें, तो हुं करु शुन रीतें रे ॥ साहामीवात्सख सर्वथा, तुज सानिध्यें प्रीतें रे ॥ जो० ॥ १३ ॥ तु धर्मी दीसे अछे, चमर युगम तुज आपु रे ॥ विष रोग शस्त्र निवारणु, मित्र करी चली थापुं रे ॥ जो० ॥ १४ ॥ कुंजसाटे ले तुं वली, चमर युगलए चाही रे ॥ पांचमी ढालें उ दय वदे, एम कहें तेह उमाही रे ॥ जो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मन्त्री कहे मया करी,देसें दीधो जास ॥ कुंज रहे ए से कनें, अवरां न पूरे आश ॥ १ ॥ सारथवहो स घवी कहे,तुं तो आपने एह ॥ जेम तेम करीनें राखशुं, अमें अमारे गेह ॥ २ ॥ कुंज चमर शाटा करी स

चिव संघवी सोय ॥ निजनिज पंथें परवस्था, हीये
हर्षित होय ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ८५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ वृषज्ञानजुवन गइ
दूती ॥ ए देशी ॥

॥ बीजे दिन जूखे जरायो, तव मंत्रीयें दंरू प
वायो ॥ घटलेवा घणे उत्साहें, जइनें तेणे संघमाहे ॥
॥ १ ॥ पासें सुजट हता बहु जेह, सहु त्रास पमा
ड्या तेह ॥ नांजी खङ्ग खेर्मा हथीयार, कामकुंज
ग्रही सकरार ॥२॥ पाठो फरी मंत्री पासें, आव्यो फरी
लकुट उल्हासें ॥ तवदंरूना पराक्रम जोइ, घणुं मु
दित थयो मनसोइ ॥ ३ ॥ कुंज दंड चमर ए त्रण्य,
लेइ वस्तु मूलें अगण्य ॥ निजनगरीयें पोहोतो जे
हवे, तेणे दिवसें तिहां तेहवें ॥ ४ ॥ प्रगट करवा
धर्म परीक्षा, सेवकनें देइ बहु शिक्षा ॥ घाली रत्न
बीजोरां मांहे, सवालाख टकानुं रायें ॥ ५ ॥ आ
पीनें कहे अनुचरनें, शाक विक्रय करे ते नरनें ॥
सोंपी ए फल सुविवेक, वली सांजल कहुं वात एक
॥ ६ ॥ जिहां लगें कोण लेतां लगें, तिहां ठानो र
हेजे तुं वगें ॥ जे कोइ लीये तेह रागें, नाम तेहनुं
कहीयें मुज आगें ॥ ७ ॥ सेवकें ते सगलुं सीधुं,

जेम रायें कह्यूं तेम कीधु ॥ मत्रीघरें आव्या पछी, सुदरी शाक लेवा गछी ॥ ७ ॥ बीजोरुं लेई ते बाला, घरे आवी घणु उजमाला ॥ ते जाणी चिंते नृप तेह, अहो धर्मनो महिमा एह ॥ ए ॥ उदयरत्न वदे इम वाणी, एतो ढाल ठठी प्रमाणी ॥ धर्म करशे जे धर्मधोरी, ते कापशे कर्मनी दोरी ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रंगेशु एक रात्रमां, सोवनमय आवास ॥ नीपाव्या मत्रीश्वरें, कुल्त पसायें खास ॥ १ ॥ शोभित सोवन रयणमें, गोखकोशीशां षंच ॥ निरुपम थाये नवनवां, मध्ये नाटारंभ ॥ २ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ हुवे श्रीपाल कुमार, विधिपूर्वक मज्जनकरे जी ॥ ए देशी ॥

॥ नाटकना सुणी नाद, देखी आडंबर गेहनोजी ॥ विस्मय पाम्यो वसुधेश, पार्वे राचे मन जेहनो जी ॥ १ ॥ मंत्री हुवे परजात, श्रृगारें तनु शाहावीनें जी ॥ रत्ने भरी सोवन थाल, भेटे नृपनें आवीनेंजी ॥ २ ॥ पूछे तव महिपाल, रत्न ए किहांथी पामीयोजी ॥ मैत्री कहे धर्मपसाय, सहु फली मन कामीयोजी ॥ ३ ॥ निरुपम नाटक विव्य, कनक

आवास छे तुमणेजी ॥ एम वली पूछे राय, हा प्र
भु छे मंत्री जणेजी ॥ ४ ॥ आवास जोवा तेह, रा
जा कहे मंत्री प्रतेंजी ॥ थोडा जनशुं एक वार, ज
माड तुं मुजनें हेतेंजी ॥ ५ ॥ मंत्री कहे महाराज
तमने गमे जन जेटला जी ॥ मेलावोमेली मुजगेह,
आवजो तेडी तेटलाजी ॥ ६ ॥ स्वामी शक्ति प्रमा
ण, जक्ति करीश जावें मुदाजी ॥ रखेराखो मनभ्रां
त, अधिक न जांखुं हुं कदा जी ॥ ७ ॥ अवनीप
ति चिंते एम, अहो ए साहसपणुं बकेजी, मुज परि
करनें जगमांहें, पाणी पण कोण पाइ शकेजी ॥ ८ ॥
तो जोजन पूरे कोण, कुंजर कीडीनें घरेंजी ॥ जाय
प्राहुणो जेम, ए पण जाणवो एणी परें जी ॥ ए ॥
रोषें करीनें राय, देश मेलावो मेली बहु जी ॥ मा
णस मंत्रीगेह, मेल्युं शुद्धि लेवा सहुजी ॥ १० ॥
जोजननो समुदाय, मेल्यो छे केतो एणे जी ॥ जो
इ आवो तेह, जइने तस घर आंगणेजी ॥ ११ ॥ उ
दयरतन कहे एम, सातमी ढालें समय लहीजी ॥
जींत विहूणो जार,मेलतां मन मानें नहीं जी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सेवकजइ मंत्रीघरें, जोइ रसोइ साज ॥ पण कि

होय देखे नही, मुठी मात्र अनाज ॥ १ ॥ सचित्त सामायिक धरी, सातमी भूमें समाध ॥ नेहेंशु नव पद जपे, सोहे जाणे साध ॥ २ ॥ नृपनें कह्यो जइ सेवकें, ते सघलो विरतंत ॥ व्यतिकर ते श्रवणे सुणी एम चिंते भू कंत ॥ ३ ॥ गहेलो थइ ए वूटशे, मा थे पडशे मोय ॥ शुकरशुं नृप चिंतवे, दिगमूढ थइ इ म सोय ॥ ४ ॥ मंत्रि कहे आवी तिसें, नृपनें मस्त क नाम ॥ शीतल थाये रसवती, वेगें पधारो स्वाम ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १२४ ॥

॥ ढाल ॥ आठमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥विनति अवधारो रे, पूरमांहे पधारो रे॥ ए देशी॥

॥ रोषारुण भूपो रे, थई जम रूपो रे, करी रूप कुरूप चिंते एहवुं रे ॥ १ ॥ इम चिंतवी राजा रे, लेई शुभटसु साजा रे, सक नरशु तगाजा करतो स चर्यो रे ॥ आडंबर घरनो रे, जोइ मंत्रीसरनो रे, स्वामीते पुरनो मनशुं गहचर्यो रे ॥ २ ॥ शु ए सुर धाम रे ॥ दीसे अभिराम रे, विधशुं ते ठाम देखीनें करे रे ॥ मानवगति नांहिं रे, आव्यातुं क्यांहिं रे, सहु जन मनमांहे इम सांसो धरे रे ॥ ३ ॥ इंद्रजाल अलेखे रे, कोइकाज विशेखें रे, मंत्री मनरूपें वे

खाडे अछे रे ॥ के होशे साचूं रे, पण लागे काचूं रे, जेम सोनुं जाचूं मूढ महेली गछे रे ॥ ४ ॥ इम संशय आयो रे, नृपभ्रांतें भरायो रे, मनमां अकुलायो आघो न संचरे रे ॥ मंत्रीसर त्यारें रे, तेडी शुभ ठारें रे, भोजननें बेसारे सहु सपरिकरें रे ॥५॥ फलनें पक्वान्न रे, पेखी असमान रे ॥ सहु कहे तेणें थान अन्योअन्य उल्लसी रे ॥ भोजननी सजाई रे, केणे किहां भाई रे, दीठी रसदाई जगमां ए जिसी रे ॥ ६ ॥ तव सहु कहे नाना रे, मंत्रीयें जमवाना रे, करी जाजा वानां भक्त भुंजावीयां रे ॥ चूआ चंदन लाइ रे, केशर छटकाइ रे, तंबोल देवाइ अधिक उपावीया रे ॥ ७ ॥ पामरीने चीरा रे, मणि माणक हीरा रे, पटकूल दक्षिणरा बहु पहेरावीया रे ॥ भूपतिनें भजतां रे, भूषण मनगमतां रे, भेट धरीनें नमतां सहु नमावीया रे ॥ ८ ॥ उदय वदे वाणी रे, सुणजो भवि प्राणी रे, मींज जेहनी भेदाणी श्रीजिन वाणीयें रे ॥ ते आठमी ढालें रे, करशे उजमालें रे, जिनधर्म सुचालें, युगतें जाणीयें रे ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछ्युं अचरिज पामीनें, तव मंत्रीनें राय ॥ जी

माव्या पता जणा, कहे ते कुण सुपसाय ॥१॥ कुंन पसार्ये से कहे, तव फरी बोल्यो राय ॥ मुजनें आप ते कामघट, जेम सुरूं सुख थाय ॥ २ ॥ कटक मेला वो बहु मले, रणभूमें ए कुत्र ॥ जोजन आपे भाव तां, जिहां जन मले सुलज ॥३॥ तेमाटे तुं सर्वथा, आप मुनें निरधार ॥ जन्म लगें बली जाणजे, मानी श तुज उपगार ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ १३७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ मुनिवर मारग चालतां ॥ ए देशी ॥

॥ मन्त्री कहे महाराजनें,पापीनें गेहे ॥ घट न रहे ए सर्वथा, तव नृप कहे नेहे ॥ म० ॥ १ ॥ विलंब तजी बीसे वसा, आपे तुं एकवार ॥ यतन करी जो पें पछी, अमें राखशु गार ॥ २ ॥ महिपति कहे म त्री प्रतें॥मंत्रीयें महिपतिनें तदा, घट आप्यो तेह ॥ यके मूक्यो जालवी, नृपें जिहां निजगेह ॥ ३ ॥ जु ठे जुठे पुण्यपटसरो॥ए आंकणी॥ सुघट सवे मांहे स ही, शिरोमणि शुरा ॥ रखवाला ते राखीया, आपी आयुरू पूरां ॥ जु० ॥ ४ ॥ प्रथ दिवस लगें तुमें, रहेजो सावधान ॥ रक्षा करजो कुंजनी, कहे एम रा जान ॥ जु० ॥ ५ ॥ दिन बीजे देखाडवा, धर्मनो महिमाय ॥ घट मस्था दंड पाठव्यो, मंत्रीयें तेणे

गय ॥ जु० ॥ ६ ॥ लकुटें सुजट ताड्या तिसा, मु खें वमता लोही ॥जूमें पड्या जूपदेखतां,सघला शुद्धि खोही॥जु०॥७॥ घट लेइ मंत्रीघरें, दंम पोहोतो दोडी ॥ वसुधापति विलखो थयो, पतहारी पोढी ॥ जु० ॥७॥ मंत्रीनें जइ महिपति, कहे कह्युं ताहारुं ॥ सत्य थयुं संशय विना, मन मान्युं माहारुं ॥ जु० ॥ ए ॥ पण एक अनरथ ऊपनो, सघला मुज सुजट ॥ पड्या बे पुह्वी तलें, जीवाड तुं सुघट ॥ जु० ॥१०॥ चमर यु गम सुजटा शिरें, मंत्री जई ढाले ॥ तव ते सघला स ज थया, नरपति निहाले ॥ जु० ॥ ११ ॥ मंत्री क हे मुज धर्मनो, प्रजाव ए पेखो ॥ मूआ सुजट जी वामीया, दील खोली देखो ॥ जु० ॥ १२ ॥ मनशुं मान्युं महिपतें, धर्मं थाये श्रेय ॥ पापें थाये पाहुर्ज, तेंमां नहीं संदेह ॥ जु० ॥ १३ ॥ पुरलोकें पण प्री बीयुं, सत्य धर्म सदाय ॥ जुर्ज जुर्ज अहो जगती त लें, जेथी वंबित थाय ॥ जु० ॥ १४ ॥ नवमीढालें निरधारीनें, उदय एम बोले ॥ केवलिजाषित धर्म ने, कोण आवे तोले ॥ जु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दिन केताएक नरवरें, मान्या धर्म महिमाय

वली मन्त्रीनें एकदा, भांखे ते माहाराय ॥१॥ घूणा
हर न्यायें फल्यो, उद्यम तुज एकवार ॥ पण नहीं
धर्म प्रजाव ए, सुण मन्त्री सुविचार ॥ २ ॥ बीजी
वार जो तु जइ, प्रेमदा सहित परदेश ॥ धन अर्जी
आवे बहु, तो लहुं धर्म विशेष ॥ ३ ॥ नहीं तो म
हिमा धर्मनो, नहीं मानुं निरधार ॥ ते पण तव
मान्युं तेणें, आणी पर उपगार ॥ ४ ॥ घर जलावी
नूपनें, मंत्री महिला लेह ॥ चाल्यो वली देशांतरें,
सबल पुण्य अठेह ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ १५७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ तेतरिया रे जाइ ते
तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ मतिसागर मंत्री मतिदरीउं, जगती अनुक्रमें
जोतो रे ॥ एकदा गजीरपुरें उदधितटें, प्रमदाशु ते पो
होतो रे ॥ म० ॥ १ ॥ पुरने परिसरें तिहां वाडीमा,
श्रीजिनमंदिर पेखी रे ॥ वंदे तेहवे जलनिधि तीरें,
लोक मल्यां बहु देखी रे ॥ म० ॥ २ ॥ जायानें मेली
जिनजुवनें, समुद्र तटें गयो तेहो रे ॥ श्रीपतिनामें
तिहां व्यवहारी, दीये दान अठेहो रे ॥ म० ॥ ३ ॥
वाहाणे चढ्यो आवा परद्वीपें, मंत्री पण जलमांहि
रे ॥ दानकाजें जइ चूमि केति, नाव चढी तव त्यांहिं

रे ॥ म० ॥ ४ ॥ शेठ समीपथी दान लेइनें, पाछो वली ते जेहवे रे ॥ तोयनिधिमां तरतां दूरें, प्रवहण पोहोतां तेहवे रे ॥ म० ॥ ५ ॥ जिहां जूए तिहां जल एक दीसे,बीजुं न दीसे कांई रे॥तव पाछो फरी वाहणमां पोहोतो,मनशुं ते अकुलाई रे॥म०॥६॥ तव व्यवहारी पूछे तेहनें, देखुं तुं कांइ लहे रे ॥ हा स्वामी जाणुं हुं सर्वे, उत्तर ते एम कहे रे ॥ म० ॥ ७ ॥ तो वाणोतर था तुं माहारो, हा मानी परधानें रे, वणिकें ते वाणोतर राख्यो, सुणो श्रोता एकताने रें ॥ म० ॥ ॥ ८ ॥ उदयरतन कहे दशमी ढालें, पुण्योदय प्रभावें रे ॥ सुखें समाधें रहे तिहां मंत्री, नवपद नित्यें ध्यावे रे ॥ म० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवकुलें जे सुंदरी, विजयसुंदरी नाम ॥ मूकी हूती मंत्रीसरे, वाट जूवे सा ताम ॥ १ ॥ शे मुज स्वामी नावीउ, दिवस थके घडी दोय ॥ गोधण ले गोवालीया, वह्या नही वन कोय ॥ २ ॥ हियडुं अति हे जालूउं तो हुं जाणुं तुज्ज ॥ पीयु विरहे एक पलक मां, जो तुं फाटे अज्ज ॥ ३ ॥ साजन विण साजो रही, कां तुं लजवे मुज्ज ॥ आरति उल्हाये सवे.जो

घाघ विछूरे तुज्ज ॥ ४ ॥ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ जिहां हरि वेसतां रे,
तिहां मुने धरती खावा धाय ॥ ए देशी ॥

॥ अबला एकली रे, वनमांहे ते विविध करती विलाप ॥ डु खें दाधी थकी रे, झूरे घणुं देवनें देती शराप ॥१॥ पोढां पूरवें रे, कीधां हशे पातक में ख ख कोरु॥ तेणें मुज नाहलो रे, गयो मुनें मारगमांहे ठोरु ॥ २ ॥ वनना पंखीया रे, चारो करी आव्या निजनिज ठाम ॥ वाटरू जहेती रही रे, हा हा मा हारो सोपण नाव्यो स्वाम ॥ ३ ॥ मायनें मख्यां वा ठरू रे, जबहलि घर घर दीपक ज्योति ॥ निशाचर गहगह्या रे, ठंप्यो वली शशिहरनो उद्योत ॥ ४ ॥ सोहागण नारीनां रे, मनमांहे प्रगट्यो आनंदपूर ॥ हा हा चकवी परें रे, वालो माहारो जइ वसियो अ ति दूर ॥ ५ ॥ किहां रघु सासरु रे, वली मा हारी किहां रही पीयर वाट ॥ जिहां जिहां नयणा ठर्बु रे, पीयु विण तिहां तिहा लागे ऊजाड ॥ ६ ॥ सूरति मुनें सांजरे रे, वाहाला ताहरी घणीय घणीनें ठेह ॥ आंसुडां ऊलट्यां रे, ए न जाणें वरसे आ षाढो मेह ॥ ७ ॥ कोण परदेशमां रे, अहो मुनें आ

ज आपे आश्रम ॥ हवे हुं शुं करुं रे, अहो माहा रो केम रहेशे कुलधर्म ॥ ७ ॥ अग्यारमी ढालमां रे, समय लही उदयरतन कहे एम ॥ धन्य ते नारिनें रे, दुःख पडे जे धरे शीलशुं प्रेम ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिहां तिहां जोतां नवि जडी, जब स्वामीनी शुद्धि ॥ कुंजकारनें मंदिरें, तब सा पोहोती मुद्ध ॥ ॥ १ ॥ वीरा सांजल वीनति, हुं परदेशणी नारि ॥ बहिन करीने त्रेवडे, तो रहुं तुज घरबार ॥ २ ॥ कं तविछूटी एकली, आवी बुं तुज गेह ॥ पीयु मुजनें मले जिहां लगें, तिहां लगें आश्रम देह ॥ ३ ॥ शी लशृंगारें शोजती, पवित्र लही गुणगेह ॥ कुंजारें पु त्री करी, रुडी परें राखी तेह ॥ ४ ॥ यतः ॥ लज्जा दयादमोधैर्य्यं, पुरुषालापवर्ज्जनं ॥ एकाकित्वपरित्य गो, नारीणां शीलरक्षणे ॥ १ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ लाई लाई हे जावज माहरी लाई हे जात ॥ ए देशी ॥

॥ तव मंत्री हो ते व्यवहारी साथें, सुखें सम धें रत्नद्वीपें गयो ॥ तिहां सुरपुर नामें हो नगर उदा पुरंदर नामें नरेसर तिहां लह्यो ॥ १ ॥ प्रवहणथ

थाघ विसूरे तुझ ॥ ४ ॥ ॥ सर्वगाथा ॥ १७० ॥
॥ ढाल अगीयारमी ॥ जिहां हरि वेसतां रे,
तिहां मुने धरती खावा धाय ॥ ए देशी ॥
॥ अबला एकली रे, वनमांहे ते विविध करती
विलाप ॥ दुःखें दाधी थकी रे, झूरे घणुं दैवनें देती
शराप ॥१॥ पोतां पूरवें रे, कीधां हशे पातक में ख
ख कोड ॥ तेथें मुज नाहलो रे, गयो मुनें मारगमांहे
छोड ॥ २ ॥ वनना पंखीया रे, चारो करी आव्या
निजनिज गाम ॥ वाटडी जोहेती रही रे, हा हा मा
हारो तोपण नाव्यो स्वाम ॥ ३ ॥ मायनें मख्यां वा
छरू रे, जलहलि घर घर दीपक ज्योति ॥ निशाचर
गहगद्या रे, छण्यो वली शशिहरनो उद्योत ॥ ४ ॥
सोहागण नारीनां रे, मनमांहे प्रगट्यो आनंदपूर ॥
हा हा चकवी परें रे, वाल्हो माहारो जइ वसियो अ
ति दूर ॥ ५ ॥ किहां रह्यु सासरु रे, वली मा
हारी किहां रही पीयर वाट ॥ जिहा जिहां नयणा
बंधु रे, पीयु विण तिहां तिहा लागे उजाड ॥ ६ ॥
सूरति मुनें सांभरे रे, वाहाला ताहरी घणीय धणीनें
नेह ॥ आंसुडां झलव्यां रे, ए न जाणे वरसे आ
षाढो मेह ॥ ७ ॥ कोण परदेशमां रे, अहो मुनें आ

॥ दोहा ॥

॥ एकदिन तेह पण्यागना, चित्तमां चिंते एम ॥ वाणोतर जो एहनो,अम घर आवे प्रेम ॥ १ ॥ बहु धन आपे तो सही, कर्त्ता हर्त्ता तेह ॥ निहाल करे निश्चय सही, नवल जो बाजे नेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ १०४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ वेरूले चार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ एकदिन तेणे एहवुं आलोची, रूप बनाव्यो रूडो ॥ अतिसुंदर भूषण धरी अंगें, करें खलकावती चूडो ॥ १ ॥ पोतें मोह धरी मनमांहे, आवी मंत्री पासें ॥ ए आंकणी ॥ कणयरी कांब तणीपरें लल की, जीणो केडनो लंक ॥ वासग नाग हरायो वेणें, मुखें जीत्यो मयंक ॥ पो० ॥ २ ॥ अंजित बे लोचन अणियालां, जाणे कामनां बाण ॥ भमरी मिशें बे धनुष्य चढावी, पुरुषना वींधे प्राण ॥ पो० ॥ ३ ॥ सोवन रेखा दंते सोहे, नाके निर्मल मोती ॥ मुख मरकीनें अंगूठीमां जोपें फरी फरी जोती ॥ पो० ॥ ॥ ४ ॥ कर्ण भूषणनी कांतें ओपी, गंमस्थलनां रूप ॥ दामणीयां दीपे दोय पासें, शिर सेंथो अनूप ॥ पो० ॥ ॥ ५ ॥ पीनपयोधर भारें नमती, सुरतरु शाखा जे

हो वस्तु उतारी सर्व, पुरमां वधारें जरी मन हेजशु ॥ मंत्रीनें हो सोंपीनें व्यवसाय, शेठ ते नगरमां मुख्यो वेशशु ॥ २ ॥ धन यौवन हो अने वीजो अविकार, वली विशेषें जाणो अविवेकता ॥ एह एकेक हो अन रथकारी अत्यंत, तो ध्यारे मले स्यों शी कहु वारता ॥ ३ ॥ नित्य नवला हो वेश्याशु विलसे जोग, मग न थयो श्रीपति व्यवहारीयो ॥ केही विसे हो कगे आयमे जाय, न लहे मन महियारसें हारीयो ॥ ४ ॥ युवतीना हो पासमां पडीया जेह, तन मन धन यौ वन ते सवे गमे ॥ अपकीर्त्ति हो आरति अलछि वर्यंत, वली दुर्जन पग पग तेहने दमे ॥ ५ ॥ लीला मां हो आपे लाख पसाय, वली जे जे गणिका मुखें उच्चरें ॥ ते सघलां हो काज करे ततखेव, शीलामण किसी कानें नवि धरे ॥ ६ ॥ अवलाने हो जेह थया आधीन, कुलवटनी ते माजा नवि गणे ॥ विषयें क री हो परवश थाये प्राण, अमलीनी परें एम आग म भणे ॥ ७ ॥ हवे श्रीपति हो व्यवहारी ते रोज, म ननी मोजें तिहां धन बहु वावरे ॥ गणिकानो हो सं ग न करशो कोय, बारमी ढालें उदय इम उच्चरे ॥ ८ ॥

तो पण हुं नवि राचुं ॥ बो० ॥ २ ॥ साते धातु तणो
इ संचो, ऊपरे मढीउं चर्म ॥ दश छिद्र नख्यां डु
र्गंधें, अशुचितणो आश्रम ॥ बो० ॥ ३ ॥ ते तननें
काजें कोण तरसे, वरसे जे बहु विष्टा ॥ जे फरसे ते आ
खरें पामे, निश्चय नरक अनिष्टा ॥ बो० ॥ ४ ॥ महिला
रूपें पास मांड्यो छे, केवल ए किरतारें ॥ जाण अ
जाण बंधाये जेहमां, सहु नर जिहां संसारें ॥ बो०
॥ ५ ॥ मदिरानी परें उन्मत्त दीसे, इहलोकनें पर
लोक ॥ जोयामांहे जे विणसाडे, जे बोले ते फोक ॥
॥ बो० ॥ ६ ॥ तजे छे धर्मी तेमाटे, परदारा परसंग ॥
एकवीश वार जे नरकनें आपे, सही करतां एक संग ॥
॥ बो० ॥ ७ ॥ परस्त्रीगमन करे जे पापी, देवनो
दाम जे खाय ॥ सात वार श्रीवीर कहे ते, सातमी न
रकें जाय ॥ बो० ॥ ८ ॥ यतः ॥ चक्कणे देवदव्वस्स,
परइत्थी गमणेण च ॥ सत्तमं नरयं जंति, सत्तवारा य
गोयमा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ क्लीब कुरोगी इंद्रियहीणो,
कोई नाम न लेवे ॥ डुःशीलने दोजागी थाय, ने प
रदारा सेवे ॥ बो० ॥ ए ॥ चौदमी ढालें उत्तर चोखो,
गणिकानें तेणे गेलें ॥ उदयरतन कहे इणी परें आप्यो,
जे कोइ वयण न ठेले ॥ बो० ॥ १० ॥

म ॥ हीये नवसर हार विराजे, पग पग दाखती प्रेम ॥ पो० ॥ ६ ॥ केमी नाजीनें पातलपेटी, जंजर नें जमकारें ॥ पाणी वलमां पुरुपनें पाडे, सुदरी जे संसारे ॥ पो० ॥ ७ ॥ एहवुं रूप सजीनें अद्भुत, तेरमी हालें तेह ॥ उदयरतन कहे प्रेमें पोहोती, गणिका मत्री गेह ॥ पो० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हावजाव विभ्रमविर्षे, करती कोडि विलास ॥ प्रधाननें मोह पमाडवा, मेहेले मुख निसास ॥ १ ॥ अधुर रुसे कचुक कसे, आलस मरडे अंग ॥ वेणि समारे वली वली, आतुर थइ उमग ॥ २ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ छेडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ मतिसागर मंत्री गुणआगर, वदने वदे इम वाणी ॥ गणिका तुं कां थई छे घेली, इहां तुजनें केणे आणी ॥ १ ॥ थोलीशमां जो, विरूआं लागे तुज वयणां ॥ थो० ॥ जहेरें नरयां तुज नयणां ॥ ॥ थो० ॥ हुंतो नावुं ताहारे हाथें ॥ थो० ॥ हुंतो नहीं बोलुं तुज साथें ॥ थो० ॥ मां जोमां जो मां जो ॥ ॥ थो० ॥ ए आंकणी ॥ अणतेडी शाने आवी छे, सांजल गणिका साचुं ॥ लाव सोनानी जो तुं थाये,

छे धन दायिका हो लाल ॥ अ० ॥ तेहने तलें कोडी बार,सोनईया छे सही हो लाल ॥ सो० ॥ ऊपर पचास लाख, तेमां संदेह नही हो लाल ॥ ते० ॥ ४ ॥ अचरिज लही सहु कोइ, जांखे तव एहवुं हो लाल ॥ जां० ॥ चालो जइयें ते गाम, मले छे केहवुं हो लाल ॥ म० ॥ सहुजन लेइ साथ. जइ नृपें ते थलें हो लाल ॥ ज० ॥ पत्रामां लखीयुं तेम, कह्युं तव नीकले हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥ साढीबारह कोडी, सोनैया सुंदरू हो लाल ॥ सो० ॥ देखी हर्ष्या लोक, रीज्यो राजेसरू हो लाल ॥ री० ॥ मंत्रीतणां वखाण, करे सहुको भली हो लाल ॥ क० ॥ आपी अर्धु राज्य, राजायें मन रली हो लाल ॥ रा० ॥ ६ ॥ सौभाग्यसुंदरी नामें, परणावी अंगजा हो लाल ॥ प० ॥ सुख विलसे तसु संगें, मंत्री मननी रजा हो लाल ॥ मं० ॥ कहे कवि उदयरतन्न, ए पंनरमी ढालमां हो लाल ॥ ए० ॥ पुण्यनां फल सुणी एह, थजो सहु चालमां हो लाल ॥ थ० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे केताएक दिन पछी, श्रीपति श्रेष्ठी तेह ॥ वणज सलूजी पूरीयां, वाहण जावा गेह ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

वेश्या ते विसरजी थई, गइ पोताने गेह ॥ पुर मांहे परधाननो, पसरयो सुजश अछेह ॥ १ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ भरमर वरसे मेह, झबुके वीजली हो लाल ॥ झ० ॥ ए देशी ॥

॥ सरोवर तिहां नरनाथ, खणावे एकदा हो लाल॥ खणावे एकदा ॥ आंबानां पत्रां ताम, खणंतां शर मुदा हो लाल ॥ ख० ॥ प्रगट्या पेखी ते लोक, सोंपे नृपने जइ हो लाल ॥ सों० ॥ पण्डित तेडी भूप, वचावे उमही हो लाल॥ वं० ॥ १ ॥ लिपि भेदें ते वर्ण, वां ची कोइ नवि शके हो लाल ॥ वां० ॥ तव वजडावे भूप, ढंढेरो कौतुकें हो लाल ॥ ढ० ॥ ए अक्षर वांचे जेह, तेहनें नृप नंदनी हो लाल ॥ ते० ॥ अर्द्धराज्य समेत, आपे आनंदनी हो लाल॥ आ० ॥ २ ॥ पडहो प्रधानें तेह, छब्यो तदनंतरें हो लाल ॥ छ० ॥ लइ गया नृपनी पास, सेवक सर्जातरे लाल ॥ से० ॥ मंत्री वांची ते लेख, कहे नृपनें तिसें हो लाल ॥ क०॥ जिहांथी ए प्रगट्या पत्र, तिहांथो पूरवदिशें हो ला ल ॥ ति० ॥ ३ ॥ एक हाथ तजी खणीयें, केड लगें भूमिका हो लाल॥के० ॥ तिहां एक शिला दीर्घ, अ

त्री मुखथकी, चाह धरीनें करे ते चाकरी जी ॥ ३ ॥ जूजूवे वाहाणे होजी वसतां आपणे, कहो केम बाजे पूरी प्रीतडी जी ॥ जो मुज नावें होजी आवी वसो तमे, तिहारें जणाये प्रीतनी रीतडी जी ॥ ४ ॥ सरल स्व नावें होजी मंत्री तेहनें, प्रहवण पोहोतो मनना मो दशुं जी ॥ एकदिन नांखे होजी तव ते शेठीयो, वा हाणनी कोरें बेठो विनोदशुंजी ॥ ५ ॥ आवोजी अ रहां होजी मित्रजी मन रली, समुद्रनी शोना आप ण जोश्यें जी ॥ कपटीनुं कह्युं होजी तव कखुं तेणे, नावी फलनें कहो किम खोइयेंजी ॥ ६ ॥ कपटें क रीनें होजी पोतें ते पापीयें, नीरधिमांहे मंत्री नाखी यो जी ॥ पडतां पुण्य होजी नवपद ध्यानथी, दैव संयोगें फलक ते पामीयुं जी ॥ ७ ॥ शोलमी ढालें होजी उदयरतन कहे, परख्या विण परशुं प्रीत न कीजीयें जी ॥ वली विदेशें होजी जइजें तेहशुं, ज टक मलीनें दिल नवि दीजियेंजी ॥ ८ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ बहुली पाडे बूंब, कोलाहल करि कारिमो ॥ ल लना लखमी लूंब, पामी हरख्यो पापी ते ॥ १ ॥ शि र कूटे धरी शोक, लोकपतिजण लंठ ते ॥ पोढी मे

मन्त्रीनें मन मोदशुं, समय जणावा सोय ॥ माणस मेहेल्यु तेडवा, सहुदेशी पणु जोय ॥ २ ॥ शील स हुी ससरा कनें, सौजाग्यसुंदरी नारि ॥ सार्थे लेई स रूा थयो, मंत्रीसर तेणीवार ॥ ३ ॥ मूल्य करी अर्द्ध राज्यनुं, आप्यां प्रवहण श्याठ ॥ मणि सोवन रयणें जरी, ससरे सघले ठाठ ॥ ४ ॥ जदधि तट सर्गे आवीयो, ससरो परिकर लेइ ॥ बोलावी पाछो वल्यो, जल जरते नयणेह ॥ ५ ॥ तव मंत्रीनें शेठ ते, वाहण हकारी वेग ॥ समुद्रमांहे ते संचस्या, निज मने भरता नेग ॥ ६ ॥ सर्वगाथा ॥ १४० ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ जिम तरुकाखें हो
जी, वसतो वानरो ॥ ए देशी ॥

॥ रतनें जरीयां होजी वाहाण विलोकीनें, सुरव धू सरखी निरखी सुंदरीजी ॥ लोनें लुब्धो हो जी श्री पति शेठ ते, चित्तमांहे चिंते इम कपटें करी जी ॥ १ ॥ जलनिधिमांहे होजी नाखुजो पहनें, तो मुज हाथें आवे ए अगना जी ॥ नाव पण तिथें होजी थाय ए माहरां, अहो जवि जोजो भाव अनंगना जी ॥ २ ॥ एम आलोची होजी प्रीति प्रधानशुं, कपटें करीनें मांमी आकरी जी ॥ जे जे जंपे हो जी म

॥ ४ ॥ मननां हो माहारा मननां मनोरथ रूप, रस
जरी हो तेंतो रसजरिसुरतरु रोपीयो ॥ वेगें हो वली
वेगेंउनमूल्यो तेह, इमकिम हो मुजशुं इम किम देव
तुं कोपीयो ॥ ५ ॥ वारू हो पीयु वारू न कीधुं एह, बट
कीहो पीयु बटकी छेह मुजने दीयुं ॥ अबला हो पीयु
अबला हुं जाणी मेहेली, इमशुं हो पीया इमशुं पियाणो
ए कीयुं ॥ ६ ॥ देशे हो पीयु देशे दिलासो कोण, मुजनें
हो पीयु मुजनें हवे परदेशमां ॥ केम करी हो पीयु
केम करी राखुं आप, बाला हो पीयु बाला हुं बाली
वेशमां ॥ ७ ॥ चोरी हो पीयु चोरी मांहे सहु साख,
वचन हो पीयु वचन दीधुं हतुं तें मुने ॥ जमणे हो प्रभु
जमणे हाथें जेह, ते किम हो पीयु ते किम वीसरी गयुं
तुनें ॥ ८ ॥ मलीनें हो पीयु मलीनें इणे मुज माहे, छु
शमण हो पीयु छुशमण ए दीधो दगो ॥ माहारे हो
पीयु माहारे हवे जगमांहे, तुम विण हो पीयु तुमविण
कोण कहोने सगो ॥ ९ ॥ रोई हो श्रोता रोईते सारी
रात, सत्तरमी हो श्रोता सत्तरमी ढालें ते सुंदरी ॥ उद
य हो श्रोता उदय रतन कहे एम, उदय हो वली उद
य होसे पुण्ये करी ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २५१ ॥

देखे पोक, फोकट प्रीति फुलावतो ॥ २ ॥ तरी जा
णो सहु तेह, आवो इहां ऊतावला, साहेब मुज सस
नेह,सहसा पड्यो समुद्रमां॥३॥राज सुतानें रंग, जईनें
जपे इश्युं॥जडे सुख बहु चंग, भावे मुजशु भोगवो॥४॥
भवहणे भरतार,ऊसजाग तुज हुं थयो ॥ भामिनी में घ
र भार, सोंप्यो हवे तुजनें सही ॥५॥ सर्वगाथा॥२४१॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सी
तारा प्रजात ॥ ए देशी ॥

॥ समजी हो श्रोता समजी सुंदरी तेह, सायरे
हो पीयु सायरें इयों पाड्यो सही ॥ जूवो हो ए जू
वो करे ते सोर, पदेखो हो पीयु पदेखो ए पापी श्री
ज्यो नही ॥ १ ॥ तज्या हो सहु तज्या तेणे शणगा
र, वाला हो तेतो वाला बहु डु खें भरी ॥ श्रोढी हो
ते तो श्रोढी शिरना केश, हीयुं हो वली हीयु हणे हाथें
करी॥२॥ विधविध हो तेतो विधविध करे विलाप,
रोतां हो तेणे रोतां सहु रोवरावीया॥पूरव हो कहे पुर
व भवनां पाप, उदय हो आज उदय सघलां आवीया
॥३॥ में स्यो हो कहेने में स्यो कस्यो अपराध, दैवनें
हो एम दैवनें दे ठंलजडो ॥ लेह हो माहारो लेह लाख
अकाज, दीधो हो मुजनें दीधो जे डुःख तें पवडो ॥

मां कमाऊज वेह ॥ शीलें सुरनर माने आण, शीलें थाये कोम कल्याण ॥ ६ ॥ शीलें पावक थाये पाणी, उदयरतन इम जांखी वाणी ॥ अढारमी ढालें जे शील पाले, आपें वे जव ते अजुआले ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्मबुद्धि मंत्री हवे, पामी फलकाधार ॥ नवप द मंत्र प्रज्ञावथी, पाम्यो उदधि पार ॥ १ ॥ तरणे ताप संयोगथी, ताती वेलू संग ॥ मंत्री पाम्यो चेत ना, अरति मटी सहु अंग ॥ २ ॥ अरहुं परहुं जोतां थकां, शून्य नगर तिहां एक ॥ परधानें तव पेखीयुं, जेह जयंकर छेक ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ २६४ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ शनिशनि पुरने पेखतो रे, पोहोतो राज्य आ वास ॥ चड्यो सातमी जूमिका रे, तिल नवि पामे त्रास ॥ १ ॥ मंत्रीसर पोहोतो मोहलमांरे, अचरज जोतो त्यांहिं ॥ मं० ॥ मनशुं बीहे नांहि ॥ मं० ॥ ए आंकणी ॥ खाट ऊपर एक ढंढडी रे, पासें कुंपी दो य ॥ काला धोला अंजन तणी रे, देखी अचरज हो य ॥ मं० ॥ २ ॥ श्वेतांजनें तव कौतुकें रे, आंख्यो आंजी तास ॥ ढंढडी मटी थइ अंगनां रे, तेहनें प्र

॥ दोहा ॥

॥ प्रभातें हुवे श्रीपति, वलीव्यवहारी तेह ॥ भा
वी कहे अबला प्रत्यें, नयणे धरतो नेह ॥ १ ॥ स्वा
मा शोक तजो तमें, शोल सजो शणगार ॥ २ ॥
जावेंशुं मुजनें भजो, इम कहे वारंवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ करति अरजी जे
जमवारि ॥ ए देशी ॥

॥ एहवा तसु वयण सुणी श्रवणेह, शील रखोपूं
करवा सनेह ॥ तकजोईने तबते तरुणी, उत्तर इम
आपे मनहरणी ॥ १ ॥ शेठजी सांभलो माहरी वा
णी, इमणातो हुं छुं दुःखखाणी ॥ पुरें पोहोता पछी
धैर्य धराशे, जे कहेशो ते सिद्धारें जणाशे ॥ २ ॥ इम
सांभलीनें श्रीपतिशेठें, चितशुं विचारी सांची दृष्टें॥
सत्य कर्युं निजमन तेणे वेला, अनुक्रमें निजपुरी
पोहोतो हेला ॥ ३ ॥ विप्रहृपणे जब ते व्यवहारी,
करियाणां धरे गेह मझारी ॥ पासें देउल देखी तेणे
नारी, तब सा पेठी तेह मझारी ॥ ४ ॥ कमाड जडी
कहे शील राखेवा, समरी मनशुं शासन देवा ॥ जो
मुज शीलप्रभाव छे साचो, जिम जलहलतो हीरो
जाचो ॥ ५ ॥ तो मुज उघाड्या विण एह, उघडशो

मां कमाऊज वेह ॥ शीलें सुरनर माने श्राण, शीलें थाये कोम कल्याण ॥ ६ ॥ शीलें पावक थाये पाणी, उदयरतन इम जांखी वाणी ॥ श्रढारमी ढालें जे शील पाले, श्रापें वे जव ते श्रजुश्राले ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धर्मबुद्धि मंत्री हवे, पामी फलकाधार ॥नवप द मंत्र प्रजावथी, पाम्यो उदधि पार ॥ १ ॥ तरणे ताप संयोगथी, ताती वेलू संग ॥ मंत्री पाम्यो चेत ना, श्ररति मटी सहु श्रंग ॥ २ ॥ श्ररहुं परहुं जोतां थकां, शून्य नगर तिहां एक ॥ परधानें तव पेखीयुं, जेह जयंकर ठेक ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ २६४ ॥

॥ढाल उंगणीशमी ॥ सुगुण नर सुणजो रे ॥ ए देशी ॥

॥ शनिशनि पुरने पेखतो रे, पोहोतो राज्य श्रा वास ॥ चढ्यो सातमी जूमिका रे, तिल नवि पामे त्रास ॥ १ ॥ मंत्रीसर पोहोतो मोहलमांरे, श्रचरज जोतो त्यांहिं ॥ मं० ॥ मनशुं बीहे नांहि ॥ मं० ॥ ए श्रांकणी ॥ खाट ऊपर एक उंटडी रे, पासें कुंपी दो य ॥ काला धोला श्रंजन तणी रे, देखी श्रचरज हो य ॥ मं० ॥ २ ॥ श्वेतांजनें तव कौतुकें रे, श्रांख्यो श्रांजी तास ॥ उंटडी मटी थइ श्रंगनां रे, तेहनें प्र

जावें खास ॥ म० ॥ ३ ॥ जब आसन आप्युं तेहे रे, तब तिहां वेशी प्रधान ॥ पूछे पुरनी वारता रे, सा कहे थइ सावधान ॥ ४ ॥ विदेशी सांजलो मा हरी वात, नगरतणो अवदात ॥ मांमीकहुं सुविख्या त ॥ वि० ॥ ए आंकणी ॥ एक दिवस इहां आवीयो रे, तपसी एक मईत ॥ ते मुज तातें नोतख्यो रे, ज्ञो जन काजें खत ॥ वि० ॥ ५ ॥ आपी मुजनें आग ना रे, राजायें मनरंग ॥ पीरसो पुत्री प्रेमशुं रे, अश न पहनें बहु जग ॥ वि० ॥ ६ ॥ जबहुं गइ तस पीरसवा रे, तव देखी मुज रूप ॥ विषयरसें वाह्यो थको रे, प ड्यो मोहनें कूप ॥ वि० ॥ ७ ॥ निशि मुज पासें आ वतां रे, रक्षकें जाली तेह ॥ सोंप्यो नृपनें प्रहसमे रे, खही अपराध अछेह ॥ वि० ॥ ८ ॥ शूलीयें देव रावीयो रे, रोषभरें राजन ॥ आरति ध्यानें ते मरी रे, पाम्यो राक्षस तन्न ॥ वि० ॥ ए ॥ नगर सेपो क जाडीनें रे, वेरें बांधी राजान ॥ मुजनें मोहें करी ठं टकी रे, थापी एणे थान ॥ वि० ॥ १० ॥ रोज आ वे ठे राक्षसी रे, इहां करवा मुख सार ॥ तेहनें कहु में एकदा रे, मात सुणो सुविचार ॥ वि० ॥ ११ ॥ अरण्यमांहे हुं एकली रे, किम रहुं तब कहे तेह ॥ पो

ग्य वर मलशे यदा रे, तव परणावशुं तेह ॥ वि० ॥ ॥ १२ ॥ आरति तजीनें इहां रे, वली कहुं सुण वछ वात ॥ सुखें रहे तुं तिहां लगें रे, जिहां लगें न मले नाथ ॥ वि० ॥ १३ ॥ आव्यानो अवसर थयो रे, हमणा आवशे तेह ॥ तुमनें जो आपे मुनें रे, तो तुमें याचजो एह ॥ वि० ॥ १४ ॥ एक उरुणने खाटली रे, राती धोली बे कंब ॥ कणयरनी छे क त्तिमा रे, मागजो ते अविलंब ॥ वि० ॥ १५ ॥ गर थ बहुल छे गांठडी रे, दिव्य रतननी दोय ॥ कर मूकावणने समें रे, मागी लेजो सोय ॥ वि० ॥ १६ ॥ गुप्त रहो तमें तिहां लगेंरे, मंत्री रह्यो तव तेम ॥ उगणी शमी ए ढालमां रे, उदयरतन कहे एम ॥ वि० ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ आवती देखी राखसी, कन्या तजी निज रू प ॥ अंजनयोगें उंटडी, ततक्षण थइ तद्रुप ॥ १ ॥ परस्पर करतां वारता, वर याचे सा बाल ॥ तव राक्षी कहे तेहनें, सुण वत्से सुकुमाल ॥ २ ॥ जग तीमां जोतां थकां, तुजनें वरवा योग्य ॥ वर कोइ मलतो नथी, कोइक चावि चोग ॥ ३ ॥ कुमरी कहे जो मात हुं, देखाडुं वरराज ॥ तव तेहनें कहे रा

खसी, तो परणावुं आज ॥ ४ ॥ सर्वगाथा ॥ १०५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ ढूकर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी॥
॥ तव पूरब शंकेतथी रे, प्रगट थयो परधान ॥
राक्षसीयें राजी थई रे, दीधु कन्या दान ॥ १ ॥ ज
विकजन जो जो पुण्य प्रजाव ॥ ए आंकणी ॥ मागी
लीधा मंत्रीसरें रे, पंच पदारथ तेह ॥ खटकाविक
खांतें करी रे, कुमरीयें कह्या जेह ॥ जवि० ॥ २ ॥
रमवा गई ते राक्षसी रे, कोइक वनमां जाम ॥ तव
कुमरी कहे कतनें रे, आपण जइयें गाम ॥ जवि०॥
॥ ३ ॥ निजपुरनी मंत्री कहे रे, हुं नवि जाणुं वा
ट ॥ तो किहां जइयें कामिनी रे, ए मोहोटो उचा
ट ॥ जवि० ॥ ४ ॥ स्वेतकवे कहे सुंदरी रे, जवमा
रीजें खाट ॥ मनमाने मेहेले पुरें रे, तव पाये गह
गाट ॥ ज० ॥ ५ ॥ पूठें आवे जो राक्षसी रे, तो
राती कांबे तेह ॥ कृष्णजो जेम जाये गली रे, मीठु
जेम वूठे मेह ॥ ज० ॥ ६ ॥ जाशे तव पाठी फरी रे,
निजस्थलें थइ निस्तेज ॥ आपणे आपण थानकें रे,
आशु मननें हेज ॥ ज० ॥ ७ ॥ समुदाय सघलो हो
इनें रे, बेशी खाटली मांहें ॥ कथे कृणी तव संचरी
रे, आकाशें उत्साहें ॥ ज० ॥ ८ ॥ ते गगनें गळ्या

पडी रे, राखसी आवी त्यांय ॥ निजथल शून्य नि हालीनें रे, धवधव पूंठे धाय ॥ ज० ॥ ए ॥ जइ मली तव मंत्रीयें रे, राती कांबें जोर ॥ ताडी तव पाछी फरी रे, पोहोती पोतानें ठोर ॥ ज० ॥ १० ॥ उद यरतन कहे ए बनी रे, वारू वीशमी ढाल ॥ पुण्यबलें अफल्यां फले रे, सुख लहीये रसाल ॥ ज० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे गंन्नीरपुर पाटणे, जिहां छे पहेली त्रीय दो य ॥ ते पुरनां उद्यानमां, मंत्री पोहोता सोय ॥ १ ॥ सुंदरी सर्व समुदायशुं, मेहेली तेणे ठाम ॥ पुरमां मंत्री परवस्यो, थानक जोवा काम ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ४९८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नांरे प्रज्ञु नहीं मालुं ॥ ए देशी ॥

॥ तव एक वेश्या वाही ते वनथी, समुदायशुं निजगेहें रे ॥ लेइ गइ लंपट ललचावी, ते नवल वधू नें नेहें ॥ १ ॥ श्रोतारस चाखोने, अहो शील सदा फल अंब, रूडीपरें राखोनें ॥ ए आंकणी ॥ आचर ण गणिकानां अवलोकी, युगति सवे तस जोई रे॥ सुंदरी निज शील राखवा काजें, चित्तमां विचारे सो इ ॥ श्रो० ॥ २ ॥ सा गुणउंरी एक उरामांहे, पेठी कमा ड जडीनें रे ॥ शील प्रजावें ते उघडी नहीं, अनेक

गया श्रहीनें ॥ श्रो० ॥ ३ ॥ पहेला पण ते पुरमां प्रेमदा, विजयसिरिनामें जेहो रे॥ कोइक राजकुमरें करी हांसी, तब नासीने तेहो ॥ श्रो० ॥ ४ ॥ तेप ण शील रखोपा काजें, कोइक देउल माहे रे ॥ पेठी कमाड जडीनें पोतें, तेणे अवसर त्यांहें ॥ श्रो० ॥ ॥ ५ ॥ व्यतिकर ते जाणी वसुधेरों, निजपुर अनरथ जीतें रे ॥ कोटवालने कह्यो पुरमांहे, पडहो वजडा व्यो प्रीतें ॥ श्रो० ॥ ६ ॥ कमाड जे ए त्रणे उघाडे, बोलावी त्रण नारी रे ॥ अर्द्धराज आपी नृप तेहनें, परणावे सकुमारी ॥ श्रो० ॥ ७ ॥ पडहो ते त्यांलवी प्रधानें, बोलावी ते बाली रे ॥ पूरव रहस्य कहीनें त्रणे, सुपरेंशुं समजावी ॥ श्रो० ॥ ८ ॥ कामनी त्रणे कमाड उघाडी, पीयुनें पाये लागी रे॥ अर्द्ध राज्यशुं अंगजा आपी, राजा थई गुणरागी ॥ श्रो० ॥ ९॥ श्री पतिने वेश्या संबंधि, तव मंत्रीयें संबध रे ॥ मांडीने कह्यो महिपति आगें, ते सुणी कोप्यो नरिंद ॥ श्रो०॥ ॥ १० ॥ ते वेहुनें तेडीनें पुछे मत्रीनुं जे कांइ रे ॥ ते सरवे सोंपो संभाली ॥ वोरा दशी तांइ ॥ श्रो० ॥ ॥ ११ दंडीनें दीधो देसूटो, ते वणिक अने वेश्या नें रे ॥ कीधां कर्म न छूटे कोइ, जे पाप खखाणां पा

नें ॥ श्रो० ॥ १२ ॥ एकवीशमी ढालें एम बोले, उद यरतन मुनि आपें रे ॥ धर्म त्यजीने धंधें लागा, रखे कोइ राचो पापें ॥ श्रो० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्द्धराज्यनी संपदा, चतुर त्रीया लेइ चार ॥ श्रीपुर नगरें संचस्यो, तव मंत्री तक धार ॥ १ ॥ हयवर बहुला हूंकलें, गयवर गाजे ऊरि ॥ रथ पयद लशुं परवस्यो, जाणे जलनिधि पूर ॥ २ ॥ पापबुद्धि नृप ऊपरें, चाल्यो चित्तधरी चूंप॥ परदल आव्युं जाणीनें, त्रय पाम्यो ते भूप ॥ ३ ॥ पेठो गढ रोहो करी, पोल जडी पुर मांय ॥ पुरजन सघलां खलभ ल्यां, आकुल व्याकुल थाय ॥ ४ ॥ मंत्रीसरें तव मोकल्यो, दिन आथमते दूत ॥ जितारि नृपनें जइ, आखे एम अदभुत ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३१६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ हव्या सुणरे सुण महाकाल ॥ ए देशी ॥

॥ मुज स्वामी महा मत्सराल, चालती छे जूजनी जाल ॥ महीयले कोइ सामी न मंके, बलीयो जे डी कर्ता दंके ॥ १ ॥ दिन दिन छे तेज सवायो, जननी कोइ एहवो न जायो ॥ एहनें जे उत्तर वाले,हीमनी

पर्रें नीखांधासे ॥२॥ जग एहवो न छे कोण थोभ, खमे जे एहनो कोभ ॥ जेणें मुज स्वामीशुं ताणी, ते हुनां कतास्या पाणी ॥ ३ ॥ कोण एहवो मूढ कहावे, जेह कालशुं बाथ भरावे ॥ तक सघली साथी तूठो, पण रूडो ते नहीं रूठो ॥ ४ ॥ एम कहाव्यु छे मुज नार्यें, जो युरू करे मुज सार्थें ॥ तो रणनी भूमें वहेला, आवजे रवि उग्यां पहेलो ॥ ५ ॥ नहीं तो वर्तें त रणा सेइ, नीकले पुरनें पुंठि देइ ॥ जो जोइशपाछुं फेरी, तो नासीश हुं नस वेरी ॥ ६ ॥ एवां दूतनां सांजली वयणां,ललाटें चडावी नयणां ॥ बोल्यो श्री पुरनो महाराजा, कत्रीधर्मनी राखवा माजा ॥ ७ ॥ अल्या मरखुं छे एक वार, आखर सहुनें निर्धार ॥ कोण न्हानोनें कोण महोटो, ओतां छे जगनो पंपो टो ॥ ८ ॥ तुज स्वामीनां ए ढंग, जेम दीवे पडे प तंग ॥ जोरावर यशनो अर्थी, इहां आव्यो छे निज पुरथी ॥ ए ॥ तो हुंपण सांहामो थाउं, मरु पण नाशी न जाउं ॥ जा कहेजे वहुवखपूरें, युरूकरशुं ऊगते सूरें ॥ १० ॥ यामिनी माटे दरवाजा, जल्पा छे राखवा माजा ॥ परजातें पोह्यो उघाडी, वढशुं र णतूर वजाडी ॥ ११ ॥ मंत्रीनें जइ दूत भाखे, एवो

युरू तणी होंश राखे ॥ ढाल उदयवदे मन खोली, वावीशमी एणी परें बोली ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रातः समें बहुपरें सजी, सेन सबल चतुरंग॥ पापबुद्धि नृप पुरथकी, नीसरीयो मनरंग ॥ १ ॥ श्र पशुकन थाते थके, राजा ते रण खेत ॥ पोहोतो ब हुदल पूरशुं, सूरगुणें उपेत ॥ २ ॥ साहामे साहामां दल बे मल्यां, रोपीनें रणथंज ॥ रणनां वाजां वा जते, मांड्यो युद्धारंज ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३४५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ शुं करीयें जो मूलज कूडुं ए ॥ देशी ॥

॥ हाथीशुं जडे तिहां हाथी, घोडाचढ घोडाचढ साथी ॥ बाणीयें बाणीनें पालाशुं पाला, रथीशुं वढे रथ वाला॥ १॥ नालें नाल मूके तिहां बहुली, घूआडे थइ रविठबी फुहुली ॥ गाज तणी परें मयगल गाजे, त रवारने मीसे वीज विराजे ॥ २ ॥ बाणमिसें वरसे जलधार, जलनी परें वहे लोही अपार ॥ धडपडतां थाये धुसूका, जवासानी परें कायर सूका ॥ ३ ॥ तुं ब तणीपरें शिर तणाय, रक्ते रणनी जूमि सींचाय ॥ रजपूरें गगनांतर छायो, एन जाणे वरसालो आ

यो ॥ ४ ॥ शुभट तणा सिंहनाद तिहां थाय, तेणे करी काने पम्मु न सुणाय ॥ अपत्सरा बहु बेशी विमानें, आवी तिहां वरवा शुभटानें ॥ ५ ॥ रोपचरें पडतां इणी रीतें, मतिसागर मंत्रीसर जीतें ॥ पाप बुद्धि नृप बांधी रणमां, ऊचो राखी शुभटनां गणमां ॥ ६ ॥ मन्त्रीसर पूछे महाराज, मुजनें तमें छंखखो छो आज ॥ सूर्यनीपरें मुजनें स्वाम, कोण नवि जा णे नृप कहे ताम ॥ ७ ॥ ते कहे एम नथी पूछता अमे, पण मुजनें छंखखो छो तमें ॥ तव नरेसर भा खेनाना, सचिव कहे सुणो नाथ प्रजाना ॥ ८ ॥ ध र्मबुद्धि छु तुम प्रधान, धर्मनुं फल सुमने राजान ॥ देखाडवा आव्यो हुं दोडी, वली मंत्रीसर कहे कर जोडी ॥ ए ॥ छे अथवा नथी कहे देव, धर्म सदा फल दायक देव ॥ लखमी लखमां लील विलास, ध र्मथकी मुज पोहोती आस ॥ १० ॥ धर्मनुं फल दे खाडी धर्में, वास्यो भूप मंत्रीयें मर्में ॥ पापनुं पाशु तजी अधनीशे, श्रीजिन आण धरी निज शिरें ॥ ॥ ११ ॥ मंत्रीयें मूक्यो महाराजा, वाज्यां तिहारें यशनां वाज्यां ॥ बेहुने प्रीति घनी बहु भंगें, श्रीजिन धर्म करे एकरंगें ॥ १२ ॥ उदयरत्न कहे ऊखट आ

णी, जे नर सुणशे श्रोजिनवाणी ॥ त्रेवीशमी ढालें ते तरशे, नरक तणा दुःख दूरें करशे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महीपतिनें मंत्री बेहु, रंगेशुं करे राज ॥ ते नगरें तरतीबशुं, करे वली धर्मनो काज ॥ १ ॥ केतेक कालें केवली, आव्या तिहां उद्यान ॥ वनपालकना मुखथकी, सांजली ते राजान ॥ २ ॥ बहु परिवारें परवस्यो, सचिवनें लेइ साथ ॥ वन जइ वंदे साधुनें, जावें ते नूनाथ ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३४७ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ काबवानी ॥ ए देशी ॥

॥ केवलज्ञानी ताम, एम उपदेशे हो अहो जवि धारजो ॥ जिनवाणी सुख धाम, श्रवणे सुणिनें हो सांसो निवारजो ॥ १ ॥ मेहेली मिथ्यामति जर्म, समकेत पामी हो शुद्ध आराधजो ॥ देव गुरुनें धर्म, सुविधें सेवि हो शिवसुख साधजो ॥२॥ वर्जी विषय विकार, अणुव्रत आदें हो व्रत तमें आदरो ॥ जे डे श्रावकनां बार, मुगतिपुरीनो हो पंथ ए पाधरो ॥३॥ पंच महाव्रत जार, प्रेमें करीनें हो प्राणी जे धरे ॥ पामे ते जवपार, उत्तमगतिमां हो अथवा अवतरे ॥ ॥ ४ ॥ दुविध धर्म कह्यो एह, जयलीलानें हो पामे

सहु जेहथी ॥ आर्ति दुःख अठेह, पापें पामे हो विरमो तेहथी ॥ ५ ॥ पापना रागी जेह, ते नर आ खर हो अधमगति संचरे॥ पाये दुःखनु गेह, काल अनंतो हो नवमांहे फरे ॥ ६ ॥ धर्मनुपाशो धीर, पु रुष जे करशे हो प्रेमेशु परस्रीनें ॥ ते लेहेशे नवती र, शिववधू तेहने हो वरसे हरखीनें ॥ ७ ॥ धर्म ठे धन सुख मूल, धर्मि पामें हो सुरनी संपदा ॥ आरा धो अनुकूल, धर्मधरामां हो सार जाणी सदा ॥०॥ चोवीशमी ए ढाल, रसीया प्राणी हो जे धरशे हृदे, सं पति सुख सुरसाल, तेहज लेहेशे हो उदय रतनवदे॥ए॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी धर्मनी देशनां, केवलीयें इणि नांत ॥ तव पूठे तक पामीनें, महीपति ते मन खांत ॥ १ ॥ कहो नगवन् करुणा करो, में पूरव नव मांहिं ॥ क रणी पहवी शी करी, जे पाप रुच्युं मुज प्राहिं ॥२॥ पुण्य प्रधानें शु कर्खु, जे पणे नवें पह ॥ ऋद्धि पा म्यो रसीयामणी, धर्मशुं धरतो नेह ॥ ३ ॥

॥ढाल पचीशमी ॥ घरें आवोजी आ
वों मोरीडं ॥ ए देशी ॥

॥ तव कहे करुणानिधि केवली, तमें पूरवलें न

वे वेह ॥ विजयपुरें व्यवहारीनां, नंदन हूंता गुणगे ह ॥ १ ॥ इम कहे करुणानिधि केवली ॥ ए आंकणी ॥ हांजी रूप पुरंदर सुंदरा, सुंदर पुरंदर नाम ॥ हांजी बांधव बे वधता तिहां, यौवन पाम्या अभिराम ॥ इम० ॥ २ ॥ हांजी कोइक कर्म कल्लोलथी, सुंदर मिथ्यामति संग ॥ हांजी घर तजी ने तापस थयो, अज्ञानें दमि बहु अंग ॥ इम० ॥ ३ ॥ हांजी धूणी पाणी छाणनें. वनफल माटी विभूति ॥ हांजी अहोनिशि तेहनें अभ्यसी, जटाधर ते अवधूत ॥इम०॥ ॥४॥ हांजी उर्ध्वबाहु उंचे मुखें, पंचाग्नि साधे सोय ॥ मौनमुखें बोले नही, नख केश वधारे दोय ॥ ॥ इम० ॥ ५ ॥ हांजी कंद भखी काया कसी, खातें हणे खटकाय ॥ हांजी दया दिलमां नविधरे,शौचधर्म धरे सदाय ॥ इम० ॥ ६ ॥ हांजी अनुक्रमें पूरी आउखुं, तिहांथी मरीनें आंहिं ॥ हांजी अज्ञान कष्ट प्रतापथी, तुं पापबुद्धि थयो राय ॥ इम० ॥ ७ ॥ हांजी उदयरतन एम उच्चरे, पचीशमी ढालें जोय॥ हांजी समरथ नही कोइ तारवा, जैनधर्मविना जग कोय ॥ इम० ॥ ८ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरंदर साधु प्रसंगथी, श्रावक थयो सुजाण ॥ जीवाजीव पुण्यपापने, प्रीछे बुद्धि प्रमाण ॥ १ ॥ ध र्मप्रभावें धन बहु, पुरंदर पाम्यो तेह ॥ जलनिधिनों जलनी परें, जेहनो नावे छेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६७ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ बूंगदवलापदल हो ॥ ए देशी ॥ अथवा ते सुत पांचेहोके प ढन करे नही ॥ ए देशी ॥

॥ एकदा ते पुरंदरहोके, श्रीजिननो चारू ॥ प्रासा द करावेहो, पुरमां वीशारू ॥ १ ॥ जिनभुवनरे जिहां रे हो, त्रीजा भाग तणु, पछुं समर्पितेहो, पुरदर सेठ जाणु ॥ २ ॥ वसुधन सरखीने हो, जिनहर में जूठं ॥ महोटो मंडाव्यो हो, लखमी व्यय कूठं ॥ ३ ॥ ए नी पायानुं हो, फल मुजनें कांइ, होशेके नही हूए हो, के जाणे सांई ॥ ४ ॥ आदि अंतने मध्ये हो, इम सं शय आणी ॥ पोतें ते भांज्यो हो, सम्यक् फल जा णी ॥ ५ ॥ हाहा शु एमें हो, अधिक चिंतवुं एहवुं ॥ फल छे सही एहनुं हो, मुगति आपे तेहवुं ॥ ६ ॥ श्रीजिनवर केरा हो, बहु प्रासाद करी ॥ बहु बिंब भ राव्यां हो, मनशुं हर्ष धरी ॥ ७ ॥ तीर्थ यात्रा तप

हो, गुरु साहामी देव ॥ सामायिक पोसह हो, सेवी नित्य मेव ॥ ७ ॥ तिहांथी ते मरीनें हो, मतिसागर नामें ॥ मंत्री थयो ताहरो हो, धर्मनें जे कामें ॥ ए॥ कीधा हता जेणे हो, धर्मकर्म जेहवां, प्रगटफल तेणे हो, इहां पाम्यां तेहवां ॥ १ ॥ छवीशमी ढालें हो, इणी परें उदय कहे ॥ जगमां धन्य तेहनें हो, जिन मत जेह लहे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीक्षा लेइ तपतपी, पामी केवलज्ञान ॥ मुक्ति जाशो तमे बे जणा, सांजल तुं राजान ॥ १ ॥ रोग शोग दोहग हरे, आपे परमानंद ॥ धर्मकरो ते धस मसी, फेडे जे नवफंद ॥ २ ॥ परमप्रजुता पद सवे, सुरपद शिव सोजाग ॥ पुण्यपसायें, पामीयें, नूपतिसु ण महाजाग ॥ ३ ॥ इम केवलियें उपदिश्यो, पूरव जव विरतंत॥ महीपति मंत्री बे जणे, सद्दह्यो ते तं त ॥ ४ ॥ वंदी सहु मंदिर वब्युं, केवली कीध विहा र ॥ महीपतिनें मत्री घरें, वर्त्यो जयजयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामा जीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ जयजयकार धर्मफल जाणी, आठे पोहोर आ

॥ दोहा ॥

॥ पुरंदर साधु प्रसंगथी, श्रावक थयो सुजाण ॥ जीवाजीव पुण्यपापने, प्रीछे बुद्धि प्रमाण ॥ १ ॥ ध र्मप्रभावें धन घणुं, पुरंदर पाम्यो तेह ॥ जलनिधिनो जलनी परें, जेहनो नावे छेह ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥ ३६९ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ बूंगादलमाहल हो ॥ ए देशी ॥ अथवा ते सुत पांचेहोके प ठन करे नही ॥ ए देशी ॥

॥ एकदा ते पुरंदरहोके, श्रीजिननो चारू ॥ प्रासा द करावेहो, पुरमां दीदारू ॥ १ ॥ जिनभुवनते जिहां रे हो, श्रीजा भाग तणु, थयुं तवचिंतेहो, पुरंदर तेह जणुं ॥ २ ॥ बहुधन खरचीने हो, जिनहर में जूठं ॥ महोटो मनाव्यो हो, धलमी व्यय झूठं ॥ ३ ॥ ए नी पायातुं हो, फल भुजनें कांइ, होशेके नही भूप हो, के जाणे सांई ॥ ४ ॥ आवि श्रतने मध्ये हो, इम सं शय आणी ॥ पोतें ते भांज्यो हो, सम्यक् फल जा णी ॥ ५ ॥ हाहा शु एमें हो, अविक चिंत्युं एहवुं ॥ फल छे सही एहनु हो, सुगति आपे तेहवुं ॥ ६ ॥ श्रीजिनवर केरा हो, बहु प्रासाद करी ॥ बहु बिंब भ राव्यां हो, मनशु हर्ष धरी ॥ ७ ॥ तीर्थ यात्रा तप

हो, गुरु साहामी देव ॥ सामायिक पोसह हो, सेवी नित्य मेव ॥ ८ ॥ तिहांथी ते मरीनें हो, मतिसागर नामें ॥ मंत्री थयो ताहरो हो, धर्मनें जे कामें ॥ ए॥ कीधा हता जेणे हो, धर्मकर्म जेहवां, प्रगटफल तेणे हो, इहां पाम्यां तेहवां ॥ १ ॥ छवीशमी ढालें हो, इणी परें उदय कहे ॥ जगमां धन्य तेहनें हो, जिन मत जेह लहे ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३८० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीक्षा लेइ तपतपी, पामी केवलज्ञान ॥ मुक्ति जाशो तमे बे जणा, सांजल तुं राजान ॥ १ ॥ रोग शोग दोहग हरे, आपे परमानंद ॥धर्मकरो ते धस मसी, फेडे जे जवफंद ॥ २ ॥ परमप्रजुता पद सवे, सुरपद शिव सोजाग ॥ पुण्यपसायें, पामीयें, जूपतिसुण महाजाग ॥ ३ ॥ इम केवलियें उपदिश्यो, पूरव जव विरतंत॥ महीपति मंत्री बे जणे, सद्दह्यो ते तंत ॥ ४ ॥ वंदी सहु मंदिर वल्युं, केवली कीध विहार ॥ महीपतिनें मंत्री घरें, वर्त्यो जयजयकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामा जीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ जयजयकार धर्मफल जाणी, आठे पोहोर आ

राधो ॥ पापतणी मति पाछी ठेली, शिवमारगनें सा
धो रे ॥ १ ॥ जवि धर्म सदा शुरूधारो ॥ श्रीजिन
जाषित जगजन तारक, वारक डुरित विकारो रे ॥
॥ जवि० ॥ २ ॥ संक्षेपें ए चरित्र प्रमाणे, रहस्यक
थानु दाख्युं ॥ मिछामिडुक्कड ते मुने होजो, अधिकु
ठेंहुं जे जाख्यु रे ॥ जवि० ॥ ३ ॥ तपगछ मरूप
तिलक समोवड, श्रीराजविजय सूरि राजें ॥ तसुपा
टें श्रीरत्नविजय सूरि, रत्नसरिखो गाजे रे ॥ जवि०॥
॥ ४ ॥ श्रीहीररत्न सूरि तसु पाटें, श्रीजयरत्नसूरिंद
॥ सांप्रत जावरत्नसूरि जेटो, अधिकपरी आणंदो
रे ॥ जवि० ॥ ५ ॥ श्रीहीररत्नसूरिश्वर केरा, चारु
शिष्य सोहाया ॥ पंमितलब्धिरत्न तस विनयी, सिद्धि
रत्न उवजाया रे ॥ जवि० ॥ ६ ॥ गणिवर मेघरत्न
गुणवरीयो, अमररत्न तसु शिष्य ॥ शिवरत्न तसु शिष्य
शोहावे, मुज गुरु वहुल जगीश रे ॥ जवि० ॥ ७ ॥
सिद्धिरस मुनि इन्दुसमयें (१७६८) एकादशी अ
जुआली ॥ मागशिरनी रविदिन शिवयोगें,नक्षत्र अ
श्विनी जाली रे ॥ जवि० ॥ ८ ॥ ए में रास रच्यो
अति रूडो, मनोहर पाटण मांहे ॥ पचासर प्रजु
पास पसायें, डुःख सवि दूरें पलाये रे ॥ जवि०॥ए॥

मंगलवेलि फली आज माहारे, रास ए जे सुणे रंगे ॥ तस घर जयकमला करे वासो, उत्तमगुण वसे अंगे रे ॥ १० ॥ सत्तावीशमी एह शोहावी, उदयर तन कही ढाल ॥ धन्याश्री रागे श्रीसंघनें, नित्य हुई मंगलमाल रे ॥ ज्रवि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०६ ॥

॥ इति पंडित श्रीउदयरत्नजी महाराज कृत पापबुद्धिराजा अने धर्मबुद्धि मंत्रीश्वरनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ॥

॥ श्रीसज्जन विषे प्रस्ताविक दोहा ॥

॥ सज्जन सरसो नेहडो, म करिश मूढ गमार॥ त्रिहुआं दुःख तेणी परें, जिम करवतनी धार ॥ ॥ १ ॥ सज्जन माणस जब मिले, तो नवि कीजे लाज ॥ समाचार हियातणां, सारीजे सवि काज ॥ २ ॥ नयणह अंतर डूंगरां, मन अंतरे न कोय ॥ सज्जनसु मेलावडो, जो विहि करे तो होय ॥ ३ ॥ कारण किमपि न जाणिए, सज्जण हुआ सरोस ॥ के दुज्जण भंभेरिया, केइ हमारो दोस ॥ ४ ॥ तुऊसु मिलवा टलवले, सज्जन मारु मन्न ॥ पण मिलवु परवश थ युं, सुणजे तुहि सज्जन ॥ ५ ॥ सज्जन तुम्म वियो गडे, जे मुज मन अति दुक्ख ॥ ते दुख जगदीश्वर लहे, में न कहाये मुक्ख ॥६॥ मुऊ ऊपर माया नथी, जाणन थारो धार॥ तुऊ उपर आवद्द, ते जाणे कि रतार ॥ ७ ॥ जिण दीठे मन उल्लसे, जिण दीठे सु ख होय ॥ ते सज्जण दीसे नहि, अवर घणेरां हो य ॥ ८ ॥ सज्जण संदेसो मोकले, दैवठं कियुं विछो ह ॥ तुह्मे परदेशें रही, खबर न पूछो मोह ॥ ९ ॥ सज्जण ऐसा मित्र करे, जेसा फोफल पंग ॥ आप

करावे कडकडा, परह चडावे रंग ॥ १० ॥ सारसडां मोती चुणे, चुणे तु विरमे कोय ॥ सज्जण माणस जो मिले, मिले तु विहडे कोय ॥ ११ ॥ सज्जण सरिसी गोठडी, साजणशुं संयोग ॥ पुण्य विना नवि पामियें, केनो कीजे सोग ॥ १२ ॥ मास वरिस निशि दिन सफल, घडिअज लेखे सोय ॥ साजणशुं मेलावडो, जिणवेला मुऊ होय ॥ १३ ॥ तुऊ गुण मुऊ हियडे वस्या, अवर न बेशे चित्त ॥ चिंतामणि जिणि सेवि उं, काच न ते राचंत ॥ १४ ॥ घडी होय मासह समी, वरस समा दिन जाय ॥ तुऊ वियोग जव सांजरे, तव जोजन विषथाय ॥१५॥ कहतां दीशे कारसुं, तुऊशुं प्रेम अपार ॥ घडिए अंतर जाणिए, दीशे वली किवार ॥ १६ ॥ हियडा जीतर दवबले, बाहिर धूम न होय ॥ करतां कीधो नेहडो, किम पालीशे सोय ॥ १७ ॥ सज्जण किमे न वीसरे, देश विदेश गयांइ ॥ जिम जिम सज्जण संजरे, तिम तिम नय न ऊरांइ ॥ १८ ॥ सज्जण सहजें दूबला, जण जाणे सीदाय ॥ जस हियडे करवत वहे, ते किम मातो थाय ॥ १९ ॥ सज्जन बिहुं परें वीसरे, हियडां मांहिथवांइ ॥ के सूतां घण नींदजर, के पुण पले

मुयांइ ॥ २० ॥ सज्जन चोलावी चल्या, लोचन दु
आ निरास ॥ मन मोरु सार्थे गयु, ते नवि मेले आ
स ॥ २१ ॥ जीभे वयण न ऊपजे, पग आघो न भराय
॥ सज्जन मेली चालतां, बोल न कह्यो जाय ॥ २२ ॥

आर्या

॥ पिय विरहे जं दुक्ख, अहवा मिलिएण ज हवइ
सुक्ख ॥ सोचेव तं विहाणे, अहवा जाणेइ सवन्नू ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रस पाने रस कोकर्सें, अति रस चूने होइ ॥
सब रस जोइ मिलिहया, पिय रस समो न कोइ ॥
॥ २४ ॥ साजनिआं सहु को करे, अमे न करशु
कोइ ॥ जेसा सुख सनेहको, तेसा फिर दुख होइ ॥
॥ २५ ॥ सज्जन गुण अंगार दुअ, हियर्कू धूके तेण ॥
अवगुण नीर न संपजे, बीसारीजे जेण ॥ २६ ॥
आवे साजन नीडडी, सुहणां पामु लोइ ॥ सुहणे
सज्जन आवशे, अवर न दूजा कोइ ॥ २७ ॥ लागुं
चित्त सुजाणशुं, बरजे लोक अजाण ॥ तेशुं तोडे
किमसरे, जेशुं जीव पराण ॥ २८ ॥ सज्जनने सज्ज
न मिल्यां, सामी थाये पीति ॥ दूधमांहि शाकर भ
ली, एहज रूडी रीति ॥ २९ ॥ किं किज्ञा तिण स

जाणे, जीड न जाणे जेण ॥ अजाह कंठ पयोहरा, दूध न पाणी तेण ॥ ३० ॥ गाम नगरमें जोइआ, सुजन चलेरा होय ॥ जिहशुं मन वाध्युं रहे, तेवो न मिले कोय ॥ ३१ ॥ सज्जन तुऊ विरहानलें, मुऊ मन वदे अपार ॥ सोम दृष्टि जल सींचतां, कर जो अमारि सार ॥ ३२ ॥ जे जड ऊमी सुसज्जाणे, रेही नेह अपार ॥ ते ऊड किमे न नीसरे, मिले जु लक्क लुहार ॥ ३३ ॥

॥ आर्या ॥

॥ चित्तं तुह पासडं, तुह गुण सवणेण सवण संतोसो ॥ जीहा नाम ग्गहणे, एगा दिठी तडप्फडइ ॥ ३४ ॥

सोरठा

॥ अगर तणे अनुसार, ठेदंतां परिमल करे ॥ ते सज्जाण संसार, जोया पण दीशे नहीं ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंदा चंदन केलि वन, पवन निरंतर नीर ॥ सज्जन तारे रूसणे, पंचे दहे शरीर ॥ ३६ ॥ सहिए सुपुरिस सेविए, जो घर रिद्धि न होय ॥ सूकां चंदन काठ जिम, गंध न ठंडे तोय ॥ ३७ ॥ जिण दीठे मन उल्लसे, नयणे अमिय ऊरंत ॥ ते सज्जन किम वीसरे,

जो शिर सट्य पडत ॥ ३८ ॥ मरुडुं एहज वीठडी, जे मुकशीसुजणेण ॥ जूश्रा श्रस्कर वांचतां, ऊठ मां की नयणेण ॥ ३९ ॥ गिरुश्रा सहजें गुण करे, कार ण किंपि न जाण ॥ करसण सींचे सर भरे, मेह न मागेदाण ॥ ४० ॥ सज्जन तणां संदेसडा, सुणतां हुए श्रपार ॥ जिम जिम वलि वलि पूछिए, तिम तिम श्रावे पार ॥ ४१ ॥ सजन सेरि सामा मिल्या, किम करिसां ए खेसि ॥ शिर नामिस कहुं मिलें, नयरे साहे देसि ॥४२॥ चदो चदन पवन जल, चारे जो वि मिलंत ॥ तो पिय माणस बाहिरा, निश्चय ताप करंत ॥४३॥सज्जन सकलहि लोकमें, सा समानसो एक ॥ वि हिने श्रनन्य यह कियो, नांहिन किये श्रनेक॥४४॥ नींद करु अवयारणां, सज्जन मिलियां जाह ॥श्राधो करी निघाडुंकी, साइ दीजें तांह ॥ ४५ ॥ सज्जन वोलावी चल्या, लोचन हुश्रा निरास ॥ मन मोरुं सर्छे गयु, ते नथि मेले श्रास ॥ ४६ ॥ सज्जन ते स ज्जान हुय, डुज्जान किमेन हुति ॥ कुडढ निलो अगरनें, लोहे होय सुगध ॥ ४७ ॥ सज्जनदीठे कवण गुण, जे श्रंगे न मिलंत ॥ पेखइ जलहर ठनमण, पिय बिण तस न हरंत ॥४८॥ जीभज मीठी मुख हशे, लोले पर

उपगार ॥ सरल चित्त बुधि आगली, ते सज्जन अव तार ॥ ४९ ॥ सज्जन सहज तुमारडुं, खरुं धुतारुं मि त्त ॥ देखत दूर देशांतरें, चोर्युं मारुं चित्त ॥ ५० ॥ सज्जन गुण ता अति घणा, लखतां न लहुं पार ॥ जेन लखाए तेह तो, इमज खटके सोवार ॥ ५१ ॥ सज्जन थोडा हंस जिम, उटांके दीसंति ॥ दुर्जन काला काग जिम, घर घर घणा भमंति ॥ ५२ ॥ सज्जन थोडा दुजण घणा, माणस मरवा लोग ॥ नयणा करजो नींदडी, नथी मिल्यानो योग ॥ ५३ ॥

सोरठा

॥ जो फाटो आकाश, तो किम सीवीस रे हिया॥ जेह तणुं वीसास, ते साजण वयरी हुवा ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हियडुं तो सप्पीर भर्युं, ज्युं तारायण अभ्र ॥ जाम मिलेसी सज्जणा, ताम कहेशूं सब्ब ॥ ५५ ॥ अवस जे नवि आविआ, वेलें जे न पहुत ॥ ते स ज्जण तिण देशमां, करियो राज बहुत्त ॥ ५६ ॥

सोरठा

॥ जो वालहू विचार, भूले तो भरिये किशूं ॥ अ वगुण एक विचार, सास हिये साजण तणा ॥ ५७ ॥

जो शिर सल्य पईत ॥ ३० ॥ मरुडु पइज चीठडी, जे मुकली सुजपेण ॥ जूत्रा श्रक्कर वांचता, ऊठ मां की नयपेण ॥ ३९ ॥ गिरुश्रा सहजें गुण करे, कार ण किपि न जाण ॥ करसण सींचे सर जरे, मेह न मागेदाण ॥ ४० ॥ सज्जन तणां संदेसडा, सुणतां हुए श्रपार ॥ जिम जिम वखि वखि पूठिए, तिम तिम श्रावे पार ॥ ४१ ॥ सजन सेरि सामा मिल्या, किम करिसां ए ह्रेसि ॥ शिर नामिस कहां मिसें, नयण साहे देसि ॥४२॥ पवो पवन पवन जल, चारे जो वि मिलंत ॥ तो पिय माणस बाहिरा, निश्चय ताप करंत ॥४३॥ सज्जन सफल हि लोकमें, ता समानसो एक ॥ वि हिने श्रनन्य पद कियो, नांहिन [illegible]

नींव करु श्रठपारणां, सज्जन [illegible]

करी निषाडुकी, सांइ दीजें [illegible]

बोलावी चल्या, लोचन हु [illegible]

सलें गयु, ते नवि मेले [illegible] ॥ ४४ ॥

ज्ञान हुय, डुज्ञान किमेन [illegible]

तोहे होय सुगध ॥ ४५ । [illegible]

श्रंगे न मिलंत ॥ पेस [illegible]

तस न हरंत ॥४०॥ जी' [illegible]

चोपाइ

[illegible] पुता, जेठ [illegible]

[illegible] न विधूता, [illegible]

उपगार ॥ सरल चित्त बुधि आगली, ते सज्जन अव तार ॥ ४ए ॥ सज्जन सहज तुमारडुं, खरुं धुतारुं मि त्त ॥ देखत दूर देशांतरें, चोर्युं मारुं चित्त ॥ ५० ॥ सज्जन गुण ता अति घणा, लखतां न लहुं पार ॥ जेन लखाए तेह तो, इमज खटके सोवार ॥ ५१ ॥ सज्जन थोडा हंस जिम, उटांके दीसंति ॥ डुर्जन काला काग जिम, घर घर घणा जमंति ॥ ५२ ॥ सज्जन थोडा डुजण घणा, माणस मरवा लोग ॥ नयणा करजो नींदडी, नथी मिल्यानो योग ॥ ५३ ॥

सोरठा

॥ जो फाटो आकाश, [illegible] सीवीस रे हिया ॥ जेह तणुं वीसास, ते साजण [illegible] [illegible] संसार ॥ ह [illegible] ॥ स

॥ दोहा ॥

॥ हियडुं तो सधीर [illegible] तारायण [illegible] ॥ अ जाम मिलेसी सज्जणा, [illegible] ॥ ५५ ॥ ए अवस जे नवि आविया, [illegible] जे न पहुत ॥ ते स बु ज्जण तिण देशमां, करियो राज बहुत ॥ ५६ ॥ स गर

सोरठा

॥ जो वालहू विचार, भूले तो नरिये किशूं ॥ अ वगुण एक विचार, सास हिये साजण तणा ॥ [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

॥ तहां न सासे साजनां, जां न सखि अहिनाण॥ गुणवंतो जाणेसही, जाणे नहीं अजाण ॥ ५८ ॥ सजाण गुण अगार जिम, हियडुं राजे तेण ॥ अव गुण नीर न संपजे, ढंखावीजें जेण ॥ ५९ ॥ सज्जण थकि विसहर भला, रुकी जीवज लेइ ॥ नेह मांहि दूरें रह्या, पगपग सल्ले लेइ ॥ ६० ॥ ढंखणा सज्जण तणा, पछ सहणा न जाय ॥ विरह विछोह्यां मा णसां, कहु किम केर्या थाय ॥ ६१ ॥ सज्जण सो किण विसरे, ज दीधुं वेखाय ॥ मीठू भोयण डुब यण, पुणि वीसरे भुवाय ॥ ६२ ॥ तं नी वीणठ जण मरु, पोथा वंचण व्यास ॥ कण संचण कुकस भख ण, विण कामरु पचास ॥ ६३ ॥ हरिण हरिवु रिखु अगली, वीगढ सरू सवाठ ॥ जं विहि करइ तं हुवे, ज्यां पासो त्यां पाठ ॥ ६४ ॥

चोपाइ

॥ वीशे त्रीशे जेहिं नवि पूता, जेठ असाडही जे नवि सूता ॥ पोशे माहे जे न विभूता, मानव हींड्या हाहा हूता ॥ ६५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ किं किज्जैं को परिगहें, तारायण वहुलेण ॥ पिरकंतां शशि गंजियें, अकल्ले राहेण ॥ ६६ ॥

चोपाइ

॥ पोयड थोथकेंहि नवि किंफू, पढिश्रा पंढित तिहि नवि किंफू ॥ जाव न बूजे यह मण किंफू, तावन किंज किंज नवि किंफू ॥ ६७ ॥

सोरठा

॥ हियडा हियडे रोय, काहूं लोक जणावियें ॥ जिह कारण तूं रोय, सो सज्जण परदेशडे ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तूंहिज सज्जन तूंज मन, तूं जीवी संसार ॥ हियडा भीतर तूं वसे, सामी जाण मजाण ॥ ६९ ॥ सवि सूधां सवि उजलां, माली आण्या त्रोड॥केहा अवगुण अमकिया, दो दो बांध्या जोड ॥७०॥ सहिए साजण चालसे, संचारूं गुण सार ॥ अमने कवण बुलावशे, दीहाडी पण वार ॥७१॥ चिंत्त टलक्युं सजणा, दूधें केहो साइ ॥ तुफ शिर सल्ले बेटडूं, मुफ शिर सल्ले घाइ ॥ ७२ ॥ सज्जन समकोई नहीं, जगमें और पुमान ॥ देत करे अपकार पर, जो मागे सो निदा

न ॥७३॥ सज्जनके सज्जण कहे, करत सदा उपकार॥
प्रति उपकार चहे नहीं, उत्तम नर संसार ॥ ७४ ॥ज
गमें सज्जन ना हुते, तो उपकार न होत ॥ विहि
ने किये विचार करि, ठौर ठौर उद्योत ॥७५॥ सज्ज
ण दुज्जण वातडी, प्राणी नेह म ञोड ॥ कातणहारी
सूत्र जिम, सांधे सांधे जोड ॥ ७६ ॥ सज्जण दीठे
आपणो, पाप शरीरह जाय ॥ हियडुं विकसे कमल
जिम, मन पंजर नवि माय ॥ ७७ ॥ सज्जन सम
जगमां नहीं, हितकारी नरनांह॥ चीड पडे थांडे थरे,
भागी जावे नांह ॥ ७८ ॥ सज्जण धरा समान है, भा
र धरे निजदेह ॥ अन्न ठखभी देसजे, सदा न मूके
नेह॥७९॥सज्जण किरतारें कियो, पर दुःख भंजन
ण काज ॥ कष्ट विगाडे आपणो, औरहि राखे ला
ज ॥ ८० ॥ किरतारे सज्जन कियो, लियो लोक में
लाव ॥ सज्जण विण जग चलत नहिं, ज्युं पाणीमें
नाव ॥ ८१ ॥ सज्जण सज्जण सहु कहे, सज्जण री
ती ओर ॥ पहेसु पोपट ओर है, सुवडा है बहु मोर
॥ ८२ ॥ सज्जण कर उपयार नें, कासु कदे कहेन ॥
निय मणमें अभिमाण नहिं, उवास्त न सु कहेन ॥८३॥
जिण दीठे मन रंजिए, अरणे अभिहेण ॥सो सज्जण

मुक शांत्ररे, हिये थाय मुद तेण ॥ ७४ ॥ साजण जागे डुज्जणें, किया अनेरी तार ॥ आरीसा जिम ज लकता, दीहाडी शो वार ॥ ७५ ॥ वरि कस्तूरी इक नख, मा चंदन इक रस्स ॥ साजणसुं घडिए जली, माडुजणसुं वरस्स ॥ ७६ ॥ सहु सज्जण एकपि सु जण, किं किज्जइ बहुएण ॥ सूरजकूं कूपल लसण, वास विणहो तेण ॥ ७७ ॥

आर्या

॥ सज्जण जणाण पीइ, पीकी जंता विहूज्जण जणे ण ॥ नारंगरस विडल्ली, न मुइ सुक्कापि सोरंजं ॥७८॥

॥ दोहा ॥

॥ जे सज्जण ते सज्जणह, जो रूसे शो वार ॥ अं ब न होए लिंबडूं, जे जाते सहकार ॥ ७९ ॥ सज्जा न सरिशुं कलकडुं, कलकरू परखुं चित्त ॥ कल क रतां जे नीमडुं, सो सज्जन सो मित्त ॥ ८० ॥

॥ जरावस्था वर्णन ॥ दोहा ॥

॥ बलतूटे जोवन गये, हाथ पाव थहरात ॥ मा र्यो जरा प्रहारको, तबतें उठ्यो न जात ॥ ८१ ॥ प्र जु सोंधे अरु निकट हैं, क्यूं नहि सुमरत धाइ ॥ जै से जरा प्रहारकूं, उपक्रम करे जु आइ ॥ ८२ ॥ आज

प रच तुहण सगो, तरुणी तुरि असलाइ ॥ बाहर कालनरिंदकी, जरा पहूची आइ॥ ९३॥ व्याधिचोर बाहर बहद, तन जर घर ठदेराज ॥ जबतें बाहर आमकी, तसकर गए जु आज॥ ९४ ॥ रूप न देख्यो अंधरे, बहिरे न सुण्यो गीत ॥ वाको गुण कछु गख गयो, कहत उदे सुण प्रीत ॥ ९५ ॥ स्वादज लहियत जीजयें, भाषन छू तें वास ॥ पण्डित लहिये हैं उदय, मूरख अवले पास ॥९६॥ साधांकी संगत उदय, करणे पा वैसोइ॥होइ बहुरि अघो छुवे, मुखतें गुगो होइ ॥९७॥ पेठति कहीं सरूप व्है, निकसति कहीं सरूप ॥ तनमें जीउ असे उदय, ज्यूं दर्पणमें रूप ॥ ९८ ॥ ज्यूं बैसा नरकाठमें, दधिमें जैसे घीउ॥ सूरज मख उदेराज कहि, यूंतन भीतर जीउ ॥ ९९ ॥ आपणी बतिका गति रवसि, अपने रूप पुमान ॥ उदेराज कोउ किन्हीं, नहिं देखे दुनियांन ॥१००॥ उदेराज केसू कुशुम, दे शोभा आराम ॥ अति सुदर बासी रहित, तिण मुख कीधु साम ॥ १०१ ॥ वृद्ध अव स्थामें कहा, और करहिं उद्योग ॥ ले इश्वरको नाम तुं, भोर भुक्यो अब भोग॥ १०२ ॥ वृद्ध अवस्था आइयें, मनन भयो सब वृद्ध ॥ तृष्णा ऑकणिनें भ

स्यो, कर हीरो नहि लरू ॥ १०३ ॥ जरा अवस्थामें नरा, थरथर कांपत देह ॥ नौतो आयो कालको, तोहु न ढांमत नेह ॥ १०४ ॥ जरा अवस्थाके पिछे, और अवस्था मर्ण ॥ तातें कछुक विचारिके, अब ही जा गुरु सर्ण ॥ १०५ ॥ करत करत उद्यम अरे, जरा लियो तब घेर ॥ नर तन तो मरि जायगो, कहा करैगो फेर ॥ १०६ ॥ जरा राक्सीने धर्यो, कंठ तोर अति दाबि ॥ प्रान लेइगी आज कल, शिव तूं सुमर सिताबि ॥ १०७ ॥ जुवानिमें केते मरत ॥ रहत सु जरा हि पाय ॥ तबहुं धर्मकों ना करै, सहज नरकमें जाय ॥ १०८ ॥ मरवो तौ है सबनकूं, तातें डरवो न होय ॥ साहिब नित्यहि सुमरवो, करवो धर्म सु जीय ॥ १०९ ॥ देखी जरा नरा तहूं, खरो जयो खररूप ॥ किधों कहू तब कूतरा, परत मोहके कूप ॥ ॥ ११० ॥ जरा मांहि कोइ न सगो, तिय सुत नावत काम ॥ तौहु अंध चेतत नहीं, धरतन धर्म विराम ॥ १११ ॥ जरा सु पकर्यो जांहिकों, मारे बिना न जात ॥ यातें बच्यो न कोउ नर, राजा रंक हि खात ॥ ११२ ॥ जरातो हि बंदन करों, शुद्ध मति मोकों देहु ॥ दया धर्म आवै हृदय, अंत लाव जग लेहु ॥ ११३ ॥

वात विना मुख होवही, वाचा शुद्ध न बोध ॥ श
क्ति न इन्द्रिय हीण सब, यथा वाल वय तोल ॥११४॥
यमकी दूती श्राइ यह, लोक विदित अस जानु ॥
परधन पर तियकू तजहु, भजहु सदा भगवानु ॥
॥११५॥ जरा पठाइ कालने ॥ तोहि कियो वे हाल॥
तोहू चेतत नांहि अजु, अव आवेगो काल ॥११६॥
जरा निशानी कालकी, तांहि वालकी एह ॥ भक्ति
करहु भगवानकी, जगत जालकी देह ॥ ११७ ॥ ज
रा जगाव सर्वकू, जुवानि हू हरि लेत ॥ अव क्या
करही मूढ नर, सूकि जायगो खेत ॥ ११८ ॥ जरा
आइ तवतें भयो, सकल भोगको नाश ॥ साधन स
व सूखे भये, धरे रहे सब पास ॥११९॥ जरा दुःख
को मूल है, आवत हैं तन रोग ॥ महा विपत्ती जो
गही, जानत हैं सब लोग ॥ १२० ॥ जरा न ठोरे
काहु कू, येव यह नर कोइ ॥ सवहीकों मसि लेत
है, चकी ना कहुं होइ ॥ १२१ ॥

॥ इति समाप्तः ॥

अथ

श्रीमानसागरगणिविरचित श्रीशीलविषयक कान्हडकठियारानो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पारसनाथ प्रणमुं सदा, त्रेविसमो जिनचंद ॥ अलियविघन दूरें हरे, आपे परमानंद ॥ १ ॥ वीणा पुस्तक धारिणी, श्रुतदाता श्रुतदेव ॥ सानिध करजो सामिनी, सेवकने नितमेव ॥ २ ॥ दान शील तप जावना, इणमें अधिकूं शील ॥ सेवे जे नवियण सदा, इणजव परजव लील ॥ ३ ॥ शीलें सुर सानिध करे, शीलें सिंह शिआल ॥ शीले सवि संकट टले, फणि धर हुवे फुल माल ॥ ४ ॥ शीलें सुखसंपद मिले, शी लें जोग रसाल ॥ कठियारा कान्हड परें, फले मनो रथ माल ॥ ५ ॥ कठियारो कान्हड हुवो, शीलवंत मां हे लीह ॥ तास तणा गुण गावतां, पावन थाये जी ह ॥ ६ ॥ गुण गाउं गुरुआ तणा, सांजलजो सहु सं त ॥ शील किसी परे पालियुं, ते दाखुं दृष्टंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली॥

॥ देशी चोपाइनी॥ लाख जोयण जबू परिमाण दाहिण भरत पूरव दिशि जाण ॥ नयरी अयोध्य अतिहि प्रधान, अमरपुरी केरु उपमान ॥ १ ॥ को डि गमे कोटिध्वज जाण, लखपति कोइ न आणे झा न ॥ छुदाला कुदाला लाइ, अवसर ले लखमीनो ला ह ॥ २ ॥ देवल दंभ नहिं नरलोय, तर्कविना किहां वाद न होय ॥ वेणीबधन नवि दीसे साव, मार वचन लोकें नवि भाव ॥ ३ ॥ दोय जिह्वा पटियारे जोय, नगरमांहे नवि दीसे कोय॥ धनना कोइ न दीसे चो र, मनना चोर वसे ठे जोर ॥ ४ ॥ सोहे चोरासी चोहटा, राजभवन घूमे गजघटा ॥ वापी कूप सरोव र सार, वन वाडी नवि लाभु पार ॥५॥ जोगी भम र अठे सहु कोय, तो पण पग मांके ठे जोय ॥ पर नारीशुं न करे प्रीत, चाले उत्तमकुलनी रीत ॥ ६॥ षट्दर्शन मन पहिज वात, म करो परजन केरी ता त ॥ दान शील तप भावन सार, इणशु राखे नित व्यवहार ॥ ७ ॥ समकितमूल धारह व्रत धरे, परव दिवस पोसह आणुसरे॥ तीन तत्त्व सूधां सदहे, जि णवर आण अखंडित वहे ॥ ८ ॥ राज करे कीरति

धर राय, वैरी जाजगया वडवाय ॥ न्यायवंत अकरा कर नहिं, जेहनी कीरति समुद्रें कही ॥ए॥ सुप्रजा राणी जेहने सही, रूपें रंज समोवड कही ॥ राजा राणी अविहड प्रेम, दूध नीर पारेवा जेम ॥ १० ॥ पहेली ढाल कही अति सार, राजा नगर तणो अधिकार ॥ मानसागर कहे सुणजो सहु, आगल वात अचंजम कहुं ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ ग्राम नगरपुर विचरता, चउनाणी अणगार ॥ विनिता नयरी समोसस्या, साधु तणे परिवार ॥ १॥ कीरतिधर अवनीपति, विधिशु वांदण जाय ॥ वंदण विधिशु साचवी, आगल बेठो आय ॥ २ ॥ आगल बेठी परखदा, बेठा नगर नरेश ॥ अवसर जाणी आपणो, धे मुनिवर उपदेश ॥ ३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग वेराडी ज्रूलो मन जमरा रे कांइ जम्यो ॥ ए देशी ॥ मानवनो जव पामियो, पाम्यो आरज देश॥ श्रावकनुं कुल पामियो, पाम्यो गुरु उपदेश॥१॥ चेतनी चेतना प्राणिया, करे जिन धर्म सार ॥ दान शियल तप जावना, चारे जग सार चे० ॥ २ ॥ का

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ लाख जोयण जंबू परिमाण, दाक्षिण जरत पूरव दिशि जाण ॥ नयरी अयोध्या अतिहि प्रधान, अमरपुरी केरु उपमान ॥ १ ॥ को डि गमे कोटिध्वज जाण, लखपति कोइ न आवे ज्ञा न ॥ डुवाला कुवाला साह, अवसर ले लखमीनो ला ह ॥ २ ॥ देवल वंरू नहिं नरलोय, तर्कविना किहां वाद न होय ॥ वेणीबंधन नवि दीसे साव, मार वचन लोकें नवि चाव ॥ ३ ॥ लोय जिन्हा पटियारे जोय, नगरमांहे नवि दीसे कोय ॥ धनना कोइ न दीसे चो र, मनना चोर वसे बे जोर ॥ ४ ॥ सोहे चोरासी चोहटा, राजजवन घूमे गजघटा ॥ वापी कूप सरोव र सार, वन वाडी नवि लाजु पार ॥ ५ ॥ जोगी जम र अबे सहु कोय, तो पण पग मांके बे जोय ॥ पर नारीशुं न करे प्रीत, चाले उत्तमकुलनी रीत ॥ ६ ॥ षट्दर्शन मन एहिज वात, म करो परजन केरी ता त ॥ दान शील तप जावन सार, इणशु राखे नित व्यवहार ॥ ७ ॥ समकितमूल बारह व्रत धरे, परव दिवस पोसह अणुसरे ॥ तीन तत्त्व सूधां सद्दहे, जि णवर आण अखंकित वहे ॥ ८ ॥ राज करे कीरति

लवेगो आइने, कठियारो कर जोड ॥ १ ॥ कठियारा ने मुनि कहे, किस्युं करो छो काम ॥ नारीशुं नगवानजी, आघो काढुं आम ॥ २ ॥ एक लियो तुम आखडी, एम कहे अणगार ॥ सुगराचार वहूपरें, वध तो करो विचार ॥ ३ ॥ कठियारे मुनिवर कने, करी शीलनी कार ॥ पूनिमरे दिन पूज्य जी परनारीपरिहार ॥ ४ ॥ एटली मुजने आखडी, सदगुरु केरी शीख ॥ परमेसर परसादथी, नली करी छे शीख ॥ ५ ॥ हवे कठियारो प्रणमिने, आयो अपणे गेह ॥ पूनम परनारी तजी, निजनारी शुं नेह ॥ ६ ॥ करे उदर आजीविका, राखे व्रतनी रेख ॥ कान्हड कठियारा तणो, जन्म कृतारथ लेख ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वादल दह दिसि उन्हम्यो ॥ ए देशी ॥ इण अवसर आयो तिहां सखी, वारु वर्षाकाल ॥ गगन धडूके मेहलो सखी, पाणी वहे पडनाल रे ॥ चिहुं दिशि जल खलक्यां खाल रे, वलि नदीय वहे असराल रे, सरपूरित फूटे पाल रे ॥ १ ॥ वर्षाऋतु आइ मोहना ॥ ए आंकणी ॥ मोर झिगोरे डूंगरे सखी, रूरूर दादूर सोर ॥ बपैयो पियु पियु करे सखी, ग

यो रे घट माटी तणो, ऐसी आदमि देह ॥ विणस तां वार न लागशे, कांइ नहि रे संदेह ॥ चे० ॥ ३ ॥ अथिरज ए संसार छे, जैसो संध्यावान ॥ काच अणी जल एहवो, जेहवो कुंजरकान ॥ (जेहवुं पिंपल पान) ॥ चे० ॥ ४ ॥ तीर्थे मल्यो जिम कारिमो, सगपण प रसग ॥ जेसो सुहणो रातको, पखी तरु संग ॥ चे० ॥ ५ ॥ मात पिता सुत बांधवा, घर महिला आय ॥ परजव जातां जीवने, कोइ नावे रे साथ ॥ चे० ॥ ॥ ६ ॥ माहारु माहारुं करतो रहे, तहारु नहिं रे स गार ॥ कोण ताहारो तुं केहनो, जुवो हृदय विचार ॥ ॥ चे० ॥ ७ ॥ घणो करि धन मेलीयु, पोष्युं सब ल कुटुंब ॥ धधाहिमांहे मरि गयो, बाहर हुइ नहिं बुंब ॥ चे० ॥ ८ ॥ काल आहेडी नित जमे, कर काली कवाण ॥ वनमृगला जिम जीवने, शर नाखे रे ता ण ॥ चे० ॥ ए ॥ धर्म सखाइ ले चलो, लेजो संबल साथ ॥ आगलही आदर हुवे, एम कहे जगनाथ ॥ चे० ॥ १० ॥ राग वेराडी जे सुणे, बीजी ढाल वखाण ॥ मानसागर कवि एम कहे, सुख लहो निरवाण ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीधी मुनिवर देशना, देखी आयो दोढ ॥ आग

व्रत धारक जाण रे, नित्य पोसह करे पच्चक्काण रे ॥व०
॥७॥ चउद नियम संजार तो सखी, श्रावककुल शण
गार ॥ ल्ये लाहो लखमीतणो सखी, जाणे सहु संसा
र रे॥ घर पुत्र कलत्र परिवार रे, इम सफल करे अवता
र रे, थयुं धर्में चित्त उजमाल रे ॥ व० ॥ ८ ॥ चंपक चा
कर शेठनो सखी, आयो उण बाजार ॥ कठियारा
कान्हड तणी सखी, भारी लिये तिण वार रे॥ हवे देइ
टका दोइ चार रे, कान्हड शिर देई भार रे, दोनुं आ
या शेठ डुवार रे ॥ व० ॥ ए ॥ चोखो चंदन बावनो
सखी, परिमल गंध रसाल ॥ गोखें बेठो शेठजी स
खी, खबर हुइ ततकाल रे॥ चंदननो गंध विसराल रे,
कठियारो कान्हड बाल रे, जइ नाख्यो चोक विचा
ल रे ॥ व० ॥ १० ॥ शेठ कहे चंपक प्रत्यें सखी, ए
हनुं मूल कहाय ॥ दोय टका दीधा अछे सखी, जो
तुम आवे दाय रे ॥ कठियारो घरमें जाय रे, हवे शेठ
कहे सम जाय रे, एहनुं मूल लीयो तुम दाय रे ॥
॥ व० ॥ ११ ॥ देइ सोनैया पांचशें सखी, शेठें कीध
जुहार ॥ त्रीजी ढालें ढलकतो सखी, मीठो रागमल्हा
र रे॥कहे मानसागर सुविचार रे, कान्हडें लह्युं द्रव्य
अपार रे, पामीजें पुण्य प्रकार रे ॥ व० ॥ १२ ॥ इति

गन करे घनघोर रे, वाध्यो तिहां मन्मथ जोर रे, वि रहीकु कठिन कठोर रे, हियडु न रहे इक ठोर रे॥ वर्षा० ॥ २ ॥ वीजळीमां झब मांझियो सखी, गगन करे घडहाट रे ॥ जल थल सवि जल पूरिया सखी, वहे नहि कांठा घाट रे॥ जलथल सवि रुंध्या घाट रे, हल कर्षण वाहे जाट रे, जल पेठो वसुधा फाट रे ॥ व० ॥ ३ ॥ जवरइत्ति करवा भणी सखी, इवे क ठियारो कान्ह ॥ रज्जु कुहाडो कर ग्रही, रडवडतो गयो रान रे ॥ नदियां वहे असमान रे, वळिया ए त रुवर रान रे, गणतां कोइ नावे ज्ञान रे ॥ व० ॥४॥ कटियें बांध्यो कांबळो सखी, पेठो जल भरपूर ॥ चोखुं चंदन लाकडुं सखी, आण्युं आप हजूर रे ॥ दी से अति सबल सनूर रे, भांजी कीधुं चकचूर रे, गंध पहोतो जिहां शशि सूर रे॥ व० ॥ ५ ॥ भारी वेचण कारणें सखी, आयो घर बाजार ॥ काठ कुकाठ भलो बुरो सखी, जाणे नहिं तिलभार रे ॥ मूरखमां ते शिर दार रे, नहि विनय विवेक विचार रे, राखी तिणे मत नी कार रे॥ व०॥६॥ इण अवसर तिण सहेरमें सखी, श्रीपति सेठ सुजाण॥ सोवन कोडी चारनो सखी, परि मह कीध प्रमाण रे॥ श्रीजिनवर पासे आण रे, बारह

न, उंगनीया सोहे असमान ॥ गले सोहे मोतिनको हार, मूल्य तणो नवि लाभुं पार ॥ ५ ॥ बांहे बहेरखा सोवन चूडी, करकंकण स्त्री दीसे रूडी ॥ कुच कठिन ऊंचां असमान, सोवनकलश तणुं उपमान ॥ ६ ॥ मुखमें पान तणी बे बीडी, कंचूतणी कस अधिकी जीडी ॥ सिंहालंकी अति सुकुमाल, हंस तणी जिणे जींती चाल ॥ ७ ॥ पायें नेउर वाजे चंग, चरण कमल अलताको रंग ॥ इणपरि सोल सजी शणगार, आइ बेठी पोल डुवार ॥ ८ ॥ रूपें रंत्र तणो अवतार, हाथें आप घडी किरतार ॥ ते देखीने मोहे इंद, आगें उन्ना तरुवर वृंद ॥ ए ॥ कामलता तिरां सहामुं जोयुं, ते देखी कान्हड मन मोह्युं ॥ मुऊ पासें सोनैया सार, देइ सफल करुं अवतार ॥ १० ॥ गोलां रे कदि हुंती गाय? एम चिंतवियुं कान्हड राय ॥ लइ सोनैया हाथे दीध, सयणां हंदा बोलज कीध ॥ ११ ॥ कामलता हुइ मनराजी, काम केलिनी मांरुी बाजी ॥ तेल सुगंधा मोहोंघा कीधां, सयणांसेंती बीडां दीधां ॥ १२ ॥ चोथी ढाल कही अति चंगी, मानसागर कहे नवनव रंगी ॥ कान्हडनुं मन थयुं उछरंग, राग केदारो वधते रंग ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर विचाले नीकल्यो, आयो गणिका वास ॥ नटखूट नर तिहां वसे, हस करि कीधी हास ॥ १ ॥ ठेखगाणो आयो इहां, मनमें मद्दोटी खत ॥ आयो आंहि जाणजो, रसिया एम हसंत ॥ २ ॥ कठियारो कान्हड कहे, साजख सयणां वात ॥ इणठोर्डे जे आवशे, रहेशे दिवस ने रात ॥ ३ ॥ वेश्या आई विहसती, नयणें अमी फरंति ॥ मुख मोडे मटका करे, नयणें नेह धरंति ॥ ४ ॥

॥ ढाख चोथी ॥ नमणी खमणी ॥ ए देशी ॥

॥ वेठी पीढो मांकी विशाखा, रसिया उपर मांके टाखा ॥ शिर राखडियां अधिकी शोना, माथे भ्रमर जसी परें थोन्या ॥ १ ॥ निखवट अधिक विराजे टीको, नयणें काजख सोहे नीको ॥ आंखडीयां सोहे अणियाखी, जमुह कबाण भ्रमर परे काखी ॥ २ ॥ दीप शिखा जिम सोहे नासा, परिमख गंध खिये तिहां वासा ॥ नाके उपर सोहे मोती, रात दिवस न रहे तिहां जोती ॥ ३ ॥ वदन अनोपम शारद चंद, जीहा जीत्या अमीरस कंद ॥ अधुर प्रवाखतणी परें राता, दंत पंति विच सोहे खातां ॥ ४ ॥ सोनानी घड सोहे का

रे लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पहोर घडीने आंतरे, पाणी
भरि जारी साहि रे लाल ॥ उभी जोवे वाटडी कान्हड
न आयो घरमांहि रे लाल ॥ ध० ॥४॥ आव खानानी
पाखती,उभी तिहां करती हास रे लाल॥साद दिये सा
ने करि, बिच करती खोंखारा खास रे ॥ लाल ॥ ध०
॥ ५ ॥ दीवो आण्यो दोडीने, तिण जोवे वेश्या वास
रे लाल ॥ खबर न लाधी कान्हनी, मूकी गयो धननी
राशि रे लाल ॥ ध० ॥ ६ ॥ रात गइ रवि उगियो,
सहु मलिया राणो राण रे लाल ॥ वात जिकां का
न्हड तणी, कहि मांभी चतुर सुजाण रे लाल ॥ ध०
॥ ७ ॥ वेश्या कहे वित्त पारकुं, हुंतो राखुं नहिं ति
ल मात रे लाल ॥ खरी कमाइ स्वादनी, म्हारे तो
लेवी विख्यात रे लाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ गणिका कांइ पर
धन तणो, लेवा लीधो छे नीम रे लाल ॥ खरीय कमा
ई आपणी, तिणशुं नित्य राखे सीम रे लाल ॥ ए ॥
वेश्या सहु टोळें मली, बाली भोली यौवन वेष रे ला
ल ॥ घरढी बूढी ओकरी,जइ भेट्यो नगर नरेश रे लाल
॥ १० ॥ कामलता वेश्या घरे, कठियारो कान्हड ना
म रे लाल, सोनैया देइ पांचशें,मूकी गयो किणही का
म रे लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ सार न पूछी साहिबा,

॥ दोहा ॥

॥ नापित तेडी नायका, तुरत सगायु सेख ॥ चाक पाक कान्हड कियो, वेश्या सुरगी रेख ॥ १ ॥ मन गमतां भोजन तणा, कीधा सरस आहार ॥ ल विंग सोपारी एलची, मुठपानो व्यवहार ॥ २ ॥ पहे र्यां सुखमुख घसतरां, शिर पचरगी पाघ ॥ आगें ठभा ठेंसगु, गावे नवनव राग ॥ ३ ॥ चढपाखां दीवा कि या, सखर बनावी सेज ॥ वेश्या आवी विहसती, जि णशु अधिको हेज ॥ ४ ॥ पूरो उग्यो पाघरो, पूनम रे दिन चद ॥ कान्हड जोखी जाखीयें, आखे दीठो ईद ॥ ५ ॥ आज अठे मुज आखडी, परनारी परिहा र ॥ अवसर आवी आपणो, कहे न लोपु कार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ देशी चूनडीनी ॥ रजनी उठ्यो एकलो, हृये तुर स घनावी तोत रे लाल ॥ मेदानननें मिस कान्हजी, ग यो आपणो पहेरी पोस रे लाल ॥ १ ॥ धनधन कठीया रो कान्हजी, जिणे राखी प्रसनी रेख रे लाल ॥ मेली सोनैया पांचसें, मकी मूक्यो परनो वेप रे लाल ॥ ॥ २ ॥ ध० ॥ भरबाजारें हाटमें, सूतो निंद घुराय रे लाल ॥ वेश्या जोवे वाटडी, आयो नहिं कान्हड राय

रे लाल ॥ ध० ॥ ३ ॥ पहोर घडीने आंतरे, पाणी जरि जारी साहि रे लाल ॥ ऊभी जोवे वाटडी कान्हड न आयो घरमांहि रे लाल ॥ ध० ॥४॥ आव खानानी पाखती,ऊभी तिहां करती हास रे लाल॥साद दिये सा ने करि, विच करती खोंखारा खास रे ॥ लाल ॥ ध० ॥ ५ ॥ दीवो आण्यो दोडीने, तिण जोवे वेश्या वास रे लाल ॥ खबर न लाधी कान्हनी, मूकी गयो धननी राशि रे लाल ॥ ध० ॥ ६ ॥ रात गइ रवि ऊगियो, सहु मलिया राणो राण रे लाल ॥ वात जिकां का न्हड तणी, कहि मांभी चतुर सुजाण रे लाल ॥ ध० ॥ ७ ॥ वेश्या कहे वित्त पारकुं, हुंतो राखुं नहिं ति ल मात रे लाल ॥ खरी कमाइ स्वादनी, महारे तो लेवी विख्यात रे लाल ॥ ध० ॥ ८ ॥ गणिका कांइ पर धन तणो, लेवा लीधो छे नीम रे लाल ॥ खरीय कमा ई आपणी, तिणशुं नित्य राखे सीम रे लाल ॥ ए ॥ वेश्या सहु टोळें मली, बाली जोली यौवन वेष रे ला ल॥ घरढी बूढी डोकरी,जइ भेव्यो नगर नरेश रे लाल ॥ १० ॥ कामलता वेश्या घरे, कठियारो कान्हड ना म रे लाल, सोनैया देइ पांचशें, मूकी गयो किणही का म रे लाल ॥ ध० ॥ ११ ॥ सार न पडी साहिबा

मोथु नवि लीधु काज रे लाल ॥ ए निरमाल लीधां नहि, माहरे घर एहवु राज रे लाल ॥ ध० ॥ १२ ॥ राजन रूठां राखजो, धन थुं हुं सहुनी साख रे लाल ॥ ए धन आवे रावले, एहवी लोक तणी छे भाख रे लाल ॥ ध० ॥ १३ ॥ पांचमी ढाल सुहामणी, राजाने दीधा दाम रे लाल ॥ मानसागर कहे आगलें, हवे कुण कुण होसे काम रे लाल ॥ ध० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरमें पडह वजडावीयो, लेइ सहुकोनां नाम ॥ कामलता वेस्या भरे, कुण मूकी गयो दाम ॥१॥ गलिया गलियां गुमतां, मलिया माणस थोक ॥ शेरी शेरी साजल्यो, कोइ न बोले लोक ॥ २ ॥ चहुटा विच वाजे पडह, ले सहुकोनां नाम ॥ कान्हड कठियारो कहे, ए तो महारां दाम ॥ ३ ॥ आगें जजो आयने, एह सी भाखे भाख ॥ ए दमडा छे माहरा, एवी थुं हुं शाख ॥ ४ ॥ कठियारानो करमही, आव्यो राय हजूर ॥ अधिपति दीठो आवतो, एतो वडो मजूर ॥ ५ ॥ राय पुछे कान्हड प्रत्यें, तें जोड्यो किम दाम ॥ कठियारो कान्हड कहे, थें सुणजो मुक स्वाम ॥ धीतक वात

कहुं सवे, सांजलजो सहु संत ॥ कान्हड कठिया रो कहे, ते दाखु दृष्टंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल बठी ॥

॥ राग सोरठ ॥ यत्तनी देशी ॥ कठियारे मांझी वात रे, वातरे, ॥ जारी वेचुं दिन ने रात ॥ एक दिवस मुनिसर मलिया रे, मलिया रे, पातक सवि दूरें टलियां ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ पातक सवि दूरें टल्यां, सुणि मुनिवरनी वाणी ॥ चोथा व्रतनी श्राखडी, में लीधी हित श्राणी ॥ २ ॥ ढाल ॥ चित्तमें एक वात विचारी रे, विचारी रे, तजी पूनिम दिन परनारी ॥ निजनारीशुं नित्य नेहारे, नेहारे, पालुं हुं व्रतनी रेहा ॥ ३ ॥ त्रू० ॥ एम करतां दिन केटले, जारी वेची श्राण ॥ दोय टका दें ले गयो, श्रीपति सेवक जाण ॥ ढाल॥ श्रीपतिनो सेवक एह रे, एह रे, जारी ले गयो निज गेह ॥ बावना चंदननी जारी रे, जारी रे, श्रीपति मन वात विचारी ॥ ५ ॥ त्रू० ॥ वात विचारी तुरतशुं सोनश्या सो पांच ॥ श्राण दिया एकण समे, कांइ न करी मन खंच ॥ ढाल ॥ मनमां न करी कांइ खंच रें, खंच रे, मुऊ मलियो एहवो संच ॥ पांचशे सोनैया दीधां रे, दीधां रे, में खोले घाली लीधां

॥ ७ ॥ त्रू० ॥ स्नेह घरने संचस्यो, गयो वेश्या वास॥ नटखूटनर तिहा वसे, तिहां कीधी मुज हास ॥ ८ ॥ ढाल ॥ तिहां माहरी हांसी कीधी रे, कीधी रे, वे श्या मुजशु दिठ दीधी ॥ पांचशे सोनैया दीधां रे,दी धा रे, तिणें शीश चढावी लीधां॥ ए ॥ त्रू० ॥ शिश चढावी तरत शु, मांनी मुजशु वात ॥ आघा आ वो अम घरे, वासो रह्यो एक रात ॥ १० ॥ ढाल ॥ मेढीमांहे सेज बिछाइ रे, बिछाइ रे, वेश्या विहसंति आइ ॥ पूनमदिन पूरो चंद रे, चंद रे, देखी थयो अधिक आणंद ॥ ११ ॥ त्रू० ॥ पूनम दिन परनारी शुं, ठे मुजव्रतनी कार ॥ एह न भाजु आखडी, नि श्चय, ने व्यवहार ॥ १२ ॥ ढाल ॥ में दान तणो मिष कीधो रे, कीधोरे, वेश्यानो हुकमज लीधो रे ॥ रजनी जइ ह्राटें सूतो रे, सूतो रे, वेश्यासेंती नवि खूतो ॥ १३ ॥ त्रू० ॥ वेश्यासुं खुतो नहिं, पाली व्रतनी आण ॥ रात गइ हवे उगीयो, उदयाचल शिर भाण ॥ १४ ॥ ढाल ॥ उदयाचल उग्यो भाण रे, भाण रे, करतो ते सफल विहाण ॥ कान्हड कहि वातज ताजी रे, ताजी रे, सहु लोक हुवा मनराजी ॥१५॥ ॥ त्रू० ॥ मन राजी सहुको हुवा, वात कही में आ

ज ॥ ए सोनइयां पांचशे, माहारां छे महाराज॥२६॥ ढाल ॥ छठी ए ढाल विशाल रे, विशाल रे, सुण तां कहे मान रसाल ॥ राग सोरठ यत्तिनी देशी रे, जाणशी ते खरीय कहेशी ॥ २७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ राजी हूवो राय, लोक सहु राजी हुआं ॥ श्री पति तेडण जाय, अधिपति केरा आदमी ॥ १ ॥ आवि अधिपति पास, श्रीपति शेठ इश्यो कहे ॥ में दीधी धन रासि, इण कठियारा कान्हने॥ २ ॥ उ कठियारो कान्ह, लायो चंदन बावनो ॥ दोय टका उनमान, दीधा चाकर माहरे ॥ ३ ॥ में विगतावी वात, एतो चंदन बावनो ॥ एहनुं मूल्य अख्यात, दिया सोनैया पांचशे ॥ ४ ॥ छे मुझ गुरुनी आण, अधिक न लीयुं पार कुं ॥ ए उत्तम अहिनाण, आटा लूण तिसी परें ॥ ॥ ५ ॥ अधिपति चाखे आम, ए सोनैया पांचशे ॥ कोनहि माहरे काम, सांभलजो सहुको सभा ॥६॥ सोनइया सो पंच, कान्हडने दीधा परा ॥ एहनो एहिज संच, खरा कमायां कान्हडा ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मेरो प्यारो रे ॥ ए देशी ॥ इण अवसर आव्या

तिहां रे लाल, केवलधर अणगार ॥ सुखकारी रे ॥ राजा पूछे रंगशु रे लाल, कहो मुझ एक विचार ॥ सु० ॥ १ ॥ शील तणो महिमा सुणो रे लाल ॥ आंकणी ॥ श्रीपति शेठ वसे इहां रे लाल, कामलता इहां जाण ॥ सु० ॥ कठियारो कान्हड अछे रे लाल, लेखे मुझने आण ॥ सु० ॥ २ ॥ शी० ॥ मुनिवर आगल चालि योरे लाल, चारे तणो अवदात ॥ सु० ॥ चारमां अधिको किस्यो रे लाल, महीपति पूछे वात ॥ सु० ॥ ३ ॥ शी० ॥ चारे ए महिमा निला रे लाल, चारे ए चतुर सुजाण ॥ सु० ॥ इणमें अधिको कान्हड रे ला. ल, राखी व्रतनी काण ॥ सु० ॥ ४ ॥ शी० ॥ मूक्या सोनैया पांचशे रे लाल, मूक्यो गणिकाजोग ॥ सु० ॥ धन कठियारो कान्हजी रे लाल, सहुय सराहे लो क ॥ सु० ॥ ५ ॥ शी० धन धन लोक कान्हड क हे रे लाल, धन कहे नगर नरेश ॥ सु० ॥ शील त णी जिण आखडी रे लाल, पाली योवन वेश ॥ सु० ॥ ६ ॥ शी० ॥ तीरथ शेत्रुजो वडो रे लाल, मंत्र व डो नवकार ॥ सु० ॥ नदियामांहि मंदाकिनी रे लाल, व्रतमांहे विचार ॥ सु० ॥ ७ ॥ शी० ॥ शील तणो महिमा सुणी रे लाल, हरख्या राणो राण ॥ सु० ॥ ध

न धन जे सेवे सदा रे लाल, ते लहे सुख निरवाण॥ सु० ॥ ८॥ शी० ॥ इण अवसर अवनीपति रे लाल, थाप्यो निज परधान ॥ सु० ॥ राजकाज ते सोंपी युं रे लाल, दीधुं बमणुं मान ॥ सु० ॥ ए ॥ राजन्ना र धुरंधरु रे लाल, मंत्रमें शिर नवकार॥ सु० ॥ मन मोद्युं महाराजनुं रे लाल, वाधी बमणी लाज ॥ सु० ॥१०॥ पंचविषय सुख न्नोगवे रे लाल, न्नोगवे जोग रसा ल ॥ सु० ॥ ले लाहो लखमी तणो रे लाल, टाले कुमति जंजाल ॥सु० ॥११॥ शी० ॥ सातमी ढाल सोहामणी रे लाल, एम कहे कवि भान ॥ सु० ॥ शील तणा प रन्नावथी रे लाल, कान्हड थयो परधान ॥ सु० ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कान्हड सदगुरु कने, शीखे समकित न्नेद॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मशुं, इणशुं सदा उमेद ॥ १ ॥ श्रा वकनां व्रत आदर्यां, पाले निरतीचार ॥ सेव करे अ रिहंतनी, जाप जपे नवकार ॥ २ ॥ दान शीयल तप न्नावना, शिवपुर मारग चार ॥ आराधे अति न्नावशुं, जिम पामे न्नवपार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ इण अवसर आया इहां,

धर्मघोष अणगार ॥ नवियण ॥ कान्हड दीक्षा आ
दरी, ठांमी धन परिवार ॥ न० १ ॥ धन धन शी
ल सदा नसु, जे सेवे नर नार ॥ न० ॥ इण नव
सुख संपद मिले, परनव मुगति दातार ॥ न० ॥ २ ॥
ध० ॥ पंच महाव्रत उच्चरे, पांचे मेरु समान ॥ न० ॥
ठकायनी रक्षा करे, धन कान्हड परधान ॥ न० ॥
॥ ३ ॥ ध० ॥ पांच सुमति सेवे सदा, तीन गुपति
धरे अग ॥ न० ॥ अंग इग्यार नण्या सहु, वली धा
रे उपग ॥ न० ॥ ४ ॥ ध० ॥ तप किरियानो खप
करे, ले मुनि शुद्ध आहार ॥ न० ॥ भ्रमर तणी परें बहु
नमे, चाले खन्नाधार ॥ न० ॥ ५ ॥ ध० ॥ बावी
श परिसह जीपतो, करतो कर्मनी हाण ॥ न० ॥
दशविध यति धर्म साचवे, जीवित मरण समाण ॥
न० ॥ ६ ॥ ध० ॥ क्रोध मान माया तजी, तजी
यो सघलो लोन ॥ न० ॥ चारित्र पाले निर्मलु, पा
मे जगमें शोन ॥ न० ॥ ७ ॥ ध० ॥ क्षमा खडग कर
साहियुं, पहेरी शील सन्नाह ॥ न० ॥ महियल विच
रें एकलो, कोय नहिं परवाह ॥ न० ॥ ८ ॥ ध० ॥
कर्म शत्रु जीपण नणी, जाणे शार्दूलो सिंह ॥ न० ॥
अप्रमत्त नारंड परें, कोइ न आणे बीह ॥ न० ॥ ९ ॥

पंच तीरथ जात्रा करी, निर्मल कीधां गात्र ॥ ज० ॥ बारह जावी जावना, मुनिवर चारित्र पात्र ॥ ज० ॥ १० ॥ ध० ॥ पाप आलोयां आपणां, सदगुरु केरी साख ॥ ज० ॥ सयल जीव खमाविया, जे चोराशी लाख ॥ ज० ॥ ११ ॥ ध० ॥ अंत समय जाणी करी, करि अणसण पच्चरकाण ॥ ज० ॥ देवलोकें थया देवता, पहिले कल्पें जाण ॥ ज० ॥ १२ ॥ ध०॥ अष्ट कर्मनो क्षय करी, लहि मानव अवतार ॥ज०॥ मोक्षतणां सुख पामशे, धन कान्हड अणगार ॥ज० ॥ १३ ॥ ध० ॥ सरस ढाल ए आठमी, साधु तणो आचार ॥ ज० ॥ मान कहे सुख संपदा, जे सेवे नर नार ॥ ज० ॥ १४ ॥ ध० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाडी फुली अति जली ॥ मन जमरा रे ॥ ए देशी ॥ कान्हड साधु शिरोमणि ॥ मन जमरा रे॥ लाधो सुर अवतार ॥ लाल मन जमरा रे ॥ शील तणा परजावथी ॥ म० ॥ लाधी ऋद्धि अपार ॥ लाल म० ॥ १ ॥ शीलें सुर सान्निध्य करे ॥ म० ॥ शीलें पामे राज ॥ लाल० ॥ शीलें संपत संपजे ॥म०॥ सीझे वंछित काज ॥ ला० ॥ म० ॥ २ ॥ कायण सा

यण व्यंतरी ॥ म० ॥ भूत प्रेत वेताल ॥ ला० ॥
शील तणा परजावथी ॥ म० ॥ आवी नमे ततकाल
॥ ला० ॥ ३ ॥ शूली सिंहासण थइ ॥ म० ॥ शेठ
सुदर्शन जोय ॥ ला० ॥ शील तणा परजावथी ॥
म० ॥ रान वेसाउल होय ॥ ला० ॥ ४ ॥ कान्हड
साधु तणी पेरें ॥ म० ॥ नविपण पालो शील ॥
ला० ॥ इण भव सुख संपद मिले ॥ म० ॥ पर जव
अधिकी लील ॥ ला० ॥ ५ ॥ नगर चलुं पदमावती
॥ म० ॥ मरुधर देश मझार ॥ ला० ॥ धर्मनाथ पर
सादथी ॥ म० ॥ पूजा सत्तर प्रकार ॥ ला०॥६॥ वढा
वसे व्यवहारीया ॥ म० ॥ धन करि धनद समान॥
ला० ॥ स्यागी त्यागी बहुगुणी ॥ म० ॥ दे पट दरि
सण दान ॥ ला० ॥ ७ ॥ सत्तरेशें ठेतालीसमे ॥
म० ॥ तिहां कीधो चउ मास ॥ ला० ॥ सद्गुरुना
परसादथी ॥ म० ॥ पूगी मननी आश ॥ ला० ॥८॥
श्रीतपगछ गुरु राजीयो ॥ म० ॥ श्रीविजयप्रज सूरिं
द ॥ ला० ॥ तस गछगगन दिवाकरु ॥ म० ॥ श्री
विजयरत्न मुणिंद ॥ ला० ॥ ए ॥ तस गछमें महिमा नि
लो ॥ म० ॥ श्रीजयसागर उवझाय ॥ ला० ॥ तास
शिष्य शोजाकरु ॥ म० ॥ जितसागर गणिराय ॥

ला० ॥ १० ॥ राजसागर सुख संपदा ॥ म० ॥ रचि यो ए अधिकार ॥ ला० ॥ ऊंबो अधिको जाखीयो ॥ म० ॥ मिछामि डुक्कड कार ॥ ला० ॥ ११ ॥ मानसा गर सुखसंपदा ॥ म० ॥ जितसागरणि शिष्य ॥ ला० ॥ साधु तणा गुण गावतां ॥ म० ॥ पूगी मन ह जगीश ॥ ला० ॥ १२ ॥ नवमी ढाल सोहामणी ॥ म० ॥ गोडी राग सुरंग ॥ ला० ॥ मान सागर क हे सांजलो ॥ म० ॥ दिन दिन वधते रंग ॥ ला० ॥ ॥ १३ ॥ इति श्रीशीलविषयिक मानसागरगणिविर चित कान्हडकठियारानो रास समाप्त ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीमयणरेहानो रास प्रारंज ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूआ मांस दारु तणी, करे वेश्याशुं जोष ॥
जीवहिंसा चोरी करे, परनारीनो दोष ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ अनाथीनी वैरागी देशीमां ॥

॥ व्यसन सातमुं परनारीनुं, प्रत्यक्ष पाप दीखायुं॥
रावण पदमोत्तर मणिरथ राजा, तीनुं राज गमायुं

॥ १ ॥ राजवीयानें राज पियारो, जाइ ठेषो प्यारो ॥ ए आंकणी ॥ मणिरथराजा केरो सुणजो, युगबाहुनें मास्यो ॥ आप मूर्खने राज गमायु, हाथें कर्यु अ न आयो ॥ राज० ॥२॥ रावण राजा पहेलो हूर्ड, पीछें पदमोत्तर रायो॥ त्रीजी कथा मणिरथ राजानी, ते सुणजो चित्त लायो ॥ राज० ॥ ३ ॥ जम्बुद्वीप जरत खेतरमां, नगर सुदसण जारी॥ धनधु पूरण देखतां सुदर, रैयत सुखी राजारी॥ रा० ॥ ४॥ मणिरथ राजा धारणी राणि, रिद्धि तणो विस्तारो ॥ हाथी घोडा रथ पायक सेना, याकतो चोथो आरो ॥ रा० ॥५॥ स्वचक्रनें परचक्रनो, विरोध नहीं तेणिवारो ॥ मणिरथराजाने युगबाहु जाइ,माहो मांहे ठे प्यारो ॥ रा० ॥ ६ ॥ पचेंद्रीना जोग जोगवता, नाटिक रयणि विहावे ॥ विविध प्रकारनी क्रीडा करता, विषय विरुद्ध हुये पावे ॥ ७ ॥ मणिरथ राजा राज करंतां, चढीयो महेल चवारो तेणे अवसर मयणरेहा दीठी, युगबाहुनी नारो॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखीने अचरज पाम्यो, अहो अहो रूप अपारो ॥ इण राणीने महोलमां राखु, सुख विलशु संसारो ॥ रा० ॥ ए ॥ मणिरथ राजा करी मनसुधो, युगबाहुनें बोलायो॥ करो सजाइ आयुध

शालानी, देश लेवा हुं जायो ॥ रा० ॥ १० ॥ हाथ जोडी युगबाहु बोले, एहवे थोडो काजो ॥ राज बिराजो राजसुखोमें, हुं जाउं महाराजो ॥ रा०॥११॥ मणिरथ राजा राजी हुउं, हुकुम कीयो हे जाइ ॥ देस किलो कायम कर आजो, ले जाउ फोज सजाई ॥ रा० ॥ १२ ॥ युगबाहु उठ्यो सीताबशुं, हरख हुउं मन मांहिं ॥ देस किला कायम करी आवी, मुजरो करशुं जाइ ॥ रा० ॥ १३ ॥ लइ फोजां युगबाहु चढीयो, मजलें मजलें जायो ॥ युगबाहु तो मरम न जाणे, मणिरथ कीयो उपायो ॥ रा० ॥ १४ ॥ मणिरथराजा मयणरेहाने, चारी वस्त्र मगावे ॥ घरेणा जडाव पहेरण सारु, दासी हाथें पोहोचावे ॥ रा० ॥ १५ ॥ राजाना कहेवाथी दासी, दे राणीने जायो ॥ मणिरथराजा चोज बनायो, तिणरी खबर न कायो ॥ रा० ॥ १६ ॥ मयणरेहा मनमांहे जाण्यो, धणी चाल्यो संग्रामो ॥ मयणरेहा मन युंही विमासे, जेठ पिताने ठामो ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम जाणीनें उरा लीधा, वस्त्र आभूषण सारो ॥ नेह स्नेहे वस्तु मेली ने, राजा लाग्यो लारो ॥ रा० ॥ १८ ॥ मयणरेहा नें रीसज आवी, दीयो दासीने जिंजकारो ॥ मुज ध

षीतो परदेश सिधास्यो, राजा पड्यो मारी खारो ॥ रा० ॥ १९ ॥ दासी मन दलगीर हुइने, राजा पासें जायो ॥ मयणरेहातो कोप करीनें, दीनी वस्तु घगा यो ॥ रा० ॥ २० ॥ मणिरथराजा रात समयमां, म हेल माहनें आयो, दरवाजो जडीयो तेणे दीठो, हे ठो मारे रायो ॥ रा० ॥ २१ ॥ मयणरेहा मनमांहे जाण्यो, मणिरथराजा आयो ॥ बीजो उपाय तो कोइ न दीसे, दीठं सासुने जगायो रा० ॥ २२ ॥ मयणरे हा तो ठार्नु जइनें,धात सासुने जणायो ॥ अमलने व स मातायें जाण्यो, बेटो भूखें आयो ॥ रा०॥२३॥ एतो महेल बेटा जुगबाहुनो, मेहेल पेलीकानी धारो॥वचन माताना सांजली राजा, लाज्यो घणो तिणिवारो॥रा० ॥२४॥ मयणरेहा मनमाहे जाण्यो, पड्यो राजा माहा रे खारो॥ तो कासीद हुं मेलुं धणीनें, हेला आवजो ए कवारो ॥ राज० ॥ २५ ॥ वीती वात लखी कागल मां, जीवती जाणो मानें॥ तो घर पाछां वहेला आ वजो, वगो कीधं जाइ थाने ॥ राज० ॥ २६ ॥ का सीद कागद दीनो वेगो, जुगबाहुने आई ॥ कागल वांची जुगबाहुयें जाण्यो, वगो कीधं ठे जाई॥राज० ॥ २७ ॥ इम आणी जुगबाहु वलियो, ढील न कीधी

कांइ॥ मुहूर्त नहीं महेले जावणरो, निमित्तिये वात बताइ ॥ राज० ॥ २८ ॥ जुगबाहु देहेरो बाहिर कीधो, नगरीमां नहीं आयो ॥ मणिरथराजारो कर जाणीनें, राणी धणीकनें जायो ॥ राज० ॥ २९॥ मयणरेहा मित्र आप धणीनी, पर पुरुष प्रीति न जाणी ॥ विरत आपणुं राखण सारु, जतन करे छे राणी ॥ राज० ॥ ३० ॥ मयणरेहा तो गइ सीतावशुं, विधिशुं वात सुणाइ॥जुगबाहु तो मनमें जाण्यो,मारशे मुजनें जाइ ॥ राज० ॥ ३१ ॥जुगबाहुने आव्यो जाणी, कर उपनो राजा रे ॥ मणिरथ राजा करे विमासण, उमराव छे इण सारे ॥ राज० ॥ ३२ ॥ जुगबाहुने राणी कहेली, दगो करेलो जाइ॥ साथ समान छे इणरे घोडे, तो हुं पहेलां मारुं जाइ ॥राज० ॥ ३३ ॥ जाइमारण राजा रातरो चाल्यो, चढीयो एक सखाइ॥दोडीदार चाकर पालंतां, गयो धरवाइन मांहि ॥ राज० ॥ ३४ ॥ मयणरेहा तो मनरी दाखवी, जेठ ले मणिरथ आयो ॥ कहे धणीने हुवे सावधानो, मारेलो थांको जायो ॥ राज० ॥३५॥ मयण रेहातो अलगी हुइ, राजा नेडो आयो ॥ जुगबाहु तो साहामो आयो, मणिरथ घाव चलायो ॥ राज० ॥ ३६॥

भाइ मारीने पाछो वळियो, थइ घोडे असवारो ॥ सर्प पूठडीये खुर देतेथी, खाधो छे तिणिवारो ॥ राज० ॥ ३७ ॥ मणिरथ राजा हेठें पडियो, मरण पाम्यो त त्काळो ॥ खवर नहीं कोइ राजसभामें, कर्मे कीधो चाळो ॥ राज० ॥ ३८ ॥ मयणरेहातो धणीकनें आ इ, दुःख धरती मनमांहि ॥ मेंतो थांने कह्यो महा राजा, मारेलो थांको भाइ ॥ राज० ॥ ३९ ॥ मयण रेहा सो कहे धणीनें, करो संथारो सोइ ॥ चार शर ण थांने होजो स्वामी, नहीं छे किणरो कोइ ॥ रा ज० ॥ ४० ॥ मोरा प्रीतम थाने थु कुं, शीख देयडा में धारो ॥ साहेव सु परदेश सिधारो, हु जातु वांधु लारो ॥ रा० ॥ ४१ ॥ मोरा प्रीतम थाने देवअरिह तो, गुरुनिग्रथ सुसाधु ॥ धरम दया केवलीको भांख्यो, समकितने आराधो ॥ रा० ॥४२॥ मो० ॥ थाने जीव मारणरो, जावजीव पञ्चखाणो ॥ सरव प्रकारें मृषा वादमें, अवत्तदानमें जाणो ॥ रा० ॥ ४३ ॥ मो० ॥ थाने मैथुन सेवणरो, नवविध प्रगट प्रमाणो ॥ मनु ष्य अने तिर्यच संबधि, जावजीव पञ्चखाणो ॥ रा० ॥ ४४ ॥ मो० ॥ थाने नवविध,परिग्रहनो परिहारो ॥ क्रोध मान माया लोभ प, थारेनो परिहारो ॥ रा०॥

॥ ४५ ॥ मो० ॥ थाने राग द्वेषह, कलहने अभ्रका णो ॥ पैशुन्य चाडी रती अरती, परपरिवाद पचरका णो ॥ रा० ॥४६॥ मो० ॥ मायामोसो, नही चलो कोइ रीते ॥ मिथ्याशल्य मनथी काढाडीने, रहो समकेत पर तीते ॥रा०॥४७॥ मो०॥ नही कोइ कहेनुं, स्वपनो संपत जाणो ॥ परजवमां ए साथे चालसी, गांठे बांधो नाणो ॥ रा० ॥४८ ॥ मो० ॥ थाने सूंस करावुं, मोमें जीव मत घालो ॥ करी अलोयण कारज सारो, पर जव सुख सोहिलारो ॥ रा० ॥ ४९ ॥ मो० ॥ इम करो विचारो, धरम साचो करी जाणो ॥ काचअणीज ल जीवित जाणो, श्रीजिनवचन प्रमाणो ॥ रा०॥५०॥ ॥ मो० ॥ ए दोष करमनो, किणने दोष न दीजें ॥ कृण वैयरतो कोइ न बूटे, बांध्या जे जुक्तीजे ॥ रा० ॥ ५१ ॥ मो० ॥ कुण माताने पिता, कोण कुटुंब कोण जाइ ॥ घरकीतो साहेब नही स्त्री, स्वारथ सरव सगाइ ॥ रा० ॥ ५२ ॥ मो० ॥ सरदहजो संथारो, चार आहार प रिहरियो ॥ मरण सहुने साहेब इकदिन, सायतो रा खजो हियो ॥ रा० ॥ ५३ ॥ मयणरेहा ज्ञाती गाढ करीने, कारज पतिनो सुधास्यो ॥ मित्र होइने मरण सु धारे, धन्य मित्र तणो नेह पास्यो ॥ रा० ॥५४॥ मो० ॥

मोहवशे यइ मरण बिगाडे, वेरी नरकमें घाले ॥ स
गा तोपण पूरव वयरी, यइ उजा तिण काले ॥ रा०
॥ ५५ ॥ मित्र होइने मरण सुधारे, ते विरला संसा
रो॥ यइ सरणाने सूस कराव्या, करियो पर उपगारो
॥ रा० ॥ ५६ ॥ धन्य संसारमें मयणरेहा सती, का
रज धणीनुं सुधार्युं ॥ जीव्युं तो एनुं रूडो जाणो,
धन वैजय न संचार्युं ॥ रा० ॥ ५७ ॥ मो० ॥ मन
समता आणो, ममता कोइ मत राखो ॥ शत्रु
मित्र सहु सरखा जाणो, कोइथु शल्य म राखो ॥
॥ रा० ॥ ५८ ॥ जुगबाहु तो सरदहो संथारो, सा
ख्य दीयो ठे राणी ॥ काळमासे तो काल करीने, जइ
उपना विमाणे ॥ रा० ॥ ५९ ॥ मयणरेहा सती म
नमें जाण्यो, रखे पकडे मने रायो ॥ वेस बदलावी
ने परि जाउ, दासी नाम धरायो ॥ रा० ॥ ६० ॥के
रामेंथु बाहिर निकली, गइ उजाडी मांयो ॥ पडी
आपदा नही कोइ सार्थे, राणी कुंअर जायो ॥ रा०
॥ ६१ ॥ जिणजाये दसोटण कूसे, वधती राज वधा
इ ॥ विषम वियोगनो कुंअर जायो, जोजो कर्म कमा
इ ॥ रा० ॥ ६२ ॥ चपो पाळखो राणी करपे, रखे
आवे कोइ सारो ॥ इम जाणीने कुंअर जायो, हुइ

करमोने सारो ॥ रा० ॥ ६३ ॥ कोमलकाया कारण पडियो, पाय पडे नही ठायो ॥ कुंअर तो राणी नि जतो न जाएयो, बाल मेल्यो रणमांयो ॥ रा०॥६४॥ चीर बिछाइ सिला उपर सुवाड्यो, बाल विछोहो जा एयो ॥ होणहार थारो होसे जाया, मयणरेहा दुःख आएयो ॥ रा० ॥ ६५ ॥ घणा दासने दासी हूती, रा ज कुमरनी धायो ॥ दोडी पडदामांहे रहेती, राणी एकली जायो ॥ रा० ॥ ६६ ॥ कुंअर मेलीने आगें चाली, अन्न विण सुनी काया ॥ कठे सुवावड कुण मंगल गावे, कर्मे चेंन दीखाया ॥ रा० ॥ ६७ ॥ जाता जाता आगें नदी आइ, वस्त्र पाणीमें पखाल्यो ॥ स्नान करीने तीरे बेठी, दुःख करे मयणरेहाला ॥ रा० ॥ ६८ ॥ कोण वियोग पडीयोहो माने, किसे ठे काणे आइ ॥ रणमां रोली एकली बेठी, रोवे छे वि ललाइ ॥ रा० ॥ ६९ ॥ किणघर जन्मी किणघर आ इ, राजानी राणी कहाइ ॥ साहेब महारो मूर्छ मेल्यो, रण रोइमें आई ॥ रा० ॥ ७० ॥ पडियो विछोहो मा त पितारो, जगवल्लभ लघु भाइ ॥ चंद्रजसाने महो लमां मेल्यो, बालक छे रणमांही ॥ रा० ॥ ७१ ॥ महेल करोखा शोभे जाली, राजवीयां रुसनाइ ॥ क-

द्धि सादेवकी रची मेली छु, श्राइ वेठी वनमाही ॥ रा०
॥ ७२ ॥ विषम उजाडी तीर नदीनो, सुख नहीं छे
तिस रती ॥ मयणरेहा तो दुःख करी दोरी, कष्ट प
ड्यो छे सती ॥ रा० ॥ ७३ ॥ जूरे घणीने करेय वि
लापा, दुःखजर छाती फाटे ॥ मयणरेहानु दुःख प्र
भु जाणे, वेठी छे तट माटे ॥ रा० ॥ ७४ ॥ संयो
ग रूपणी इरुइ हुती, वियोगणी तिणगवाली ॥ नाथ
विहूणी दुःखज करली, आणी रयणे राली ॥ रा०
॥ ७५ ॥ देखो सगाइ इण संसारो, बीछ्डतां नहीं व.
रो ॥ इम जाणीने सदगुरु सेवो, लाहो लेजो लारो
॥ रा० ॥ ७६ ॥ तिण अवसरमें देवता जाण्यो, दु
ख करे छे राणी ॥ वैक्रियरूप कर्युं हाथीनु, राम
त मांडी पाणी ॥ रा० ॥ ७७ ॥ दुःख वीसरीने वि
लम कीनो, सूंढ उछाले पाणी ॥ दुःख वोरीने हाथी
दीठी, रमत देखे राणी ॥ ७८ ॥ जिमुं जिमु रामत देखे
राणी, अचरिज मनमां धारी॥ धर्म अंकूरो पुण्य प्रकारें
आवे छे नरनारी ॥ रा० ॥७९॥ जलचरी हाथी तेहने
सुरुशु, देखी राणी उछाली॥ सेटले नेडो श्रावी निकल्यो,
पाछांतर॥ देवता छे कोइ परउपगारी, राणी झुंडे उछाली॥
इतरेकोइ श्राय निकल्यो, राणी विमानमें घाली ॥ रा०॥

॥७०॥ विद्याधरतो राजी हुउ,रूप घणो छे नारी ॥ तरत विमान ने पाछो वाल्यो, हुं लइ जाउं घरबारी ॥रा०॥ ॥७१॥ मयणरेहा तो मनमें जाण्यो,तुरत वल्यो छे पाछो॥ कुण जाणे किण दिस लइ जावे,युंतो न दीसे आछो ॥ रा० ॥ ७२ ॥ विद्याधरने राणी पूछे,जातो किण दिसे जाइ ॥आवतो ते पाछो वलियो, किसी आइ दिल मांही ॥ रा० ॥ ७३ ॥ भगवंतना हुं दरिसण जातां, तुज सरखी मली नारी॥ इम जाणी हुं पाछो वलियो, सुख विलशुं संसारी ॥ रा० ॥ ७४ ॥ मयणरेहा मीठे वचनें कहे, भगवंत दरिसण जातां॥ मारग माहे तो हुं मली छुं, नफो बहु दरिसण करतां ॥ रा० ॥ ७५ ॥ तीर्थंकरना दरिसण करतां, प्रसन्न होसे थारी काया ॥ विद्याधर सुणि पाछो वलीयो, मयणरेहा मन भाया ॥ रा० ॥ ७६ ॥ समोसरणशुं नेडा आवी, विमानथी उतरिया ॥ करी वंदनाने वखाण सुणियो,कारज सती ना सरिया ॥ रा० ॥ ७७॥ जुगबाहुतो देवता हुउ, उठे छे उयम आणी ॥ करजोडी देवांगना हर्षशुं, जयजय कहे मुखवाणी ॥ ७८ ॥ इणठामे स्वामी आइ उपना, हुवा हमारा नाथो॥ कुण गुरुनी तुमे सेवा कीधी, किशो दान दीयो हाथो ॥ रा० ॥७९॥ज्ञाने करीने दे

घतायें दीठो, पूरवभवनो विचारी ॥ जुगबाहु महार
नामज हूतो, मयणरेहा महारी नारी ॥ रा० ॥ए०
मयण रेहाने कारण मुजने, मणीरथ भाइयें मार्यो
धरम तणो मुज साजज दीधो, मयणरेहा मुने त
र्यो ॥ रा० ॥ ए१ ॥ उपगारी गुरुणी जाणीने, दे
सा दरिसन जायो ॥ देखे मयणरेहा किण थानक
बेठी समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ए२ ॥ ततक्षण
वता तिहां आवीने, प्रभुने प्रदक्षिणा दीधी ॥ साधु
साध्वी सर्व छोडीने, मयणरेहाने वंदन कीधी ॥ रा
॥ ए३ ॥ पर्षदा देखी हसवा लागी, देवता दीधे
गहिलो ॥ छीने इणे वंदन कीधी, जीणरो प्रभु उ
र देखो ॥ रा० ॥ ए४ ॥ द्वेषो मत ने मकरो हासो
ए छे धनी गुरुणी ॥ इम जाणीने वंदना कीधी, प
छला भवनी परणी ॥ रा० ॥ ए५ ॥ जुगबाहु इणरे
नाम ज हूतो, मयणरेहा ए नारी ॥ धर्म तणो इण
साहाजज दीनु, ए हूउं सुर अवतारी ॥ रा० ॥ए६
मयणरेहा रे कारण इणने, मणिरथ भाइयें मार्यो
उपदेश देइ संथारो सरव्यो, मयणरेहायें तार्यो
रा० ॥ ए७ ॥ मयणरेहा सती मनमांहे जाण्यो,
त दीशे छे महारो ॥ इण अवसरमें संजम लेउं,

ठी विद्याधरने सारो ॥ रा० ॥ ए८ ॥ नरी परषदामें मय
णरेहा उठी, बोले वेकर जोडी ॥ आज्ञा द्यो स्वामी
संयम लेउ, टालुं नवनी कोडी ॥ रा० ॥ एए ॥ दे
व कहे थाने आज्ञा महारी, ह्यो थें संयम नारो ॥
युगबाहूतो जरण हुउं, मयणरेहाने तास्यो ॥ रा०
॥ १०० ॥ सुजने तो विद्याधर ल्यायो, परवस वात
प्रकाशी ॥ कठे विद्याधर कहे देवता, गयो विद्याधर
नासी ॥ रा० ॥ १ ॥ मयणरेहायें संयम लीनो,
ज्ञान नणे गुरुणी पासें ॥ विनय करीने आज्ञा पा
ले, समिति गुपति अहिआसे ॥ रा० ॥ २ ॥ देवतो
मनमां हर्षज पाम्यो, पूजे प्रजुना पायो ॥ साध सा
ध्वी सर्व वांदीने, आव्यो जिणदिशि जायो ॥ रा०
॥ ३ ॥ देवता आपणे ठामे पोहोतो, मयणरेहा सं
यम पाले ॥ बालक मातायें रणमां मूक्यो, आपण
पुण रखवालो ॥ रा० ॥४॥ न कोइ हिंसक जीवल्यां
आयो, नही कोइ पंखी आयो ॥ पुण्य एहना जोर
करीनें, राजा रणमां आयो ॥ रा० ॥ ५ ॥ मिथिला
नगरी पद्मोत्तर राजा, चढियो सिकारे सोइ ॥ पाप
करतां पड्यो पाधरो, पूरव सुकृत कोइ ॥ रा० ॥६॥
करी असवारी वनमां फिरतो, चढ्या पायक सब को

६ ॥ रणमां बालक सूतो दीठो, पद्मोत्तर राजी होइ ॥ रा० ॥ ७ ॥ बालक देखी राजा आव्यो, रूप जो इ अचरिज पायो ॥ बालकतो कोइ पुण्यवत दीसे, राजाने मन नायो ॥ रा० ॥ ८ ॥ देखो पुण्याइ रा जा केरी, नरम नही मनमांयो ॥ वस्तुप्राप्ति पुण्य प्रमाणे, कुअर राजायें पायो ॥ रा० ॥ ए ॥ मह्रारा राज्यमां पुत्र नही छे, एतो सहेजे आयो ॥ इण बा लकने ढंरो लइने, सोंपु राणीने जायो ॥ रा० ॥१०॥ कुमर उपाली राजा पाछो, आयो निज दरबारो ॥ पटराणी पुफचूला तेडी, पुत्र दीयो देवकुमारो ॥ रा० ॥ ११ ॥ नव मसबाडा नारे मरती, देवी पीतर म नायो ॥ आपणा पूरव पुण्ये करीने, कुमर सहेजे आ यो ॥ रा० ॥ १२ ॥ आपणा राजमां पुत्र नही छे, करो इणरी प्रतिपालो ॥ राज्य लायक ए कुअरज दी शे, होसे रैयत रखवालो ॥ रा० ॥ १३ ॥ नारी चूल वणी वइ राणीने, कुमरज खोले घाल्या ॥ पुण्यवत कुमर घर आयो पीछे, चूम्या नमीने चाल्या ॥ रा० ॥ १४ ॥ जे चूम्याणी अतिही बीहीता, कुंअर राजा रे आयो ॥ चूम्या आवी चाकरी लागा, नमी नाम देवराव्यो ॥ रा० ॥ १५ ॥ नमी कुमरतो वधतो रा

जमें, दिनदिन चढतो होइ ॥ मात पिता बांधव वि
ळोहो, ते सुणजो सहु कोइ ॥ रा० ॥ १६ ॥ जुगबा
हुने मणिरथे मास्यो, विषयरसें लोभायो पाछो व
ळतां सापें खाधो, चोथी नरकमें जायो ॥ रा०॥१७॥
बेहु राजानो मरणज हुवो, खबर हुइ नगरीमांहि ॥
मयणरेहा तो निकली नाठी, तिणरी खबर न कांइ
॥ रा० ॥ १८ ॥ दोनुं राजारो कारज कीधुं, राज चं
द्रजसाने दीयो ॥ किणने दोष न दीजें प्राणी, कर्म
आपजे कीयो ॥ रा० ॥ १९ ॥ चंद्रजसा तो राज्य
करे छे, वरते चोथो आरो ॥ बाप तणो मन थोडो
आवे, पण दुःख छे मातारो ॥ रा० ॥ २० ॥ नमी
कुमर तो महोटो हुवो, बल हीण हुवो राजारो ॥
नमीकुमरने राज बेसाड्यो, सुख विलसे संसारो ॥
रा० ॥ २१ ॥ जुगबाहु तो देवता हुउं, मयणरेहा
संयम पाले ॥ चंद्रजसाने नेमी जाइ, दोनुं राज रख
वाले ॥ रा० ॥ २२ ॥ आठ कर्म छे महा जोरावर,
जीवमें फांटा पाडे ॥ चारुंने तो न्यारा कीधां, एक
बहु दुःख देखाडे ॥ रा० ॥ २३ ॥ दोनुं राजा राज
जोगवतां, अटवी हाथी पडियो ॥ वस्ति आपणी रा
खण सारुं, बाहिर करवा चडियो ॥ रा० ॥ २४ ॥ चं

ड्जसा तो मनमें जाण्यो, ठंलड दीसे कठारो ॥ वे खोनी महारी धरती लेसे, राजवीयां अहकारो॥रा० ॥ २५ ॥ चड्जसा फोजां लश्चढीयो, फाकड सामी आयो ॥ नमी कुअर तो करी सजाइ, मनमें मगज न मायो ॥ रा० ॥ २६ ॥ चड्जसा तो कोप करीने, घोले वांकी वाणी ॥ मर्मना मोसा बोले नमीने, ब ढीयो ठे इम जाणी ॥ रा० ॥ २७ ॥ तिण अवसर में मयणरेहा सती, मनमें इसडी जाणी ॥ अंगजात ठे वोनु महारा, निर्खे पुण्यवंत प्राणी ॥ रा० ॥२०॥ लाख आवमीरी घातज होसे, मरसे घणा अजाणी॥ एथी कोइ उपगारज कीजे, मयणरेहा मन आणी ॥ रा० ॥ २ए ॥ विनय करी गुरुणीने पूठे, आप क हो तो आउ ॥ वोनुं राजरी राड मिटाउं हुं जाइ स मजाउ ॥ रा० ॥ ३० ॥ मांहोमांही कोइ न हटशे, अंगजात ठे महारा ॥ घणा जीवांरी घातज होसे, परमारथ ठे वोभारा ॥ रा० ॥ ३१ ॥ देखो पुण्याइ राजवीयारी, गुरुणी तो नही वर्ज्यो ॥ वस्तु आ पणी सेंठी करीने, पठी उपगार युं करजो ॥ रा० ॥ ३२ ॥ करी वदन मयणरेहा चाली, फरी सतीयांरो साथो ॥ चंड्जसा तो सच पीठाणे, पहेला करु नमी

शुं वातो ॥ रा० ॥ ३३ ॥ कांकडसीमां बेठा ठिकाणे,
फोजां चढी छे दोइ ॥ नमिय कुमरनुं लसकर पूठी,
चाली मयणरेहा सोइ ॥ रा० ॥ ३४ ॥ राज कचेरी
में राजा बेठा, वात नहीं विष टालो॥ फूंक लडाइरी
वातां राजाने, उमराव मोती मालो ॥ रा० ॥ ३५ ॥
मयणरेहा सती चरम शरीरी, आप तरी पर तारे ॥
राज सभाशुं नेडी आवी, नजर पडी राजा रे ॥ रा०
॥ ३६ ॥ नमीयकुमर उठ्यो सीताबी, विनय कस्यो
ते भारी॥ सात आठ पग साहामो आयने, सतीयां
केम पधारी ॥ रा० ॥ ३७ ॥ मयणरेहा सती कहे रा
जाने, कारण पड्यो थाशुं भारी ॥ फोजबंधी तो तें
नही कीधी, तिणखल परने विचारी ॥ रा० ॥३८ ॥
महारो हाथी अटवी पडीयो, न देवे चंद्रालघर जा
यो ॥ साथ सहुने भेलो करीने, तिण कारण चढी आ
यो ॥ रा० ॥ ३९ ॥ बापमास्योने माता भागी, गइ
किणारी लारे ॥ महारी धरती लेवण आयो, नीचनो
जायो त्यारे ॥ रा० ॥ ४० ॥ बेटो थें छो राजवीयां
रो, बोलो बोल विचारो ॥ थां उपरवली कुण चडी आ
सी,ऊंचाइ छे थारो॥ रा०॥४१॥नमीकुमरतो मनमें जा
ण्यो, माजी दीसेछे मारी ॥ लाज आणीने नीचे जो

युं, मचन कहा में मारी ॥ रा० ॥ ४२ ॥ नेमीकुमर
तो कहे माताने, थें लीधों संयम भारो ॥ माताअ
पहा किणविध हुइ, बात करो विस्तारो ॥ रा०॥४३
थारा पिताने मणिरथें मार्यो, हु रात्रे निकली आइ
॥ जनम थाहारो विचमांहे हूओ, में मेली दीओ रथमां
हि ॥ रा० ॥४४॥ सीरनदीरे वेठी हूती, विमान
वीद्याधरनो आयो ॥ जलचर हाथीयें मुजने उठाली,
हुं गइ समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ पिता था
रो देवता हूओ, दरिसणे प्रभुजीने आयो ॥ आज्ञा मा
गी संयम लीनो, जेव्धा प्रभुना पायो ॥ रा० ॥ ४६ ॥
दोनु राजारो जगडो सुणियो, लडशे मांहोमांही ॥
घणा माणसरो मरण होशे, इण कारण हुं आइ ॥
रा० ॥ ४७ ॥ नमीराजा ए बात सुणीने, चिंता फि
कर मन आई॥नमीय कुमरसो कहे माताने, जाइने
मिलशुं भाइ ॥ रा० ॥ ४८ ॥ ठीक नही ठे चन्द्रजसा
ने, यो ठे महारो भाइ॥ नही विसवास ठे राजवीयां
ने, तिणे मिलशुं पहेलो जाइ ॥ रा० ॥ ४९ ॥ नमी
कुमर पहेलो समजाऊ, चन्द्रजसा कने जायो॥सतीयां
नजर पडी राजा रे, विनय करी सामो आयो ॥ रा०
॥ ५० ॥ बेकर जोडी राजा बोल्यो, महासतीयो कि

म आइ ॥ काशुं कारण पडियो थारो ॥ इसडीवेला
में आइ॥ रा० ॥ ५१ ॥ फोजां थारी दोनुं राजा रे, ज
गडो पड्यो मांहोमांहि ॥ फोजबंधी तो थें जलीकी
धी, तिणकारण हुं आइ॥ रा० ॥ ५२ ॥ बाप मास्यो
मा निकली जागी, गइते किणरी लारो ॥ महारी धरती
लेणने आयो, कही सनमुख जाइ महारो ॥ ५३ ॥ म
हारी धरती लेवण आयो, नीच चंडाल घर जायो ॥
साथ समान ऊंणे लेला कीधा, ते कारण हुं चढी
आयो रा० ॥ ५४॥ बेटा लो थें राजवीयांरा,बोलो बो
ल विचारो ॥ ऊंर थांपर तो कुण चडी आसी, ऊंजाइ
ले थारो ॥ रा० ॥५५॥ चंद्रजसा तो महोटो मेल्यो,
खबर पडी उण सारी ॥ नमी बालक न्हानो जाणी
ने, वात कही विस्तारी॥ रा० ॥ ५६ ॥ वात सुणीने
राजा लाज्यो, नीचे मुख करी जोडे ॥ जारी वचन
कह्या माताने, राजाने नही सोहे ॥ रा० ॥५७॥ चंद्रज
सायें मनमें जाण्यो,नमीय कुमर महारो जाइ ॥ नही
स्नेह ले दोय बेटारो, तिण कारण माता आइ ॥रा०॥
॥ ५८ ॥ चंद्रजसा तो मलवा चाल्यो, नमी कुमर
साहामो आइ ॥ हरखजावशु बांह पसारी, मलीया
दोनु जाइ ॥ रा० ॥ ५९ ॥ एक हाथीपर दोनु बे

टा, चड्जसा नमी भाइ॥चड्जसारा केराने दिसी, आवे हरख अमाइ ॥ रा० ॥ ६० ॥ युद्ध भडाइनी था, हज करता, भडता कोडाकोडी ॥लोकां रे मन अचरिज आयो, कांइ कीयो इण मोडी ॥ रा० ॥ ॥ ६१ ॥ युद्ध मटावी मेल कराव्यो, घणा लोक हूवा राजी॥घणा जणारा माथा पडतां, राख्या छे इण माजी ॥ रा० ॥ ६२ ॥ भलो होजो इण माता केरो, जस वीधु जगमांहि॥ राजा उमराव कुशलज हूवा, घरघर रंग वधाइ ॥ रा० ॥६३॥ राजकचेरीयें आवी वेठा, चड्जसा नमी भाइ ॥ चड्जसा सुख थयु जाणीने, वैरागें मन आइ ॥ रा० ॥ ६४ ॥ चंड्जसा तो कहे नमीने,राज्य करो सें भाइ ॥ मुने तो अब दीक्षा लेणदे, ए दोनुं राज्य जमाइ॥ रा० ॥ ६५ ॥ नमी कहे मुने दीक्षा लेणद्यो, आप राज्य करो महारायो ॥ राजपाट रिद्धि सहु संपद, मेंतो थाने भलायो ॥ रा० ॥ ॥ ६६ ॥ चंड्जसा लो दीक्षा लीधी, हर्ष हैये नवी मावे ॥ भाइ विद्रुर्ध दु:खनुं खहेरो, नमीय रायने आवे ॥ रा० ॥ ६७ ॥ नमीय राजातो राज्य करे छे, राणी एकशोंने आठो ॥ पछे नाटो कवडुवे कारो, दोनुं राजा रो पाटो ॥ रा० ॥ ६८ ॥ दाहज्वरना योगें करीने,

लीधो संयम भारो ॥ इंद्रपरीक्षा करवा आयो, उत्त
राध्ययन विस्तारो ॥ रा० ॥ ६९ ॥ दोनुं राजा
रो मेल करायो, मयणरेहा पाछी आइ ॥ गुरुणीने
तो पाये लागीने, विधिशुं वात सुणाइ ॥ रा०
॥ ७० ॥ दोनुं राजाशुं मेल करायो, राखी घणारी बा
जी ॥ मयणरेहाना गुण जाणीने, गुरुणी हुइ छे राजी
॥ रा० ॥ ७१ ॥ छत्रीश हजार आरजांमांहे, गुरुणी
चंदन बाला ॥ पुण्यतणी राय पदवी पाइ, शीयणी र
तनारी माला ॥ रा० ॥ ७२ ॥ चेडा राजारी साते
पुत्री, भगवंत आप वखाणी ॥ चेलणा मृगावती त्रीजी
प्रभावती, चोथी शिवादेवि राणी ॥ रा० ॥ ७३ ॥ पां
चमी पद्मावती छठी सुलसा, ज्येष्ठा सातमी जाणी ॥
कष्ट पड्यां सती शीलज पाल्यां, दमयंती नलराणी
॥ रा० ॥ ७४ ॥ अंजना महिंद्रराजारी बेटी, विखो
सह्यो वनमांही ॥ कष्ट पड्यो सती व्रतज राख्यो, जस
कीरती जुगमांहि ॥ रा० ॥ ७५ ॥ सती द्रौपदी आगें
हुइ, जस लीधो युगमांहि ॥ मह्रोटा राजारो विरोध
मिटायो, मयणरेहा अधिकाइ ॥ रा० ॥ ७६ ॥ संयम
लइने सुकृत करजो, मनुष्य जनम मत खोइ ॥ जिन
शासनमें मयणरेहा कीनो, ज्युं करजो सब कोइ ॥

रा० ॥ ७७ ॥ मयणरेहा सती दीक्षा लइने, शुद्धमन संयम पाल्यो ॥ जिनमारगमें नाम दीपायो, भवनो फेरो टाल्यो ॥ रा० ॥ ७८ ॥ मयणरेहा कुमतारक हुइ, खक्का आपणी राखी ॥ विखो सखो पण मत नवि भांग्यु, सवजुगमांहे शाखी ॥ रा० ॥ ७९ ॥ युगयाहुने मयणरेहा राणी, चंद्रयशा नमी भाइ॥ चारेनां तो कारिज सरिया, मणिरथ नरकज मांहि ॥ रा० ॥ ८० ॥ मयणरेहाने कारण मणिरथ, युगबाई ने मार्यो ॥ पाछो वळतो सार्पे खाधो, एको काज न सार्यो॥ रा० ॥८१॥॥ व्यसन सातमुं परनारीतुं, जीवघात घर हार्यो ॥ मणिरथराजा नरकें पहोतो, कामभोग भलो आप्यो ॥ रा० ॥ ८२ ॥ इम जाणी ने कामे न राचो, दुखदाइ छे अपारो ॥ उत्तम प्राणी मनमें धारो, जासो मोक्ष मझारो ॥ रा० ॥ ८३ ॥ प्रथम वीरजी दान वखाण्यो, पछी शील अधिकारो ॥ तपस्या तपीने कर्म निवारो, भाव वडो संसारो ॥ रा० ॥ ८४ ॥ एक व्यसने मनोरथ न सीधो, दुःख पायो संसारो ॥ सात व्यसन जे सेवे प्राणी, तिणरो दुःख छे अपारो ॥ रा० ॥ ८५ ॥ विषयारस विषसम जाणीने, सतगुरु सेवा कीजे ॥ मणिरथराजानी वात

सुणीने, परनारी त्यागीजे ॥ रा० ॥ ७६ ॥ गाम क कडीयें कस्यो चोमासो, संवत चौदोतेरा मांयो ॥ कथा कारण आ ढालज कीनी, हर सेवक चित्त लायो ॥ रा० ॥७७॥ साधां रे तो मुख सांजलजो, चरित्र मय णरेहारो ॥ तिण उपर कोइ अधिको उंगो, मिछाडुक्क ड महारो रा०॥७८॥इति मयणरेहा चोपाइ समास ॥

॥ अथ श्रीनारकीनुं ढ ढालीयुं प्रारंज ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ वर्द्धमान जिन वीनवुं, साहेब साहस धीरो जी ॥ तुम दरिसण विण हुं जम्यो, चउगतिमां वडवीरो जी ॥ १ ॥ प्रजु नरक तणां डुःख दोहेलां, में सह्या काल अनंतो जी ॥ सोर कस्यां नवि को सुणे, एक विना जगवंतो जी ॥ २ ॥ प्रजु० ॥ पाप करीने प्रा णीयो, पहोतो नरक मोजारो जी ॥ कठिन कुजाषा सांजली, नयण श्रवण डुखकारो जी ॥ प्रजु० ॥ ३ ॥ सीतल योनीयें उपजे, रहेवुं वली ते ठामो जी ॥ जा तु प्रमाणे रुधिरनां, कीच कह्या वहु तामो जी ॥ प्र जु० ॥ ४ ॥ तव मनमांहि चिंतवे, जाइयें किणदिशि नासो जी ॥ परवस पडियो प्राणीयो, करतो कोडी

विखासो जी ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ चन्द नहीं सूरज नहीं, घोर घटा अधारो जी, थानक अतिश्र बिहामणु,फर स जिस्यो खमाधारो जी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ नवो नरकमां उपजे, जाणे असुर तिवारो जी ॥ कोप करी आवे तिहां, हाथें धरी हथीयारो जी ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ करे कारणी वेदनी, करता खमोखरू जी ॥ रीव करे तिहां किणे वहू, पामे दुःख परचरू जी ॥ प्रभु०॥८॥

॥ ढाल बीजी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ भांजे काया भाजतो रे, मारे केचा रे मांय ॥ उंधे माथे अगनी दीये रे, उचा बांधे पाय रे ॥ १ ॥ जिनजी सांभलो ॥ कहुआ कर्मविपाक रे, प्रभुजी सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ आवे वैतरणी तटें रे, अ धमां नाखे रे पास ॥ करीए कुहाडे तरु परें रे, छेदे अधिक उल्लास रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ उंचा योजन पांचसें रे, उछाले रे आकाश ॥ श्वानरूपें करके तिहां रे, ख ग जिम पाडे पास रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ पनरे भेदें सु र भली रे, करवत दीये रे कपाल ॥ आरोपे सूली शिरे रे, भांजे जिम तरुडाल रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥ थो से ताता तेलमां रे, तरीकरी काढे रे ताम ॥ वली भोजरमां खेपवे रे विरुआ ते विसराम रे ॥ जन०

॥ ५ ॥ खाल उतारे देहनी रे, अन्नख सदा दे आ
हार ॥ बहु आरडडा पाडतो रे, तनु विच घाले
खार रे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग मारु ॥

॥ ताप करे तिहां त्रूमिका रे, वन आय सीतल
जाण ॥ आवी बेशे तरु ठाड्डे रे, पडतां चांजे प्रा
ण ॥ चतुर मत राखजो रे ॥ १ ॥ कडुआ करम
विपाक, विरुआ विषय विलास ॥ सुख थोडा डुःख
घणा जेहथी रे, लहियें नरक निवास ॥ च० ॥ २ ॥
कुंजीमां पाक करे तस देहनो रे, तिल जिम घाणी
मांहि ॥ पीली पीली रस काढे तेहनो रे, महेर न
आवे तास ॥ च० ॥ ३ ॥ नाठो जाय त्रीजी नरक ल
गें रे, मन धरतो जय त्रांत ॥ पूठें परमाधामी सुर पु
ले रे, जेहवा काल कृतांत ॥ च० ॥ ४ ॥ दांत विचें
दीये आंगुली रे, फरी फरी लागे पाय ॥ वेदन सहे
तां काल थयो घणो रे, हवे मुऊ सह्यो न जाय ॥
च० ॥ ५ ॥ ज्यां जाय त्यां उठे मारवा रे, कोइ न
पूठे सार ॥ डुःखचर रोवे सोर करे घणो रे, निपट
हैये निरधार ॥ च० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीयें ॥ देशी ॥

॥ परमाधामी सुर कहे, सांजल तु जाइ ॥ कहो क्यो दोष कुमारडो, निज देखो कमाइ ॥ परमा०॥१॥ पाप तमे कीधां घणां, बहु जीव विणास्या, पीड न जाणी पर तणी, कुडा मुख जांख्या ॥ पर० ॥ २ ॥ चोरी लाव्यां धन पारकां, सेवी परनारी॥आरंज कीधा अतिघणा रे, परिग्रह नवि मारी ॥ पर० ॥ ३ ॥ मात पिता गुरु उलव्या, कीधो क्रोध अपार ॥ मान माया लोज मन धस्यो, मतिहीन गमार॥ पर० ॥ ४॥ निशिजोजन कीधां घणां, बहु जीव विणास्या ॥ प्रकाजक घणा जक्ष्या, पातकनो नहीं पार ॥ पर०५

॥ ढाल पांचमी ॥ जायामां ॥

॥ एम कही सुर वेदना ए, वयर उदीरे ताडितो ॥ सिला कंटाला वज्रतणा ए, तिहां पगवे साहसो ॥ १ ॥ सयल वदन कीडा जखे ए, जीज करे शत खंम तो ॥ ए फल निशि जोजन तणां ए, आणो पाप अखम सो ॥ २ ॥ तरस घसे तालो तरुठे, मुखमां नामें साम सो ॥ अगनी वरणी पुतली ए, स्पर्श करावे आम तो ॥ ३ ॥ जनोने अति आकरो ए, आपें सातुं नीर तो ॥ ते पावे तस आंखमां ए, कानमां

नरेय कथीर तो ॥ ४ ॥ कालो अधिक विहामणो ए, हूंमक जे संस्थान तो ॥ दीशे दीन दयामणो ए, व ली अ संहारे प्राण तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ इणिपरें बहु वेदन सही ॥ चित चेतो रे ॥ व सतां नरक मजार ॥ चतुर चित्त चेतो रे ॥ ज्ञानवि ना जाणे नहीं ॥ चि० कहेतां नावे पार ॥ च० ॥१॥ दशदृष्टांतें दोहिलो ॥ चि० ॥ लाधो नरजव सार ॥ च० ॥ पामी एले म हारजो ॥ चि० ॥ करजो एह विचार ॥ च० ॥ २ ॥ सूधो संयम आदरो ॥ चि०॥ टालो विषयविकार ॥ च० ॥ पांचे इंडी वश करो ॥ चि० ॥ जिम होये बूटक बार ॥ च० ॥ ३ ॥ निद्रा विकथा परिहरो ॥ चि० ॥ आराधो जिनधर्म ॥च०॥ समकेत रत्न हैये धरो ॥ चि० ॥ नांजे मिथ्या नरम ॥ च० ॥ ४ ॥ वीर जिणंद पसाउले ॥ चि० ॥ अहि पुर नगर मोजार ॥ च० ॥ तवन रच्युं रलीयामणुं ॥ चि० ॥ परमकृपाल उदार ॥ श० ॥ ५ ॥

॥ इति नारकीनुं षटढालीयुं समाप्त ॥

॥ अथ हरीआली ॥

॥ मह्योटा ते मदिर मालीयां रे सखी, जालीयें जाकजमाल ॥ दीप जलामल जगमगे रे सखी, वास भुवन वरसाल रे ॥ माननी मह्यीयल मोहनवेल ॥१॥ एतो गाजती करे गजगेल, रलीयामणी रंगनी रेल, एहनें पोख्रोचती पुरुषनी वेल रे ॥ माननी मह्यी० ॥ ए आंकणी ॥ लाखतणा लेखा नही रे सखी, जोग ये पुरुषनी कोड ॥ कामणगारी कामिनी रे सखी, न विकरे मोडामोड रे ॥ माननी मह्यी० ॥ २ ॥ यती घणा जेणे वस्या रे सखी, ए सति बालकुमारि ॥ नीच नपुसकह्यु रमे रे सखी, लोककहे सायास रे ॥ माननी मह्यी० ॥ ३ ॥ वेसिहुंति वेस्या नही रे सखी, नही अबला सुणि दासि ॥ गुणवती ते गोरडी रे सखी, जाणगी तस बलिहार रे ॥ माननी मह्यी० ॥ ४ ॥ देह अजरामर ऊजली रे सखी, बीजतणो जिस्यो चंद ॥ श्रीचरणप्रमोद पसाउलें रे सखी, पामो परमानंद रे ॥ माननी मह्यी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ॐ श्री जिनेश्वराय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्योनमः ॥

अथ श्री हंसराज वत्सराजनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ आशावरी राग ॥

॥ आदीश्वर आदें करी, चउवीशे जिणचंद ॥ सरसति मन समरूं सदा, श्री जयतिलक सूरींद ॥१॥ सद्गुरु पय प्रणमी करी, पामी गुरु आदेश ॥ पुण्य तणां फल बोलशुं, कहिशुं हुं लवलेश ॥ २ ॥ पुण्ये शिवसुख संपजे, पुण्ये संपत्ति होय ॥ राजऋद्धि लीला घणी, पुण्ये पामे सोय ॥३॥ पुण्ये उत्तम कुल हुवे, पुण्ये रूप प्रधान ॥ पुण्ये पूरुं आउखुं, पुण्ये बुद्धि निधान ॥ ४ ॥ पुण्य उपर सुणजो कथा, सुणतां अचरिज थाय ॥ हंसराज वत्सराज नृप, हूवा पुण्य पसाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ रागधन्याश्री–कोश्या वामिनी एणी परे विनवे जी ॥ देशी ॥

॥ जंबुद्वीपें भरत वखाणीयें जी, पुर पयठाण प्रधान ॥ अलकापुर समोवड ते जाणीयें जी, वृद्ध तणुं नहिं ज्ञान ॥ जंबु० ॥ १ ॥ जाइ जुइ ने चंपो

मोघरो जी,सेवन्त्री सुकुमाल ॥ केवडो करेणो ने वलि मालती जी, पूगी ताल तमाल ॥ जंबु० ॥ २ ॥ आंबा रायण जबु करमदां जी, वड पींपल ने डाख ॥ जवी री ने दाडिम नींबुआं जी, वृक्षतणा तिहां लाख ॥ जबु० ॥ ३ ॥ पुरपयठाण नगर पासें वहे जी, गंगा जलसम नीर ॥ नदी गोदावरी नामें गुणभरी जी, जल जेवुं गोक्षीर ॥ जंबु० ॥ ४ ॥ हस चकोर ने च कवा सारही जी, बगलां वेगां तीर ॥ चीडी चास ति त्तर पारेवडां जी, केलि करे से नीर ॥ जबु० ॥ ५ ॥ गढ मढ मंदिर सोहे देहरां जी, वलि पोशाल निशा ल ॥ नगर चोराशी चहूटा चिहुं दिशे जी, उपर जाक झमाल ॥ जबु० ॥ ६ ॥ विविध व्यापारी नगरमांहें वसे जी, धर्मी ने धनवंत ॥ चार वरणनां लोक तिहां रहे जी, धर्मतणी मन खत ॥ जबु० ॥ ७ ॥ शालि वाहन सुत नरवाहन पदे जी, रूपें अमर समान ॥ त्याग स्याग निकलंक सदा जलो जी, सहुको माने आण ॥ जंबु० ॥ ८ ॥ यादववंश विभूषण ऊपनो जी, जीव दया प्रतिपाल ॥ श्रणशे शाठ अंतेउरी सोहनेजी, उत्तम गुणहिं विशाल ॥ जबु० ॥ ९ ॥ गयवर हय वर आगें हींसता जी, नाटक बत्रू बत्रीश ॥ वहेता

शेठ सेनापति मंत्रवी जी, सेवे कुलि बत्रीश ॥ जंबु०
॥१०॥ बावन वीर सदा सेवा करे जी, बंधव अतिबल
वंत ॥ वहुडो शक्तिकुंवर सोहामणो जी, सकल कला
गुणवंत ॥ जं० ॥ ११ ॥ एक दिन सुतो नरवाहन सुखे
जी, निद्रावश त्ररपूर॥पहेली ढाले राजा पोढियो जी,
कहे श्री जिनोदय सूरि ॥जंबु०॥१२॥ सर्व गाथा॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ सूतो सुपनांतर लहे, अद्भुत सुपन नरेश ॥
दिवस उग्यो जागे नहीं, देखे नयर निवेश ॥ १ ॥ क
णयापुर पाटण गयो, कीधो नगरी प्रवेश॥ हंसावलि
रायपुत्रिका, दीठो अद्भुत वेश ॥२॥ कनकभ्रम राजा
सुता, परणावी सा बाल ॥ दीधा बहुला दानजा,
सुखे गमतो तिहां काल ॥३॥ दरबारे सहुको मिल्या,
खान अने सुलतान॥शेठ अने सेनापति, बेठा बहु
दीवान ॥ ४ ॥ नरपतिने त्रेटण त्रणी, पुरप्रगणे कै
त्रूप ॥ निमित्तिया आया तिहां, कहेवा सकल स
रूप ॥५॥ ब्राह्मण वेद त्रणे जिके, वली ज्योतिषिया
जाण ॥ वैदराज आवी मिल्या, त्रट चट करे वखाण
॥ ६ ॥ हयवर आगे हींसता, गयवर गरज करंत ॥
पायक आया प्रणमवा, इणि परि मेल मिलंत ॥७॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुकीया कौतुक भणी, खेड़ सघलो साजो रे ॥ एकण विण सहुको मिल्या, एक नहीं महाराजो रे ॥ ॥ १ ॥ जेवुं घर दीपक विना, अंधकार किम थायो रे ॥ एकणाहीं राजा विना, गोवाला विण गायो रे ॥ जे० ॥२॥ तिणे अवसर तिहां आवियो, मनकेसरि मनरंगो रे॥लोक खास मिल्यां जिहां, प्रणमे सहु उछरंगो रे ॥ जे० ॥३॥ आदर दे आघो गयो, पहो तो राजा पासो रे ॥ आसंगो करि अति घणो, सा मि सुणो अरदासो रे ॥ जे० ॥४॥ तुम दरबार सहू खडे, भेटण आया काजो रे ॥ दिनकर पण उगो चढ्यो, उठो श्री महाराजो रे ॥ जे० ॥ ५ ॥ मन्त्रिव चन राय जागीयो, आलस मोमी अंगो रे ॥ सूतो सिं ह जगावियो, कीधो निद्राभंगो रे ॥ जे० ॥६॥ को पानल राजा हुर्ड, राता लोचन कीध रे ॥ दीप नरें राय ऊठियो, खांडु हाथें लीध रे ॥ जे० ॥ ७ ॥ रे मूरख कीधु कीश्यु, हु निद्रामांहि आजो रे ॥ कण यापुर पाटण गयो, कनकभ्रम तिहां राजो रे ॥ जे० ॥ ८ ॥ तस पुत्री हंसावली, अपछरने अनुहारो रे॥

रंग जंग करी अति घणा, परणी में सुविचारो रे ॥ जे० ॥९॥ तेहनो तें विरहो कीयो, सुखमें कियो अं तरायो रे ॥ जीवंतां नवि वीसरे, इम बोले महारा योरे ॥ जे० ॥१०॥ खड्ग काढी जव धाइउ, मंत्रीश्वर मन चिंते रे ॥ सुहणां किम साचां हुवे, राय पड्यो किसी भ्रांतें रे ॥ जे० ॥ ११ ॥ जूहारी साचो चवे, ऊगे पश्चिम जाणो रे ॥ समुद्र किमे पूरो हुवे, आ पणो न होय राजानो रे ॥ जे० ॥ १२ ॥ मनकेसरी सुहतो जणे, विण अपराध कांइ मारो रे ॥ बीजी ढाल पूरी हुइ, आगल जेह प्रकारो रे ॥ जे० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्री कहे राजा सुणो,कीजे काम विमास ॥ पछे न पछतावो हुवे, जीव हुवे न उदास ॥ १ ॥ सुपन मांहि परणी जीके, हंसावलि जसु नाम ॥ परतख ते परणाविशुं, सारशुं वंछित काम ॥ २ ॥ इण वच नें सुसतो हुउ, खड्ग धर्युं निज ठाम ॥ सुसतो शी तल जाणियो, मंत्री करे प्रणाम ॥३॥ अवधि दियो एक मासनी, जोवरावुं सा नार॥ राय कहे बिहु मा सनी, तां लगे करो विचार ॥४॥ मंत्रीश्वर तुं मुऊ

खरो, जो मेले मुझ नार ॥ पृथ्वीपति पधरावियो, सहु को करे जुहार ॥ ५ ॥ मन्त्रीसर आयो घरे, शोचे बुद्धिनिधान ॥ किणविध ते नारी मिले, रीझे किम राजान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शील कहे जग हुं वडो ॥ ए देशी ॥ राग रामग्री ॥

॥ मंत्री तस कीधुं किश्युं, सत्रकार तिहां मांड्यो रे ॥ मरणसपे मेले करी, सहु प्रमाद तिणे छांड्यो रे ॥ मं० ॥ १ ॥ चिहुं दिशि विहु पोले सदा, मागे ते तसु दीजे रे ॥ नाकारो नवि कीजिये, नाम ठाम पूछीजे रे ॥ मं० ॥२॥ सोफी संन्यासी घणा, जोगी जंगम भाटो रे ॥ चजण अवधूत कापडी, मिलिया नर ना थाठो ॥ रे ॥ मं० ॥३॥ एम करतां वहु दिन गया, परदेशी पूछतो रे ॥ गाम नाम नवि को कहे, पूछि पूछि विरततो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ एक आयो परदेशथी, मुझुसे नयणे दीठो रे ॥ आदर दीधो अति घणो, मुह कराव्यो मीठो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ कहो तुमे किहांथी आविया, किण देशांतर वासी रे ॥ कवण नगर तुमे निरखियां, तव ते कहे विमासी रे ॥ मं ॥ ६ ॥ अडशठ तीरथ में कियां, वहु धरती में दीठी रे ॥ कण

यापुरथी आवियो, वात कहि अति मीठी रे ॥ मं० ॥ ॥७॥ भूख्यां भोजन संपजे, जिम तरशांने पाणी रे ॥ मुहताने मन जे हुती, तेहज बोल्यो वाणी रे ॥ मं० ॥ ८ ॥ आदर देई अति घणो, पूछे तेहने वातो रे ॥ कणयापुर ते किहां अछे, वात कहो विख्यातो रे ॥ मं० ॥ ए॥ समुद्र परें अति शोभतो, कणयापुर पैठा णो रे ॥ कनकभ्रम राजा तिहां, बहुबुधि चतुर सु जाणो रे ॥ मं० ॥ १० ॥ हंसावलि रायपुत्रिका, रूपे रंभ समाणी रे॥ तिहांथी हुं आव्यो इहां, मंत्री वात सहु जाणी रे ॥ मं० ॥ ११ ॥ ते परदेशी लेइने,नर वर पासे आवे रे ॥ आगल मूकी भेटणुं, रंगे राय व धावे रे ॥ मं० ॥ १२॥ पूर्व वात मांडी कही, जिम परदेशी भाखी रे ॥ राये वात मानी खरी, ते नर कीधो साखी रे ॥ मं० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजामन धीरज धरी, हवे हुई मन आश॥त्रीहुं मिलि मतो कियो, पंथ अछे एक मास ॥ १ ॥ बाव न वीर तेमाविया, बंधव अति बलवंत ॥ हुं जाशुं जा त्रा भणी, भेटण तीरथ खंत ॥ २॥ नरवाहन राजा कहे, राजा विण शुं राज ॥ जब लगे हुं आवुं नहीं,

हता जणी रे, कोइ न पूछे वात॥ पोलमांहे मालण मिली रे, सलखू नामे विख्यात ॥ रा० ॥ ६ ॥ मालण माला कर धरी रे, कीधी बिहुंने पेस ॥ शकुन जलुं जाणी करी रे, रंज्यो मनमां नरेश ॥ रा० ॥७॥ मालण ने मुद्रा दिये रे, राजा करे पसाय ॥ राजा मंत्री बिहुं जणी रे, मालण लेइ घर जाय ॥ रा० ॥८॥ मालण कर जोमी कहे रे, हुं छुं तुमारी दास॥ए मंदिर ए मालियां रे, रहो सदा इहां वास ॥ रा० ॥ए॥ मालणने मंदिर रह्या रे, मनकेसरी ने राय ॥ नगर कुतुहल जोवतां रे, मनोवंछित ते खाय ॥ रा० ॥१०॥ एक दिवस राजा जणी रे, मालण जंपे आम ॥ बेशी रहो निजस्थानके रे, जो जीवणशुं काम ॥ रा० ॥ ११ ॥ राजा पूछे आदरे रे, मांमी कहो मुऊ वात ॥ मरण तणो जय किण विधे रे, मालण कहे अवदात ॥ रा० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नगरे राजा तणी, पुत्री छे डुरदंत॥आठम चौदश पूनमे, नर निश्चे जु हणंत ॥ १ ॥ सोम शनिश्चर मंगले,वलि चोथो रवि वार ॥ इण वारे निश्चे हणे, फरे ते लहेछे मार ॥२॥ राजा घर बेगो रहे,

नावे को दीवान ॥ नर ते सवि नाठा फिरे, सामो न मखे प्राण ॥३॥ पांच दिवस लगि सामटी, देवी सक्त जाय ॥ वाजिंत्र आगल वाजतां, प्रणमे देवी पाय ॥४॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग रामग्री ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन राय मंत्री सांजली जी, शोचे हृदय मकार॥ए परणेवो आवे पाधरो जी, करस्यां किस्यो विचार ॥ १ ॥ कर्मपरीक्षा राय मंत्री करे जी, मंत्री बोले जी ताम ॥ हुं मनकेसरी मुहतो ताहरो जी, सारु तुफनुं काम ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पुत्री ते परणावशुं जी, ते करशुं तुफ दास ॥ जेहनु नाम अछे हंसाव ली जी, ते तुफ आणु पास ॥ क० ॥ ३ ॥ मालय म धिर राजा राखियो जी, सुखे रहे जो इण गाम॥ढढ मन करीने मंत्री नीकल्यो जी, करवा नृपनुं काम ॥ क० ॥४॥ देवी देहरे मंत्री आवियो जी, मंत्री करे प्रणाम ॥ पूजी अर्ची मंत्री विनवे जी, राखो माह री माम ॥ क० ॥ ५ ॥ शरीर संकोची मंत्री आपणुं जी, बेठो देवीनी पूठ ॥ संध्या समये ते हंसावली जी, खड्ग धरी निज मूठ ॥ क० ॥६॥ नारी पचास या परिवारशुं जी, बेठी पीठ मकार ॥ रुद्ररूप दिसे

तिहां देहरुं जी, हनुमंत करे होकार ॥ क० ॥ ७ ॥ बावन वीर तिहां बीहामणा जी, रुमरु वाजे हाथ॥ रुरुख चढीने काइण धसमसे जी, नाके घाली नाथ ॥ क० ॥ भूत प्रेत ने व्यंतर तिहां घणांजी, जोटिंग करे ऊंकार ॥ जोगणी पीठ तिहां किणे जाग ती जी, शक्तितणी तिहां कार ॥ क०॥ ए॥ रुंढमुंरु माथा तिहां रम्वडे जी, वहे तिहां लोहीनी खाल॥ अग्निकुंरु सदा आगे बले जी, करती जालो जाल॥ ॥क०॥१०॥ कुमरी एहवां कौतुक जोवती जी, पूजावि धि सहु लेय ॥ बलि बाकुल ने तिलवट लापशीजी, तीन प्रदक्षिणा देय ॥ ११ ॥ सर्व गाथा॥ ८ए ॥

॥ दोहा ॥

मंत्रीसर मन चिंतवे, अवसर लाधो आज ॥ शक्ति तणे सांनिध्य करी, सारिश निश्चे काज॥१॥ हुं मंत्रीश्वरतो खरो, एहने पारुं पास ॥ ए हंसावलि हरखशुं, रायतणी करुं दास ॥२॥ महुताने मति उ पनी, बोले देवी वाण ॥ अंधारे अलगां थकां, चाले से मुक प्राण ॥ ३ ॥ मंरुप आवी मानिनी, हाकोटी तव हिक ॥ मत पेसे रे पापिणी, मारिश तुजने डीक

॥ ४ ॥ कुमरी कपट न जाणियु,जाणी देवी वाघ ॥ शीकंपा शरीरे हुया, जे जपे ते साच ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ राग सिंधुओ ॥ तोमीजाति।वीरे वखाणी राणी चेलणा जी, ॥ए देशी॥ कुमरी मनमें चिंतवे जी, देवी कोपी आज ॥ केमेंकीधीआशातना जी, के नवि आव्यो साज ॥कु० ॥ १ ॥ मुक न जरे म आवे इहां जी, नावे तु मारी पीठ ॥ जा परहिं तुं पापिणी जी, ताहरुं मुह म दीठ ॥ कु० ॥ ॥२॥पुरुष हत्या कीधी घणीजी, तिणे सुचे तोशुंरोष॥ कर जोमी कुमरी कहे जी, सामिणि मुक नहिं दोष ॥ कु० ॥ ३ ॥ पूरव जव में जाणियो जी, ज्ञानतणे परिमाण ॥ हुं पदेखे जवें पक्षिणी जी, रहेती वमे उद्यान ॥ कु० ॥४॥ आंबा उपर अति जलुं जी, रहेवा कीधुं ठाम ॥ माले इहां में मूकियां जी, जुगल ज नम्यां बे ताम ॥ कु० ॥ ५ ॥ कर्म जोगें तिहां थयुं जी, लागो दव असराल ॥ सूकां नीला तिहां बालतो जी, करतो जालो जाल ॥ कु० ॥ ६ ॥ नीयमो जव में निरखियो जो,बालक आएयो मोह ॥ उपर पांख पसारिने जी, मनमें धरियो गेह ॥ कु० ॥ ७ ॥ कल ज पी में नांखियु जी, आणो जल तुमें जाय ॥ तरु सीं

च्यां सहुने हुशे जी, जीवन एह उपाय ॥कुं० ॥८॥
जाणी मिश पापी गयो जी, मुक नहीं पूछी सार,
इंगां बलियां अग्निमें जी, नाणी महेर लगार ॥ कुं०
॥९॥ संतति कारण सामिणी जी, में होमी निज का
य ॥ मरणतणे मेलें करी जी, कंत गयो निरमाय
॥ कुं० ॥१०॥ जातिस्मरणे जाणियो जी, पूरव भव
विरतंत ॥ बलतां बालक मूकिने जी, नाशी गयो
मुक कंत ॥ कुं० ॥ ११ ॥ तिण द्वेषे में मारिया जी,
हणिया पुरुष अनेक॥देवी कहे कीधुं किश्युं जी, तु
कमें नहिंय विवेक ॥कुं०॥१२॥ तुक कंतें कीधुं जिश्युं
जी, अवर न दूजे होय ॥ तुक कारण तिणे तनु दह्यो
जी,हिये विचारी जोय ॥कुं०॥१३॥ सर्वगाथा ॥१०७॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्ति सुखेथी सांजली, मात न जाणी वात ॥
अण जाण्या में पापिणी, नरनी कीधी घात ॥ १ ॥
आज पछी मारिश नहीं, चूके तोरा पाय ॥ जगते
जोग उमाहि, कुमरी स्थानक जाय ॥ २ ॥ धसम-
स मंत्री उठियो, देवी बुद्धिनिधान ॥ हरूहरू तव देखी
हसी, ए नर नहीं समान ॥३॥ कर जोमी मंत्री कहे,
खमजो अवगुण मात ॥ तुं त्रिपुरा तुं तोतला, त्रिहुं

भुवनें विख्यात ॥४॥ तुं शीकोतर सरसती, सारे सं घला काज ॥ कोइल पर्वत जागती, देवी तु हिंगला ज ॥५॥ जालधर ज्वालामुखी, श्राबू तु श्रंबाव॥ उ ज्जेणी हरिसिद्ध नमु, राणा जाणे राव ॥६॥ हुं श्र पराधी ताहरो, स्तुति कीधी कर जोड ॥ स्वामि काज साहस कियो, पूरो मनना कोड ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग श्राशा सिंधु ॥ धर्म हैये धरो ॥ श्रथवा ॥ वंध्याचलनो हाथियो रे॥ ए देशी ॥

॥ हवे वचनें तूठी सुरी रे,मागो वर श्रभिराम॥ जे मागीश ते श्रापशु रे, सारिश तुजनो कामो रे ॥ पुण्य सदा फले, पुण्यें वंछित होय रे ॥ पु० ॥ १ ॥ मुहतो कर जोडी कहे रे, श्रापो करिय पसाय ॥ वि विध विश्राम करु घणां रे, ए वर द्यो मुज मायो रे ॥ पु० ॥२॥ शक्ति एक दीधी तिहां रे, जा वत्स करशुं काम ॥ देवी चरण नमी करी रे, श्राव्यो श्रापण ठा मो रे ॥ पु० ॥३॥ मनकेसरी मुहतो नमे रे, नरवा हननना पाय ॥ श्राज पछी नवि मारशो रे, देवी तणे सुपसायो रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पूर्वे वात मांडी कही रे, हरख्यो मनमें नरेश॥चिंता हवे स्वामी टली रे, वं छित काज करेशो रे ॥ पु० ॥५॥ चीतारो मंत्री हु

वो रे, करे जलां चित्राम ॥ क्रय विक्रय चहुटे करें रे, प्रसिद्ध हुई सहु गामो रे ॥ पु० ॥६॥ कुमरी दासी एकदा रे, चहुटे पुहती काम ॥ विविध रूप दीठां ति हां रे, मूल्यें लियां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कुमरी पासे लइ गइ रे, दीधां कुमरी हाथ ॥ हरखी हंसाव ली तिहां रे, लेइ आवो जइ साथो रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ कुमरी वचन मानी करी रे, पहुती तिहां तत्काल ॥ उवहो ईहांथी आदरे रे, काम परहां सहु टालो रे ॥ पु० ॥ ए ॥ हुं आवी तुझ तेड़वा रे, आवो कुंमरी पास ॥ प्रसिद्धि घणी तुझ सांजली रे, पूरेश्यां तुझ आसो रे ॥ पु० ॥ १० ॥ केइ घोड़ा केइ हाथिया रे, केइ ल्रि या आराम ॥ सिंह अने सावझ घणा रे, लियां इस्यां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कुमरी आगें मूकीयां रे, कुमरी हुइ उल्लास ॥ विविध रूप करो इहां रे, सोहे जिम आवासो रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥१२६॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरि मान्युं वचन, कीधो लाख पसाय॥ ते लेईने आवियो, प्रणमे नरवर पाय ॥ १ ॥ राय आदेश लही करी, मांड्युं करवा काम ॥ कुमरी आ-पे आवीने, देखाडे निज ठाम ॥ २ ॥ नल राजा जि

म निकस्यो,हारी सघलु राज ॥ दमयंती सायें हुइ, वन मूकी महाराज ॥३॥ वलि लंका गढ मांकियो,रावणकी धु रूप ॥ नव ग्रह पायेसेवता, कीधु इस्यु स्वरूप ॥४॥

॥ ढाल आठमी ॥ देशी ललनानी ॥ धमाल रागे ॥

॥ ललना हो रामरूप कीधु जर्मु कीधो सीता पास॥ललनां हो लखमण बंधव ते कीयो, कीधो व लि वनवास ॥ १ ॥ ल० ॥ सोवन मृग कीधो जखो सीता पांसे धाय ॥ ल० ॥ जोगि सरूप कीयो जुठ, रावण हरि ले जाय ॥ २ ॥ ल० ॥वाले हनुमंत वा दरू, लंका वाली हाथ ॥ ल० ॥ समुद्र पाज बांधी तिणे, लंका कीधी अनाथ ॥ ३ ॥ ल० ॥ रामचंद्र रावणथकी, घर आणी निज सीत ॥ल०॥ धीज की यो सीता सती, प्रसरी दह दिशि किप्त ॥४॥ल०॥ पांडवनारी अपहरी, सुती भुवन मकारि ॥ ल० ॥ पद्मोत्तर तिहां पापिये, आणि जाइ मुरारि ॥ ५ ॥ ॥ ल० ॥ श्रवणरूप कियो सारिखो, मात पिता वेठ अंध ॥ ल० ॥ पाणी जरतां पापियें, दशरथ हणियो कंध ॥ ६ ॥ ल० ॥ कृष्णरूप कीधु जसु, जिण विध हणियो कंस ॥ ल० ॥ जीवजसा कंत तातनो, जिणे खोया वेहु वंश ॥ ७ ॥ ल० ॥ लखि

या वन वाडी घणां, लखिया तरु वर श्रांब ॥ ल० ॥ समुद्र सरोवर वावडी, मांड्यां नगर ने गाम ॥ ल० ॥ ८ ॥ जाखर लखिया जांतशुं, लखिया तेतर मोर ॥ल०॥ लखिया सारस सूअडा, लखिया चंद्र चकोर ॥ ल० ॥ए॥ सरप सावज मांड्यां घणा, सांवर रोज शीयाल ॥ल०॥ गौ गज वृषज सुहामणा,वानर देता फाल ॥ल०॥१०॥ मलकेसरि मुहते कियो, फल्यो फूल्यो सहकार ॥ ल० ॥ मालो पण मांड्यो तिहां, जो जो कर्म प्रकार ॥ ल० ॥११॥ सर्व गाथा ॥१४१॥

॥ दोहा ॥

॥ बे बचडां उपर धर्यां, मात पिता बे पास ॥ दावानल लागो दहन, सघलो कियो प्रकाश ॥ १ ॥ पाणी लेवा पंखियो, पहोतो सरवर ठाम ॥ नारी बचडां सहु बल्यां, पाछो श्रावियो ताम ॥ २ ॥ देखीने दुःख ऊपनुं,झंपाणो तत्काल ॥ मोहवशे मांहे पड्यो, काल कियो तत्काल ॥ ३ ॥ इणविध चित्रज चितर्यो, पहोतो कुमरी पास ॥ मात महेल पूरो हुवो, दीधी तसु साबाश ॥४॥ चित्रहारने चोंपशुं, दीधो बहुत पसाय ॥ धन लेईने श्रावीयो, नरवर प्रणमे पाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्मविटंबणा ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मंदिर निरखती रे हां,आगें दीठो तिहां सहकार॥ कर्मविटंबणा ॥ ईर्मा मुझने कारणे रे हां, रूपाणो भरतार ॥क०॥१॥ हे ! हे ! जोषो जोषो रे हां, जोधन खाधा धाय ॥ क०॥ कंता तें साहस कियो रे हां,देहे दुःख न समाय ॥ क०॥२॥ कंता तुझने कारणे रे हां, में कस्यां पाप अघोर ॥ क० ॥ पुरुष विणास्या पापिणी रे हां, एम करती बहुला सोर ॥ क० ॥३॥ हे ! हे ! कंता तें कीधो जिस्यो रे हां, तेहवो मुझ नवि थाय ॥ क० ॥ कंता कारण तु थयो रे हां, तें होमी निज काय ॥क० ॥४॥ आपणपे आपे जाणियो रे हां, पण कंत न जाणे वात ॥ क०॥ पोपट पक्षी कारणे रे हां,हु करशु आतमघात ॥ क०॥५॥ कंता तु किहां उपनो रे हां, सो जो जाणु ठाम ॥ क० ॥ तो तुझने आवी मिलुं रे हां, थापु करीने सामि ॥ क०॥६॥ कंत विना हुं कामिनी रे हां, कां सरजी किरतार ॥ क० ॥ देव विगोइो कां वियो रे हां, दासकपर वियो खार ॥ क० ॥७॥ इम विलाप करती घणु रे हां, मनमांहे अति दुःखाय ॥ क० ॥

रूप देखी धरणी ढली रे हां, क्षणमांहे मूर्छाय ॥क०
॥ए॥ दासी सहु दोडी मिली रे हां, टाले शीतलवाय
॥ क० ॥ केई चंदन तनु घसे रे हां, केइ नृप पूछण
जाय ॥ क०॥ए॥ पूछ्या जोषी पंमिता रे हां, देवरावे
शनिदान ॥क०॥ ऊंट घोडा खर डंजिया रे हां, कुम
रीने कंतनुं ध्यान ॥क०१०॥ एक कहे आणी गूगलां
रे हां, नाके दीजें नास ॥क०॥ एक कहे सहु पाछां
रहो रे हां,हुं वात कहुं विमास ॥क०॥११॥ चित्रहारें
महोल चीतर्‍यो रे हां, कोइ कीधो मंत्र ने तंत्र ॥
क०॥ए चित्रकार माकणो रे हां, कुमरी ढली एकंत
॥क०॥१२॥वात जणावो रायने रे हां, तेमावे तत्काल
॥क०॥ कूटी पीटी तेहने रे हां,आणो इहां कणे काल
॥क०॥१३॥ जोवणने दासी फिरी रे हां, जोवंती चि
त्रकार ॥क०॥ दीठो मालणमंदिरे रे हां, खेंची काढ्यो
वार ॥क०॥१४॥ आज अदिन थारो बापडा रे हां,
ते कीधुं नूंडुं काम ॥ क० ॥ के राजा शूली दीये रे
हां, के मारे तुजने ठाम ॥ क० ॥१५॥ गलहत्थो देइ
हाथशुं रे हां,केइ देता पूठें मूठ ॥क०॥ हीण वचन
मुख नांखता रे हां, पापी तुं इहांथी ऊठ ॥ क०
॥१६॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे हां, रूडुं कीधुं नूंडुं

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्मविटंबणा ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मदिर निरखती रे हां, आगें दीठो ति
सहकार॥ कर्मविटंबणा ॥ इहां मुफने कारणे रे हां
फपाणो भरतार ॥क०॥१॥ हे! हे! जोवो जोवो रे
जोवन खावा धाय ॥ क०॥ कंता तें साहस कियो
हां,हेवे दुःख न खमाय ॥ क०॥२॥ कंता तुफने का
रणे रे हां, में कर्यां पाप अघोर ॥ क० ॥ पुरुष
णास्या पापिणी रे हां, एम करती बहुला सोर
क० ॥३॥ हे! हे! कंता तें कीधो जिस्यो रे हां, तेहवे
सुफ नवि थाय ॥ क० ॥ कंता ऊरण तु थयो रे हां
तें होमी निज काय ॥क० ॥४॥ आपणपे आपे जा
णियो रे हां, पण कंत न जाणे घात ॥ क०॥ पोप
पखी कारणे रे हां,हुं करशुं आतमघात ॥ क०॥५
कंता तु किहां ठपनो रे हां, सो जो जाणुं ठाम ।
क० ॥ तो तुफने आवी मिलुं रे हां, थापुं करीने
सामि ॥ क०॥६॥ कंत विना हुं कामिनी रे हां, का
सरजी किरतार ॥ क० ॥ देव विछोहो कां दियो रे
हां, दाझऊपर दियो खार ॥ क० ॥७॥ इम विलाप
करती घणुं रे हां, मनमांहे अति दुहवाय ॥ क०।

रूप देखी धरणी ढली रे हां, क्षणमांहे मूर्छाय ॥क०
॥७॥ दासी सहु दोडी मिली रे हां, टाले शीतलवाय
॥ क० ॥ केई चंदन तनु घसे रे हां, केइ जूप पूबण
जाय ॥ क०॥ए॥ पूब्या जोषी पंमिता रे हां, देवरावे
शनिदान ॥क०॥ ऊंट घोडा खर ऊंजिया रे हां, कुम
रीने कंतनुं ध्यान ॥क०१०॥ एक कहे आणी गूगलां
रे हां, नाके दीजें नास ॥क०॥ एक कहे सहु पाबां
रहो रे हां,हुं वात कहुं विमास ॥क०॥११॥ चित्रहारें
महोल चीतस्यो रे हां, कोइ कीधो मंत्र ने तंत्र ॥
क०॥ए चित्रकार ऊाकणो रे हां, कुमरी ढली एकंत
॥क०॥१२॥वात जणावो रायने रे हां, तेऊावे तत्काल
॥क०॥ कूटी पीटी तेहने रे हां,आणो इहां कणे काल
॥क०॥१३॥ जोवणने दासी फिरी रे हां, जोवंती चि
त्रकार ॥क०॥ दीठो मालणमंदिरे रे हां, खेंची काढ्यो
बार ॥क०॥१४॥ आज अदिन थारो बापडा रे हां,
ते कीधुं जूंडुं काम ॥ क० ॥ के राजा शूली दीये रे
हां, के मारे तुऊने ठाम ॥ क० ॥१५॥ गलहबो देइ
हाथशुं रे हां,केइ देता पूठें मूठ ॥क०॥ हीण वचन
मुख नांखता रे हां, पापी तुं इहांथी ऊठ ॥ क०
॥१६॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे हां, रूडुं कीधुं जूंडुं

थाय ॥ क० ॥ मानो वचन में माहरु रे हां,कुमर खेड़ जाय ॥क०॥१७॥ मानी वात मांहे सियो रे हम सुणजो सहुको लोक ॥क०॥ काने मन्त्र कही करी रे हां,कुमरीनो भांजु शोक ॥क०॥१८॥ लोक सहु पाछा फिर्या रे हां, कुमरी पडी अचेत ॥ क० ॥ पूरव वात मांझी कही रे हां, कुमरी हुई सचेत ॥ क० ॥ १९ ॥ हंसावलि हरखित थइ रे हां, तें मेली पियुनी वात ॥क०॥ कहे पियु माहरो पंखियो रे हां, किहां अवतरियो तात ॥क०॥२०॥ नाणतणे मेले करी रे हां, हुं आणुं बिहुनी वात ॥ क० ॥ पुर पयठाणे परगडो रे हां, शालिवाहन राय विख्यात ॥ क० ॥२१॥ जादव वंशें परगडो रे हां, नरवाहन तेहनो पुत ॥क०॥बहु रंग वलवल जेहनेरेहां, देश तिणे आप्यो सुत ॥ क० ॥२२॥ अणशे शाठ अंतेउरी रे हां, रतिरूपे रंभ समान ॥क०॥ बावन वीर सेवा करे रे हां,जसु सेवे मंत्रि प्रधान ॥क०॥२३॥ हंसावलि हर्षित हुइ रे हां, सुणि कंत तणो अववात ॥ क० ॥ जो मुझ कंतो मे लवे रे हां, तो गुण मानु हुं तात ॥ क०॥२४॥ नरवाहन राय मेलशुं रे हां, तुं मान विशावाविश ॥ क० ॥ परणावुं परगटपणे रे हां, जो करशे जगदीश

क० ॥ २५ ॥ मंत्री वली बोले इस्युं रे हां, अलगो पुर पैठाण ॥ क० ॥ विच समुद्र विच भूइ घणी रे हां, केम आवे इहां जान ॥ क० ॥ २६ ॥ राजाने हुं आणशुं रे हां, एकाकी इणे ठाम ॥ क० ॥ एक मासने आंतरे रे हां, सारिश तुझनुं काम ॥ क० ॥ २७ ॥ धन दीधुं कुमरी घणुं रे हां, लीधुं करीय प्रणाम ॥ क० ॥ स्वयंवरमंडप मांडजो रे हां, वासे करजो श्रे काम ॥ क० ॥ २८ ॥ मागी शिख सने इशुं रे हां, बिहु मन आनंद पूर ॥ क० ॥ ढाल हुइ दशमी इहां रे हां, कहे श्री जिनोदय सूरि ॥ क० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ १७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा पासे आवियो, जिहां रहेवानुं गेह ॥ तुं झ कुमरी परणावशुं, मास दिवसने छेह ॥ १ ॥ गुप्त पणे रहेजो इहां,को नवि जाणे वात ॥ मास दिवस पूरो हुवे, होशे तिहां विख्यात ॥२॥ कुमरी कहायो तातने, तेडावो राजान ॥ संवरमंडप मांडशुं, देजो अमने मान ॥ ३ ॥ राजा मन आनंद हुउ, कुमरी वरनी चूंप ॥ ठामठामथी तेडिया, वडा वडा तिहां भूप ॥ ४ ॥ संवर [illegible] सहु मिल्या, रुद्धिवंत–

थाय ॥ क० ॥ मानो वचन थें माहरु रे हां,कुमरी लेइ जाय ॥क०॥१७॥ मानी वात मांहे सियो रे हां सुणजो सहुको लोक ॥क०॥ काने मन्त्र कही करी रे, हां,कुमरीनो भांजु शोक ॥क०॥१८॥ लोक सहु पाछा कियां रे हां, कुमरी पडी अचेत ॥ क० ॥ पूरव वात मांकी कही रे हां, कुमरी हुई सचेत ॥ क० ॥ १९ ॥ हंसावलि हरखित थइ रे हां, सें मेली पियुनी वात ॥क०॥ कहे पियु माहरो पखियो रे हां, किहां अब तरियो तास ॥क०॥२०॥ नायतणे मेलें करी रे हां, हुं आणु पिउनी वात ॥ क० ॥ पुर पयठाणे परगको रे हां, शालिवाहन राय विख्यात ॥ क० ॥२१॥ जावब वंशें परगको रे हां, नरवाहन तेहनो पुत ॥क०॥चतु रंग बलवल जेहनेंरेहां, देश सिणे आण्यो सुत ॥ क० ॥२२॥ प्रपहो शाठ अंतेउरी रे हां, रतिरूपे रंभ समान ॥ क०॥ बावन वीर सेवा करे रे हा,जसु सेवे मंत्रि प्रधान ॥क०॥२३॥ हंसावलि हर्षित हुइ रे हां, सुणि कंत तणो अववात ॥ क० ॥ जो मुक कतो मे लवे रे हां, तो गुण मानुं हु तास ॥ क०॥२४॥ नरवा हन राय मेलशु रे हां, तुं मान विशवावीश ॥ क० ॥ परणावुं परगटपणे रे हां, जो करशे जगदीश

धावशे ॥६॥ सांभल तुं चित्रकार, राजाने हो पासे रहेजे ढूकडो ॥ जिम घालुं गले माल, राजाने हो जाणुं सहुमांहे वडो ॥७॥ सहु मनावी वात, कुमरी हो आवी आपणे मंदिरे ॥ पहेरी शोल शृंगार, राजा हवे हो बहु उछव करे ॥८॥ मलिया घणा नरींद, हंसावली आवे हो कुमरी हरखशुं ॥ नरवाहन तिहां राय, कुमरी हो जाणे कंतो निरखशुं ॥९॥ वरमाला लेइ हाथ, जोतां हो चितारो नयणे निरखियो ॥ माला घाली कंठ, राजा ने राणी हो मनमां हरखियां ॥ १० ॥ नगरे हुउं उत्साह, परणी हो हंसावली राजा हेलमें ॥ जीमाड्या सहु राय, राजापे हो राणी बे पहुतां महेलमें ॥ ११ ॥ दीधा बहुला देश, दीधा हो राजाने हयवर हींसता ॥ दीधा गयवर थाट, धवला हो ऐरावण सरिखा दीसता ॥१२ ॥दीधां दासी ने दास, दीधी हो राजाने लखरी अति घणी ॥मागे शीखसनेह, चाल्या हो राजेसर आपणी भुइ भणी ॥ १३ ॥ भले दिवसे भले वार, आया हो राजेसर परणी नारीने ॥धुरिया निसाणे घाव, आयो जो मंत्रीश्वर काम समारिने ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ २०५ ॥

जान ॥ हयवर गयवर हींसता,लोक तणा नहिं ज्ञान ॥५॥ सत्तावीश दिन इम गया, कुमरी जोवे वाट ॥ जलविण मछी टलवले,खिण खिण करे उचाट ॥६॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग खंभायती ॥ लाखा फुलाणीना ॥

॥ गीतनी देशी ॥

॥ कुमरी मनह डुवाय, अणविचार्युं हो कंता में किर्युं ॥ वरस समो दिन जाय, दुःखे न हो फाटे कंता मुज हियु ॥१॥ खिण बाहिर खिण माहिं, गोंख चढी हो कुमरी वलवले ॥ सो धन्य दिन ने मास, पूरव जवनो हो कंतो मुज आवी मिले ॥२॥ फट् चूका चित्रकार,बोल न पाल्यो हो किम तें ताहरो ॥ लोज भरी मनमांहि, धन लीधो हो कपटे तें माहरो ॥३॥ अवधि कही एक मास, जइने हो कुंवर हुं आणु इहां ॥ हजी पें न आव्यो तेह,मुज कारण हो राय आवे किहां ॥४॥ तेडाव्या सहु राय, सेवरा हो मंडप सहु आवी मल्या॥ बिहु दिन पहिली जाय,वीगे हो चित्रहारो कुमरी दुःख टल्यां ॥ ५॥ कहे चितारानें वात, नरवाहन राजा हो कब इहां आवशे ॥ आयो मोरी मात, वीरा हो राजाने सहुए व

थावशे ॥६॥ सांभल तुं चित्रकार, राजाने हो पासे रहेजे ढूकडो ॥ जिम घालुं गले माल, राजाने हो जाणुं सहुमांहे वडो ॥७॥ सहु मनावी वात, कुमरी हो आवी आपणे मंदिरे ॥ पहेरी शोल शृंगार, राजा हवे हो वहु उत्सव करे ॥८॥ मलिया घणा नरींद, हंसावली आवे हो कुमरी हरखशुं ॥ नरवाहन तिहां राय, कुमरी हो जाणे कंतो निरखशुं ॥९॥ वरमाला लेइ हाथ, जोतां हो चितारो नयणे निरखियो ॥ माला घाली कंठ, राजा ने राणी हो मनमां हरखियां ॥ १० ॥ नगरे हुउ उत्साह, परणी हो हंसावली राजा हेलमें ॥ जीमाड्या सहु राय, राजापे हो राणी बे पहुतां महेलमें ॥ ११ ॥ दीधा बहुला देश, दीधा हो राजाने हयवर हींसता ॥ दीधा गयवर थाट, धवला हो ऐरावण सरिखा दीसता ॥१२ ॥दीधां दासी ने दास, दीधी हो राजाने सखरी अति घणी ॥मागे शीखसनेह, चाल्या हो राजेसर आपणी भुइ भणी ॥ १३ ॥ भले दिवसे भले वार, आया हो राजेसर परणी नारीने ॥घुरिया निसाणे घाव, आयो जो मंत्रीश्वरकाम समारिने ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मुहता जिस्या, पूरा बुधवेप्रधान॥रा जानी चिंता हरे, मेले नवे निधान ॥१॥ बुद्धिमत पासे हुवे, सारे सघळां काज॥ नरवाहन मंत्री जयी, दे एकदेशनु राज ॥ २ ॥ राज धुरंधर रायने, मुह ता समो नहि कोय ॥ काज समारे स्वामिना, जो बुद्धि घहुली होय ॥ ३ ॥ नरवाहन राजा सदा, पूर व पुण्य पसाय ॥राणीशुं सुख जोगवे,चिंतानहि मन कांय ॥ ४ ॥ पहिलो खरू पूरोहु वो, कहेश्री जिनो दय सूरि॥ जणे गुणे श्रवणे शुणे, तिणघर आनंदपुर ॥ ५ ॥सर्वगाथा॥२०० ॥ इति श्रीहंसवछप्रबंधेरायमं त्रिपरदेशगमन मत्रीकृतबुद्धिचिन्नकारकेलवणहसाव लिपाणिग्रहणनामा प्रथमखंड संपूर्णः ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बीजो खंड्योलशु, श्रीजयतिलक पसाय॥ वरूवार हुरे करे, तुसे सरसति माय ॥ १ ॥ हंसा वलि राणी समी, नगर नहि को नारि ॥ दान शील तप जाव गुण, जाणेसहुथ्य विचार ॥ २ ॥ हं सावलि राणी तणे, गर्न हुवा बे बाल ॥ केलिगर्ज तिण सारिखा, अंगे अति सुकुमाल ॥ ३ ॥ जन्म

काल राजा हिवे, लेई दासी साथ ॥ बे बालक लेई करी, चाल्यो पृथिवीनाथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग गोडी॥ मन जमरानी देशी॥

॥ पुत्र बेइ निज निरखतो, राय मन हरख्यो रे॥ पहुतो वनह मझार, राय मन हरख्यो रे ॥ रूंख तले लेइ मूकिया ॥ रा०॥ बोल्या देव प्रकार ॥ रा० ॥१॥ ए बालक रूडा तमे ॥ रा० ॥ राखो रूडी रीत ॥ रा० ॥ ए बालक सघले सदा ॥ रा० ॥ दहदिशि हुशे विख्यात ॥ रा० ॥ २ ॥ गुप्त पणे ए राखजो ॥ रा० ॥ किणही दाय उपाय ॥ रा० ॥ बेइ बालक लेइने ॥ रा० ॥ आपणे मंदिर जाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ राणीने आणी दिया ॥ रा० ॥ कीधां जन्मनां काज ॥ रा० ॥ हंसराज नाम थापियुं ॥ रा० ॥ वडो नाह वत्सराज ॥ रा०॥४॥ मनकेसरी राय तेडीयो ॥ रा०॥ आव्यो बुद्धि निधान ॥ रा०॥ जतने बालक राखवा ॥ रा० ॥ जपें इम राजान ॥ रा० ॥५॥ बावन वीर बुद्धि आगला ॥ रा० ॥ तेहनो नहिं वेसास ॥ रा०॥ बिहुं कुमरने जाणशे ॥ रा० ॥ तो करशेज विनाश ॥ रा० ॥६॥ मनकेसरी मुहतो कहे ॥ रा० ॥ करशुं कुमरने खेम ॥ रा० ॥ परदेशे एने राखशुं ॥ रा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मुहता जिस्या, पूरा हुववेप्रधान॥रा जानी चिंता हरे, मेले नवे निधान ॥१॥ बुद्धिमंत पासे हुवे, सारे सघलां काज॥ नरवाहन मंत्री नणी, ये एकदेशनुं राज ॥ २ ॥ राज धुरंधर रायने, मुह ता समो नहि कोय ॥ काज समारे स्वामिना, जो बुद्धि बहुली होय ॥ ३ ॥ नरवाहन राजा सदा, पूर व पुण्य पसाय ॥राणीशु सुख नोगवे,चिंतानहि मन कांय ॥ ४ ॥ पहिलो खंम पूरोहु थो, कहेश्री जिनो दय सूरि॥नणे गुणे श्रवणे शुणे, तिणघर आनंदपुर ॥ ५ ॥सर्वगाथा॥२०० ॥ इति श्रीहंसराजप्रबंधेरायमं त्रिपरदेशगमन मंत्रीकृतबुद्धि चित्रकारकेलवणाहंसाव लिपाणिग्रहणनामा प्रथमखंड संपूर्णः ॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बीजो खंम बोलशु, श्रीजयतिलक पसाय॥ वरूकर हुरे करे, तुसे सरसति माय ॥ १ ॥ हंसा वलि राणी समी, नगर नहि को नारि ॥ दान शील तप नाव गुण, जाणेसहुश्र विचार ॥ २ ॥ हं सावलि राणी तणे, गर्न हुवा बे बाल ॥ केलिगर्न सिय सारिखा, श्रंगे श्रति सुकुमाल ॥ ३ ॥ जन्म

ह निराश ॥ भूख तृषा सहु वीसरी रे राय, कुमर न देखुं रे पास ॥२॥ ससनेही राय, एक घमी रे छ मास॥ विहुं कुमर विण किम करुं रे राय, दीठे पूगे आश ॥ वालेसर राय, एक घडी रे छमास॥ ए आंकणी॥ ॥१॥ तेमावो पुत्र बे माहरा रे राय, आणो मुजनी रे पास ॥ पुत्र न देखुं जां लगें रे राय, तां लगें रहुं रे उदास ॥स०॥३॥ जिण दिन नयणे निरखशुं रे राय, सो मुफ दिहाडो धन्य ॥ राय कहे राणी जणी रे राय, कर रूडु तुं मन्न ॥स०॥४॥ राणीने धीरज दियो रे राय, मूकयां तेमवा ठेठ ॥ मछी जिम ते टलवले रे राय, दोहिलुं जगमें पेट ॥ स० ॥५॥ पनर वरष पूरां हुवां रे राय, आया पुर पेठाण ॥ दीधी पुरोहित वधामणी रे राय, बेठा सहु दीवान ॥स०॥६॥ महोत्सव करी मांहि लीया रे राय, धूख्या निशाने घाव ॥ घर घर गूमी उछले रे राय, प्रणमी तातना पाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सहु जनने अचरिज हुवो रे राय, कदहीं न सुणिया एह ॥ ए अलगा किम मूकिया रे राय, एवी नेहनी देह ॥ स० ॥ ८ ॥खोले बेहु बेसाडिया रे राय, पूछे पंमित वात ॥ लगन जोवो थें रूअडो रे राय, जाय मिले निज मात ॥

रूपी परे राय एम ॥ रा० ॥७॥ शुभ मुहूर्त्त शुभ वासरें ॥रा०॥ पुरोहित पुत्र दियो साथ ॥ रा० ॥ पांच धाइ प्रतिपालजो ॥ रा० ॥ लेजो हाथो हाथ ॥ रा० ॥ ८ ॥ सार्थे सबल घालियां ॥ रा० ॥ घाल्या बहुला दाम ॥ रा० ॥ रहेतां को जाणे नहीं ॥ रा०॥ रहेजो तेथे ठाम ॥ रा० ॥ए॥ शीखामण देई करी ॥ रा०॥ लेइ चाल्या परदेश ॥ रा० ॥ नगर चल्लु देखी करी ॥ रा० ॥ कीधो तिहां प्रवेश ॥ रा० ॥ १० ॥ शुभ नगरे रहेता थकां ॥रा०॥ वर्ष हुआं जब पांच ॥रा०॥ तेड्ड जणावण मोकिया ॥ रा० ॥ ते न करे खल खांच ॥ रा० ॥११॥ पुरुष तणी बहोंत्तर कला ॥ रा० ॥ शीख्या थोडे काल ॥ रा०॥ नारीतणी चोशठ कला ॥रा०॥ वलि शीखी रागमाल ॥रा०॥१२॥ शस्त्र तणी शीखी कला ॥ रा०॥ शीखी सघली जाल ॥ रा० ॥ पनर वर्ष पूरां हुआं ॥ रा० ॥ सघलां केरी शाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मारु ॥ नल नगरीथी नीसर्यो रे राय ॥ ए देशी ॥

॥ जिण दिन कुमर वे मूकिया रे राय, राणी दु

धरू, संकलिगल हनुमंत ॥ जलयंत्रधिगुरु रुधिर विष,कांजशुं कपूरदंत ॥७॥ नरमोक्ष लंगो गुणगुहिर, अकलंक धिंगड मास ॥ भैरव भूतशिला जलो, का लरूप सुखवास ॥८॥ लोहिताक्ष ने बावरो,जस वल अधिक शरीर ॥ कालपीठ ने जंगडो, गरगतीयो धरधीर ॥९॥ अग्निजाल ने आगियो, चाचरियो चो मुख ॥ लोहखरो ने भूचरो, देतो दादर दुःख॥१०॥ शक्तिकुमर तें सामटा,सघले मानी हार ॥ वीर सहू मन खल नळ्या, हूउं किश्यो प्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रिजी ॥

॥ राग सिंधू ॥ चरणाली चामुंडा रण चढे ॥ एदेशी ॥

॥ वीर सहु मन चिंतवे,ए हुवा आपण सालो रे॥ पांचे दिन जातां थकां, इहांथी आपणो कालो रे ॥ वी० ॥१॥ बावन वीरे शुं कियो, पहुता देवी पासो रे ॥ हम सेवक सहु ताहरा, पूर हमारी आसो रे॥ वी०॥२॥ हंसावलि राणी तणा,बेहु हुआ अंग जातो रे ॥ बल बुद्धि गुण आगला, हुवा सहु विख्यातो रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ बे बालकनो वध करो, के करो घणा सचिंतो रे ॥ देशवटो दूरें दियो, अमने करो निचिं तो रे ॥ वी० ॥४॥ शक्ति कहे तुमे सांभलो, मास्या

स०॥७॥ जोयां लगन मिलि ज्योतिषी रे राय, बोले सहुअ विचार ॥ विद्याए सरीखो को नही रे राय, श्रासे वरष मकार ॥ स० ॥१०॥ तहत्ति वचन सहुये कियो रे राय, मान्यो जोषीनो बोल ॥ इण दिवस मलिया थकां रे राय, होशे सहि रंगरोल ॥ ११ ॥ सहुको जन थानक गयां रे राय,कीधो भूप पसाय॥ रतन दस्रो ते श्रापियो रे राय,उलट श्रग न माय॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय पासे जोजन कियो,बोले बावन वीर॥जाणु नवीये नरवरा,जोस्यां जोर शरीर ॥ १ ॥ दस्रो लेइने चालिया, मलिया नरना थाट ॥ कीकिनगारांनी परे, वहेता मारग वाट ॥२॥ हंस वंश एकण दिशे, इक दिसि बावन वीर ॥ जुके मूजे धसमसे, नवी नर वदा तीर ॥ ३ ॥ जे जण श्रागल हारशे, सो पकरो सहु पाय ॥ सहुरू वकाद को नही,शका मकरो कांय ॥४॥ मेघनाद सहुमें वडो, बीजो नामी श्रोड॥काल भयंकर भुंजलो, शस्त्रचूरु शुलिमोरु ॥५॥ भीम भयं कर पांकुरो, वडनल ने विखमोड ॥ गोरडो गुणवंतो वली, सबलो संकलतोड ॥ ६ ॥ नगर फाड भरनी

धरू, संकलिगल हनुमंत ॥ जलयंत्रधिगुरु रुधिर विष,फांजशुं कपूरदंत ॥७॥ नरमोरू लंगो गुणगुहिर, अकलंक धिंगड मास ॥ भैरव भूतशिला भलो, का लरूप सुखवास ॥८॥ लोहिताक्ष ने वावरो,जस वल अधिक शरीर ॥ कालपीठ ने जंगडो, गरगतीयो धरधीर ॥९॥ अग्निजाल ने आगियो, चाचरियो चो मुख ॥ लोहखरो ने भूचरो, देतो दादर दुःख॥१०॥ शक्तिकुमर तें सामटा,सघले मानी हार ॥ वीर सहू मन खल भल्या, हूर्ड किश्यो प्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रिजी ॥

॥ राग सिंधू ॥ चरणाली चामुर्मा रण चढे॥ एदेशी ॥

॥ वीर सहु मन चिंतवे,ए हुवा आपण सालो रे॥ पांचे दिन जातां थकां, इहांथी आपणो कालो रें ॥ वी० ॥१॥ बावन वीरे शुं कियो, पहुता देवी पासो रे ॥ हम सेवक सहु ताहरा, पूर हमारी आसो रे॥ वी०॥२॥ हंसावलि राणी तणा,बेहु हुआ अंग जातो रे ॥ बल बुद्धि गुण आगला, हुवा सहु विख्यातो रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ बे बालकनो वध करो, के करो घणा सचिंतो रे ॥ देशवटो दूरें दियो, अमने करो निचिं तो रे ॥ वी० ॥४॥ शक्ति कहे तुमे सांजलो, मास्या

न मरे मर्मो रे ॥ पर्जनु शुद्ध नवि हुवे, पोते पूरो धम
रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चिंतातुर करशु घणा, चूकावुं इ
ठामो रे॥मात तातथी चूकवुं, शक्ति सही शुभ नाम
रे ॥ वी० ॥६॥ इण वचने सहु सुखी हुआ, पहुत
रामस काजो रे॥शक्ति देवी तिहां शु कियो, पहुत
जिहां हसराजो रे ॥ वी० ॥७॥ दक्षो ठगास्यो दा
शु, देवी अदृष्ट ते कीधो रे ॥ वे बांधव जोता फि
एको काम न सीधो रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ ठाम ठा
जोयो घणो, किहांही न लाधी वातो रे॥ वीरक
वत्सराजने, कुण उत्तर देशां तातो रे ॥ वी० ॥९
एक जणे वत्स सांभलो, वडो गयो राजलोको रे॥
तिहां जाइ आणो तुमे, जिम भांजे मन शोको रे॥
वी० ॥ १० ॥ हस जणे वत्सराजने, यो मुझने अ
देशो रे ॥ तुम प्रसादे हु आणशु, करशु काम वि
यो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ सुण जाइ मुझ विनति, प
यो लेवा काजो रे॥ विलंब तिहां करवो नही, शीर
विषे वत्सराजो रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ श्रणशे शाठ अते
उरी, आपणी तिहां ठे मातो रे ॥ मान वचन तु
माहरु, म करे कांइ तु घातो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ए
र्थ गाथा ॥ २५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥मागी शीख सनेहशुं, पहोतो तिहां कुमार॥रा जलोक राजा तणो, जनो पोलि डुवार ॥ १ ॥ तेह वे दासी नीकली, दीठो पुरुष प्रधान ॥ राणीने आ वी कहे,थो एक अमने मान ॥ २ ॥ आवो जुवो आंगणे, कुण नर जनो वार ॥ राणी नजर निहालि यो, रीष धरी तेणि वार ॥ ३ ॥ रोष जरीराणीकहे, नरवाहन मुज स्वामि ॥ जो जनो तुज जोशे, सजी ते मारशे ठाम ॥ ४ ॥ द्वारायत इम विनवे, तुम स रिखो जो जोइ॥के जाणेज जतीजको, के बंधवबेटो होइ ॥ ५ राणी वातज सांजलि, आयो पुत्र के आज॥दासी वचनेज मानियुं,के हंसकेवत्सराज॥६॥

ढाल चोथी ॥

॥ राग सोरठ ॥ देशीवर्यत्तनी ॥ राजाइ लावे बलजद्र नार ॥ ए देशी ॥

॥ राणीने करे रे जुहार, राणी हरखी तिण वार ॥ हंसावलि लीधो हरखे, वार वार पुत्रपे निरखे ॥ ॥ १ ॥ मल रंगे मकुर वधाया, जली होइ तुमे इहां आया ॥ पूछे वत्सराजनी वात, जेटशो ते विहाणमें मात ॥ २ ॥ आज दिवस अछे माय जूंरो, पण वि

हाणे अछे दिन रूडो ॥ तुं कांइ मिल्यो वत्स आज, कुमुहूर्ते विणसे काज ॥३॥ मा जेव्यां आणव थाय, मा जेव्यां पातक जाय ॥ मात आयो तु हुं काज, इम जंपे ते हंसराज ॥४॥ सवा कोडी दडो इहां आयो, तिणे वांसे मा हुं धायो ॥ हवे शीख दियो मुझ माइ, वली जोउं इहांथी जाइ ॥५॥ ते वलो उंरहो जो लीजे, वत्सराज जाइने दीजे ॥ इम शीख लीधी तिहां माय, जननीने लागो पाय ॥६॥ माता मंदिरे जाय, दडो तिम तिम आघो धाय ॥ ते किहां नहिं पायो,जोइ जोईने पाछो आयो ॥७॥ हंसराज हुवो उदास, एक मंदिर दीठुं पास ॥ विविध तिहां वाजां वाजे, जेणे करी अंबर गाजे ॥ ८ ॥ सामी एक आवी दासी, हंसराज पूछे विमासी॥कहे किणनु छे ए गेह, मुझने भाखो सवि तेह ॥९॥ तव दासी बोली आम, लीलावती राणी नाम॥ राजानु छे बहु मान, इण घर ऋद्धि तणुं नहिं ज्ञान ॥१०॥ तेहनो ए छे आवास, सहु वात कहे इम दास॥गयो तिहां राजकुमार, राणीने करे जूहार ॥ ११ ॥ राणीने कुमरे निरखी, इंद्राणी अपछर सरखी ॥ राणी पण दीठो कुमार, एहवो नर नही संसार ॥१२॥ एहशु भोगवो

यें जोग, जो पुण्य मले संयोग॥राणी कीधा शोले शणगार, आव्यां जिहां हंसकुमार॥ १३॥ आवीने कुमरने निरखे, हाव जाव करे मन हरखे ॥ मुख चंदकला जिम सोहे, नर नारी तणां मन मोहे ॥१४॥ जुजदंम जिस्या जंकाली, शोहे शोल वरसनी बाली॥ आंखडली अति अणियाली, कज्जल जिम कीकी काली ॥१५॥ सोहे कीर जिसी मुख नासा, जलां वस्त्र सुगंध सुवासा॥कानें विहु कुंडल दीपे, जाणे शशी सूरज झीपे ॥१६॥ लीलावती चाले ठमके, पाय ने उर घूघर घमके॥कटिमेखला घूघरीयाली,सहीयरशुं देती ताली ॥१७॥ कंठें पहेस्यो नवरस हार, राणी रति तणे अनुहार ॥ करकंकण मोती जमियां,जाणे आप विधाता घमियां ॥ १८ ॥ कवि उपमा केहवी आखे,राणी हवे किश्युं जांखे॥तोशुं मोरी प्रीति अपार, जाणे परमेसर सार ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥२७०॥

॥ दोहा ॥

॥ हंस दिठे हरखित हुइ, नवि मूके ते ठाम ॥ मुख नीशासा मूकती, कीश्युं न करे काम ॥ १ ॥ कामथकी सीता हरी, रावण ले गयो लंक ॥ दशशिर रावण छेदियां, काम तणा ए वंक ॥ २ ॥ कामवशे

द्रापदी हरी, पांचे पांडव नार ॥ इसवछे आर्य
सती, दोहिलो काम संसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ सीताने संदेशो रामजीए मोकल्यो रे ॥ अ
थवा निंदा म करजो कोइनी पारकी रे ॥ए देशी ॥

॥ हसकुमर राणीने कहे रे, में कीधो तुमने जु
हार रे ॥ मुज आशीष न दीधी तुमे रे, कहो मुज
किस्यो प्रकार रे ॥ ह० ॥ १ ॥ ठोरु कुठोरु हुवे स
दा रे, मा बाप न धरे रीश रे ॥ अणाल आया मा
टें शु करे रे, माय बाप धूणे शीश रे ॥ ह०॥ २ ॥
कार लोपी कहे कामिनी रे, न गयो सगपण लाज
रे ॥ रीश नही कांइ माहरे रे, माहरे ठे तुजशु काज
रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ सगो पुत्र नही तु माहरो रे, तु
मुज शोकी मात रे॥इण सगपण कांहिं नही रे, अ
तर दिन ने रात रे॥ह०॥४॥हस जणे हु आवियो रे,
रतन वखाने काम रे ॥ राजलोक में जोश्यो रे, फि
रियो गामो गाम रे ॥ ह० ॥५॥ तेह वडो गयो हा
थथी रे, तेहनी जे मुज चिंत रे॥ राणी कहे ते आ
पशु रे, जो मुज धरशो प्रीत रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ राणी
वडो देखाडियो रे, तो आप ई लक रे॥मह्हारी वा

त मानो खरी रे, मति लोपे तुं मुज रे ॥ हुं० ॥७॥ जंघा मांस मीठुं घणुं रे, कांइ आपणपे न खवाय रे ॥ मात विचारि जुवो तुमे रे, ए काम मुजथी न थाय रे ॥ हुं० ॥८॥ कुमर कहे कामी जिको रे, ते थाय सदाइ अंध रे ॥ हित युगति जाणे नही रे न लहे मर्मनो बंध रे ॥ हुं० ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ १एए ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी चणे, अंतर नहिं को देह ॥ बाप बेटी सासू वहू, नणंद जाणेजी तेह ॥ १ ॥ काम विकारे कामिनी, न गणे अंतर कोय ॥ बहेन जाइ माता सुता, चूकावे नर सोय ॥ २ ॥ वेद सार ब्राह्मण तणी, कामलुब्धि घर नार ॥ वेद विचक्षण पुत्रशुं, चूकी करे संसार ॥ ३ ॥ आदिनाथ अरिहंत तजी, सगी बहेन घरवास ॥ रहनेमी राजीमती, रहियां मनहिं विमास ॥ ४ ॥ पाप नही को कुमर जी, मोशुं धर तुं राग ॥ मान वचन तुं माहरुं, जो होय पोते जाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल बठी ॥

॥ राग केदारो ॥ शोलमो शांति जिवनर नमुं ॥ अथवा ॥ स्वामी सीमंधर विनती ॥ ए देशी ॥ तहा

रु रूप देखी करी, उपनो मुझ मन मोह रे ॥ दीन वचन मुख भांखती, लोचन जरि मुख जोह रे ॥ ता० ॥ १ ॥ जलचर जीव जिम जलविना, मरण लहे ततकाल रे ॥ तिम तुझ विरहे हुं आकुली, कामज्वल परजु तु टाल रे ॥ ता० ॥ २ ॥ नमन करी खोलो पाथरे, नयणे न खमे राणी भार रे ॥ माहरे जीवन तु सही, कर हवे मुझ तणी सार रे ॥ ता० ॥ ३ ॥ वचन माहरुं तुमे मानशो, आपशुं तुझ जणि राज रे ॥ कुमर ए वचन सुणि कोपियो, बोलियो तब हसराज रे ॥ ता०॥४॥ इण भवें मात तु माहरी, मुझथकी किम चले वंश रे ॥ समुद्र म र्यादाथी जो मिटे, अगनी करे जो शशक रे ॥ता० ॥५॥ पश्चिमसूर जो ऊगमे, धरणी रसातल जाय रे॥ सायर मीतु जो जल हुवे, तो मुझ काम न थायरे ॥ ॥ ता० ॥ ६ ॥ कुमर जणी कहे मानिनी, मान तु माहरी वात रे ॥ तूठिय सुख तुझ पूरशु, रूठिय कर शुं तुझ घात रे ॥ता०॥७॥ कुमर जणे सुण मात जी, रूठे चूंचु किम थाय रे ॥ मिश्री खातां थकां दंत जो, पडी-जाय तो जाय रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ कुमरजी साह स आदरी, लोपी मातनी लाज रे ॥ हाथमीलेंची

दडो लियो, चाल्यो लेई हंसराज रे ॥ ता० ॥ए॥ रा णीयें कौतुक जे कियां, कहेतां न आवे छेह रे ॥ लाज मर्यादा मूकी करी, आप वलुरीयो देह रे ॥ ता० ॥ १० ॥ शोक्यना पुत्रने सामटा, वेहु मरावशुं गम रे ॥ नाम लीलावती तो खरी, जो करुं एहवुं काम रे ॥ त० ॥ ११ ॥ कंचुर्ड फाडि कटका कियो, फाडियुं सुंदर चीर रे ॥ उंधे मुखें पडी खाटले, सर्व संकोचि शरीर रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एम उपाय राणी करी, कीधुं कपट अपार रे ॥ शोलमी ढाल पूरीहुई, कहे श्री जिनोदय सार रे ता० ॥ १३ ॥ ३०ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी तणे, मंदिर आयो राय ॥ राणी किहां देखी नही, मंदिर खावा धाय ॥१॥ पूछे राय सहेलियां, राणी नहिं आवास ॥ कर जोडी दासी कहे, राणी अछे उदास ॥२॥ उंरामांहि अलगी थकी, सूती छे तिहां जाइ ॥ वात सुणीने शंकियो, पहोतो राजा धाइ ॥ ३ ॥ कहे राणी सूती किमे, कहे तुं मननी वात ॥ पटराणी तुं माहरी, तोशुं अधिकी प्रीत ॥४॥ बोलावी बोले नही, खेंच्युं रायें चीर ॥ [illegible]

हस तणी हुं भारजा, तिण ससरा थें थाय ॥ अब
गा रहेजो अभयकी, मनमें चिंते राय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धुंधलो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ राणी वचनज सांभल्युं रे लाल, राजा रह्यो वि
मास रे ॥ वालूडा ॥ सिंह तणां जे वाछडां रे लाल,
कहो किम खाये घास रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ १ ॥ पर
नारी बधव हुता रे लाल, गंगाजल जिम पूत रे ॥
॥ वा० ॥ जादववंशें उपना रे लाल, कीधो केहो सू
त रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ २ ॥ नजर भरी राय जोइयुं
रे लाल, फाल्यु सुंदर चीर रे ॥ वा० ॥ कंचुको तें
काढीयो रे लाल, देखाडीयु ते शरीर रे ॥ वां० ॥ रा०
॥ ३ ॥ ते देखीने शंकियो रे लाल, मीठो लहु ए कू
ड रे ॥ वा० ॥ गुणथी अवगुण मानीयो रे लाल,
भंभेरी कियो धूड रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ इधण
घृत जिम घालियां रे लाल, अधिको अग्नि दिपाय रे
॥ वा० ॥ राणी तणे वचने करी रे लाल, भमभमियो
नम राय रे ॥ वा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ दासी तेडवा मो
कली रे लाल, पहोता मंत्रुता पास रे ॥ वा० ॥ साथ
दिये ठे सामीजी रे लाल, राणी तणे आवास रे ॥ वा०

॥ रा० ॥ ६ ॥ मनकेसरी मुहुते तिहां रे लाल, आ
वी कीयो जुहार रे ॥बा०॥ राणी वात सहु कही रे
लाल, मुहुतो करे विचार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥७॥ रा
णीयें शरीर वलूरियुं रे लाल,नही कोइ पुरुषनो हाथ रे
॥ बा० ॥ स्त्रीयां अनरथ उपजे रे लाल, संतेख्यो इ
णें नाथ रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ८ ॥ राय कहे मंत्री सु
णो रे लाल, मारा ए बेहु पूत रे ॥बा०॥ ढील इहां
करवी नहीं रे लाल, राख्यो न रहे सूत रे ॥ बा०
रा० ॥९॥ मनकेसरी महुतो कहे रे लाल, कूमो म
करो रोष रे ॥बा०॥ नारी वचन नवि मानिये रे ला
ल, कुमरनो नहिं को दोष रे ॥बा०॥रा०॥१०॥ अण
विचार्युं नवि कीजिये रे लाल, कीजे कामविचार रे
॥ बा० ॥ दोष दई शिर उपरे रे लाल, नारी चरित्र
अपार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ जोजोने नर पंकि
ता रे लाल, सुसर मनावी हार रे ॥बा०॥ वेगवती
वलि ब्राह्मणी रे लाल, दोष दियो अणगार रे॥बा०
॥ रा० ॥१२॥ इम जाणी नवि कीजिये रे लाल, हं
स न दीजे छेह रे ॥बा०॥ पांचे दिन जातां थकां रे
लाल, इणथी रहेशे गेह रे ॥ बा० ॥ रा० ॥१३॥ क
र्म मेले बे किहां वध्या रे लाल, पनर वरश परदेश रे

॥वा०॥ राय चरणे इहां आविया रे लाल, कर्मे की यो प्रवेश रे ॥ वा० ॥ रा० ॥१४॥ सर्व गाथा ॥३२९

॥ दोहा ॥

॥ राजा राणी वेहु जणे, मूल न मानी वात ॥ वार वार मत पूछजो, करजो विहुनी घात ॥ १ ॥ राय कहे तिम पाधरो, पासो पडे ते दाव ॥ निर्धन पुरुषनु वोलवुं, जाणे वायो वाय ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ धन सार्थवाह साधुने,दी' घृतनु दान ॥ ललना ॥ राग जयश्री ॥

॥ राय भणे सुहसा भणी,काम करो हवे जाय॥ राजा ॥ राणी दु ख दूरें करो,शंका म करो कोय॥ रा० ॥१॥ राणीनु मन राखवा, कुमर चलाव्यो मोह॥ रा० ॥ राजा राणीने कारणे, मनमांहे धरतो कोह ॥ रा० ॥२॥ मनकेसरी मन दृढ करी, लागो रा' पाय ॥रा०॥ वे बालक मारयां थकां, लोके फद्द फ थाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ कहे राणी सुहता भणी, जो ‹ फ जीवण काज ॥रा०॥ वे जिम श्रीजो मेलशु,नरि गणशुं तुफ लाज ॥ रा० ॥ ४ ॥ मनकेसरी मन ह कीयो, जिम कहियें तिम साच ॥रा०॥ काम करुह

मातजी, मानजो तमे मुफ वाच ॥रा०॥५॥ राजा रा
णीवे जणां, मान्यो मन संतोष ॥रा०॥ मनकेसरि मुहु
तो कहे, मत देजो मुफ दोष ॥रा०॥ (पाठांतरे)॥ नयणे
नयण देखाडजो, जाजो राजा शोष ॥रा०॥६॥ लइवीडुं
मंत्री चल्यो, आयो कुमरो पास ॥ रा० ॥ मनकेसरी
तिहां मांडीने, सघलो कीधो प्रकाश ॥ रा० ॥ ७ ॥ चार
रतन साथे दीयां, दीधा हयवर दोय ॥ रा० ॥ प्रछ
न्नपणे दोउ काढीयां, कर्म तणी गति जोय ॥ रा०
॥ ८ ॥ साथे संवल घालियो, घाल्या बहुला दाम ॥
रा०॥ हित शिखामण देइने,नीसरिया आराम ॥ रा०
॥९॥ मनकेसरी मुहता तणे, वेहुजण लागा पाय ॥रा०
॥ जीवदान श्राहरो दीयो, ते ऊरण किमहिं न थाय
॥ रा० ॥ १० ॥ आंखे आंसु नाखता, मूकंता नीशा
स ॥रा०॥ हंसावली राणी भणी,- मलवा हूती आश
॥ रा० ॥ ११ ॥ माणस मनमांहि चिंतवे, मनोवंछि
त पूरेश ॥ रा० ॥ दैव भणे रे बापडा, हुं तुफ अवर
करेश ॥ रा० ॥ १२ ॥ पुण्य विहूणां माणसां, चिंत्युं
निष्फल थाय ॥ रा० ॥ जिम कूवामां बांयडी, आ
ल माल होइ जाय ॥ रा० ॥१३॥ मनकेसरी कहे सां
भलो, रोयां न लाभे राज ॥ रा० ॥ करतां दृढ मन

श्रापणु, सीझे वंछित काज ॥ रा० ॥ १४ ॥ ए
वें गाथा ॥ ३४५ ॥

॥ दोहा ॥ गोडीरागमध्ये ॥

॥ एम शिखामण देइने, वलियो पाठो गेह ॥ म
नकेसरि मन चिंतवे, राखु सघली रेह ॥ १ ॥ दोइ
मृग हणियां तिहां, पारधि दीठो एक ॥ तेहना नेत्र
मागी लियां, मनमें श्राणि विवेक ॥ २ ॥ ते लो
चन लेई करी, पहोतो राणी पास ॥ लोचन लेइ
आगे धर्यां, कीधो सहु प्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढालनवमी ॥ नायकानी देशीमां ॥

॥ राणी लोचन देखीने रे लाल, धरियो श्रग उल्ला
स रे ॥ लीलावती ॥ महारु जाएयु मे कियु रे लाल,
पहोंचाड्या सर्गवास रे ॥ लीलावती ॥ रोप धरी म
नचिंतवे रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कहे राणी
लीलावती रे लाल, कहो मुहता एक वात रे ॥ली०॥
किण स्यानके लेइ जइ रे लाल, कीधो वेहुनो घात
रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २ ॥ कहे मंत्री सुणो मातजी
रे लाल, आंखे पाटा बांध रे ॥ ली० ॥ रणमांहे ले
जाइने रे लाल, मार्या वेहुने कांध रे ॥ ली० ॥रो०
॥ ३ ॥ वे बालकने मारतां रे लाल, कांइ कही मुख

वातरे ॥ली०॥ मनकेसरी मन अटकली रे लाल, ली
धी अंगनी धात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ४ ॥ कहे मंत्री
सुण मातजी रे लाल, हंसे कही एक वात रे ॥ ली०
॥ राणी वचन नवि मानियां रे लाल, तो थावे छे घा
त रे ॥ली०॥रो०॥५॥ राणी वचन जो मानता रे ला
ल, तो थावत सहु काज रे ॥ ली० ॥ तिणि वेला
हुं पातस्यो रे लाल, एम बोल्यो हंसराज रे ॥ ली०
॥ रो० ॥ ६ ॥ जो मुखथी एम चाखियुं रे लाल, कां
इ विणास्यो बाल रे ॥ली०॥ प्रछन्नपणे इहां राखती
रे लाल, हवे मुझ हुवो साल रे ॥ ली० ॥ रो० ॥
॥ ७ ॥ कांइ कुमति मुझ ऊपनी रे लाल, धूणे राणी
शीश रे ॥ ली० ॥ अणविमास्युं में कीयुं रे लाल,
रूठो मुझ जगदीश रे ॥ ली० ॥ रो० ॥८॥ मनकेस
री मन चिंतवे रे लाल, राणी तणां ए काम रे ॥ली०
राजाने चंजेरीयो रे लाल, माम गमाइ गाम रे ॥
ली० ॥ रो० ॥ ए ॥ वात सुणो हवे आगली रे ला
ल, सुणतां अचरिज थाय रे ॥ ली० ॥ रात दिवस वा
टें वहे रे लाल, अतिजय मन न खमाय रे ॥ ली०
॥ रो० ॥ १० ॥ विषमा पर्वत वांकडा रे लाल, वि
षमी वहेता वाट रे ॥ली०॥ नदियां निज्झरणां निहा

चता रे लाल, चीपमा लंघे घाट रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ११ ॥ विण विशामे चालता रे लाल, भूख तृषा सहे देह रे ॥ ली० ॥ शीत ताप सघलो सहे रे लाल, सुख दुःख नहिं को छेह रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १२ ॥ वे जाई रणमां फिरे रे लाल, मनुष्य मात्र नहिं कोय रे ॥ ली० ॥ किहां चढिया पाला चले रे लाल, कर्म तणां फल जोय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १३ ॥ वनखम तरुवर देखतां रे लाल, कायर कंपे प्राण रे ॥ली०॥ एक एकमांहे मीस्या रे लाल, जिहां नवि दीसे जाण रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १४ ॥ वाघ सिंह गुंजे घणा रे लाल, मृगलां देतां फाल रे ॥ ली० ॥ सूअर सावर रोजडा रे लाल, देखे नाग विकराला रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १५ ॥ एम अटवी लंघी घणी रे लाल, वा तो करता जाय रे ॥ ली० ॥ हंस जणे वरसराजने रे लाल, लागी तरष मुज कांय रे ॥ ली० ॥रो०॥१६॥ नगरथी आपण नीकल्या रे लाल, थाक्या जेवा आज रे ॥ली०॥ पहला कदीय न थाकता रे लाल, बोले तब वछराज रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १७ ॥ इण वड तलिये वें वीशमो रे लाल, जोवुं पाणी ठाम रे ॥ ली० ॥ हमणा आणी पावशु रे लाल, तो वछ

महारुं नाम रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १८ ॥ वडलातले हंस विशम्यो रे लाल, लाधुं सुख शरीर रे॥ली० ॥ घोडो वरु तले बांधियो रे लाल, वछ गयो लेवा नीर रे ॥ ली० ॥ रो० १९ ॥ ढाल हुइ ढंगणीशमी रे लाल, कहे श्री जिनोदय सूरि रे ॥ ली० ॥ वछरा ज जल कारणें रे लाल, जोतां पहोतो दूर रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वछराज जल कारणे, चढियो तरुवरमाल ॥ जलचर शब्द तिहां सुण्यो, दीठि सरोवर पाल ॥१॥ चक्रवाक सारस घणां, पहुतो तिहां कणे वीर ॥ कमलफुल मांहे तीरे, दीठु निर्मल नीर ॥ २ ॥ गरुड पंखी वासो वसे, मत्स्य कछनुं ठाम ॥ जोवानो अवसर नहिं, जलने आयो काम ॥ ३ ॥ ठाम विसार्यो ढागलो, जल लियो पोयणपाम ॥ जल लेई पाछो वल्यो, देखे सर्व आराम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी जावनानि ॥

॥छकीडो न छोडे रे गीरांदेरो छेडलो रे, हांरे मारी छे रे मद पाइ ॥ ए देशी ॥

॥ वररासज जब नीसर्यो रे,नीसर्यो हो पाणी

सेवा काज॥ांसें सुखे हंस वीशम्यो रे, हो वाट जोवे हंसराज ॥१॥ पाणीहु पाठे जाइ हु तरशो थयो रे, हो काइ जोवाओ रे घाट, पाणीना विहुणो रे जाइ हु केम रहु रे, क्षणमाहे थयो उचाट ॥ पा० ॥कां० ॥ ॥२॥ हवे पासे जे कौतुक हुवो रे, हो वडनी टाढी छांह ॥ नीचे वीछायो खडनो साथरो रे, हो देइ ठेशी शे बाह ॥पा० ॥कां० ॥ ३ ॥ आवी निद्रा वली हंस नेरे, हो वडो निसरियो साप॥ हंस सुतो आव्यो ति हां रे, हो पोते प्रगटयु पाप ॥ पा० ॥ कां० ॥ ४ ॥ गाम गाम हंसने डस्यो रे, हो वेगे हियडे आय ॥ पवन पियो तिणे पाणीयें रे, हो डशणी रक ते खाय ॥पा०॥ कां० ॥५॥ मारग आयो वरस उतावलो रे, हो भाई केरे रे काज॥पाणी पाइने हु सुख करु रे, हो प म चिंते वछराज ॥ पा० ॥ का० ॥ ६ ॥ सर्वे वींगे वछने आवतो रे, हो उतरियो ततकाल ॥ वड रा जे पण नयणें निरखियो रे, हो वींगें पेठो जाल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ७ ॥ नाग गयो निज स्थानके रे, हो पेठो वडने मूल ॥ हंसराज सुतो तिहां आवियो रे, हो वींगे डशनो शुल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ८ ॥ नी लवरण तनु निरखीयो रे, हो जोवण लाग्यो नाड ॥

चेतन देखी चित्तमां चिंतवे रे, हो वनमें ऊठीधाड ॥ पा० ॥ कां ॥ ए ॥ पाणी परहुं नाखियुं रे, हो लांबी मेली हाथ ॥ जाई विना हुं केम रहुं रे,हो व खखावाने धाय ॥ पा० ॥ ॥ १० ॥ जाई तें कीधुं कि श्युं रे,हो कीधो हुं निराधार ॥ सार करतुंजाईमाह री रे, हो दीधोछतें खार ॥ पा० ॥ कां ॥ ११ ॥ वार वार वछ बेठो करे रे रे, हो नीचोधरणीजाय॥ शक्ति गई सहु शरीरनी रे, हो पाणी अन्न नखाय ॥ १२ ॥ पा० ॥ कां० ॥ वछ कुमर फूरे घणुं रे हो, किहांइ न देखे श्वास ॥ गलहछो देइ हाथशुं रे,हो बेठो रोवे पास ॥ १३ ॥ पा० ॥ का० ॥ जाइ तें की धु किश्युं रे, हो हुं बेठो वनवास ॥ मुजने देतुंबो लडां रे, हो जिम मुज पूगे आश ॥ १४ ॥ पा० ॥ कां० ॥ मुजशुं प्रीति हती हंसताहरी रे, हो सो दुइ केथी आज ॥ मुजहुंती अलगो थयो रे हो, विलपे इम वछराज ॥ १५ ॥ पा० ॥ कां ॥ जननीगर्जे बे ह ऊपन्या रे, हो जन्मा बेहुं समकाल ॥ परदेशेंबे हुं आपे वध्या रेहो, वेउ जणिया रागमाल ॥ १६ ॥ पा०॥ कां ॥मातायें वली अपमाणिया रे, होराजा कीधी रीश ॥ मनकेसरि आपणनेमूकियो रे, हो

देदता आपणु शीश ॥ १७ ॥ पा० ॥ का० ॥ आप
वेडुं तिहांथी नीसरया रे, हो आव्या इणेउद्यान ॥
पाणी लेवाने हुं गयो रे, हो तु सूतो इण रान ॥
१८ ॥ पा० ॥ कां० ॥ जीव्यो जाइ माहरो विन का
रिमो रे, हो धालुगलेमे फास ॥ राग हतो जोमुजर्थ
ताहरो होरे, हा इणविध करे विमास ॥ १९ ॥ पा
॥ का० ॥ ॥ इस मुवो माता जाणशे रे हो हेडे
शे वाह ॥ नयणे नीर प्रवाह थशे रे, हो सरखीवेशे
धाह ॥ २० ॥ पा० ॥ कां० ॥ सर्व गाथा ॥ ३९९ ।

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ मायमी अनुमति दियो मुक आज ॥ ए देशी
॥ माता मनमें जाणती जी, मोसरखी नहिंनार
पुत्र अच्छा बे जोडलेजी, होशे मुजआधार रे॥ बंधव
॥ १ ॥ तें कीधी निराशरे बधव, हेये विमासीजोय
आकणी ॥ बे बालकसहोटा होशे जी, जाणशे शा
अनेक ॥ नारी घणी परणावशुं जी, जीणमाहिं घ
विवेक रे ॥२॥ बधव० ॥ बे बालक राजा होशे जे
वेलीश बेहुनां सुख ॥ महवी वातजो जाणशेजी,
हेडे धरशे दुःख रे ॥३॥ बधव०॥ सेज सुवाली '
दतो जी, केहींहोला खाट ॥ अशुं सूतो साथरे जे

वहेता मारग वाट रे ॥४॥ बंधव०॥ मनोवांछित सुख पामतो जी,करतो सरस आहार॥ कर्मवशे रणमें पड्यो जी,अन्न न लाधो वार रे ॥५॥बंधव०॥महेल जले तुं पोढतो जी,कर्म वरुनी छाय ॥ उंशीशां जिहां दीजतां जी,सो शिर नीचे बांह रे ॥६॥बंधव०॥सेवक तुऊ सहु सेवता जी,सहुको करता आश ॥ एकलडो इहां वीशम्यो जी, जो जो कर्मप्रकाश रे ॥७॥ बंधव०॥ हुं मनमांहे जाणतो जी,बांधव छे मुऊ बांह ॥ मुऊने कोण गंजी शके जी, ए शीतल छे छांह रे ॥८॥बं०॥ एम मन डुःख कीधुं घणुं जी,रोयां न आवे राज ॥ रण रोया जाणे नहिं जी,एम जंपे वछराज रे ॥ए॥ बंधव० ॥ एम मन पाछुं वालियुं जी, साहस धरियुं अंग ॥ एकलडो हुं इहां कणे जी, नहि कोइ बीजो संग रे ॥१०॥बंधव० ॥ साहस धरीने ऊठीयो जी, प होतो सरोवर ठाम ॥ समुद्र तणी परे सारखुं जी, श्रवण सरोवर नाम रे ॥११॥ बंधव०॥रहे तिहां सारस पंखियां जी,गरुड लहे विशराम ॥ जल आश्रय क्रीडा करे जी,वडतरु तिहां अभिराम रे ॥१२॥बं०॥ लघुबांधव कंधे करी जी,आव्यो वडनी हेठ ॥ वडनी शाखें बांधीयो जी,न पडे केहनी दृष्ट रे ॥१३॥बंध०॥

सरोवर जल सिंची लियो जी, शरीरें कियो सनान॥ फिट रे हैमा कारिमा जी, जीव्यो तु कये ज्ञान रे ॥ १४ ॥ वधव० ॥ एक तुरी हाथे अल्लो जी, बीजे हुर्ड असवार ॥ तिहांथी आघो संचर्यो जी, सुणि यो वाजित्र धोकार रे ॥ १५ ॥ वधव० ॥ तिण दिशि आघो संचर्यो जी, दीठुं नगरी स्थान ॥ कुंती नगरी परगडी जी, बार जोयणनु मान रे ॥१६॥ वध०॥ लोक भणी तिहां पूठीयु जी, नगरी नृपनुं नाम ॥ तुरी रतनने इहां वेचीने जी, लेवुं चवन इण गाम रे ॥ १७ ॥ वधव० ॥ ते चवन हुं लेइने ही, देशु बांधवदाग ॥ ढील हवे करवी नहिं जी, एम चिंते महाभाग रे ॥ १८ ॥ वधव० ॥ वत्सराज कुती गयो जी, वासें पुण्य प्रकार ॥ गरुड पखी तिहा आवियो जी, हंस करेवा सार रे ॥ १९ ॥ वधव० ॥ जिण हाथें हंस वांधियो जी, तिणहीज वेगे गाम ॥ गर्सज नाखी ऊपरे जी, विषनु न रह्यु नाम रे ॥२०॥ वधव० ॥ हंसराज सचिंत हुवो जी, नयणें निरखे रख ॥ वर्ने किणें इहा वांधियो जी, एम चिंते रे मन्न रे ॥ २१ ॥ वंधव० ॥ छोड्या वंधन हाथसु जी, दीठु निर्मल नीर ॥ पाणी पीधु प्रेमशुं जी, कीधुं

स्नान शरीर रे ॥ २२ ॥ बंधव० ॥ बीजो खंड पूरो हुउं जी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ जणतां गुणतां संपजे जी, नवनिधि आणंदपूर रे ॥२३॥बं०॥इति हंसवत्सप्रबंधे हंसवत्सपरदेशगमनहंसदुःखसहननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१६ ॥

॥दोहा॥

॥ हवे त्रीजो खंड बोलशुं, आणी मन आणंद ॥ सान्निध्य करजो सरसती, वलि जयतिलक सूरींद ॥ ॥ १ ॥ विकथा निद्रा परिहरी, सुणजो बाल गोपाल ॥ सुणतां अचरिज ऊपजे, कांइ मत जंखो आल ॥ २ ॥ हंसराज जोवे तुरी,नवि देखे वछराज ॥ वन देखे बीहामणुं, सुणे सिंहनी गाज ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ झलालियानी देशी ॥

॥ हंस तिहांथी उठीयो रे,जोवे तरु वर आम ॥ बंधव मोरा रे ॥ मुझने मूकी किहां गयो रे, ए उत्त मनुं नहिं काम ॥ १ ॥ बं० ॥ म्हारुं मनडुं बंधव किम रहे रे, तुझ विरहो न खमाय ॥ बंधव० ॥ तुझ विरहे हु आकुलो रे, तुम विण किम दिन जाय ॥ बं० ॥ २ ॥ मनमांहे हुं जाणतो रे, नहिं मूकुं तुझ केड ॥ बं० ॥ जिण दिशि बंधव तुं गयो

सरोवर जल सिंची लियो जी, शरीरें कियो सनान।
फिट रे हेरुआ कारिमा जी, जीव्यो तु कये ज्ञान रे
॥ १४ ॥ बंधव० ॥ एक तुरी हाथे ग्रह्यो जी, वी
तुर्ले असवार ॥ तिहांथी आघो संचर्यो जी, सुि
यो बाजिन्न धोकार रे ॥ १५ ॥ बंधव० ॥ तिण दि.
आघो संचर्यो जी, दीतु नगरी स्थान ॥ कुती ना
री परगडी जी, बार जोयणनु मान रे ॥१६॥ बंधव
लोक जणी तिहां पूछीयु जी, नगरी नृपर्नु नाम।
तुरी रतनने इहां वेचीने जी, लेवुं चदन श्य ठा
रे ॥ १७ ॥ बंधव० ॥ ते चदन छु लेइने हीं, ते
बाबवराग ॥ ढील हवे करवी नहिं जी, एम विं
महाजाग रे ॥ १८ ॥ बंधव० ॥ वत्सराज कुती गय
जी, बासें पुण्य प्रकार ॥ गरुड पखी तिहां आविय
जी, हंस करेवा सार रे ॥ १९ ॥ बंधव० ॥ जि
बासें हंस बांधियो जी, तिणहीज बेठो ठाम ॥ ग
लज नाखी ऊपरे जी, लिपनु न रह्यु नाम रे ॥२०
बंधव० ॥ हंसराज सचिंत हुवो जी, नयणें निर
रस ॥ बर्में किधों इहां बांधियो जी, एम चिंते
मन रे ॥ २१ ॥ बंधव० ॥ ठोक्यां बंधन हायशुं जे
ढी निर्मल नीर ॥ पाणी पीधु प्रेमशुं जी, की

ज्ञान शरीर रे ॥ २२ ॥ बंधव० ॥ बीजो खंड पूरो हुर्ज जी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ जणतां गुणतां संपजे जी, नवनिधि आणंदपूर रे ॥२३॥बं०॥इति हं सवत्सप्रबंधे हंसवत्सपरदेशगमनहंसडुःखसहननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजो खंड बोलशुं, आणी मन आणंद ॥ सान्निध्य करजो सरसती, वलि जयतिलक सूरींद ॥ ॥ १ ॥ विकथा निद्रा परिहरी, सुणजो बाल गोपाल ॥ सुणतां अचरिज ऊपजे, कांइ मत जंखो आल ॥ २ ॥ हंसराज जोवे तुरी,नवि देखे वत्सराज ॥ वन देखे बीहामणुं, सुणे सिंहनी गाज ॥ ३ ॥ -

॥ ढाल पहेली ॥ ऊलालियानी देशी ॥

॥ हंस तिहांथी जठीयो रे,जोवे तरु वर आम ॥ बंधव मोरा रे ॥ मुऊने मूकी किहां गयो रे, ए उत्त मनुं नहिं काम ॥ १ ॥ बं० ॥ म्हारुं मनडुं बंधव किम रहे रे, तुऊ विरहो न खमाय ॥ बंधव० ॥ तुऊ विरहे हु आकुलो रे, तुम विण किम दिन जाय ॥ बं० ॥ २ ॥ मनमांहे हुं जाणतो रे, नहिं मकं तुऊ केडु ॥ बं० ॥ जिण दिशि बंधव तुं गयो

रे, तिण विशि मुकनें तेम ॥ ध० ॥ ३ ॥ सरवरनी पाले चढी रे, देतो सरला साद ॥ ध० ॥ धन तरु वर सहु तुढतो रे, पूछ्या न दिये साद ॥ ध० ॥४॥ न्नाइ न्नाइ करतो न्नमे रे, तरुने घाले धाय ॥ ध० ॥ कर्त्ता तें कीधु किस्यु रे, आज विठोड्यो साथ ॥ ध० ॥ ५ ॥ चिंत वियो कांइ नवि हुर्ठ रे, अणचिंतवियो थाय ॥ ध० ॥ सरल निशासा मूकतो रे, स रखी वेलो धाइ ॥ ध० ॥ ६ ॥ के न्नाइ साथ जेजल्यो रे, के लेइ गयो आकाश ॥ ध० ॥ घल बुद्धि तुझ हुती घणी रे, क्यां थइ गइ ते नाश ॥ धं० ॥ ७ ॥ पग जोवे चिहु दिशि फिरे रे, तरुतल दीठो साथ ॥ ध० ॥ तप करी काया शोषवी रे, राने रहे निर्वा घ ॥ ध० ॥ ८ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइने रे, वदे मुनि ना पाय ॥ ध०॥ कहो मुझ न्नाइ किहा गयो रे, तव रूपे मुनिराय ॥ धं० ॥ ९ ॥ न्नाई तुझ कुंती गयो रे, चदन लेवा काज ॥ ध० ॥ उप मासे मेलो हुशे रे, मलशे तिहां वछराज ॥ धं० ॥ १० ॥ मुनि वांदी ने नीकल्यो रे, कुंती नगरे जाय ॥ ध० ॥ पार जो अण नगरी घडी रे,वर्णन न कर्युं जाय ॥ ध०॥११॥ न्नाइ कारण नगरी न्नमे रे, को न कहे तसु वात ॥

बं०॥ कबाढो केल्हण मिल्यो रे, छे परमाररी जात ॥ बं० ॥१२॥ वात पूछी सवि गामनी रे, महारुं केल्हण नाम ॥ बं० ॥ पुत्र पंच छे माहरे रे,एक एकथी अभि राम ॥ बं० ॥ १३ ॥ आवो घरे तुमे आपणे रे,थापिश तुमने पुत्त ॥ बं०॥ वात मानी तिहां हंसजी रे, दीठो एवो सुत्त ॥ बं० ॥ १४ ॥ तेहने घरे रहेतां थकां रे, इंधण आणे हाथ ॥बं०॥ छए भाइ जोवे सदा रे,आवे जावे साथ ॥ बं० ॥ १५ ॥ हवे वडा भाइनुं चरित्र रे, पहोतो कुंती ठाम ॥ बं० ॥ चंदन लेशु चिंतवे रे, देई बहुला दाम ॥ बं० ॥ १६ ॥ ठाम ठाम ते पूछतो रे, दीठो मुम्मण हाट ॥बं० मोटुं पेट मातो घणो रे,सेवे नरना थाठ ॥ बं० ॥ १७ ॥ वछराज मन चिंतवे रे, दीसे रूडे घाट ॥ बं०॥ दीसे जेह सुंहालडा रे, तेहज पाडे वाट ॥ बं०॥ १८॥ हाट जइ उभो रह्यो रे,दीठो मुम्मण शेठ ॥ बं० ॥ गादी दीधी आपणा हाथशुं रे, बेठो नीची दृष्टि ॥ बं० ॥ १९ ॥ शेठ कहे वछ राजने रे, अश्वरत्न दोइ हाथ ॥ बं० ॥ अवर कोइ दीसे नहिं रे, एकाकी बीजो साथ ॥ बं० ॥ २० ॥ वलतो वचन कहे शेठने रे, अमे बांधव हुता दोय ॥ बं० ॥ मुझ भाई सापे डस्यो रे, जोग न लाह्युं

कोय ॥व०॥२१॥ वडतरु शाखे बांधीने रे, हुं आयो चदन काज ॥ व० ॥ शेठ चदनने दाघशु रे, प्रभु जाइ हंसराज ॥ व० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रतन अमूलक मुज कन्हे, ठे संख्या दश वार ॥ थापण राखो ए माहरी, अश्वरत्न दोइ सार ॥१॥ शेठ सुणी मन हरखीयो, अश्व वधाव्या वार ॥ रत्न शेठ आघां धर्या, थे चदन तत्काल ॥२॥ शेठ नर जेतो उपडे,तोली लियो वछराज ॥ मजूरने माथे दियो, चाल्यो बंधव काज ॥३॥ अथण सरोवर आवियो, आव्यो वनने ठाम ॥ नजर भरी नीहालियो, कुंवर न देखे ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ वडतरु डाखे बांधियो जी, में बंधव हंसराज ॥ कुंतीनगरे हुं गयो जी,चदन लेवा काज हो ॥ बांधव, बोलको बोने आज ॥ विलपे एम वछराज हो ॥ बांधव ॥बो०॥१॥ ए आंकणी ॥ वड उपर चढी जो इयु जी,किहांइ न देखे हम ॥ वली नीचो ते उत र्यो जी, जोवा लाग्यो मछ हो ॥ बां० ॥ २ ॥ साव

जनो जय नहीं इहां जी,कोणे छोड्यो आय ॥ मूंडं
मरुं केम उतरे जी, पगें कहो केम जाय हो ॥ बां०
॥ ३ ॥ तुजमें मति हुंती घणी जी, अधिकुं जोर श
रीर ॥ नदीय नर्मदा तिहां कणे जी, तें जींत्या बाव
न वीर हो ॥ बां० ॥४॥ किण दिशि हुं जोवा फरूं
जी, कोणनें पूछु वाट ॥ उजरू उजड जोवतो जी,
लाधे बहुला घाट हो ॥ बां० ॥५॥ पग जोवंतो नी
कल्यो जी, हुइ जीवणनी आश ॥ एकलडो हुं इहां
कणे जी, नहिं को बीजो पास हो ॥ बां० ॥ ६ ॥
आघो पग नवि नीसरे जी, होइ गयो आलमाल ॥
साद दिये सरला घणा जी,हैडे हुउं साल हो ॥बां०
॥ ७ ॥ किहांइ सुध लागी नहिं जी,कोइ न सरियुं
काम ॥ पाछो कुंती आवियो जी, जीहां मुम्मणनुं
गाम हो ॥ बां० ॥८॥ शेठ जणी सहु भांखियुं जी,
जे हुइ अचरिज वात ॥ चंदन ध्यो थें आपणो जी,
छोडे आंसुप्रपात हो ॥ बां० ॥ ए॥ बार रतन दीठां
तुरी जी,ते केम दीधा जाय ॥ रूग आधा पाछा जरे
जी,न सुणे वातज कांय हो ॥ बां०॥१०॥ बुद्धि फरी
तिहां शेठनी जी, ए परदेशी बाल ॥ एहनो माल
हुं लेइशुं जी,माथे देई आल हो ॥ बां० ॥ ११॥ आ

पणमोस धन कारणे जी, धन छे अनर्थ मूल॥ अ
रतन जब मागियां जी, माये उत्पु शूल हो ॥ वां०
॥ १२ ॥ धन कारण जूके रणे जी, धन कारण सेवे
खाट ॥ धनकारण कूडां करे जी, धन पडावे वाट हो
॥ वां० ॥ १३ ॥ धन कारण कर्पण करे जी, धन का
रण सेवे पाय ॥ धन कारण बंधव मठे जी, धन वहे
ची सहु खाय हो ॥ वां० ॥ १४॥ मुम्मणशेठ चवन'
लियो जी, पण मनमांहे छे पाप॥ अश्व लीयो येंथा
पणा जी, शेठ कहे एम आप हो ॥ वां० ॥ १५ ॥
रत्न पठी हुं आपशु जी, रतन पड्यां छे गेह ॥ वडरा
ज तिहां मूकियो जी, वारु वांध्या छे जेह ॥ वां० ॥
॥१६॥ अश्व लिया वे आपणा जी, एके वाली टाग॥
बीजो हाथे संग्रह्यो जी, शोभ करे हये सांग हो ॥
वां० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा॥

॥ शेठें कीधो कूकुर्व, धार्व धार्व रे जाय ॥ अश्व
लिया पणे माहरा, सहुको आया धाय ॥ १ ॥ तेह
रे त्या फिरतां थकां, आव्या नगर तसार ॥ शेठे
प्रइ देखाडियो, वेश्या साग्या मार ॥ २ ॥ अश्व लेइ

शेठने दीया, शेठनी पूगी आश ॥ वच्छराज मन चिंतवे, जो जो कर्मप्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हवे धनसार विमासियुं ॥ ए देशी ॥

॥ चोर तणी पेरे बांधियो, उपर देतो मार ॥ धी सावीने ताडियो, देखे बहु नर नार ॥ कर्मतणी गति वांकडी, छूटे नहिं कोइ ॥ नलराजा तिण सारिखा, रडवडीया सोइ ॥ १ ॥ क० ॥ जो जो राजा मुंज ने, हुंता बहुला देश ॥ कर्मे भीख मंगावियो, मुउं जे परदेश ॥ २ ॥ क० ॥ संचूम चक्री वलि आठमो, मू उं समुद्र मझार ॥ षट्खंड ऋद्धिनो धणी, गयो नर क मझार ॥ ३ ॥ क० ॥ करमें दशरथ काढिया, ल खमणने राम ॥ सीता साथे रडवडी, करम तणां ए काम ॥ ४ ॥ क० ॥ कोटवाल लेई गयो, राजानी पा स ॥ आगल लेइ उभो कीयो, स्वामी सुणो अरदास ॥ ५ ॥ क० ॥ शेठ कहे स्वामी माहरे, पेठो लेवा काज ॥ अश्वरत्न बे काढियां, हमणां महाराज ॥६॥ क० ॥ वडा बुढाना पुण्यथी, में लाधो चोर ॥ अश्व थकी उतारियो, में करीने शोर ॥ ७ ॥ क० ॥ वात राजाने विनवी, सहु जाणो फोक ॥ वात कहे स

पणमोस धन कारणे जी, धन छे अनर्थ मूल॥ अश्व रतन जब मागियां जी, माथे उव्यु शूल हो ॥ बा० ॥ १२ ॥ धन कारण जूझे रणे जी, धन कारण सेवे खाट ॥ धनकारण कूडां करे जी, धन पडावे वाट हो ॥ बां० ॥ १३ ॥ धन कारण कर्पण करे जी, धन कारण सेवे पाय ॥ धन कारण बधव वढे जी, धन वहे ची सहु खाय हो ॥ बा० ॥ १४॥ मुम्मणशेठ चंदन लियो जी, पण मनमांहे छे पाप॥ अश्व लीयो येश्या पणा जी, शेठ कहे एम आप हो ॥ बा० ॥ १५ ॥ रत्न पडी छु आपशु जी, रतन पड्यां छे गेह ॥ बछरा ज तिहां मूकियो जी, वारु बाध्या छे जेह ॥ बां० ॥ ॥१६॥ अश्व लिया बे आपणा जी, एके वाली टाग॥ बीजो हाथे संग्रह्यो जी, शोध करे हवे लाग हो ॥ बां० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा॥

॥ शेठें कीधो कूकडो, धाठे धाठे रे जाय ॥ अश्व लिया एणे मारा, सहुको आया धाय ॥ १ ॥ तेह ये त्यां फिरतां थकां, आव्या नगर तलार ॥ शेठे सहु देखाडियो, देवा लाग्या मार ॥ २ ॥ अश्व लेह

शेठने दीया, शेठनी पूगी आश ॥ वछराज मन चिंतवे, जो जो कर्मप्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हवे धनसार विमासियुं ॥ ए देशी ॥

॥ चोर तणी पेरे बांधियो, उपर देतो मार ॥ घी सावीने ताडियो, देखे बहु नर नार ॥ कर्मतणी गति वांकडी, बूटे नहिं कोइ ॥ नलराजा तिण सारिखा, रडवडीया सोइ ॥ १ ॥ क० ॥ जो जो राजा मुंफने, हुंता बहुला देश ॥ कर्मे भीख मंगावियो, मुंज जे परदेश ॥ २ ॥ क० ॥ संभूम चक्री वलि आठमो, मूर्छ समुद्र मफार ॥ षट्खंड ऋद्धिनो धणी, गयो नरक मफार ॥ ३ ॥ क० ॥ करमें दशरथ काढिया, लखमणने राम ॥ सीता साथे रडवडी, करम तणां ए काम ॥ ४ ॥ क० ॥ कोटवाल लेई गयो, राजानी पास ॥ आगल लेइ उभो कीयो, स्वामी सुणो अरदास ॥ ५ ॥ क० ॥ शेठ कहे स्वामी माहरे, पेठो लेवा काज ॥ अश्वरत्न बे काढियां, हमणां महाराज ॥६॥ क० ॥ वडा बुढाना पुण्यथी, में लाधो चोर ॥ अश्व थकी उतारियो, में करीने शोर ॥ ७ ॥ क० ॥ वात राजाने विनवी, सहु जाणो फोक ॥ वात कहे स

हु केलवी, एहने नहीं शोक ॥ ८ ॥ क० ॥ जण ज
ण सहु एहवु चवे, राय इण नहिं को खोरु ॥ महे
र करो अम्ह उपरे, वचणथी छोड ॥ ९ ॥ क० ॥ शे
ठ कहे राजा सुणो, लोक न लहे ए वात ॥ जो तुम
एहने छोमस्यो, तो करशे मुझ घात ॥ १० ॥ क० ॥
के लूटो घर वालशे, देशे बहुलां दुःख ॥ इणने सहि मा
स्यां थका, हु पामीश सुख ॥ ११ ॥ क० ॥ वछराज
मन चिंतवे, शेठनो नहिं दोष ॥ आप किया फल पा
मिये, जीव म करे रोष ॥ १२॥क० ॥ शेठ कहे राजा
प्रणी, एह इष्या शी खाण ॥ निकर छार मार्यां थका
कंपे केइकाण ॥ १३ ॥ क० ॥ जो तुमे एहने छोरु
शो, सहु को करशे एम ॥ जो एहने नहिं मारशो,
तो अन्न लेवा मुझ नेम ॥ १४॥क० ॥ राय कहे कोटवा
लने, शेठ राखो रूख ॥ एहने सहि मार्यां थका, शेठनु
जाजशे दुःख ॥ १५ ॥ क० ॥ कोटवाल लेइ नीक
ल्यो, हणवाने काज ॥ लूटे खर बेसारियो, जो जो
महाराज ॥ १६ ॥ क० ॥ मस्तक वींधु छींकरु, मुख
कीधु श्याम ॥ वछराज मन चिंतवे, जो जो विधिनां
काम ॥ १७ ॥ क० ॥ शेठ गयो निज स्थानके, मुझ
सरिखु काज ॥ में उपाय कीधो भलो, मार्यो वछ

राज ॥ १० ॥ क० ॥ नगरलोक मळ्या घणा, जोवाने काज ॥ कोटवोल घरणी तिसें, दीठो वछराज ॥१ए॥ क०॥ देखिने मन चिंतवे, इणनो नहिं दोष ॥ खुन खता इणमे हुवे, तो तातो पीवुं हुं कोश ॥ २० ॥ क० ॥ कोटवाल घर तेडियो, कंपे घरनार ॥ पुरुषर ल किम मारियें, ए कोण आचार ॥ २१ ॥ क० ॥ बालहत्या महोटी कही, जाणी न करे कोय ॥ एम जाणी तुमे राखवो, पुण्य वहुलुं होय ॥ २२ ॥ क० ॥ ए बालक घरे राखशुं, थापशुं मुफ पूत ॥ ए बाल क राख्यां थकां, रहेशे घरनुं सूत ॥ २३ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोटवाल मान्युं वचण, हकरायां सहु लोक ॥ प्रछन्नपणे घर आणियो, नाग्यो बेहुनो शोक ॥ १ ॥ पुत्र करीने थापियो, को नवि जाणे वात ॥ शेठ थकी बीहीतां रहे, कीधो नरनो घात ॥ २ ॥ एम करतां दिन बहु थया, शेठने लोन अपार ॥ शुन दिन इहांथी पूरियां, समुद्र वाहाण अढार ॥३॥ वस्तु सहु लीधी घणी, मेळ्यो बहुलो साथ ॥ पुष्फदंत माजी हुउ, लीधी बहुली आथ ॥ ४ ॥ शुनदिन प्रवह पूरिणयां,

चाले नहिं लगार ॥ मन चिंता मुम्मण हुइ कीजे किश्यो प्रकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ वांगरियानी देशी ॥

॥ मुम्मण तेड्यो ज्योतिष रे, जोवो लगन विचार रे ॥ जोशीडा ॥ प्रवहण केम चाले नहिं रे जोइ करो उपचार रे ॥ जो० ॥१॥ किण देवे दोषज कियो रे, विचारो हैमर्मांहि रे ॥ जो० ॥ हुं मानीश तारो घोलडो रे, देशुं बहुत पसाय रे ॥ जो०॥२॥ शेठ जणी कहे ज्योतिषी रे, राखी थापण गेह रे ॥जो०॥ तिणे पापे हाले नहिं रे, जाणो लगनमां नेह रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ शेठ सुणी मन चमकियो रे, साच कही सदुवात रे ॥जो०॥ शेठे वात सुणी तिसे रे, नरनो न हुर्ड घात रे ॥जो० ॥ ४ ॥ कोटवाल घर राखियो रे, थाप्यो आपण पुत्त रे ॥ जो० ॥ सुणी वात मन शकियो रे, कवण हुर्ड ए सुत रे ॥ जो० ॥५॥ दिन पाचे जातां थकां रे, होशे मुजने साल रे॥जो०॥ राजाने जाई मलुं रे, नेट अमूलक आल रे॥जो०॥ ॥६॥ आगे नेट मूकी करी रे, शेठे कियो प्रणाम रे ॥जो०॥ राजा आदर आपियो रे, आया कीये काम रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, हु गो

कुं हवे वास रे ॥ जो० ॥ कोटवाल सबलो हुओ रे, वा
दें केहो वास रे ॥ जो० ॥ ८ ॥ राजा मरायो चोरटो
रे, सो घर राख्यो आप रे ॥ जो० ॥ पुत्र करीने था
पीयो रे, तिण आयो माय बाप रे ॥ जो० ॥ ए ॥ ए
क पुत्र मारे अछे रे, नामे छे पुप्फदंत रे ॥ जो० ॥
समुद्रजणी ते चालशे रे, त्रीजा दिवसने अंत रे ॥
जो० ॥ १० ॥ कोटवाल सुत जे कीयो रे, सोय देवा
डो राय रे ॥ जो० ॥ तेहने सेवक थापशुं रे, देश्युं
बहुलो पसाय रे ॥ जो० ॥११॥ तेहने करिशुं आ जी
विका रे, देशुं सहस्र दीनार रे ॥ जो० ॥ कोटवाल
राय तेडियो रे, राय कहे सुविचार रे ॥ जो० ॥१२॥
शेठ जणी पुत्र आपवो रे, वचन हमारुं मान रे ॥
॥जो०॥ कोटवाल मन चिंतवे रे, रीझवियो राजान रे
॥ जो० ॥१३॥ हसतां रोतां प्राहुणो रे, आगे दो तट
पाछे वाघ रे ॥जो०॥ दिवस होवे जब पाधरो रे, दि
न दिन वाधे आथ रे ॥ जो० ॥१४॥ शेठ जणी पुत्र
सोंपियो, आव्यो घर वछराज रे ॥ जो० ॥ मूम्मण
शेठ मन चिंतवे रे, हवे मुझ सरियां काज रे ॥जो०
॥ १५ ॥ प्रवहण पासे आणियो रे, बेसाड्यो लेइ
ठाम रे ॥ जो० ॥ पुत्रजणी एहवुं कहे रे, करजो पू

रु काम रे ॥ जो० ॥१६॥ शीखामण दीधी घणी रे,
आव्यो मूस्मण तेह रे ॥ जो०॥ प्रघरुण पवने पूरि
यु रे, शुकन भला ते लेह रे ॥ जो० ॥ १७ ॥ अश्व
लीधा साथे घणा रे, लीधा सहस जूफार रे ॥ जो०
केता दिनने आतरे रे, पाम्यो समुद्रनो पार रे ॥
॥ जो० ॥ १८ ॥ कनकावती जइ उतर्यो रे, भेट्यो
पृथ्वीनाथ रे ॥ जो० ॥ राजा आवर आपियो रे,
दीठो बहुलो साथ रे ॥ जो० ॥ १९ ॥ तिण नगरे
कोठी रह्या रे, मांड्यो बहु व्यवसाय रे ॥ जो० ॥
वल्लराजा पादम थापियो रे, नित नित पावण जाय
रे ॥ जो० ॥ २० ॥ कांबलस्यो वड पहेरणे रे, सुखु
सुक्क खाय रे ॥ जो० ॥ अपखाणे घोडे चडे रे, प
वन तणी परे जाय रे ॥ जो० ॥ २१ ॥ कनकंब्रम
राजा तणी रे, पुत्री गुण अभिराम रे ॥ जो०॥ रति
रंभा तिण सारिखी रे, चित्रलेखा जसु नाम रे ॥
जो० ॥ २२ ॥ कुंवर भणी तिण निरखीयुं रे, लक्षण
अंग बत्रीश रे ॥ जो० ॥ अपखाणे घोडे चडे रे,
वडायुध छत्रीश रे ॥ जो० ॥ २३ ॥ पुरुष तणी सघ
ली कला रे, जाणे शास्त्र विचार रे ॥ जो० ॥ पूरा
पुण्य पोते हुवे रे, तो पाये भरतार रे ॥ जो०

॥ २४ ॥ कुमरीये दासी मोकली रे, वज्रकुमरनी पास रे ॥ जो० ॥ नारी हुं तुं ताहरी रे, पूर हमारी आश रे ॥ जो० ॥ २५ ॥ तुजशुं कीधो नेहडो रे, जेम चूनीने हेम रे ॥ जो० ॥ जेम चकोर चित्त चंद्रमा रे, दीठां वाधे प्रेम रे ॥ जो० ॥ २६ ॥ के तुं मुझने आदरे रे, नहींतर छांडुं प्राण रे ॥ जो० ॥ माहरे मन तुंहिज वसे रे, एहवी बोली वाण रे ॥ जो० ॥ २७ ॥ दासी वचनज मानियुं रे, दासी हुइ उल्लास रे ॥ जो० ॥ मदनरेखा उतावली रे, आवी कुंवरी पास रे, ॥ जो० ॥ २८ ॥ ढाल हुइ पच्चवीशमी रे, कुंवरी आणंदपूर रे ॥ जो० ॥ परणी जो पुण्य पूरुं हशे रे, कहे श्री जिनोदय सूरि रे ॥ जो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनरेखा तव मूकीने, वात जणावी राय ॥ संवर मंडप मांडियो, कुंमरी आनंद थाय ॥ १ ॥ राय वात मानी तिहां, तेड्या सघला भूप ॥ संवर मंडप आविया, सुंदर सकल सरूप ॥ २ ॥ मळ्या लोक मंडप घणा, बेठा गामो गाम ॥ पुष्फदंत वज्र राजशुं, आवी बेठो ताम ॥ ३॥ चित्र लेखा कुंमरी

रु काम रे ॥ जो० ॥१६॥ शीखामण दीधी घणी रे,
आव्यो मूम्मण सेह रे ॥ जो०॥ प्रवहण पवने पूरि
युं रे, शुकन चखा ते सेह रे ॥ जो० ॥ १७ ॥ अश्व
लीधा साथे घणा रे, लीधा सहस जूझार रे ॥ जो०
केता दिनने आंतरे रे, पाम्यो समुद्रनो पार रे ॥
॥ जो० ॥ १८ ॥ कनकावती जइ ऊतख्यो रे, भेव्यो
पृथ्वीनाथ रे ॥ जो० ॥ राजा आदर आपियो रे,
दीठो बहुलो साथ रे ॥ जो० ॥ १९ ॥ तिण नगरे
कोठी रह्या रे, मांड्यो बहु व्यवसाय रे ॥ जो० ॥
पछराजा पांडव थापियो रे, नित नित पावण जाय
रे ॥ जो० ॥ २० ॥ कांयसमो बद पहेरणे रे, सुख
सुक्त खाय रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चडे रे, प
वन तणी परे जाय रे ॥ जो० ॥ २१ ॥ कनकभ्रम
राजा तणी रे, पुत्री गुण अभिराम रे ॥ जो०॥ रति
रंभा तिण सारिखी रे, चित्रलेखा जसु नाम रे ॥
जो० ॥ २२॥ कुंवर भणी तिण निरखीयुं रे, लक्षण
अग बत्रीश रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चडे रे,
दक्षायुध वत्रीश रे ॥ जो० ॥ २३ ॥ पुरुष तणी सघ
ली कला रे, जाणे शास्त्र विचार रे ॥ जो० ॥ पूरा
पुण्य पोते हुवे रे, तो पामे भरतार रे ॥ जो०

॥ हे० ॥ निर० ॥ बोलबंध जिणशुं कीया जी ॥६॥ घाली गलामें माल ॥ हे० ॥ घा० ॥ पुष्फदंत मन विलखो हुओ जी, विलखाणा सहु राय ॥ हे० ॥ वि० ॥ कनकभ्रम राजा जुओ जी ॥ ७ ॥ फिट्ट फिट्ट करे सहु लोक ॥ हे० ॥ फि० ॥ राजा सहु मूकी करी जी ॥ कुमरी मूरख एह ॥ हे० ॥ कुम० ॥ पा मर गले माला धरी जी ॥ ८ ॥ धमधमिया सहु राय ॥ हे० ॥ धम० ॥ माला तुझ छाजे नही जी ॥ जो जीवण री आश ॥ हे० ॥ जो० ॥ दे माला अ मने सही जी ॥ ए ॥ बोले तव वच्छराज ॥ हे० ॥ बो० ॥ कोप करी कांइ कारिमो जी ॥ जेहने सरजी नार ॥ हे० ॥ जे० ॥ तेहने कर्म पोते समो जी ॥ ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे सहुको सुणो,कांइ करो विखवाद॥ म्हारे मन ए मानियो,फोकट करो छो वाद ॥ १ ॥ मौन करी सहुको रह्या,प्राणे न हुवे प्रीति ॥ लोक सहु निंदे घणुं, जो जो कुंवरी रीति ॥ २ ॥ सहुको निज स्थानक गया, लहुडा महोटा नृप ॥ मुइ वि लखाणुं सर्वनुं, कन्या देखि सरूप ॥३॥ निरांत हुइ

तिसें कीधां शोख शणगार ॥ दासी साथे लेइने, श्रा वी तिहां किणे नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सोरठ ॥ काठवियानी ॥
श्रथवा देखी कामनी दोय ॥ ए देशी ॥

॥ संवरा मंडपमांहे, हे सखि संवरा मंडपमांहे॥ गयगमणी निरखे सहु जी ॥ श्रारिसो लेइ हाथ, हे सखि श्रा० ॥ वासीय नाम कहे बहु जी ॥१॥ वाजे गुहिर निशाण, हे सखि वा० ॥ नादे श्रंबर गाजियां जी ॥ वाजे ताल कसाल, हे सखि वाजे० ॥ महेल मंदिर सहु गाजियां जी ॥ २ ॥ माला लेइ हाथ, हे सखि माला० ॥ राय राणा सहु निरखतां जी ॥ रिद्धि नगरीने नाम ॥ हे० ॥ रि० ॥ गुण श्रव गुण सहु परखती जी ॥ ३ ॥ जे जे मूके राय ॥ हे० ॥ जे० ॥ ते ते विलखा थई रहे जी ॥ जिम जिम श्रागी जाय ॥ हे० ॥ जिम० ॥ ते राजा मन उम्महे जी ॥ ४ ॥ पुष्फदंत पासे श्राय ॥ हे० ॥ पु ष्फ० ॥ मनमांहे ते श्राणंदियो जी ॥ कुमरी श्रनु पम देख ॥ हे० ॥ कु० ॥ पोते पुण्य पूरो कीयो जी ॥ ५ ॥ मुफ वरशे सहि एह ॥ हे० ॥ मुफ० ॥ रा जा सहु पूठे रह्या जी ॥ निरख्यो निज भरतार ॥

हे० ॥ निर० ॥ बोलबंध जिणशुं कीया जी ॥६॥ घाली गलामें माल ॥ हे० ॥ घा० ॥ पुष्फदंत मन विलखो हुर्ज जी, विलखाणा सहु राय ॥ हे० ॥ वि० ॥ कनकभ्रम राजा जुर्ज जी ॥ ७ ॥ फिट्ट फिट्ट करे सहु लोक ॥ हे० ॥ फि० ॥ राजा सहु मूकी करी जी ॥ कुमरी मूरख एह ॥ हे० ॥ कुम० ॥ पा मर गले माला धरी जी ॥ ८ ॥ धमधमिया सहु राय ॥ हे० ॥ धम० ॥ माला तुक ठाजे नही जी ॥ जो जीवण री आश ॥ हे० ॥ जो० ॥ दे माला अ मने सही जी ॥ ए ॥ बोले तव वच्छराज ॥ हे० ॥ बो० ॥ कोप करी कांइ कारिमो जी ॥ जेहने सरजी नार ॥ हे० ॥ जे० ॥ तेहने कर्म पोते समो जी ॥ ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे सहुको सुणो,कांइ करो विखवाद॥ मह्यरे मन ए मानियो,फोकट करो ठो वाद ॥ १॥ मौन करी सहुको रह्या,प्राणे न हुवे प्रीति ॥ लोक सहु निंदे घणुं, जो जो कुंवरी रीति ॥ २ ॥ सहुको निज स्थानक गया, लहुडा महोटा नृप ॥ मुह वि लखाणुं सर्वेनुं, कन्या देखि सरूप ॥३॥ निरांत हुइ

राजा नणी, कुमरी थाप्यो कत ॥ इयेवाखो तिहां मेखव्यो, वेदुनी पहोंची खत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मोरी कुमरी रे, राजा दीठुं रूप ॥ कवखमो वरू पहेरणे ॥ मो० ॥ मोरी कुमरी रे, तु हुती अधिक सुजाण, कहो इम किम हुए तुम तणे ॥ मो० ॥१॥ मो०॥ तें दीतुं अधिक स्वरूप, तु सतीनी परे सुदरु ॥ मो० ॥ मो० ॥ किहां कल्पद्रुम रुख, किहां एरंम धत्तुरतरु ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥ किहां सूरज किहां घव, किहां खजवानो चांदणो ॥ मो०॥मो०॥ अरहट्ट वहे बारे मास, क्षण एक जल धर वरसणो ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ सहु राजाने ठांकि, इणने तें किम आदस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप हाणी जग हांसि, एको काज न तें कस्यो ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ पासे बेठो शेठ, रूप कला गुण आगलो ॥ ॥ मो० ॥ मो० ॥ जे ते कीधो कत, हाथे सेहने ठागलो ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ राजा पूठे शेठ, कोण नर ठे एह तादृशो ॥ मो० ॥ मो० ॥ राजाजी कहुं साच, ए पांरूव ठे माहरो ॥ मो० ॥ ६ ॥ मो० ॥ राजा पूठे वात,वश कहो तुम एहनो ॥मो०॥मो०॥

स्वामी न जाणुं वात, रूप रूडुं छे एहनुं ॥ मो०॥७॥
मो० ॥ हुं राखुं छे दूर, मन संदेह छे माहरे ॥ मो०
॥ मो० ॥ कीधो कुमरी कंत ॥ शुं पूछा छे ताहरे ॥
॥ मो० ॥ ८ ॥ मो० ॥ वात सुणी तव राय, हे हे
कुमरी शुं कियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप विटाल्यो
देह, आप जाण्यो आपे कियो ॥ मो० ॥ ए ॥ मो०
ए पुत्री नहिं मुऊ, कुललंछण कीधो सही ॥ मो० ॥
मो० ॥ एहनुं मुह म दीठ, आज पछी जोवुं नहीं॥
॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ तें पाडी मुऊ माम, लोक
मांहे हांसो कियो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ए अंतेउर
मांही, में तुऊने उत्तर दियो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मो०॥
तुं मुऊ मुई समान, जीवंती केथी करुं ॥ मो० ॥
मो० ॥ लोक हुवे अपवाद, लोकथकी पण हुं डरुं
॥ मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ नगरथी बाहिर जाइ, छेह
डे घर मांडी रहे ॥ मो० ॥ मो० ॥ सांजली तात
नी वात, कुमरी कंत जणी कहे ॥ मो० ॥ १३ ॥
सर्व गाथा ॥ ५५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण स्वामी मुऊ वीनति, मानो नरवर वात ॥
नहिंतर रीशाणो थको, निश्चें करशे घात ॥ १ ॥

वछराजे मान्यु वयण, बाहिर कीधो वास ॥ राजा रीशाणे थके, कोइ न आवे पास ॥ २ ॥ जननी टा नो पूरवे, अन्न धन खीर कपूर ॥ चन्द्रलेखाने पाठ वे, नित्य उगमते सूर ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग कानरो ॥

॥ कामिनी तुं मूकने महारो शोष ॥ ए देशी ॥

॥ वछराज मन चिंतवे रे, कीधुं में कुण काम ॥ में अबला नारी भणी रे, उन्हावी एह ठाम रे ॥१॥ कामिनी तुं मूकने महारो शोष ॥ ए आंकणी ॥ वछराज कहे कामिनी रे, इण वाते नहिं तुज दो प ॥ हुं पापी भूंडो थयो रे, मुजथी रायनो रोष रे ॥ २ ॥ का० ॥ नारी तें शु जाणियु रे, मुज थाप्यो भरतार ॥ विधाता रूठा सही रे, के रूठो कीरतार रे ॥ ३ ॥ का० ॥ मुजने को जाणे नहिं रे, इण नगरीनां लोक ॥ परदेशी हुं बापडो रे, तुजने मुजथी शोक रे ॥ ४ ॥ का० ॥ सुरतरुसम ते जा णियो रे, दीठो अधिक स्वरूप ॥ भेद न जाण्यो मां हिलो रे, लागी तुजने चूप रे ॥ ५ ॥ का० ॥ रतन चिंतामणि सारिखो रे, तें करी काढ्यो साच ॥ हुं मूरख तुं बापडो रे, निवडशु हुं काच रे ॥ ६ ॥

॥ का० ॥ मात पिता तुझ मानशे रे, मुझनो छोड्यो पास ॥ परकाजे दुःख कां सहे रे, जोली मनहीं विमास रे ॥७॥का०॥ हुं सेवक छुं शेठनो रे, पड्यो पर वश हुं नार ॥ तण जाते हुं जाइशुं रे, आपां श्यो घर बार रे ॥ठ॥ का०॥ किहां हंस किहां कागडो रे, संग मले कहो केम ॥ हुं जाते कोई अछुं रे, केहवो मुझशुं प्रेम रे ॥ए॥ का०॥ कुमरजणी कहे कामिनी रे, परखी कीधुं में काम ॥ मात पिता सहुको जलां रे,महारे तुमशुं काम रे ॥१०॥ का०॥ सूर्य उगे पश्चिमदिशे रे,महो रसातल जाय ॥ समुद्र मर्यादा जो मिटे रे,मुझथी ए काम न थाय रे ॥११॥का०॥ जिहां जाशो तिहां आवशुं रे,जेम शरीरनी छांह ॥ इणवाते जो पातरुं रे, तो मुझ जीव न कांह रे ॥१२॥ का०॥ वछराज मन चिंतवे रे, एहनो पूरो राग ॥ एहवी नारी तो मिले रे,जो हुवे पोतें जाग्य रे ॥१३॥का०॥ एम सुखमां रहेतां थकां रे, राजा चिंते एम ॥ लोकमांहे निंदा हुवे रे,मार्यां थाये केम रे ॥१४॥ का०॥ कुमरीनी चिंता नही रे,कुमरी रहेशे रोय ॥ तेणी विधे हुं मारशुं रे,को नवि जाणे लोय रे ॥१५॥का०॥ वछराज मारण जणी रे, राय करे परपंच ॥ चार पुरुष तेमी क

हे रे,जोई सघला संच रे ॥१६॥का०॥ वछराज जातें घरे रे,मदन देजो रंग ॥ चार पुरुष भइ सामटा रे, करजो ढीलां अंग रे ॥१७॥ का० ॥ नस टालजो अंग नी रे,वेदनथी लहे फाल ॥ ढील हवे करवी नही रे, त्रोडो मुरुनुं शाल रे ॥१८॥ का०॥ ते नर तिहांथी नी सख्या रे, रायने करी प्रणाम ॥ सेवक तारा तो सही रे,अवश्य करीये काम रे ॥ १९ ॥ का० ॥ मागी शीख सनेहशुं रे,आव्या वछनी पास ॥ राजाना आदेशथी रे, करशुं सेवा उल्लास रे ॥२०॥का०॥ विविध तेल ति हां काढियां रे, कुमर न जाणे भेव ॥ कुमरी नयणे निरखियु रे, देखी धरियो खेद रे ॥२१॥ का० ॥ कं त भणी कहे कामिनी रे,चिहुंने छे मन कूड ॥ नस टालशे ए स्वामीनी रे, करशे सघलु धुरु रे, ॥२२॥ का० ॥ वछराज कहे कामिनी रे, चिंता म करो कां य ॥ जेहवुं जे नर चिंतवे रे, तेहवु तेहने थाय रे॥ ॥२३ ॥ का० ॥ वेहु पासे वे मख्या रे, तेल लियो सहु हाथ ॥ मर्दन देवा ऊठिया रे,कुमरे घाली बाथ रे ॥ २४ ॥ का० ॥ आधा पाछा रगदल्या रे, नस काढी ततकाल ॥ वे नर धरती पाथस्या रे, वे नरें सांची फाल रें ॥ २५ ॥ का० ॥ राजसभामें आवि

या रें, कांटा पमिया कंठ ॥ नाशीने श्रमें आविया रें,बे कीधा तिहां ठंठ रें ॥२६॥का०॥सर्व गाथा ॥५०४॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा मनमां चिंतवे, वात हुई सहु फोक ॥ कामज कोई नवि हुवो, मनमें धरतो शोक ॥ १ ॥ एक उपाय करशुं वली, तिणथी सरशे काज ॥ आहेडा मिष तेमशुं, साथें श्रीवछराज ॥२॥ पुप्फदंतने राय दियो, तेजी वमो तुखार ॥ नर देखीने उछले, को न हुवे असवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मनोहरना गीतनी देशी ॥ अथवा तप सरिखुं जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ वाजी अणायो हो वालथी, डीले अतिपर चंम ॥ हो नरवर ॥ तेजी न खमे हो ताजणो, पाडी करें शतखंम ॥ हो नरवर ॥ १ ॥ कुंवर तेमाव्यो हो तालमें, रामत रमवा काज ॥ हो न० ॥ ए आंकणी ॥ आदर दीधो हो अति घणो, बेठो राजा पास ॥ हो न० ॥ तीना तुरीय पलाणिया, दीधा राय उल्लास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २ ॥ सहुको जन

साथे हुआ, कुमर लियो निज साथ ॥ हो न० ॥ श्रेष्ठ तुरी राये आणीयो, मारण मांड्यु नाथ ॥हो न०॥कु ॥३॥ अश्व रतन देखी करी,मन चिंते वछराज॥हो न०॥ राजा हो मुकश्यु कोपीयो, मारण मांड्यो साज ॥हो न०॥ कुं०॥४॥ कुमर नणी आगे कीयो, कुमर हुवो असवार ॥ हो न०॥ वाजां हो विविधे वाजीयां, मूकण लागो कार॥ हो न० ॥ कु॥ ५ ॥ घोडो हो ऊंचो ऊछ्ल्यो, हुवा सहुको हेरान ॥हो न०॥ सहुको जन एम ऊचरे, फरतां जा शे प्राण ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ६ ॥ सहुको जन अलगा रह्यो, निरखो अलगा लोक ॥ हो न० ॥ कुवरी नय णे निरखती, धरती मनमें शोक ॥ हो न० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पवन तणी पेरे फेरियो, लै चाल्यो आकाश ॥ हो न० ॥ कलशुं घोडो केलव्यो, आव्यो आपणी पास ॥ हो न० ॥ कु० ॥ ८ ॥ राजा हो मुख विलखुं कीयुं, जे जे करु सु ऊपाय ॥ हो न० ॥ ए नर नहिं ए देवता, एम चिंते मन राय ॥ हो न० ॥ कुं०॥९॥ राजा हो मंदिर आवियो, आव्यो घर वछराज ॥ हो न० ॥ कुवरी मन आणंदियु, सीधां वांछित काज ॥ हो न० ॥ कु० ॥ १० ॥ मन्त्रीसर राये तेडिया, ते क्या बुद्धि-निधान ॥ हो न० ॥ चित्रलेखा पुत्री कन्हे,

मूके राय प्रधान ॥ हो न० ॥ कुं० ॥११॥ कुंवरी तैं
जुगतो कियो, तुऊथी न पड्यो वंक ॥हो न०॥ सुख
जोगवो संसारनां, नाणो मनमें शंक ॥ हो न०॥कुं०
॥ १२ ॥ रायतणे आग्रहें करी, पूछे तुं जरतार ॥
हो न० ॥ नाम ठाम कुल एहनुं, पूछे तुं सुविचार
॥ हो न० ॥ कुं० ॥१३॥ राजा हो वचनज मानिशुं,
सहुयें दीधुं मान ॥ हो न० ॥ कंत जणी कहे का
मिनी, वात सुणो राजान ॥हो न०॥कुं०॥१४॥ कर
जोमी कहे कामिनी, लोक करे सहु हास ॥हो न०॥
देव करी में मानियो, ते केम हुवे उदास ॥हो न०॥
॥ कुं० ॥ १५ ॥ महारे मन तुंहिज बसे, डूजो अव
र न कोय ॥ हो न० ॥ वात प्रकाशो हो आपणी,
जिम मुऊ आणंद होय ॥ हो न० ॥ कुं०॥१६॥जाव
जीव हुं तो सभी, जीवन मरणु तो साथ ॥हो न०॥
प्राण दिसे ठे हो ताहरा, साचुं मानो नाथ॥हो न०
॥ कुं० ॥ १७ ॥ मात पिताथी हुं विछडो, बाहिर मां
ड्यो वास ॥ हो न० ॥ एकण जीवने कारणे, स्वामी
मनहिं विमास ॥ ही न० ॥ कुं० ॥ १८॥ अन्न पाणी
तोही जखुं, जो करशो तुम वात ॥ हो न० ॥ जव
बीजे हुं बोलशुं, नहिंतर आतम घात ॥हो न०॥कुं॥

॥ १९ ॥ धरणी ढल मांड्यो भणो, मइस्की दियो तव रोय ॥हो न०॥ हेतु आहणे नायथु, जाग्यो पूरव मोह ॥ हो न० ॥ कु० ॥२०॥ कुंवरी मनमांहे चिंतवे, में पूठी कांई वात ॥हो न० ॥ अति ताव्सो बुटे सही, होशे मांहे घात ॥ हो न० ॥ कु०॥२१॥ मौन करी कुमरी रही, कथ दीधो में दुःख ॥ हो न० ॥ कंता रुदन निवारियें, जिम होये तुज सुख ॥ हो न०॥कु०॥ ॥ २२ ॥ नारी राख्य हो रोवतो, कायर न हुवो कंत ॥ हो न० ॥ वात पूठी में पाठली, जो दीठो पर्कंत॥ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २३ ॥ वात पूठी तें माहरी, पूरवली सुण वात ॥ हो न० ॥ पुरपेठाणें हुं वसुं, नरवाहन मुक तात हो न० ॥ कुं० ॥२४ ॥ हंसावली राणी तणा, जाया वे अभिराम ॥ हो न०॥ जादव वंशे हो ऊपजा, सार्या उत्तम काम ॥ हो न० ॥ कुं०॥२५॥ श्रीजो खंड पूरो हुर्ड, कुमरी आनंद पूर ॥ हो न०॥ वात कही सहु पाठली, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥२६॥ सर्वगाथा ॥६११॥ इति श्री हंसराजवछराजप्रबन्धेकुतिनगरगमन कन्यापरिणयन नामा तृतीयः खण्ड सपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुज मति दीजे सरसती, माया करी मुफ मा य ॥ श्री जयतिलक सूरींद गुरु, प्रणमुं तेहना पाय ॥ १ ॥ चोथो खंरू सुणजो चतुर, सुणतां अचरिज थाय ॥ चित्रलेखा नारी जणी, वात कहे समफाय ॥ २ ॥ मात पितायें माहरुं, नाम दीधुं वछराज ॥ लघु बंधवने आपियुं, नाम ते श्री हंसराज ॥३॥ जन्म कालथी नीसस्यां, बे वधियां परदेश ॥पन्नर वर्ष तिहां कणे रह्या, जेव्यो आवि नरेश ॥ ४ ॥ देश वटे बेहु नीकल्या, राणी तणे सरूप ॥ मनकेसरी अम राखिया, लोक न जाणे जूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ जलें पधास्या तुमें साधुजी रे ॥ ए देशी ॥ बे बांधव राणी नीकल्या रे, पहोंच्या वडे उद्यान रे ॥ वाट घाट जुइ लंघता रे, वृक्ष तणां नहिं ज्ञान रे ॥१॥ जुवो रे विचित्रगति कर्मनी रें, कर्म करे ते होय रे ॥ विधि लिखियो ते नवि मिटे रे, एम कहे सहु कोय रे ॥ जुवो० ॥ २ ॥ लघु बंधव तरशो थयो रे, हुं लेवा गयो वारि रे ॥ पाणी लेइ पाछो वल्यो रे, वांसे कर्मप्रकार रे ॥ जुवो० ॥३॥ हंसकुमर सापे म

म्यो रे, मुझ मन हुवो साख रे ॥ जाइ खेडने हु वल्या रे, बांध्यो मदनी माल रे ॥ जुवो० ॥ ४ ॥ कुंतीनगरे हुं गयो रे, मदन खेवा काज रे ॥ मदन खेइ पाछो वल्यो रे, नवि देखु हंसराज रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ दैव संयोगे ऊतर्यो रे, में दीठा बधब पाय रे ॥ आखमाल आगें हुआं रे, जीवे ठे सहि जाय रे ॥ जु० ॥६॥ हुं वली पाछो आवियो रे, राखी थापण शेठ रे ॥ चोर करी मुझ झालियो रे, गले घाली मुझ वेठ रे॥जु०॥ ॥७॥ जिम तखारें राखीयो रे, पुष्फदंत लीधों साथ रे ॥ जिम हुं इहां कणे आवियो रे, में परणी तुने हाथ रे ॥ जु० ॥ ८ ॥ पूर्वसंबंध पूरो कह्यो रे, तेइवे आव्यो राय रे ॥ चित्रलेखा उठी उतावली रे,प्रणमे सातना पाय रे ॥ जु० ॥ ए ॥ नाम ठाम कुमरी कह्यां रे, जाणी पूरव वात रे ॥ मनभ्रम भांगो रायनो रे, एह कुवर विख्यात रे ॥ जु० ॥ १० ॥ राय कहे तव शेठने रे, आयो इहां कणे बांध रे ॥ लुंटी लियो धन एहनु रे, महारो एहने कांध रे ॥ जु० ॥ ११ ॥ कुवर कहे राय सांभलो रे, महारे ठे ए बंध रे॥सुख दुःख महारे इण समां रे, सो केम हणियें कंध रे ॥जु०॥१२॥ यत ॥ "गुण कीधे गुणहीं करे रे, ए ठे

लोकाचार रे ॥ अवगुण कीधे गुण करे रे, उत्तम एह
आचार रे ॥१॥" राजा मन मांही हरखीयो रें, हर
ख्यो सहु परिवार रे, कुंवरी न पडे पांतरो रे, जोइ
कीधो भरतार रे ॥ जु० ॥ १३ ॥ उत्सवशुं राय आ
णियो रे, शणगार्यां सहु हाट रे ॥ नारी कंत साथे
करी रे, जोवे नरना थाट रे ॥ जु० ॥ १४ ॥ गोखे
चढी जुवे गोरमी रे, दीसे देव कुमार रे ॥ परमेशर
आपे घड्यो रे, एहवो नहिं संसार रे ॥ जु०॥१५॥
वछराज सुख भोगवे रे, सहुको माने आण रे॥हंस
राज हैडे वसे रे, खटके शाल समान रे ॥ जु० ॥
॥१६॥ किहां कुंतीनगरी रही रे, किहां कनकावती
एह रे॥समुद्रविचें आवी पड्यो रे, एम चिंतवे वछ
तेह रे ॥ जु० ॥ १७ ॥ कर्म मेलें तिहां शुं थयुं रे,
पुष्फदंत मलियो राय रे ॥ शीख दीयो हवे स्वामीजी
रे, आपण स्थानक जाय रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ वछराज
वाणी सुणी रे, हुवो साथो साथ रे ॥बे कर जोडी
वीनवे रे, सुणजो पृथिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ १९ ॥
दीजें शीख सनेहशुं रे,जेम जाउं महाराज रे ॥ कुं
तीनगरें जाइशुं रे, एम बोले वछराज रे ॥ जु० ॥
॥ २० ॥ राय कहे सहु माहरुं रे, देशुं तुजने राज

रे ॥ सुख जोगवो देवता समां रे, जावानुं शुं काज रे ॥ जु० ॥२१॥ तुम पसायें सहु माहरे रे, थइसी छे मुऊ आय रे ॥ इसकुमर मलवा जणी रे, जाशुं ए थिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ २२ ॥ ज्या लगे नावु त्यां ल गे रे, पुत्री राखो स्वामी रे ॥ थोडा दिनमें आवशु रे, सहिय करी शु काम रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ पित्रले खा कहे कतनें रे, ए नहि नारीनी रीत रे ॥ जिम पुरुषोनी ठांहडी रे, तेहवी तो मो प्रीत रे ॥जु०॥ ॥ २४ ॥ इठ लीधो नारीए घणो रे, तव ते मानी वात रे ॥ करो सज्झाइ चालशु रे, जणाव्यो इवे तात रे ॥ जु० ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुजदिन शुज वेला कुमर, पूठी नृप परिवार॥ राजा दीधो दायजो, पहोंचाडे नर नारि ॥१॥ राजा राणी बेहु जणां, शीख दीये ससनेह ॥ पुत्री आप णा कतने, मत तु दाखे ठेह ॥ २ ॥ इसी मली सहु को चाल्यो, आव्यां आपण ठाम ॥ पुष्फदंत वछराज बे, चाल्या आपण गाम ॥ ३ ॥ समुड तणी पूजा करे, कुशल उतारो साम ॥ आखा पूगी मूकीने, वि धिशुं करे प्रणाम ॥४॥ इकारयां प्रवहण सहु, वेगां

कामिनी कंत ॥ शेठ नारी निरखी तिहां, लाग्यो खा
रे खंत ॥ ५ ॥ पुष्फदंत वज्रराजशुं, मांकी बहुली
प्रीत ॥ कुमरीयें मनमां जाणीयुं, ए नहिं रूडी रीत
॥६॥ पुष्फदंत मन चिंतवे, मेलवी नारी एह ॥ परदे
शी बे एकलो, एहने दाखुं बेह ॥७॥ नारी लेवा कारणे,
मांड्यो तेणे प्रपंच ॥ पाणीमांहे परठवुं, जोइ सघ
लो संच ॥८॥ माजी सहु हाथे कीया, सहू मनावी
वात ॥ पंच दिवस पूरा हुवा, वहेतां दिन ने रात
॥ ए ॥ बठे दिनने अंतरे, प्रहर गइ जब रात ॥
वज्रराज आवो इहां, मत्स्य अपूरव जात ॥ १० ॥ व
ज्रराज पहोतो तिहां, दीठो नहिं लगार ॥ वांसेथी
धक्कावियो, पाड्यो समुद्र मझार ॥ ११ ॥ वज्रराज
पडतां थकां, गणियो तिहां नवकार ॥ अशरण शर
ण ए माहरे, मंत्र तणो जे सार ॥ १२ ॥ मंत्र प्र
नावे तिहां पड्यो, मगरमत्स्यनी पूंठ ॥ वज्रराज
पुण्ये करी, चाल्यो तिहांथी ऊठ ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ हरिया मन लागो, रंग लागो थारी चाल॥ए देशी॥

॥ परूतां पाणी वाजीयुं रे, चित्तमें चमकी नारी
रे ॥ कंत कीधुं किश्युं ॥ जोवा लागी सुंदरी रे, नवि

देखे भरतार रे ॥ कं० ॥१॥ श्यास पास सहु जोइयो रे, किहां न देखे कत रे ॥कं०॥ लोक सहु देखी करी रे, मनमांहे पमीय भ्रांत रे ॥ कं० ॥ २ ॥ रोवंती रोमाञ्चिया रे, प्रवहणवाला लोक रे ॥ कं० ॥ एकस की हु ढुह हवे रे, भरवा लागी शोक रे ॥ क०॥३॥ सार करो कंत माहरी रे, कीधो कांहि वियोग रे॥कं०॥ मुझ मन तुहिज सालसे रे, धरसी मनमांहे शोक रे ॥कं०॥४॥ न्हानपणे मूई नहीं रे, पेट धरी कांय माय रे ॥कं०॥ कंता हु विण एकली रे, कहो केम दहाडा जाय रे ॥ कं०॥५ ॥ तुज पसाये सुख घणां रे, में भोगवियां स्वामि रे ॥ क० ॥ तुंकारो से नवि दियो रे, बलिहारी तोरे नाम रे ॥ क० ॥ ६ ॥ हैडा तु फूटे नहिं रे, मूके मुख नि श्वास ॥ क० ॥ तो विण जीव्यो कारिमो रे, कत तणी शी श्याश रे॥क० ॥७॥ साथे चूकी मरगली रे, जोवे वह दिशि साथ रे ॥क०॥ बीजा जन देखे सहू रे, एक न देखे नाथ रे॥क०॥८॥ तुझ पहेली मूई नहीं रे, करती विर ह विलाप रे ॥ क० ॥ श्याप कमाई भोगवुं रे, पूरव कीधां पाप रे ॥ क० ॥९॥ पूरव भव में पापिणी रे, शोक्यने दीधो शाप रे ॥ क० ॥ पुत्रतणु सुख नवि

सह्यां रे, अथवा जपिया जाप रे ॥ कं० ॥१०॥ के प
राइ थापण रही, के में दीधुं आल रे ॥कं०॥ के पा
णीने कारणें रे, सरोवर फोडी पाल रे ॥ कं० ॥ ११ ॥
के में रमतकारणे रे, तरुनी मोडी डाल रे ॥ कं० ॥
गर्भ गलाव्या पापिणी रे, उंषध वेषध आल रे ॥कं०
॥१२॥ के काचां फल त्रोमियां रे, रसना केरे स्वाद
रे ॥ कं० ॥ अणगल पाणी वावस्यां रे, मनमां आणी
प्रमाद रे ॥ कं० ॥१३॥ के में माला खेंचिया रे, इंडां
नाख्यां हाथ रे ॥ कं० ॥ के में परनां धन हस्यां रे,
मार्यां बहुला साथ रे ॥ कं० ॥ १४ ॥ पंखी घाल्यां
पांजरे रे, के घाल्यां मृगपास रे ॥कं०॥ मंदमति में
पापिणी ये, के में बलाव्यां घास रे ॥कं०॥१५॥ तिल
सरशव पीलावीया रे, लाज तणें में हेत रे ॥ कं० ॥
के में सूड कराविया रे, के में खेडाव्यां खेत रे॥कं०
॥ १६ ॥ के पूरवभव पापिणी रे, मारी जूने लीख रे
॥कं०॥ के में दान देतां थकां रे, दीधी चूंकी शीख रे ॥
कं० ॥ १७ ॥ के में मोड्या करडका रे, सो केम होवे
सुख रे ॥ कं० ॥ मंत्रे गर्भ बंधाविया रे, शोक्यने दी
धुं दुःख रे ॥ कं० ॥ १८ ॥ ऋण राख्युं में पारकुं रे,
घाली पेटे जाल रे ॥कं०॥ के में परना धन हस्यां रे,

मात विछोख्यां वाल रे ॥ क० ॥ १९॥ के मछरजाचे सही रे, मास्या विष वइ हाथ रे॥क०॥ के में छोज वशे करी रे, लूट्या बहुला साथ रे ॥ क० ॥ २० ॥ के केहनां घर भांगियां रे, बालपणे में आल रे॥क० होजो अधां पांगलां रे, दीधी एहवी गाल रे॥क०॥ ॥ २१ ॥ निंदा कीधी साधुनी रे, आहार दीधो अंत राय रे ॥ क० ॥ पाप विचारे आपणां रे, केतांइक कहेवाय रे ॥ क० ॥ २२ ॥ वार वार झूरे घणु रे, नां खे आसू पात रे ॥ क० ॥ इण जीव्यां मरवुं भलु रे, करशु आतम घात रे ॥ क० ॥ २३ ॥ चित्रलेखा कहे स्वामिनी रे, जीवतां सहु होय रे॥क०॥ जानु मतीने सरस्वती रे, बेहु मल्यां सहु जोय रे ॥ क० ॥२४॥ धीरपणुं धरिये हइये रे इहक न दीजे रोय रे ॥ क० ॥ शील भली परे पालतां रे, आपद् दूरे होय रे ॥ क० ॥ २५ ॥ शीलथकी सुख कोणे ल ह्या रे, ते सुणजो दृष्टांत रे ॥ क० ॥ राम घरणी सीता सती रे, आवि मिल्या बे अंत रे ॥ क० ॥ ॥२६॥ मूकी अबला एकली रे, सिंहल द्वीपे नारी रे ॥ क० ॥ पग ठेलांम्या नारीना रे, पद्मावती भर तार रे॥क०॥२७नल राजा नारी तजी रे मूकी दुःख

र रे ॥ कं० ॥ बार वरसें मळो हुवो रे, पुण्यतणे
कार रे ॥ कं० ॥ २८ ॥ शंख राजा छेदाविया रे,
ञावती कर दोय रे ॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो हुवो
ते तो पुण्य तणां फल जोय रे ॥ कं० ॥ २९ ॥
लिव दृढ मन कर आपणुं रे, रोयां न लाजे राज
॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो होशे रे, निश्चेशुं वत्स
ाज रे ॥ कं० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ६८४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ वणजाराना गीतनी देशी ॥

॥ मोरा जीवन हो तो विण रह्यो रे न जाय, ए
कलमो हुं केम रहुं ॥ मोरा प्रीतम हो ॥ मोरा जीवन
ो एहवो जग नहिं कोइ, मननी हो वात किणने क
हुं ॥ मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ समुद्र जणी दे शीख, शर
ण राखो स्वामीने चले ॥ मो० ॥ मो० ॥ मरण शरण मु
ऊ तोय, कंपावे कंत नवि मिले ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥
न पड म पड तुं नार, रत्नाकर एहवुं कहे ॥ मो० ॥
मो० ॥ वच्छराज तुऊ कंत, मुज पूठे बेठो वहे ॥
॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ तुऊथी पहेलो कंत, कुंती न
गरें जायशे ॥ मो० ॥ मो० ॥ तिहां मलशे जरतार,
आगें आणंद थायशे ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ अंबर

एहवी वाणी, सुणीने मन हरखित हुइ ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ हवे हुइ जीवन आश, मरण थकी सुलती
थइ ॥मो०॥५॥मो०॥ ज्यां लगे मले मुज कंत, श
रीर सनान करुं नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लेशुं नीरस
आहार, चीर नवुं पहेरुं नहीं ॥ मो० ॥ ६ ॥मो० ॥
तेहवे आयो शेठ, मन हठ कर तु कामिनी॥मो०॥
॥मो०॥ में नवि जाणी वात, जब बूडो वछ जामि
नी ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो० ॥ शेठ भणे सुण नारी, ठठी
रात्रे लस्यो हस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते किण टाल्यो
जाय, कहो अपशोष कीजे किस्यो ॥ मो०॥ (नावे सही
वछराज, मूवाशु दुःख कीजे किस्यो) ॥मो०॥८॥मो०॥
हु हुं तहारो दास, जे जोइये ते पूरशुं ॥मो०॥मो०॥
ज्यां जीवे त्यां सीम, माथे कीधे राखशु ॥मो०॥९॥
मो०॥ मोशु धर तु राग, मो सरखो सहि नहिं मिले
॥मो०॥मो०॥ जिणे नाख्या मुज कंत, तिणशु मन
कहो किम मले ॥मो०॥१०॥मो०॥ तब तेणे जाणी
वात, इण पापीये पति मारहरो ॥मो०॥मो०॥ नाख्यो स
मुद्र मझार, हिवे फत थाये माहरो ॥ मो०॥११॥मो०॥
नारी चिंते एम, शीयल किणविध राखशुं ॥ मो० ॥
मो० ॥ ताण्या जाशे तेह, मधुर वचन हु भांखशु॥

मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ म्हारो तो शुं राग, कंत ब्रतां पहेलो हुंतो ॥ मो०॥मो०॥ माग्या ढलिया आज, म्हा रे तोशुं बे मतो ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ वात अबे इहां एक, तुरत कंत कीजे नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ जो कीजे ए काम, प्रेत थई पीडे सही ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ पमखो मास ब मास, जिम कहेशो तेम की जीये ॥ मो० मो० ॥ जिहां बे थारो वास, मुहूर्त्त तिहां कणे लीजिये ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥ शेठे मा नी वात, धीरपणुं मनमे धखुं ॥ मो० ॥ मो० ॥ ध वलुं एटलुं दूध, हवे कारज म्हारुं सखुं ॥मो०॥१६॥ मो० ॥ पुष्फदंते धर्यो उल्लास, नगर कही जाशुं वही ॥ मो० ॥ मो० ॥ कहे श्री जिनोदय सूरि, हवे वञ राजनी कहुं सही ॥ म०॥१७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाणिमांहे पडतां थकां,नवपद धरियुं ध्यान॥ नवकारे कीधुं किश्युं, दीधुं जीवितदान ॥ १ ॥ मञ पूठे जाई पड्यो, बेगो जिम असवार ॥ तिणविध देवे प्रेरियो, लंघे जलनिधि पार ॥ २ ॥ सात दिवस ल गे सामटो, वञ तरियो जलमांहि ॥ कुंती नगरी मू कियो, बेगो तरुनी बांहि ॥ ३ ॥

पहवी वाणी, सुणीने मन हरखित हुइ ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ हवे हुइ जीवन आश, मरण थकी मुसती
थइ ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ ज्या लगे मले मुझ कत, श
रीर सनान करुं नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लेशु नीरस
आहार, चीर नवु पहेरु नहीं ॥ मो० ॥ ६ ॥ मो० ॥
तेहवे आयो शेठ, मन दृढ कर तु कामिनी ॥ मो० ॥
॥ मो० ॥ में नवि जाणी वात, जल बूडो वल्लभ जामि
नी ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो० ॥ शेठ भणे सुण नारी, उठी
रात्रे लस्यो हस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते किण टास्यो
जाय, कहो अपशोप कीजे किस्यो ॥ मो० ॥ (नावे सही
यमराज, मूषाशु दु ख कीजे किस्यो) ॥ मो० ॥ ८ ॥ मो० ॥
तु हुं तहारो दास, जे जोइये ते पूरशु ॥ मो० ॥ मो० ॥
ज्यां जीवे त्यां सीम, माथे कीधे राखशु ॥ मो० ॥ ९ ॥
मो० ॥ मोशु धर तु राग, मो सरखो सहि नहिं मिले
॥ मो० ॥ मो० ॥ जिणे नाख्या मुझ कत, तिणशु मन
कहो किम मले ॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ तव तेणे जाणी
वात, इण पापीये पति माहरो ॥ मो० ॥ मो० ॥ नाख्यो स
मुद्र मझार, हिवे कत थाये माहरो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मो० ॥
नारी चिंते एम, शीयल किणविध राखशु ॥ मो० ॥
मो० ॥ ताण्या जाशे तेह, मधुर वचन हु भाखशु ॥

नो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ म्हारो तो शुं राग, कंत छतां
हेलो हुंतो ॥ मो०॥मो०॥ माग्या ढलिया आज, म्हा
रे तोशुं छे मतो ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ वात अछे
इहां एक, तुरत कंत कीजे नहीं॥ मो०॥ मो०॥ जो
कीजे ए काम, प्रेत थई पीछे सही ॥ मो० ॥ १४ ॥
मो० ॥ पखो मास छ मास, जिम कहेशो तेम की
जीये ॥ मो० मो० ॥ जिहां छे थारो वास, मुहूर्त्त
तिहां कणे लीजिये ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥ शेठे मा
नी वात, धीरपणुं मनमे धर्युं ॥ मो० ॥ मो० ॥ ध
वलुं एटलुं दूध, हवे कारज म्हारुं सर्युं ॥मो०॥१६॥
मो० ॥ पुष्फदंते थयो उल्लास, नगर कदी जाशुं वही
॥ मो० ॥ मो० ॥ कहे श्री जिनोदय सूरि, हवे वछ
राजनी कहुं सही ॥ म०॥१७ ॥ सर्वगाथा ॥ ७०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाणिमांहे पडतां थकां,नवपद धरियुं ध्यान॥
नवकारे कीधुं किश्युं, दीधुं जीवितदान ॥ १ ॥ मछ
पूठे जाई पड्यो, बेठो जिम असवार॥ तिणविध देवे
प्रेरियो, लंघे जलनिधि पार ॥ २ ॥ सात दिवस ल
गे सामटो, वछ तरियो जलमांहि ॥ कुंती नगरी मू
कियो, बेठो तरुनी छांहि ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग सिंधूडो ॥ हाथीया रे हलके वेआवे महारे प्राहुणो रे ॥ अथवा ॥ कर्म परीक्षा करण कुमर चढ्यो रे॥ ए देशी ॥ उदक लेइने अंग पखालीयु रे, पीधु निर्मल वार ॥ वात विचारे बेठो पाळली रे, कोण करशे मारी सार ॥ १ ॥ चित्रलेखानी चिंता अति घणी रे, कोइ नहीं छे पास ॥ एकलडी ते अबला किम रहे रे, होशे सहिय निराश ॥ चित्रलेखा० ॥ २ ॥ मारे कारण नारी फूरशे रे, रहेशे सहिय उदास ॥ नारी विहुणं जीव्यु कारिमु रे, वल मूके नि श्वास ॥ चि० ॥ ॥३॥ महारु दूषण नारी कोइ नहीं रे, अचिरज ए हुइ वात ॥ आगे विछोह्यां नारी कते हुआ रे, नाखे आंसु पात ॥ चि० ॥ ४ ॥ रणलो रोयो को जाणे नही रे, होशे ने होवणहार ॥ दुःख वे कीधुं कांही न वि पामिये रे, हैडे किधो विचार ॥ चि० ॥५॥ सात दिवसनी निद्रा सामटी रे, सूतो बाग मझार ॥ पुण्य प्रभावे सहु तरुवर फल्यां रे, जाइ जुई सहकार ॥ चि० ॥६॥ लोक देखीने अचरिज उपन्यो रे, मालण पासे जाय ॥ दैवसंयोगे वाडी नवपल्लव थइ रे, सब सु सांजलि धाय ॥ चि० ॥ ७ ॥ बाग फरीने जोवे

चहुं दिशें रे जिहां सुतो वच्छराज ॥ आवी निरख्यो नारी तेहने रे,रूपे जिस्यो देवराज ॥ चि०॥८॥ पग पद्म देखी मालण चिंतवे रे, पुरुष नहीं सामान्य ॥ एहने पुण्ये ए वन पल्लव्युं रे,एहने देशुं मान॥चि० ॥९॥मालण बेठी आवी ढूकडी रे,उलांसे तसु पाय॥ जोर करीने कुंवर जगावियो रे,उलट अंग न माय ॥चि०॥१०॥ आलस मोडी कुंवरजी उठीया रे,कुमर करे रे जूहार ॥ देइ आशीष्ने सलखु एम कहे रे, तुं आयो पुण्य प्रकार ॥चि०॥११॥ फल फूल लेइ कुमर आगे धर्यां रे, पूछे पूरव वात ॥ एकाकी तुं कुमर दीसे चलो रे,नाहिं कोइ तुझ संघात॥चि०॥१२॥ करम प्रसादे माता हुं एकलो रे,माय अछुं निर्धार॥ मननी वात कहुं माय केहने रे,एक अछे किरतार॥ चि०॥१३॥ हुं परदेशे जावा निकल्यो रे, आव्यो इणे आराम ॥ तुझ देखीने म्हारुं दुःख टल्युं रे,सीधां वांछित काम ॥ चि० ॥१४॥ दुःखीयां दीठां दुःखडुं सांजरे रे,मालण मूके धाह ॥ सरल निशासा सलखु मूकती रे, कुमरे राखी साह ॥ चि०॥१५॥ दुःखनी वात कहो मुझ मातजी रे,जिम हुं जाणुं वात॥ मालण झंपे लोचन जल झरी रे,हुं छुं इहां विख्या

त ॥ चि० ॥१६॥ पाच पुत्र हुत्ता यश माहरे रे, वली
उठो भरतार ॥ कर्म संयोगे यश सहू ए मुआ रे,
नहिं जश पावणहार ॥चि०॥१७॥ कर जोडीने कुमर
भणी कहे रे,महारे यइुखी आथ ॥ पुत्र करीने था
पुं तुजने रे,आवो महारी साथ ॥ चि० ॥१८॥ परउ
पकारी वात मानी तिहा रे,थाप्यो सवलखु पूत ॥ घ
रनो भार दियो सहु तेहने रे,घर थाप्यो निज सुत
॥चि०॥१९॥ विविध प्रकारे गूथे सेरखा रे, गूथे नव
सर हार ॥ फूलदमा गूथे बहु जातिना रे, एम करे
व्यापार ॥चि०॥२०॥ काम करंता नारी न वीसरे रे,
वीजु नावे चित्त ॥ वन जईने वछराज आरडे रे,
पूरवली तिण प्रीत॥चि०॥२१॥ सोहिला वहाडा दु
खमां निर्गम्या रे,दिवस न लागे भूख ॥ राते सूतो
वछराज वलवले रे,नारी केरे दुःख ॥ चि० ॥ २२॥
एवे वछराज सुखे रहेतां थकां रे,मन कीधु एकांत॥
श्री जिनोदय कहे नारी तणु रे,सुणजो सहु वृत्तांत
॥चि०॥२३॥ सर्व गाथा ॥ ७२७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥नाहलिया म जाजो गोरी रावट घटे रे॥ए देशी॥

॥ प्रवहण पवने प्रेरियो रे, वाला चाले विनने

रात ॥ सती शीले सुखे वहे रे,हवे नारीनी सुणजो वात ॥१॥ वालमिआ तुं जाये कुंती नगरी पाधरो रे, जिहां शेठनुं गेह ॥ तिहां कणे गयाथी कंता तुं मिले रे,जिम सुख उपजे देह ॥ वालमिआ०॥२॥ ए आंकणी ॥ प्रवहण समुद्रथी उतर्यां रे,वलि उतरियां लोक ॥ नगरी निरखी नयणशुं रे,भांग्यो सविहु शोक ॥ वा०॥३॥ नगरी बाहिर डेरा कीया रे, उतार्या सहु नार ॥ पुष्फदंत मनमांहि चिंतवे रे, हिवे करशुं एहने नार ॥ वा०॥४॥ वधावो आगे मूकीयो रे,सुम्मण हुर्ड उठाह ॥ सहुको जन आइ भेटीया रे,उलट अंग न माय ॥ वा०॥५॥ लोक वाणी सहु को कहे रे,शेठे परणी नारी ॥ राजकुमरी इण सारखी रे,को नहिं छे संसार ॥ वा०॥६॥ चित्रलेखा आणी घरे रे,कीधा बहुला जंग ॥ हवे गृहिणी हुइ माइरी रे,नारी राखो मोशुं रंग ॥ वा०॥७॥ शेठ तमे सुसता रहो रे,सुसते सीझे काज ॥ ठारीने पीजे सही रे,उतावलां न लाभे राज ॥वा०॥८॥ मालण वात सुणी सहु रे,आवी कुंवरनी पास ॥ पुष्फदंत शेठ इहां आविया रे,सघलो कियो प्रकाश ॥ वा० ॥९॥ वात सुणी मन हरखीयो रे, पूगी मननी आश ॥ नारी

मुजने सहि मिले रे, हुवे जांग्यो मन उदास ॥वा० ॥ १० ॥ कुमर कहे माता सुणो रे, तुमने ठे पग फेर ॥ निस्य आपु कुसुम हु तुम जणी रे, आगे करो हजूर ॥ वा० ॥ ११ ॥ पद्मराजे कीधु किस्यु रे, आगे चतुर सुजाण ॥ चित्रलेखाने कारणे रे, कीधो देह प्रमाण ॥ वा० ॥ १२ ॥ कठ जणी कीधो जलो रे, पहेरण नवसर हार ॥ बाजुबंध ने बहेरखा रे, चरणांकंचू सार ॥ वा० ॥ १३ ॥ पुष्पतणा सहु घूगरा रे, लखियुं आपणुं नाम ॥ कुशल देम लखिया सहु रे, नारी आव्यो तु इण गाम ॥ वा० ॥ १४ ॥ डाबुं जरियुं फूलनु रे, नीचे घाली जेट ॥ मालण माथे लेइने रे, पहोती तिहां कणे ठेठ ॥ वा० ॥ १५ ॥ शेठ जणी आगे धस्यो रे, देखो थयो उल्लास ॥ ले जाई ए महेलमां रे, पहुचो नारी पास ॥ वा० ॥ १६ ॥ मालण ते मांहे गइ रे, लागी कुमरी पाय ॥ जेट आणी में तुम जणी रे, दीठे आणंद थाय ॥ वा० ॥ १७ ॥ तें मुजने मह्टी करी रे, माता नावे मुजने काम ॥ कंत पखे कीजें किश्यु रे, शुरू नहीं मुज स्वामि ॥ वा०॥१८॥

पान फूल तेहनो रे, माता मुजने बे सही नीम ॥ वस्त्र नवुं पहेरुं नहीं रे, जिहां न मले तिहां सीम ॥ वा० ॥ १ए ॥ मालण फूल परहां कियां रे, कंचू लीधो हाथ ॥ अलगो नयणे निहालियो रे, कीधो बे सहि नाथ ॥ वा० ॥ ३० ॥ दीठुं नामुं कंतनुं रे, दीठुं आपण नाम ॥ दीठां मन आणंदियुं रे, विधिशुं करे प्रणामो ॥ वा० ॥ ११ ॥ ढाल हुइ चोत्रीशमी रे, वांच्या आणंदपूर ॥ आगे वात सहु पूछशे रे, कहे श्री जिनोदय सूरि ॥ वा० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री कुंती थकी, लिखितं श्री वछराज ॥ कुशल केम हुं आवियो, डुःख म करे मो काज ॥ ॥ १ ॥ सलखु मालणने घरे, रहुं हुं सदा उदास ॥ परमेसर जाणे सही, केहवो करुं प्रकाश ॥ १ ॥हम तुम जिहांथी विछड्यां, करवी निंद हराम ॥ अन्न पाणी निरतो चखुं, हवे जीव आयो ठाम ॥ ३ ॥ उखाणो नदी नावनो, आय मिल्यो इहां गाम ॥ सहियारो समुद्र लगे, तुम हम हवे प्रमाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग मल्हार ॥ ठलंगरूीनी देशी ॥

॥ कुमरी कुमरी अक्षर देखीने रे, जाग्यो मनमां मोह ॥ कुमरने कुमरने राख्यो साहेबे जीवतो रे,चां ग्यो सहु अवोह ॥१॥ जीवतां जीवतां राजेसर सहु आवी मले रे,मूआ केहो सोस ॥ जायने जमारो आश विलुरूडो रे, कंत धर्यो मन रोप ॥ जीव०॥२॥ कत कं तपखे हु रही जीवती रे, तेतो सायर शोप ॥ तहारो रे तहारो कसो तुऊ आवी मले रे, तिण में कीधो शोप ॥ जीव० ॥३॥ नाहले नाहले ठलंजा सखिया कारिमा रे, मूल न जाणे वात ॥ तहारे तहारे कारणे हु कुर ती रहु रे, सदा अहो ने रात ॥ जीव०॥४॥ में तुऊ में तुऊ कारण कता परिहर्या रे, रूडा सरस आहार ॥ तन भूपण तन भूपण कता सहु तज्यां रे, सो जाणे किरतार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ घोडो ते घोमो ते दोडीने मरे रे, सार न लहे असवार ॥ घोडाने घोमाने रा जेसर दूपण को नहीं रे, वेसण हार गमार ॥जीव० ॥६॥ तारे तारे कारण हुं दुःखणी हुइ रे, झुरी दिन ने रात ॥ आंसुडे आंसुडे सिंचियु वाला में हैयडुं रे, पण तें न जाणी वात ॥ जीव० ॥ ७ ॥ मरम म

रम वचन प्रियनां वांचिने रे, मूर्छाणी तिहां नारी॥वर्ल
ऊठी वली ऊठी धरणी पडे रे, कंत न लाधी सार ॥ जी
व०॥ ८॥ मालणी मालणी मन विलखुं कीयुं रे, धूजण
लागी ततकाल॥ चित्रलेखा चित्रलेखाने कारणे रे सहु
मलियां ततकाल॥ जीव०॥ ए॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए मोशी झायण अछे, लागी एहने पिंझ॥ जो
छोडे तो ऊगरे, कूटो काढी रंझ ॥१॥ लोक सहु नेलां
हुआ, करे घणा संताप॥ मालण मनमां चिंतवे, पूरव
नवनां पाप ॥ २ ॥ एक कहे मालण थकी, न होवे
एवुं काम ॥ नूत प्रेत लागो अछे, तिणनो छे ए विरा
म ॥ ३ ॥ राजकुमरि मालण नणी, पूछे सहु वृत्तांत
कुसुम किणे ए गुंथीयां, नांगो मननी ब्रांति ॥ ४
साची वात सलखु कहे, जूठ म नाखे मात ॥ मालण
कहे सुत मायरे, कीधां विविध नात ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ देशी अलबेलानी ॥

॥ अनुमाने राणी जाणितुं रे लाल, सही हुवे म
ऊ कंत ॥ प्याराराय बे ॥ सागर वचन साचुं हुवुं रे
लाल, पुगी मुऊ मन खंत ॥ सु० ॥ १ ॥ मनडुं ते
मोह्युं माहरुं रे लाल ॥ तोशुं मोहोरी प्रीत रे ॥सु०॥

॥म०॥जिम गयवर रेवा नदी रे,जिम चकोर चित्त चंद
॥सु०॥म०॥२॥ लोक सहु पासे किया रे लाल,मालण रा
खी पास रे॥सु०॥ विनतडी एहवी लखी रे लाल,छु तु
तोरी दास रे ॥सु०॥म०॥३॥ रही न शकु छु तो विना
रे लाल, पूगी न शकु कोय ॥ सु० ॥ मह्वारे मन तु
हीज अछे रे लाल, तोही न जाणु कोय ॥ सु० ॥
॥ म० ॥ ४ ॥ कंता तारे कारणे रे लाल, छोडी श
रीरनी सार ॥ सु० ॥ लूखे मन हुं इहां रहुं रे ला
ल, लेती नीरस आहार ॥ सु० ॥ म० ॥ ५ ॥ म
हारे तो विण को नहीं रे लाल,बीजो इण संसार ॥
॥ सु० ॥ बीजा पुरुष सभव समा रे लाल, इण भव
छु भरतार ॥ सु० ॥ म० ॥ ६ ॥ शीख भली पेरे पा
लतां रे लाल, आवी हुं इण गाम ॥सु०॥ पानमांही
संदेशडो रे लाल, लखीयु आपणु नाम ॥ सु०॥म०॥
॥७॥ बीडु बांधी आपियुं रे लाल, देज्यो पुत्रने हा
थ ॥ सु० ॥ दीधी मुद्रा हाथनी रे लाल, दीधी बहु
ली आथ ॥ सु० ॥ म० ॥ ८ ॥ मालण आवी मल
पती रे लाल, आवी आपण गेह ॥ सु० ॥ बीडुं लइ
आगे धर्यु रे लाल, कुमरीये दीधु जेह ॥सु०॥म०॥
॥ ९ ॥ पान वांच्यु लइ प्रेमशु रे लाल, हरख्यो हि

यडा मझार ॥ सु० ॥ चित्रलेखा साची सती रे ला
ल, नहिं एहवी संसार ॥ सु० ॥ म० ॥ १० ॥ हंस
कुमर वछराजने रे लाल, जिणविध मलशे आय ॥
॥ सु० ॥ सो विधि कहिशुं इहां कणे रे लाल, सहु
सुणजो चित्त लाय॥ सु० ॥ म० ॥ ११ ॥ कुंती नग
रीथी निकल्या रे लाल, समुद्रे श्रीवछराज ॥सु०॥
॥सु०॥ कुंती नगरी तेहनो रे लाल, मृत्यु लह्यो हंस
राज ॥ सु० ॥ म० ॥ १२ ॥ राजाने सुत को नहीं
रे लाल, नगरी हुइ निर्नाथ ॥सु०॥ पंच शब्द भेला
करी रे लाल, मलीया सहुको साथ ॥ सु० ॥ म० ॥
॥१३॥ पूर्ण कलश लेइ हाथियो रे लाल, ले फरियो
सहु गाम॥सु०॥कबाडी केल्हण घरे रे लाल, आयो
तिहां किण ठाम ॥ सु० ॥ म० ॥ १४ ॥ कलश न
माव्यो हाथणी रे लाल, हंस हुउं तिहां राय ॥
॥ सु० ॥ वाजां तिहांकणे वाजियां रे लाल, प्रणमे
सहु को पाय ॥ सु० ॥ म० ॥ १५ ॥ हंसराज राजा
हुवो रे लाल, सहु को माने आण ॥सु०॥ वछराज
नवि वीसरे रे लाल, हुतो जीवन प्राण ॥ सु०॥म०॥
॥१६॥ दिन दिन पडह वजावतो रे लाल, जे सुधि
कहे वछराज ॥ सु० ॥ एकण नगरी तेहनुं रे लाल,

आपु तेहने राज ॥ सु० ॥ म० ॥ १७ ॥ सात दिवस वोल्या जिशे रे लाल, कुमरी सुणीयो बोल ॥ सु० ॥ राजाने जाइ कहो रे लाल, कहिशु महारो बोल ॥ ॥ सु० ॥ म० ॥ १८ ॥ मुजने मेलो पालखी रे लाल, जो तुमने छे चाह ॥सु०॥ वत्सराज कहुं वातडी रे लाल, राजाने धरि उछाह ॥ सु० ॥ म० ॥ १९ ॥ राजाने जइ विनव्यो रे लाल, राय धर्यो उल्लास ॥ ॥सु०॥ ले जाउ तुम पालखी रे लाल, आणो महारी पास ॥ सु० ॥ म० ॥ २० ॥ राजा मूकी पालखी रे लाल, आया घरनी बार ॥ सु० ॥ पुष्पदंत मनमें हरखियो रे लाल, में परणी सा नारि ॥ सु०॥म०॥ ॥ २१ ॥ किम मूकुं हुं एकली रे लाल, प्रसिद्ध करु घरनारि ॥सु०॥ सर्व महाजन मेलिने रे लाल,जाशु सह दरबार ॥ सु० ॥ म० ॥ २२ ॥ सुम्मण शेठ परिवारशुं रे लाल, पुष्पदंत हुवो साथ ॥ सु० ॥ पंच शब्द आगे वाजतां रे लाल, हुवे कुवरी किण हाथ ॥ सु० ॥ म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७ए० ॥

॥ ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ सहु महाजननी साथे हुउ, सुम्मण शेठने लेइ भेटीयो ॥ फोंफ हलावे चावे पान, हाथे भरे अवि

मान ॥ १ ॥ हालो हालो सहुको कहे, पालखी पा सें ऊभा रहे॥चांचो चांगो ने चांपशी, गांगो सांगो ने धर्मशी॥२॥पेथो पोपट ने पदमशी, साकर सुंदो ने करमशी ॥ तेजो राजो ने लखमशी, कचरो घेलो ने पोमशी ॥३॥ वरधो वासण ने वेरशी, जागो जे मल ने जेतशी॥नेतो खेतो ने खीमसी, नादो नादो ने नीमसी॥४॥राजो रामो ने राजसी, लालो तोलो ने तेजसी ॥ कीको वीको ने सोमशी, हरखो हीरो ने हेमशी ॥ ५ ॥ राणो रणमल ने रूपशी, कह्लो दे लो ने कूपशी ॥ सूजो सामल ने समरशी,पासो आ सो ने अमरशी ॥६॥ एहवा एहवा महोटा शेठ,स हुको बेठा वडला हेठ ॥ मांहो मांहे हूंके हसे, रा जाने जोशुं इण मिषें ॥ ७ ॥ पुष्फदंत घर जेवी ना र, बीजी अवर नहिं संसार ॥ सहुको महाजन पो लें गया, छडीदार जइ आगे कह्या ॥८॥ परस्त्री बंधव हंसराज, आडी प्रियठ बंधावे काज ॥ आसण बे सण ऊकां धस्यां, महाजन सहुको तिहां संचस्या ॥९॥ सहु महाजन कियो जूहार, प्रियठमांही बेठी ते नार ॥ यथायोग्ये बेठा सहु, लोक मह्यां बे सु णवा बहु ॥ १० ॥ राय कहे सुणजो मह लोक

जो षोलशो तो देशु ठोक॥राय वचन एहवां जब क ह्यां, मान करीने बेठा रह्या ॥ ११ ॥ कुवरी बोली सुण राजान, एक चित्ते सुणजो दइ कान ॥ नगरी तुमारी पुरपेठाण, बावन वीर तणु तिहां ठाण ॥ ॥१२॥ यादव वंश करे त्यां राज, उत्तम तणां सम रे काज ॥ शालिवाहन सुत प्रगट प्रताप, नरवाहन राजा तुम बाप ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ८०२ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नीनइयानी देशी ॥

॥ तुम जननी हंसावली रे, तसु जन्म्या वे अगजातो जी ॥ हंसकुमर वछराज बेहु हुवा, नाम दिया माय तातो जी ॥ १ ॥ हंस नरेसर सुणजो तुम चरित्त, नानपणानी वातो जी ॥ पनर वरस विदेशे रह्या तुमे, जणिया दिन ने रातो जी ॥ हं० ॥ २ ॥ मा स पिता भेटणने काजे, पहोता पुरपेठाणो जी ॥ मं त्रीये तिहां मारण मांकिया, हुकम कीधो राजानो जी ॥ हं० ॥ ३ ॥ प्रछन्नपणे मनकेसरी राखीया, दी धु जीवितदान जी ॥ अश्वरक्ष से मंत्री आपियां, दीधां रत्नप्रधान जी ॥ हं० ॥ ४ ॥ तिहांथी तमे बे हु नीसख्या, पहुता अटवी ठामो जी ॥ हंसकुमरने तिरषा ऊपनी, जलनु नहिं तिहां नामो जी ॥ हं०

॥५॥ वस्त्र बंधन तुऊने कारणे, पहोतो जलने काजो जी ॥ जल लेइने पाछो आवियो, चपलगते वछराजो जी ॥ हं० ॥ ६ ॥ हंसकुमरने विषधर डशियो, जिम बांध्यो तरुमालो जी ॥ कुंती नगरी चंदन लेइने, आव्यो सरनी पालो जी ॥ हं० ॥७॥ कुमर न दीठे डाले बांधियो, दीधी बहुली धाहो जी ॥ हियकुं कूटे शिरने आहणे, दीधो हंसने दाहोजी ॥ हं०॥८॥ पग ऊलखियां हंसकुमर तणा, दीधा सरला सादो जी ॥ फरि फरिने वन सहु जोइयुं, मूकी मन परमादो जी ॥हं०॥९॥ कुंती नगरी पाछो आवीयो, शेठे दीधो दोषो जी॥ चोर करीने राजा ऊालियो, कीधो राजा रोषो जी ॥ हं० ॥ १ ॥ बार रतन ने वलि वीहुंतुरी, राख्या मुम्मण शेठ जी ॥ कूकुं आल दीयुं कुमर त्तणी, नीची घाली दृष्टि जी ॥ हं० ॥ ११ ॥ चित्रलेखानां वचन सुणी करी, खलजलियां सहु लोको जी ॥ कुमति सहुने आवी सामटी, सहुने पडशे ठोको जी ॥ हं० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८१५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन सहु सांसे पड्या, कीधुं कूंडुं काम ॥ इण साथे आव्या सहु, रोषें हरशे दाम ॥ १ ॥ मां

छोमाछे चिंता करे, ज्यां सरशे काम॥जो येगां र हेस्यां इहां, तो पकशे सहि मान ॥४॥ के राजा मारे सही, के कापे सहु कान॥ ग्रह पीडा सहुने करे, तू ज्यां दीजें दान ॥३॥ एक कहे समरो सहु, जेहना जे ठे देव ॥ तेहनी ते रक्षा करे, समस्थानी ठे टेव ॥ ४ ॥ शिर ढांकीने ऊठीया, भूजन लाग्यां अग ॥ पग पिंडी गोला घण्या, मुम्मण नाठो संघ ॥ ५ ॥ नासंता नागा हुआ, तूटण लागी लांग ॥ थरहर थरहर नीसस्या, जिणमां न हुतो यंक ॥ ६ ॥ आगे पाछे नीकल्या, घर आव्या सहु शेठ ॥ पुत्र पिता येठा सहु, नीची घाली दृष्ट ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ मेंदीना गीतनी देशी ॥

॥ हंस भणे सुण नारी, वात कही हे सघली पा छली रे ॥ षष्ठ कुमरनी वात, मांडीने हे भाखो सुंद रि आगली रे ॥१॥ कहे कुमरी सुण राय, मुम्मण शेठे प्रवहण पूरियां रे ॥ शुभ लगने शुभ वार, तिहां थी हे पोते सहु हंकारियां रे ॥ २ ॥ तुज्ञ बधव लि यो साथ, कनकावती नगरी पासे तिहां गया रे॥क रियाणां उतार्यां गाम, राजाने मलवा पुष्पवंत ति हां गया रे ॥ ३ ॥ में दीठो षठराज, देखीने हे में

तिहां कणे आदस्यो रे॥इण पुष्पदंते शेठ, तुऊ बंधवने अन्यजाति कोई कस्यो रे॥४॥राजा धरियो कोप,नगरी थी हो राजा बाहिर राखीया रे ॥ मारण मांडी घात' नाम ठाम सहु हे राजाने नाखीयां रे ॥ ५॥ राजा धरियो राग, तुऊ बांधवने हो नगरिये आणीयो रे॥ दीधुं बहु सन्मान,नगरने लोके हे कुमर वखाणियो रे ॥ ६ ॥ हुं तुऊ बंधवनारी, सुख नोगवतां केश्क दिन हुवा रे ॥ प्रवहण पूस्यां शेठ, तुऊ बांधवने हु साथे हुवा रे ॥ ७ ॥ आव्या समुद्र मऊार, मुऊने हे देखी पापी चिंतव्युं रे ॥ ए थापुं घरनारी, एम जा णीने हे पापी शुं ठव्युं रे ॥ ० ॥ कीधुं कर्म चंडाल, आधी राते कुंवरने नाखीयो रे॥करवा मांऊी घात, एह चरित्र सहु कुंमरी नांखीयो रे ॥ए॥ सर्व गाथा ॥०३१॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग मल्हार ॥

अथवा तप सरिखो जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन श्रवणे सुणी, मूर्बाणो हंसराज ॥ हो सुंदर॥ऊठीने धरणी पडे, बंधव केरे काज ॥ हो सुंदर ॥ ए० ॥ १ ॥ मुऊ बंधव तिहां किणे मुर्ठ,जी वणनी किसी आश ॥हो०॥ रोवे रीशे आरके,मनमा हे हुर्ठ उदास ॥ हो०॥ए०॥२॥ चित्रलेखा कहे रायजी,

दुःख न कीजे कोइ ॥हो०॥ तुझ बंधव मलशे सही, जीवतो जो होइ ॥ हो० ॥ ए० ॥३॥ इम जपे सुण कामिनी, पडियो समुद्र मझार ॥ हो० ॥ जीवतो क हो केम मले, तव जपे ते नार ॥ हो० ॥ ए० ॥४॥ तुझ बंधव इहां आवियो, सागर तरी महाराज॥हो० सखखु माखणने घरे, रहे छे श्री वछराज ॥ हो० ॥ ॥ ए० ॥ ५ ॥ एह वचन श्रवणे सुणी, प्रणमे नारी पाय ॥ हो० ॥ वात कही सहु वांसली,वछघरणी तु माय ॥ हो० ॥ ए० ॥ ६ ॥ हंसकुमर हरखे करी, प होतो माखण गेह ॥ हो० ॥ पूठे सहु पाछा वले,नर नारी नहीं छेह ॥ हो० ॥ ए० ॥७॥ बेहु भाई भेला थया, मलिया मनने रंग ॥ हो०॥ नगर हुआ बधा मणां, कीधा बहुला जंग ॥ हो०॥ ए० ॥८॥ घर घर गूडी उछली, तरियां तोरण बार ॥हो०॥ पग पग ना टक नाचती, गावे अबला बाल ॥ हो० ॥ ए० ॥९॥ सुखासन साथे घणां, साथे बहु असवार॥हो०॥राज लोकमांहे गया, हरख्यां सहु नर नार ॥ हो० ॥ए० ॥ १० ॥ नारीकंत बेहु मल्यां, फलिया पुण्य अंकूर ॥ हो०॥वात सुणो हवे शेठनी, कहे श्रीजिनोदयसूरि ॥ हो० ॥ ए० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४२ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मुम्मण शेठ शंका परी रे, कीधुं भूंडुं काम॥इण वाते अपजश अति हुवे रे,न करे कोइ लेवा नाम कामो जी ॥१॥ पुत्र पिता हवे चिंतवे, रूडे रूडुं थाय ॥ भूंडाथी भूंडु सदा हुवे, लोके एम कहाय ॥मु०॥२॥ जे मति पाछे ऊपजे, सो मति पहेली होय ॥ काज न विणसे आपणुं, दुर्जन हसे न कोय ॥ मु० ॥३॥ हंसराजाये तलार तेडिया, मारो बिहुने गाम॥धाक पडे जिम सघला गाममां,को न करे ए काम॥मु०॥ ॥४॥ शेठ कुटुंब शूली दीयो,मत करजो कांइ लाज ॥ घरनुं धन लूंटी इहां, सहु आणजो साज ॥मु०॥५॥ वह्न कहे जाइ तुमे सुणो, शेठ तणो नहीं दोष ॥ कृत कर्म लखियुं ते पामिये, इणशुं केहो रोष ॥ ॥ मु० ॥ ६ ॥ मामात्रे कहीये सारिखी,करमे कीधी रीश॥ पिताने परमेश्वर सारिखो, बेहु छेदियां शीश ॥मु०॥७॥ मनकेसरि मुहते तिहां राखिया रे, दीधुं जी वितदान ॥ ऊंची नीची आपे भोगवी, सविहु पुण्य प्र माण ॥ मु० ॥ ८ ॥ शुभ अशुभ लखियुं जे कर्ममां, ते निश्चेशुं होय ॥ नल राजाये हारी नारीने रे,वली वन मूकी सोय ॥ मु० ॥ ए ॥ हरिचंद राजा राज्य

तणो धणी, वधुं शुध घर नीर ॥ दशरथ राजा श्रवण वध कीयो, जोरे मूक्यु तीर ॥ मु० ॥१०॥ देशवटे वे बांधव नीसर्या, लखमण ने वली राम ॥ रावण सीता वनमें अपहरी, कर्म तणां ए काम ॥ मु० ॥ ११ ॥ भीख मगावी राजा मुजने, विडंबियां ए कर्म ॥ एम जाणीने बंधव टालिये, कर्म तणो ए मर्म ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ एहवां वचन सुणी वछराजनां, बहु बंध वनी लाज॥सुम्मण शेठ भणी मूकावीयो, उपकारी वछराज ॥ मु० ॥ १३ ॥ नगरथी बाहिर काढियो, शेठ तणो परिवार ॥ वछ कुमरने सहु को विनवे, तें कीधो उपकार ॥ मु० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम करतां बहुदिन हुआ, भोगवतां ते भोग ॥ निजनारीशु सुखे रह्या, पुण्य मिल्यो संयोग ॥ १ ॥ वे बंधव मन चिंतवे, नही मैत्रीमां दोष ॥ कर्मे आपे काढिया, ताते कीधो रोष ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ बालेसर मुज वीनति गोडी हो ॥ ए देशी ॥

॥ इहांथी चाली उतावलो रे ॥ बंधवीया ॥ जाशुं जननी पास रे ॥बं०॥ तात भणी जाइ मली रे ॥बं०॥

पूरे सविहु आश रे ॥ बं० ॥ १ ॥ हंस कहे हंसा
वली रे ॥बं०॥ दुःख चर दाधी देह रे ॥ बं० ॥ चकवा
चकवी प्रीतडी रे ॥ बं० ॥ तेहवो राणीनो नेह रे ॥
बं० ॥ हं० ॥ २ ॥ जिम गयवर रेवा नदी रे ॥बं०॥
जेहवो चंदचकोर रे ॥बं०॥ जिम सुरभि ने वाछडो
रे ॥बं॥ जेहवी प्रीति मेह मोर रे ॥बं०॥ हं० ॥३॥ मा
नसरोवर हंसलो रे॥बं०॥जेहवी कोयल आंब रे ॥बं०
जेहवी जलमां माछली रे ॥बं०॥ जेहवी प्रद्युम्नसांब॥बं०
॥ हं० ॥ जेहवी कंतने कामिनी रे ॥ बं० ॥ क्रौंच
बचाशुं चित्त रे ॥ बं० ॥ तेम आपणशुं माननी रे॥
बं० ॥ रहेती हशे प्रीत रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ५ ॥ ए
म आलोची आपसमां रे ॥ बं० ॥ केल्हणने सोंपी
राज रे ॥बं०॥ हंस कुमर साथ हुवो रे ॥बं०॥ चाल्यो
श्री वछराज रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ६ ॥ शुभ लग्ने शुभ
वासरे रे ॥बं०॥ नारी लीधी साथ रे ॥बं०॥ हयगय
रथ परिवारशुं रे ॥बं०॥ लेई बहुली आथ रे ॥बं०॥
॥ हं० ॥ ७ ॥ पुरपेटाणे आवीयो रे ॥ बं० ॥ कीधो
तिहां मेल्हाण रे ॥बं०॥ डेरा तंबू ताणिया रे ॥बं०॥
को नवि कीध प्रयाण रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आग
ल मूके आदमी रे ॥ बं० ॥ तात जणावी वात रे॥

॥ व० ॥ कुशल केम इहां आविया रे ॥ व० ॥ जाइ जणावी वात रे ॥ व० ॥ ह० ॥ ए ॥ राजा सांजली हरखीयो रे ॥व०॥ हरख्यां सहु को लोक रे ॥वं०॥ नगरे हुआं वधामणां रे ॥ व० ॥ नाठो सविहुं शोक रे ॥ व० ॥ ह० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ७६० ॥

॥ ढाल पनरमी ॥

॥ फूमखमांनी देशी ॥ राणी वात सुणी तिसे रे, आया हंस वछराज ॥ मनोहर पूरणा ॥ रोम राय वि कसी सहू रे, सीधां वांठित काज ॥ म० ॥ १ ॥ आ ज दिवस धन्य लगीयो रे, सफल फली मन आश ॥ म० ॥ कष्ट गयु हवे माहरुं रे, नाठी मनही उदा स ॥ म० ॥ २ ॥ घन आगम हरखे घणुं रे, नाचे नाटक मोर ॥ म० ॥ मेघ तणे मनही नही रे, करे बपैया सोर ॥ म० ॥ ३ ॥ तेम राणी सुत आगमे रे, धरती अग उल्लाइ ॥म०॥ हरखे शरीर शीतल हुवुं रे, नाठो दुःखनो दाह ॥ म० ॥४॥ राजा राणी बे जणां रे, मनकेसरी पण साथ ॥ म० ॥ लोक सहु मलवा गयां रे, आडंबर करी नाथ ॥ म० ॥५॥ सा मा आव्या सावरे रे, प्रणम्या नरवर पाय ॥ म० ॥ हंसावली हरखी घणु रे, दीठी नजरे माय ॥ म०

॥६॥ चरण नमे माता तणां रे, मात दीये आशी
ष ॥ म० ॥ हंसकुमर वछराजशुं रे, जीवो कोमी व
रीस ॥ म० ॥७॥ हैयमा आगल आणीने रे, नीड्या
अंगो अंग ॥ म० ॥ तिनसें साठ अंतेउरी रे, आ
य मीली मनरंग ॥ म० ॥ ८॥ सनकेसरि सुहता न
णी रे, दीधुं अधिकुं मान ॥ म० ॥ तुऊनो ऊरण के
म हुवे रे, तें दीधुं जीवितदान ॥ म० ॥ ए ॥ जग
ति जुगति कीधी घणी रे, दीधां फोफल पान ॥म०
॥ बेहु कुमर लेई करी रे, घर आयो राजान ॥ म०
॥१०॥ अचरिज लोक देखी करी रे, पहुतां ठामो
ठाम ॥ म० ॥ लीलावती राणी जणी रे, जाइ कीधो
प्रणाम ॥ म० ॥ ११ ॥ राय कहे लीलावती रे, की
धुं न करे कोय ॥ म० ॥ अवगुण केडे गुण करे रे,
हुं बलिहारी सोय ॥ म० ॥१२॥ गंगाजल जिम नि
र्मलुं रे, एहवा हंस वछराज ॥ म० ॥ कूमो दोष दे
इ करी रे, मारण मांड्यो साज ॥ म० ॥ १३ ॥ ना
री चरित न को लहे रे, सहु को कहे संसार ॥म०॥
निजपति परदेशी हएयो रे, सूरिकंता नार ॥म० ॥
१४ ॥ गोखथकी लेइ नाखीयो रे, जितशत्रु राजा
नार ॥ म० ॥ गंगाजलमांहे नीकल्यो रे, पुण्य तणे

परकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धनदत्त घरणी कंतने रे, मां ड्यो मनशु द्रोह ॥ म० ॥ कत प्राणी देवी करी रे, आंधो वहेरो होय ॥ म० ॥ १६ ॥ इम चरित्र चूल णी कीयु रे, बीजी न करे माय ॥ म० ॥ ते ब्रह्मदत्त राजा हुवो रे, पुण्यतणे सुपसाय ॥ म० ॥ १७ ॥ ए म चरित्र नारी तणां रे, कहेतां नावे पार ॥ म० ॥ इण राणीने मारशु रे, जिम सहु माने कार ॥म०॥ ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ८०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा खांडु काढियु, राणी मारण काज ॥ कुं मर बे आडा पड्या, डोरीजे महाराज ॥ १ ॥ ए राणी लीलावती, मात समी ए माय ॥ नारी हत्या ठे नारकी, तो किम कीजे राय ॥२॥ लीलावती पर सादथी, मेली बहुली आथ ॥ चित्रलेखा परणी घर णी, आइ मिल्या नरनाथ ॥ ३ ॥ अजयदान देवा ढियु, हंस अने वछराज ॥ पीयर परहीं मोकली, राखी सघली लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ ढोलनी देशी ॥

॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सोभागी सुंदर ॥ पाले सुखमां राज ॥ सो० ॥ राणी हवे हंसावली ॥ सो० ॥

रोष नहिं काहीं श्राज ॥ सो० ॥ १ ॥ वे पुत्र महा
रे जोमले ॥ सो० ॥ हंस श्रने वछराज ॥ सो०॥ पर
तो श्राज जाले जिस्या ॥ सो० ॥ सारे उत्तम काज
॥ सो० ॥ २ ॥ राते सूतो चिंतवे ॥ सो० ॥ नरवा
हन ते राय ॥ सो० ॥ जो मुनिवर श्रावे इहां ॥
सो० ॥ सेवुं तेहना पाय ॥ सो० ॥ ३ ॥ एम चिंत
वतां तेहवे ॥ सो० ॥ एहने ऊग्यो सूर ॥ सो० ॥ पं
चसया परिवारशुं ॥ सो० ॥ श्राव्या धर्मघोष सूरि
सो० ॥ ४ ॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सो० ॥ वंदण
हेते जाय ॥ सो० ॥ हंस वछ हंसावली ॥ सो० ॥
वंदे मुनिना पाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ सूरि दीये तिहां दे
शना ॥ सो० ॥ जलधरसम ते वाण ॥ सो० ॥ सु
ख दुःख कर्मे पाइयें ॥ सो० ॥ कर्मतणे परिणाम ॥
सो० ॥ ६ ॥ जब हुइ पूरी देशना ॥ सो० ॥ नरवा
हन तब राय ॥ सो० ॥ चरण नमी पूछे इस्युं ॥सो०
॥ केहो पुण्यपसाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ रमणी ऋद्धि
लीला घणी ॥ सो० ॥ हंस श्रने वछराज ॥ सो० ॥
संशय जांगो सद्गुरु ॥ सो० ॥ श्राया पूछण काज
॥ सो० ॥ ८ ॥ सद्गुरु कहे तुम सांजलो ॥ सो० ॥
पूरव जवनी वात ॥ सो० ॥ धनपुर नगरे तिहां वसे

॥सो०॥ वे बांधव विख्यात ॥ सो० ॥ए॥ कर्ममेले धन सहु गयु ॥ सो० ॥ धन शोचे दिन रात ॥सो०॥ भूधर सूधर वे जणा ॥सो०॥ जाय सदा परजात ॥ स० ॥ १० ॥ कध कुहाडा लेइ करी ॥सो०॥ कटिये बांधे दोर ॥ सो० ॥ रोटी पण पूठे धरे ॥ सो० ॥ पोते पाप अघोर ॥ सो० ॥ ११ ॥ रानथी आणे इंधणा ॥ सो० ॥ नगरे वेचण जाय ॥सो०॥ एक टको लेइ सुसतो ॥ सो० ॥ लूखु शूकु खाय ॥ सो० ॥ १२ ॥ वे बांधव रणमां गया ॥ सो० ॥ इंधण लेवा काज ॥सो० ॥ रोटा ले आगे धस्या ॥सो०॥ जोजन करवा काज ॥सो०॥१३॥ साधयकी चूक्या यति ॥ सो० ॥ पडिया रणही मफार ॥सो०॥ अन्नपाणी मले नही ॥ सो० ॥ जे कीजे आहार ॥ सो० ॥१४॥ बेहु बांधव मुनि पेखिया ॥ सो० ॥ दीधुं अवलक दान ॥ सो० ॥ मारग पण देखाडियो ॥सो०॥ तिणे पुण्य हुवा राजान ॥ सो० ॥ १५ ॥ दुःख दीठां जे पामीयां ॥ सो० ॥ ते पूरव कृत कर्म ॥ सो० ॥ एम जाणी आदरो ॥ सो० ॥ साचो श्री जिनधर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥ नरवाहन राजा कहे ॥ सो० ॥ रहेजो त्यां लगे साध ॥ सो० ॥ पढराज राजा ठवुं ॥सो०॥ लिउं चारित्र निर्बाध ॥

सो० ॥ १७ ॥ गुरु वांदी घर आवियो ॥ सो० ॥ वछ कुमरने दीधुं राज ॥ सो० ॥ कुंती नगरी तिहां क णे ॥ सो० ॥ थाप्यो श्री हंसराज ॥ सो० ॥ १८ ॥ नरवाहन चारित्र लिधुं ॥ सो० ॥ राणी लीधी दीख ॥ सो० ॥ बेहु संयम सूधो धरी ॥ सो० ॥ चाले जिन मत शीख ॥ सो० ॥१९॥ सर्वगाथा ॥ ९०४ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुमति पांच सुधी धरे जी, पाले पंचाचार ॥ एहवा साधु नमुं॥दोष बहेंतालीश टालता जी, कर ता उग्र विहार ॥ ए० ॥ १ ॥ केता कालने आंतरे जी, आया पुरपेठाण ॥ ए० ॥ वछराज वंदन गयो जी, प्रणम्या तात सुजाण ॥ ए० ॥२॥ मुनिवर भा खे देशना जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ ए० ॥ पंच म हाव्रत साधुनां जी, जिणथी भवनो पार ॥ ए० ॥ ॥ ३ ॥ तात वचन श्रवणे सुण्यां जी, लीधुं समकि त सार ॥ ए०॥ श्रावक व्रत सूधां धर्यां जी, श्री वछ राज ने नार ॥ ए० ॥ ४ ॥ अंते अनशन आदरी जी, देइ पुत्रने राज ॥ ए० ॥ त्रीजे कल्पे ऊपना जी, सु ख बहुलुं वछराज रे ॥ ए० ॥५॥ श्री खरतर गछगु रुनिलो जी, श्री भावहर्ष सूरींद ॥ए० ॥ गछ चोरा

सिंहासनने, देव जिस्या सोहत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशु, रूपें जग मोहत लाल रे ॥ सु०॥२२॥ दास थई प वारमी, बीजे खर्गे उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहा परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहा, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहा, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी छूटो किहा गयो, जिम फल पाके वींट ॥ २ ॥ नृप जाणे पहेला हणे, साध्यो मत्र सुसाज ॥ साधन अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन स वे सेहना मल्या, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहा आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन नि फल होसे, हे हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुअर सुणी तिहा वलसु, ढाकी वदन हसत ॥ सर्व जणासे ठेहने, ... मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात सही कन्या तणी, ...नकल यथार्थ ॥ माहो मांहि ते कहे, आव्या तु ... ॥ ७ ॥ मलया वाला वापनी, मारी विण अप ॥ हवे नृपनें किम वालशो, उत्तर देई अथाष ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, ऊंचे स्वर संचलाई॥ निपुण नकीव कहे ईस्युं, राजसन्नामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोमा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो जूप हगाला रे, नरपति ढोगाला रे, थाउ ठजमाला विकथा ढोरुीने रे, मंरुपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो रुीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, ऊव्यो सपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंरुपनें तलें रे ॥ इंद्र धनुपथी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाठो वले रे ॥ ३ ॥ चौरु जूपति नामें रे, ऊव्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंरुप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अं गारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौरुाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो रुरिउं खिसलो धनुष उपारुतो रे ॥ हूतो ए रसिउं रे, पण देवें मुशिउं रे, इंम नृपगण हसियो ताली पारुतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहिं स्वामी वश करतो भमे रे ॥ शर नाखी वको रे, थयो ते साशको रे, जिम हुये सुकुल कलंकी तिम जाखो पके रे ॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई वेगा पूठें रे, केई शरनी मूठें जेदे थजनें रे ॥ पण थज न जेयो रे, नृप टोलो खे थो रे, निज दर्प उछेथो वश आरजीनें रे ॥ ७ ॥ मरमक मूठाला रे, लाज्या नूपाला रे, करता ढकचाला निंदे आप आपनें रे ॥ मांटी पण मूक्या रे, भुजनु बल चूक्या रे, लाहामा वली ढूक्या कोई न चापमें रे, ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सखि पासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमा लाजशु रे ॥ मह बल ते तेहवे रे, धज पासें एहवे रे, आव्यो धसि केइये वीणा लाजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे, जूवया रीजावी जण तंती रसें रे॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति आकी रे, परणीश हु लाजी मुज वशने वशें रे॥ १० ॥ गाधर्व ए वीठोरे, एहने विधि रुठो रे, नहीं ते इहां मीठो लाधो जीवनो रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महबलशु सुसता रे, रहेणो कर धसता कहु मग शीखनो रे॥ ११ ॥ लायो धनुप ते लीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणे मद पीधो द्व

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खीलीनें संचें थांभो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ज घमिउं रे, साथे जे जमिउं रे, अलगो जई पमिउं वाणे आहएयो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं रु कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहमी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोजा धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठवी वमणी चढी रे ॥ १४ ॥ वीमी कर रुावे रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते जरी रे ॥ दीपे द्युति जारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना गकुमारी थंजमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शक्तें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोभा भूंमो रे, एहने वर रूमो रे, आलोचीने ऊंमो चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ जूपतिना वारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु थंजो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर गाठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूमे रे, मणि सोव

न चूके रे, उंपी वाजूके कोमल वाहूकी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, चन्न मांहिं उतारी उ अमने जमी रे ॥ १९ ॥ ङु खरु मुज नालु रे, कारज थयु कालु रे, पण लागे ए मालु जे महावल नहीं रे ॥ जेणें थंच उघाड्यो रे, नृप गर्व उतार्यो रे, गंधर्व दे खाड्यो ते भाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवा रें रे, भूपति ङु ख भारें रे, महावल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थाभाथी निकसी रे, कुमरी कहे विक सी रे, नाख्यो चन्न उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखाके प्रकाशें रे, भाई मात उल्लासें रे, ऊजो चन्न पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ भूपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाला रे, महावलनें विशाला कठें लोठवे रे॥ २२ ॥ महावल वर वरीठ रे, भाग्यें अति भरीठ रे, रतिपति अवतरीठ रूप समाजशु रे॥ बिजे खंडें दाखी रे, ढाल तेरमी भाखी रे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईमशुरे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ भूपति कोपें भभकुक्या, बोले विषम वचन्न ॥ जूर्ठ परीक्षा एहनी, वरीठ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ठामी आदरयो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जि सी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

जलपूर परें, प्रगट पराजव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल कजाल ॥ ३ ॥ ईम कही ते हुई एकठा, हणवा उठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे कठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ ध्याण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जे म दंभाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ जट्ट पुत्र परिचित तिहां, ऊभो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, जणी स्वस्ति निर्भीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल जासण चंद, पद्मावती देवीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संचवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कस्था मीटथी लेश, धीस्था किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं वे कोय, ईम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ ईम सुणी त्यां रीज्यो नृप

चित्त, पुछे कवण साचु कह्यो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं ठे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाघ्यो जेहने हाथा हेठ, ठंख स्वीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचु निमित्तनु वयण, आज हूई मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम जाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पुठीश पाठें सघली वात, पहेलां नृपनी टालु घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी था ख्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, जोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोय राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ग य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरखोज, पवन परें न लहे किहां खोज ॥ मो० ॥ चंपकमाला सार्थे चूप, जुजे जोजन सरस अनूप ॥ मो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल ठांट्या सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उतास्या सुर आवास ॥ मो० ॥

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला झाक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंके चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ मो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज जवनमां रसजरें, प्रगटया रंग अपार ॥ अजिनव शोजायें कर्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग जन्नांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजडाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध विध अंग जवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंद्रुआ, जरतारी जर वाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली स.फ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ गले जम लहुं जानीया, खसकंते केकाण ॥ सोंधे जीना सामग, गाहिक जस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ ए देशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या जू

पणेजी ॥ सुतरु मोहन वेलि, सरिखा दीसे बिहु नि रूपणेजी ॥ १ ॥ बाजे चूगल चेरि, ताल कसाल न फेरी नादशुजी ॥ शणगास्या गजराज, आगल चाले अति उनमादशुजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलत, फरह रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम घाप्यो मोरु, श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल क बनाय, तंडुल चालें चोल्या उजलाजी ॥ परवरिया घमसाण, तोरण आव्यो वर बधती कलाजी ॥ ४ ॥ मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥ जट जणे जयमाल, सोहला गाया सरखें गोरीयें जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण जणते वेद, पंचामृतना होम ति हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुना छेहडा बांध, चारे फेरे मं गल वरतियांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा र तिहां आरोगीयाजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय, पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चस्योजी ॥ ८ ॥ चंद्रिका चंद्र समान, अविचल होजो तुमची जोड खीजी ॥ हयगयरथ धन कोडि, करमोचन वेलायें दे जलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दे सहु राजी कीयांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोमि, मलती जोमी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपति नायकनी जोमी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनीश, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे गाम, लगन समय आव्या किण जांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर जणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणीडंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जाणीडंजी ॥१३॥ वली माहाबल कहे एम, शीख करो तो चालुं घर जणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, करतां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा करुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ गमवेने दिन सूर, जग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थार्ड आकलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गुण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी ठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, पहोंचाडी वोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करयतियां धर काटण कोरमीजी ॥ संप्रेमी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठमीजी ॥ १ए ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी बोलावु तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इम द्विज करतां ए वनेजी ॥ २० ॥ इम कही ऊठ्यो नूप, बीजे खंमें सरस सोहा मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे जणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी लाज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रजसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ पहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोमी विन्हे, पूठे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन ससय आफलें, कहो सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीसवासणी ठे स्वामि ॥ सुखें कहो शका तजी, पह मुज जामणि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुद्रिका तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ नाखीने दिन अपर नु, सघ्यानु कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो अटारको ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, नृपथी मांकी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो, नूप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते द्रव्यें सूतारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घरु अजिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली गानी तेहमां, ते० ॥ वेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचे मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी जीत मंजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उनो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोजने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताहुं जांजी

नत्रि शक्र ॥ न० ॥ तु मुज खोली आप ॥ मृ० ॥ ७ ॥
पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीधो तिणे स
वि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो० ॥
द्रव्यतणी सोजाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु
जने इम कहे ॥ इ० ॥ शूकी सतनी मूठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥
जाळतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥
मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मू० ॥ धरके
तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ घातक मुज जीव्या त
णु ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥
पद्मशिला ते प्रवननी ॥ से० ॥ में उघाडी खांच ॥
मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाल्यो
उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ सिमहीज ऊपर
से ठवी ॥ ते० ॥ विवर अतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ क
तरतां थगण तर्से ॥ थ० ॥ दीठे चकतरु जांख ॥ मृ०
॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वरु ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रह्
जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीठे वरुनी कूखमां
॥ कू० ॥ नृपण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह
रि लीधा देवीयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥
॥ पि० ॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे छे एप्राय
॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते ठंसली ॥ ठं० ॥

निरखुं बेठो गुज्झ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊवट वाटें आ वती ॥ आ० ॥ नजरें पमी तुं मुज्झ ॥ मृ० ॥ १५ ॥ पि० ॥ वमतरुथी हुं ऊतरयो ॥ हुं० ॥ साहामो आ व्यो दोरु ॥ मृ० ॥ पि० ॥ बेहुं मल्यां ए माहरी ॥ मा० ॥ वात कही बल ढोरु ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे खंमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वे ष मगधासदन, पुछुं पग पग बांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकरू, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बो ली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाछले, वलगो ढे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूंठे पड्यो, लंघावे ढे मुज्झ ॥ क्षण क्षण थइ विरुर्ज नरू, गूमरु जेम अरु

ज्ञा ॥ ६ ॥ नि कारण मुजनें हणे, जीमी सकट माहि ॥ वात कहु ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥
॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥
गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्यारें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इमतो न जाण्यो रे धूतारो जन एह ठे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपु रे हु तुमने रूअडु ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी मारी रे इणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हु पण तूठी हो राज, मनमा वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतर्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं ठे राज, न्नोजन न करु रे काइक मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीतपटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देता रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न न्नाखे हो राज, काइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूठे माहरे ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुजनें खपावे राज, जावा न दीये रे क्यांहिं फीक्यो चाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचार्यु हो राज, जो हु छु खमा राज, जगमो निवेमी रे वेश्याने ठेरूखुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ छानें राज, में कह्युं तिहुने रे जाउं जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगको हुं चांजीश राज, वेहेला आंहिं रे बेहु पाछां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी चांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, देहरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने जगाडी हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे छानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वारु हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शान में ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे चांखे एहवुं धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, बेहको छोके राज, इम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंज निहाली हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवारे घाले मांहे

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आज्ञाकर्ता ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कोइक वीसे राज, मगधा हसतीरे जाले पद ठे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज घोअ्यो हो राज, ते पद दीधो राज, तुज दे णायी रे कीधो माहारे तूटको ॥ २५ ॥ लोक हसता हो राज, कहे तिहां वहुला राज, पहने दीधु रे पणे कोइक रूअडु ॥ २६ ॥ विषधर मक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरे वारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेमी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाम माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खमे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमगें रे जाखी रूमी नेहशु ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इम उचाट ॥ मुज घर नृपदेवी वसे, पेसु नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सु णी ते विलखी थइ, चिंते पसुवु चित्त ॥ ए नाखी ठे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मा घापकी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहे ता किहां. कम वुं जोकी पाण ॥ ३ ॥ किहा कुपारु

तुम थकी, न रहे छानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ घने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाखिका हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाएयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशु हु ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करु कारण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणीकायें अति आदरें, जोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज सार्थे रागें जरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ जोग जणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में जांख्यु तेहने ईस्यु, मुज वालो ठे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारीनो, मनमथ रूपें ठेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प ए कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज सार्थे तु आवजे, देशुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति कीधा नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका स्वामी सुणें, आव्या कुण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्यु विउं क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, जाखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंता रातनी, वीती थयो परजात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूठ्युं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रजातें सांइ ॥ ना० ठे तुज पासें बे नहीं, आ

रणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने
खामीयां, आजूषण तेणें काढि ॥ना० ॥ हसतां में कह्युं
ोफलां, ते कहे इम रस चाढि ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥
ार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥
ुत धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज ध्रुज ॥ ना० ॥
च० ॥ १६ ॥ में पूछ्युं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा
मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वमो, कीर्त्ति थंन छे
त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें जंमारीयो, ते
इमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर
ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज
जई तिहां, आणीश तेह छिपाई ॥ ना० ॥ जाई शके
जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥
॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥
ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस ढो
य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालयकी हुं उतरी, आ
वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंडें अढारमी, कांतें
जणी ईम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती छे ढील ॥ में
कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अम्खील ॥ १ ॥ सं

च कस्यो छे पढ्हचो, पूरी पूरण पूठ ॥ चारंतां पण रा तमां, जाशे कनका कंठ ॥ २ ॥ सामग्री भोजन तणी, करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, म ई दिवसने छेह ॥ ६ ॥ छाना थानक थजनो, जोतां न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई भाख्यो सु विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी भवन मजा र ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हु चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, चहेती हु चित्त चाहे, आछे लाल ॥ अध मारगें घूली पमी ॥ आफलती पूर सेर, लाती धारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटरी ॥ १ ॥ आवी हु तुम पास, भाखी वात प्रकाश, आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने पेह, आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका सुमने चाहती ॥२॥ वात सुणी इम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥ प्रीति वचन ते उछप्यां ॥ बोलवु नही घटमान, एह थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही वें छाना छिप्या ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कठ, आवी मुज उपकठ ॥ आ० ॥ तव में इम कयु तेहनें ॥ आवी म कर काइ बे पोर, छा छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय सु

ज कनें ॥ ४ ॥ राखुं बिपाम्ही क्यांहिं, तव ते आपे त्य
हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, में तेहमांथी ट
लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली
चूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिल
य, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ में कह्युं तेहने
म, थरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरे कह्यो
॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें तें न खमाय
आ० ॥ पेश मंजूषें ते जणी ॥ पेठी ते निर्भीक, मे
धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ७
आपण बे अति हुंस, ऊपाम्हीने मंजूष, आ० ॥ गोल
मां वहेती करी ॥ वेर प्रथमनुं वालि, वाही नीर
चाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं
ज ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहज
नुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग,
आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेर्यां कुं
ल खास, रविशशी मंम्डल जास, आ० ॥ लाधां
वम्हने थर्में ॥ पहेस्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार,
आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मां
हि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज स
शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चोर,

श्रा० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही वी
जे खरू, थाप्यु शीश श्रखरू, श्रा० ॥ तेहमा वसी सी
ही जमी ॥ राख्या पवनना माग, नीचें ठानें लाग,
श्रा० ॥ चतुराईशु ते घमी ॥ १२ ॥ जाणु पती वात,
कहो श्रागें श्रवदात, श्रा० ॥ में न लह्या तिहां सेक
मी ॥ बीजे खर्फे एह, कांति कहे धरी नेह, श्रा० ॥
ढाल जणी ठेंगणीशमी ॥ १३ ॥

|| दोहा ॥

॥ कहे मालावल माननी सुणो, श्रागें जे हुई वा
त ॥ यत्न लिस्यो में चीतरयो, जिम जाणयो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे काग्या, ते वाह्या जयपूर ॥
पहुंचामो फरी चोर ते, आव्या जवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोता ठीठ ॥ तस
शानें बोलावता, कीधा श्रादर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूठे मध्
पछु, दीठो एक किहां चोर ॥ चीरु में देई श्रादरें, कह्यु
एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ यंत्र पहुंजो पूर्वनी, पोतें मूको
श्राज ॥ तो देखारुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ ये तोनें श्राया ठेलरुं, ठेलगाणाजी ॥
जिरमट लाल्यो गाल जणया ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम रुमही ॥ गुणवताजी ॥ राज जर्ये

मल्या भाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहसां पाम न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जीहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारीखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय दुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे वमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तर्टे ॥ उपाडे मली सामटा ॥ उ० ॥ थंज तिहांथी एक धर्टे ॥ ४ ॥ ते पूंठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाडियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाएयो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोभें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूडुं एम कह्युं ॥ लोभ वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥ ताळुं उघाडी द्रव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दीव में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें ऊभे चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

था ॥ ए॥ रातसुखी ते नीरमा ॥ गु० ॥ जाशे तरतो चूमि कीती ॥ देणु वन जजीरमा ॥ ज० ॥ महिशु करसे जेय थिली ॥ १० ॥ जाशे प किहा वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी पहुनी हाथ थते ॥ हमणा मूक्यो मोकलो ॥ ज० ॥ लेशे फल रस पाक पडें ॥ ११ ॥ इम कहेता मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वर्गे ॥ यत न करी में एकले ॥ ज० ॥ राख्यो पंच प्रजात लगें ॥ १२ ॥ प्रह्कालें जाण भूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ण चन तिहा ॥ थुथई अलख स्वरूपनो ॥ ज० ॥ वेगे आवी ते भूप जिहा ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल भणे ॥ काढु चोर ते स वैथा ॥ ज० ॥ शिखर ठव्यो जे भुवन तणे ॥ १४ ॥ धावीश जो हु निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें जीक पक्ष्यो ॥ पडशे पाप खराखरे ॥ ज० ॥ इयो फिकरें मुज चित्त नक्ष्यो ॥ १५ ॥ तु इहा रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवी श तेहनो सूल करी ॥ कहे मलया रहेशु नहीं ॥ ज० ॥ साथें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चि त्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम भणे ॥ जो नृप आवे तुर तमां ॥ ज० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहा ह

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥ उ० ॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १८ ॥ इंम कही चाल्यो तिहां थकी ॥ गु० ॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ उ० ॥ मलया साथें हुइ सुमनें ॥ १९ ॥ बीजे खंमें वीशमी ॥ गु० ॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ उ० ॥ कांति कहे मनने हरसें ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंमें करी, वीरधवल भूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हगाल ॥ १ ॥ तेह कहे परजातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे श्रम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि भूपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेरुण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउ, वर कन्या भवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ बेगो जोवे वाटकी, भूपति करतो चिंत ॥ रात पकी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परजात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विरचात ॥ ६ ॥ जामाता कन्या तणी किहां न लही नृप सूज ॥ दुःखियो भूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥ ७ ॥

॥ढाल एकवीशमी॥धिग धिग धणनी प्रीतमी॥ए देशी
॥नरराज अति चिंता करे, मनमा पोपी दाह
॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे
दीसे जगनाह ॥ १ ॥ भूपति अटकीने कहे, कुण
जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं,
थयु होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ भू० ॥ २ ॥
किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥
किहां कन्या महाचल किहा, एतो विभ्रम रे रचना
अहिनाण ॥ भू० ॥ ३ ॥ अथवा देवें बेहुनो, सयो
ग इम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखाडी
रे किम जरूपी लीध ॥ भू० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां
एहवु हसु, करवु दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परग
ट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी इष्ट ॥ भू० ॥
॥ ५ ॥ नवि दीधु भोजन भलु, नहीं दीधुं लीबच
दालि ॥ मणि हीणुं भूषण भलु, पण पल्लि रे जश
मणि ते टालि ॥ भू० ॥ ६ ॥ हरण्या दुष्ट किण ब
रीयें, अथवा निरुण्या केण ॥ के किण देवें अपह
र्यां, दपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ भू० ॥
॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणु, आव्यो हसो कोइ
चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुंज कन्या रे काल

जानी कोर ॥ जू० ॥ ७ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ जू० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीक ॥ इम कहेतो गलहथ करी, नृप बेठो रे पड्यो चिंता जीक ॥ जू० ॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रज्ञु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ जू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, छल छेतस्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संजवियें रे हरि या किणें देव ॥ जू० ॥ १२ ॥ देशाउर पुर पर्वतें, वनजूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ जू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ जू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ ते पण खबर करे वली, करतां इम रे सवि आ वशे धात ॥ जू० ॥ १५ ॥ जलुं जलुं जूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रे नरपति सज थाय ॥ जू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ चू० ॥ ॥ १७ ॥ हयगय सुनट रथ साजशुं, ते कुमर निय त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे ज्रूपनें, होशे रूमा रे इहां कोमी कल्याण ॥ चू० ॥ १० ॥ ढाल एह एकवीश मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें बीजा खंमनी, जणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ चू० ॥ १९ ॥

॥ चोपाई ॥ खरू खंम रस ठे नवनवा, सुणतां मीठा शाकर खवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बीजो खरू सपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय सुंदरिचरित्रे पण्डितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरीपाणिग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीय खंम सपूर्ण ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खड प्रारमः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंम चमत्कृतुं, पूरण कीध प्रगड ॥ हवे त्रीजो कहेवा जणी, उमग्यो रंग गरढ ॥ १ ॥ प्रेमें प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ श्रति रसशुं श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

वनमां जई, मलयानें पजणंत ॥ फिरतुं निशि सम शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही इंम जाल ॥ तिलक कस्युं आंबारसें, गोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपें नर हुउ, थयां बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी, काढे चोर निरुद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥ प्राण लाज धनलाज में, तुम पसायें लद्ध ॥ इंम कही ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं जुव नथी ऊतरी, आवे वृक्षतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेबनो, सुणयो जूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर रूरंतो जू तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ थी, लीए उतारी हार ॥ ९ ॥ रहे रहे ठानी सल क मां, सांजल देइ कान ॥ वृक्षमां जूत वदे किस्युं, कुमर करे इंम शान ॥ १० ॥ ठानां वृक्ष पोलाशमां, बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांजले, जूत तणी इंम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर जलो पण सांकडो रे, नगर जलो पण दूर रे॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

वृक्ष शिखरें इंम बोलीउं रे, जूताने एक जूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ बात कहु नवली जली होला
ल ॥ सांजलजो अवधूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ चूत वलो
कहे वातमी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुखे
रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २ ॥ पु
हवी ठाण नरिंदनो रे, माहावल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
ते मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
पणें लीयो हो लाल, माय करे दुःख जार रे ॥ मो० ॥
॥ चू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, बालथ
हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पाचमे हो
लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ ॥ मो० ॥ चू० ॥
॥ ५ ॥ मातायें पण आदर्यो रे, पण तेहवो निर
धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
तो रहु जीवित धार रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ६ ॥ ख
बर नहीं ते कुमरनी रे, हार केमें गयो रूठ रे ॥ मो० ॥
पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूठ रे
॥ मो० चू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे,
मलवा दुर्लभ येह रे ॥ मो० ॥ ते दुःख मरवुं आ

गमी हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥
॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के
करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ ए ॥ लोक
बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूंठें तास रे ॥ मो० ॥
खबर लेईने आवीयो हो लाल, हुं तिहांथी तुम पास
रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १० ॥ नृपनंदन वरु कोटरें
रे, सांजले बेठो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयरुं डुः
खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
॥ नृ० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ
न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशें जो एहवुं कहे हो
लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १२ ॥
भूत कहे जइयें तिहां रे, वहेलां गंमि प्रमाद रे
॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर
सवाद रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ १३ ॥ इंम कही सम
कालें कस्यो रे, नूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
शें वरु ऊपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥
॥ मो० ॥ नृ० ॥ १४ ॥ वेगें वरु नजें चालतो रे,
आव्यो पुहवीगण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाए रे ॥ मो० ॥ नृ०

॥ १५ ॥ पुर पासें गोखा तटें रे, नामे धनजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ चूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन चूमिना रे, परिचित तरुना वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमर निहाली हरखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १७ ॥ कुमर भणे मलया भणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ अेहथी ए वरु ऊपरी हो लाल, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ॥ १८ ॥ वरु कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूख रे ॥ मो० ॥ सुर शकें वली ऊपशे हो लाल, तो कर स्या श्यो सूख रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसस्या रे, वरु कदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन ते कुंकलु हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥मो०॥चू०॥ ॥ २० ॥ ऊपरतो गयणांगणें रे, देखे वरु वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जासे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए इमां वली रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ परतां विपमी जोखमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर ए

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो
नाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ कू० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया
मणे नयणें जरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश
हुं वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इम कही नर
रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु
नी वाटडी, शूने रंजाकुंज॥रयणि गमावे नारि ते, दाधी
दुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां क
मल विबोध ॥ बंधनयरथी बद्ध जिम, बूटा अलिकुल
योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥
आलें किरणजालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषजान जुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥
माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें
॥ १ ॥ चाही इम चाली चुंपे, आवी वही पुरनी खुंपें ॥
पेसे जव पुरनें दुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥
दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धम
क्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लो
चन आपे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने ड्डकूलनी फाली, ऊंखर्यां म हवलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधा, आजूपण कुमरनां बाधा ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे जूपणें करी जांतीलो ॥ मुज सुतना पहिरया दीसे, आजूपण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर कहे ए हिसतो, पकड्यो पुरमां पेसतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूछो पली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ जूपति कहे कुण तु किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहे विमासे, साचु इहां जवु चासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशु अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीजरा पासें, चावी मटशे नहीं लासें ॥ ए ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मुज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने तेणे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां ठे, सा कहे इहां हिज जिहां त्यां ठे ॥ नृप कहे होये जो इहां गाबे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठी सवि वात प्रकाशी, चोकस न पकी त्रिण रासी ॥ महबल थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ मुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन छीनें ॥ सो

ल्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥ १३॥
अणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां
लोजसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर ठोरें ॥
॥ १४ ॥ चोर्यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे
हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे
ए सीधो ॥ १५॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा
आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इणे पुरमां
कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउ इणे मलीनें,
मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोजसार कन्हें जई हणजो,
इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥ १७॥ मलया मनमां इं
म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद
मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व
सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सची
व विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम
साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ
चरण दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी ॥ २० ॥
इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥
इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछे
॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प
मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

मीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुडविद अविलवें, मूके तव शैल अलंबें ॥ दुरूर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंडल नूपें लेई, तसवरने सोंप्यो तेई ॥ धंभ आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंडे बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांभलजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महत्तरणी आवी दोड ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोड ॥ १ ॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पचम दिन छे आज ॥ नेट अनिष्ट छ्हां किस्युं, दीसे छे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन दुर्लभ हूंउं, हार तणी शी वात ॥ शैल अलघाथी पर्णी, करशुं ते दुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ सदेशा तुम राणीयें, इम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरो, करो आप हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पभणे अवसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जुबखमानी देशी ॥

मुज वचन इम भाखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरमी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्यार्थी जाण शुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं ट करूण किए वेसशे रे, तेल जूउ तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे छानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी चणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाएयां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव तों रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी हुइ रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ महुलणी आगम पुरुषथी रे, जांखे तस घ टमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

रुखमणी आगें वदत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लन आवि यो रे, कहेवा सुधि कुण लत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो लस लेस ॥ स० ॥ कुरु ख वसन लीधां तिर्के रे, ते आव्यां इणि वेस ॥ स० ॥ ११ ॥ ते माटे निरखु हुवे रे, करतो धीज विशु रू ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर साथें मुरू ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो रे, वींट्यो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तब विषध र मही रे, गारुमी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप तिनें कहे गारुमी रे, देव अलखा हेत ॥ स० ॥ वि षधर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेत ॥ स० ॥ १४ ॥ फूकारें तरु बालतो रे, कालो काजल वान ॥ स० ॥ मन्त्रप्रयोगें कुंजमां रे, घाल्यो आणी निदा न ॥ स० ॥ ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे नर कुंज ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुजटें करी सरंन ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनु रे, कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ पहवा गुण इम रूपथी रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंड अंगारा जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ तथी जो हुवे रे, तो पहथी प काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥ दोष नहिं नृपति तणे रे, गुणही एम लहंत ॥ स० ॥ ॥१९॥ समसूधो वानी थहे रे,वाधे सुजश अताग ॥स०॥ जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण ताग ॥ स० ॥ ॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, ऊघाडे घट वार ॥ स० ॥२१॥ निर्जय करकमलें ग्रह्यो रे, वि षधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥२२॥ नाग हू उं निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥ स० ॥ नेह निविड रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥२३॥ साचो साचो इंम कहे रे, पाडे नर करताल ॥ स० ॥ त्रीजे खंडे ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर खी विस्मित हुउं, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि छाणी इंम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल वरसात ज्युं, करे अचंज अनंत ॥ ३ ॥ जाल तिल

क नरनो पठी, चाटे जव अहिराय ॥ दिव्यरूप तरु
णी हुई, तव ते मूख स्वजाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मरूखी, रह्यो उपर धरी ठत्र ॥ जोता जण अद्भुत र
स, सहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, जणे एहवी वाचा लो
॥ अहो ज० ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण
विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥ अ० ॥ देखी०
॥ १ ॥ पुरजण देवी वारता, अनरथ उगाड्यो लो ॥ अ० ॥
नरनिंद सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥ अ० ॥ दे०
॥ २ ॥ नहिं सामान्य जुजग ए, कोइ देव सरूपी लो
॥ अ० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनरूं खूंपी लो
॥ अ० ॥ द० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए वे जणा, ठां
की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी,
आव्यां कोई ठाना लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ परमारथ लहे
सो नथी, आराधी वेहुनें लो ॥ अ० ॥ जगतें सूषा
रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥
इम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥
अ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रज्ञु,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ त्र्कें वश होय देव
ता, इंम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
नृप पयपात्र धख्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशें लो ॥ अ० ॥ गारुमीयें पाठो ग्रही, मूक्यो गिरि
देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें,
जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हुइ,
एह कौतुक त्रासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण
ठे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ
लटयुं लो ॥ अ० ॥ जाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
पण उलटयुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष
हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पमती नथी,

श्यो उत्तर आपु लो ॥ अ० ॥ जेतु इहां कहेवुं घटे, तेतु थिर थापु लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचु करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥ दे०॥१६॥ हु ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतु नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्यु तु तेहथी, मलसु नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुठे भाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित पहने हुये, देवी तुज पासें लो ॥ अ०॥ सुखशाताशुं राख जो, उचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने लिहा, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खमनी, ढाल भाखी कांतें लो ॥ अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण जामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिठे, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख दुःख थर्गें साहसी, पुरुषो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन सु

णी राणी हूई, दुःख जारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इम
नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी
साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ
नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें
णिपरें ॥ सुत मायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति
कंत, सुतनो हे हीयमा जीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥
मुजथी हे रह्युं न जाय, लंबा दीहा किम नीगमु
सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई
जमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बालुं हे नवलख हार
त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे
उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥
ढोल्युं हे सरस पीयूष, हार उदकने कारणें ॥ सु
पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बार
सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र र
दोजागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे कंपावीश
निवृत्त होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया
हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥
या लेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आप

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विगो ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा स, मन धींघ्यु डुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो होता हे निज निज थान, लोक चर्खां अचरिज चिते ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया थोल्यो हे तपतां दिस, रा ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे डुःख जगदिश, के जस वीते ते कहे ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया आया हे जन परचात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥ सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दपती चा ल्या गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पहुचा हे थाली हाम, नृप राणी ऊचा थसे ॥ सु० ॥ प्रीया सारें हे चरीया ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट धरु कालियें ॥ सुत पायो वर्के ॥ प्रीया टांम्यो हे वाउ ली जेम, महबल दीगो गोवालीये ॥ (कनालिये) सु० ॥ १२ ॥ प्रीया थांभ्यो हे जे लोजसार, चोर अ धो मुख जिण धर्मे ॥ सु० ॥ प्रीया चीमयो हे काल मकार, सुम नदन तिहां तरफके ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री या जाएयो हे नहीं परमार्थ, दीवु तेहसु भांखीयु ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्म य हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इच्छा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वरु सनमु खें ॥ सु० ॥ प्रीया सायें हे मलया उमाह, चाली प्री तमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वरुतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संजाल, नवली विधि नृ प आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कां तें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें जूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोच सार टांग्यो वमे, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तु ज डुर्दशा, गयो सुद्धि हुं जूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रजुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अ नुजवी, दोहिलिम डुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेड्यो वर्द्धकी, छेदावी वरु माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन सुणी पीडित तनु, सींचे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूर्ड, बोलाव्यो तव माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ मारगमामां जोवुजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जाखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलाषेंजी ॥ न० ॥ किहां विचरयो अम पासें जी ॥ न० ॥ बाध्यो किण वनवासेंजी ॥ न० ॥ कहे सुख डुःख तें किहां किहां लाधु, करते शार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० बा० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ न० ॥ निरखे नयण उघारीजी ॥ न० ॥ बेठी आगल मात्तीजी ॥ न० ॥ पूर्छे मलया लारीजी ॥ न० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोंख थई मुज पासेंजी ॥ न० ॥ हुं बेठो तस वासें जी ॥ न० ॥ उड्यो ते आकाशेंजी ॥ न० ॥ ईम इत्या दिक कठली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ न० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ न० ॥ कदली वन पेसारीजी ॥ न० ॥ तुम बहुअर निरधारीजी ॥ न० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आ गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आ वोजी वरूजाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार धरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥ नं० ॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर तो कोमी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे छे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां छे वरूतरु धारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र ख रूग कर जाल्योजी ॥ नं० ॥ उचें रही जव चाल्यो जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व०॥९॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीमित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूठ, बोलाव्यो तव माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ मारगमामा जोवुजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जांखेजी ॥ नदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलापेंजी ॥ न० ॥ किहां विचरयो अम पासें जी ॥ न० ॥ वाध्यो किण वरूलासेंजी ॥ न० ॥ कहे सुख छु ख तें किहां किहां लाधु, करते हार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० वा० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ न० ॥ निरखे नयण उघामीजी ॥ नं० ॥ बेठी आगल मामीजी ॥ न० ॥ पूर्वे मलया लामीजी ॥ न० ॥ निजव्यतिकर से कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हु बेठो तस वांसे जी ॥ नं० ॥ ऊम्यो ते आकाशेंजी ॥ न० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन वेसारीजी ॥ न० ॥ तुम वमुअर निरधारीजी ॥ न० ॥ आक्रदने अनु

आलिंगन द्युं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥
में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेळ्यो में ए योग ॥ मे० ॥ १६ ॥
धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुज गूं
दीजी ॥ नं० ॥ लेपे शबनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिं
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोडि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ मरती
पाछी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥
॥ ताणे त्रुटी रह्यो शबमुखमां, नाक तणो अग्रभाग
॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
वी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
से तुं इणे वरु मुज ज्यौं, बंधाइश निशि काल ॥ जो०
॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं चमक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
महा जर खमक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तमक्यो
जी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धमक्योजी ॥ नं० ॥ दै
व प्रयोगें शब ईम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

जी ॥ न० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ पद सा
हमु शु जोवेजी ॥ न०॥ घन जीपम वननें शमशानें,
बेठी तु किण काम ॥ नें० ॥ १० ॥ तव ते मदन उघाडी
जी ॥ न० ॥ जोती अवश्वी आडीजी ॥ न० ॥ मूकी
लाज कमाडीजी ॥ न० ॥ बोली इम पट काडीजी ॥
न० ॥ शु कु ख जाखु हु तुज आगें, भाग्य रहितमा
लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे घन कालेंजी ॥ न०॥
शैल अश्व विचालेंजी ॥ न० ॥ रहेतो कदर नालेंजी
॥ न० ॥ फरतो पुरधन आलेंजी ॥ न० ॥ चोर पुरातन
पाप दशाथी, ए आव्यो नृप हाथ ॥ था० ॥१२॥ छोज
सार ईणे नामेंजी ॥ न० ॥ वीतक ग्रीजे यामेंजी ॥न०॥
सम्भार्ये विण मामेंजी ॥ न० ॥ धाधी दर्पोर्उ गामेंजी
॥ न० ॥ मुज प्रीतम ठे हु धण एहनी, रोवु छु डुःख
तेण ॥ सो० ॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥ न०॥
चिंता चित्तमा चटकेजी॥ न०॥ विरह अगनि जिम चट
केजी ॥ न० ॥ प्राण कनमा अटकेजी ॥ न० ॥ आज
प्रजातें कर मेलावो, छुटे सूतो पद साथ ॥ नें० ॥
॥१४॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ न० ॥ गयो नेहनो
तरस्योजी ॥ नें० ॥ मुज सर्गे नवि विलस्योजी ॥ नं०॥
हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ न० ॥ चंदन छिपी

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चक्या, नृपादिक जन नूर॥ अद्भुत जय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर॥ १॥ वली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंरुल गाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंरु दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत नव उलले, परूे न पावक कुंरु ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंरु ॥ ४ ॥ तेहवे शव गय णांगणें, उम्यो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिम द्विज जई, वरुशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कांएक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज बलें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुजग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी करतो सुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशें काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे. एहवो एक इंण गाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो देख

नकटी करती तितरेंजी ॥ न० ॥ मुज खांधायी उत
रेंजी ॥ न० ॥ फरेवा लागी ईतरेंजी ॥ न० ॥ किण न
गरें तु विचरेजी ॥ न० ॥ नाम थानादिक में ते भा-
गें, भांख्यु सघलु साच ॥ न० ॥ ११ ॥ मुज ऊपरें
विश्वासीजी ॥ न० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ न० ॥
सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ न० ॥ मुज नासा रूजा
सीजी ॥ न० ॥ तव हुं पीउनु द्रव्य गुफामां, देखा
डीश तुम आय ॥ मु० ॥ १२ ॥ इम कही ते घर
चालीजी ॥ न० ॥ हु चढीने वरु भालीजी ॥ न० ॥
ठोल्यो चोर सभालीजी ॥ न० ॥ नाख्यो नीचो भा,
लीजी ॥ न० ॥ कतरि जोड तो तिण सार्खें, बांध्या
तिमहीज दीठ ॥ इ० ॥ १३ ॥ में जाएयो ततकाला
जी ॥ न० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ न० ॥ ठोरी
मन उक्चालाजी ॥ न० ॥ फिरि चढीयो वरु माला
जी ॥ न० ॥ बधन छोडी केश मही नें, कतरियो व
ली देह ॥ में० ॥ १४ ॥ खध चढावी लीधुजी ॥ न० ॥
॥ अक्षत शव परसीधुंजी ॥ म० ॥ जई योगीनें दीधु
जी ॥ न० ॥ इम पर कारज कीधुजी ॥ न० ॥ हीजे
खर्में हाख एणठी, कीर्ति कही रस रेख ॥ ख० ॥ १५ ॥

तां नारी सांग ॥ नं० ॥ मह्‌बल जांखे तातने रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, धीज समय इंणे बाल ॥ नं० ॥ जाल तिलक चाटयुं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृप प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचर्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सर जित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं ॥ १६ ॥ अथवा तें जाण्युं कर्युं रे, वात न खाती पारु ॥ नं० ॥ विण अवसर जे नांखियें रे, न चढे तेह सिराऊ ॥ नं० ॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहीं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं देवें कर्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इम कहेती नृपनी प्रिया

शे रे, तुजने नृप जाण वृद ॥ नं० ॥ तो अई कहे
शे जोलव्यो रे, अवधूतें तुम नद ॥ न० ॥ २ ॥ प्रा
ण पियाणु महारे रे, होशे अचिंत्यु आय ॥ न० ॥
तेमाटे तुम फेरवु रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥
जाशो मा मुज पासथी रे, लखमीपुज अनेक ॥
न० ॥इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन प्रभु में तेक॥
नं० ॥ ४ ॥ ताम मूकी घसी योगीयें रे, मंत्री तिल
क मुज कीध ॥ न० ॥ तास प्रजावें हु थयो रे, पन्नग
विष आवीध ॥ न० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे,
आप गयो कोइ काम ॥ न० ॥ पवन जखी सुखमां रहु
रे, ठानो बिलने ठाम ॥ न० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतो
गारुमी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
श करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ पछ
धनमां मूकीयो रे, कुम्न करावी वीज ॥ नं० ॥ तुम
आदेशें जे नरें रे, काढ्यो हु विण खीज ॥ न० ॥ ८
॥ तेहने तुरतज डंखवी रे, काढी मुखथी हार ॥ न०
॥ कर्ले धर्यो तेहथी थयो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥
॥ ए ॥ आराधी गिरि कदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥
॥ न० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, यह तुम प्रत्यक्ष
माग ॥ न० ॥ १० ॥ नूप कहे ते किम हूठ रे, जो

॥ ढ० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां डमरू डाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाडंता पोढी हाक ॥ ढ० ॥ २ ॥ अवथकी उद्भट उतरती, शक्ति क हे रे धीठ ॥ मृतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेडी कां जूपीठ ॥ ढ० ॥ ३ ॥ इंम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंड ॥ नागपाशने बंधनें भुज, बे कर बांध्या प्रचंड ॥ ढ० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इंम कहेती नज मारगें, बिहुं पग ग्रही ऊभी आप ॥ ढ० ॥ ५ ॥ बे शाखा विच हुं प ग चीरी, उंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी भुजनें ए वडें, ऊभी गई खेती कुलेठ ॥ ढ० ॥ ६ ॥ शब ते तिमहिज ऊभी तिहांथी, वलगुं गुंडाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं वली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ढ० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे वे बांधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुद्ध ॥ ढ० ॥ ८ ॥ लोक कहे इंम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ढ० ॥ ए ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इं म खेद ॥ जूप कहे जवितव्यनां, मेटीजें केम जमेद ॥ ढ० ॥ १० ॥ जूप कहे केम करथी बूट्या, बांध्या वि

रे, जे जीवितनी आय ॥ न० ॥ आजूपण मणि ते
हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ न० ॥ २० ॥ त्रीजे ख
में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ न० ॥ कांति कहे
सुणता सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ न० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलख ॥ का
रण शु शु अनुजन्यां, कहीयें ते अविलख ॥ १ ॥ पव
न जलत गिरि कंदरें, निर्गत हुओ दिनेश ॥ रजनी स
मय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनक
र तरुना दुग्धथी, घस्यु भाल मुज तेण ॥ देखी मूल
सरूप हग, घोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर क
ला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुं
ड तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें व
रुयकी, आणी दीठ शब फेरि ॥ बेठो जपवा तेह तव,
हु पण बेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहा सुज्ञानी
साहेब मेरा ये ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति ये अवसान ॥
तिम तिम शब ऊपरी परके, तरुफल्तु रोप निदान ॥ इ
ठीली योगिणी आई ये, अरिहां रीस जराई ये ॥ १ ॥

जलहलतो देह ॥ ह० ॥ २० ॥ लेव्यां पण निशिमां हें वाधे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीने, जंमार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग जस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, जांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंछित जोग ॥ ह० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोभतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी ठाण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रकाशी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी बिहुं, मेलवियां नृप तेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठां ठाण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरित्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र जरिज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ जुख तृषा निड्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मज्जण जोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहेनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताइक दि

बभर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठरुं, सुज सुखमां क
व्यु उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध भरी चाल्यु में तेहर्प
पीछयो पन्नग ओर ॥ नर्म थई वेगे पछयो, म पचघु वि
मत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काळमा
ड़ु स्वर्मा में विलसात ॥ सकट सहु टलियां हवे, मध्य
कम योगें तास ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कथु सुरधार
मृतकें, ते म खियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतत कह्यो सवे,
म श्रागख पूरी पक्ष ॥ ह० १४ ॥ लोक प्रशंसें शि
धुणतां, श्रहो हो अतुल बलवीर ॥ थोडा काल मां
घणी, जल सींचयो पीमशरीर ॥ ह० ॥१५॥ नावे वच
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संक
अखराशिनो, तारु एक सुहीज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥
हो साहस निर्जय पण माया, बुद्धि महोदधि खास
उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥
॥ १७ ॥ नारि लही अकप साखीथी, मलियो
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमा
जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंगल ते, देखाग
ने क्यांहि ॥ कुमर नृपति अण दिठीठे, देखाके अ
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक भरमा उलखें, ।
रखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिर्थे, दीठ

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ८ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ ऊपपुर लगें आडंबरें, महिपति पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ९ ॥ केटले दिन चंद्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेठा बि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते ऊपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे छे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पमदे रहुं, पूछो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥ इम कहेती जुवणंतरें, बेठी जइ सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणीपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥ आदर दे पूछया थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंमनी, कांते कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पजणे सा चंद्रावती, नगरीपति उद्दाम ॥ वीरध

न त्या रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव या, करे प्रयाण देश ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीਠ ॥ ए देशी ॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, सप्रेकण मन न वहत ॥ गुणवताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व धामणी, पण धारो पुरि मतिवत ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रीति लता सिंची रसे, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हुई तुम आवतां, पोता घट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥ वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोमि प्रणाम ॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान ॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पू ठण काज ॥ देखी दंपती ऊठिया, बोलावे वचनें स माज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे जो जई कोमि सलाम ॥ चोर थयो हु रावलो, खम जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम नदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्यु डुःख आकरु, ते करज्यो मांई वात विलीन ॥ गु० ॥ ६ ॥ मल य जणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी नवजो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु० ॥ ॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता वे

यक्ष धनंजय भवन समीपें, गोला कंठें गावी ॥ १ ॥ साची वात कहां बं राज, जे वीती छे अममां॥ तिलभ र जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ साची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी नार गरिष्ठी ॥ तासुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज बाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, देखाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें भीजी मुज जींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इंणे पुर, आव्यो काज विनोदे ॥ सा० ॥ ४ ॥ पाप दिशाथी जूपें साही, सांजे वकले बांध्यो ॥ पर्वत शिखर रही में जोतां, मोहन विकंबन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ रात्रि समय गई पासें रमती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो बो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, इम सुणी महाबल जते ॥ कह्युं तातने लाल कुमरशुं, चाल्यो त्यां तस पूंठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नरपति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

वक्ष तस छु प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ ओप रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव छु रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि देशी मुझने, तरुणो एक उयल्ल ॥ तस संकेत सुरि यहें, मली राति छु रल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी जय चोरनो, वस्त्राविक मुज लीध ॥ सुखावलीनें कचुकी, आप इसु तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जयास सार्थे मुने, घाली पेटी मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठं यत्र घटकांहिं ॥ ॥ ५ ॥ सकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोर्मी ॥ विहु उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर नदी गोखा जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने उलखे, जो उचा होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण किस्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी इस्या, गया करी करतूत ॥ ९ ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित खेल ॥ शीश धूणतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ वेरूले ज्ञार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

यक्ष धनंजय जवन समीपें, गोखा कंठें ठावी ॥ १ ॥ साची वात कहां छां राज, जे वीती छे अममां ॥ तिलज र जूठ कहुं नहीं मोहन, मखताना संगममां ॥ सा ची० ॥ ए आंकणी ॥ लोजसार चोरें जलमांथी, काढी जार गरिठी ॥ तालुं जांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज छाने ॥ डव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे खाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज जींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा प दिशाथी जूपें साही, सांजे वकले बांध्यो ॥ पर्वत शि खर रही में जोतां, मोहन विंबन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रूती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो डव्य घणुं देखाडुं, इम सुणी महाबल कठे ॥ कह्युं ताततने तात कुमरशुं, चा ल्यो त्यां तस पूंठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संजाली ॥ शेष डव्य लेइ नर पति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

वस तस छु प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव,
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुजने, तस्यो एक उपल्ल ॥ तस संकेत सुरि
एहें, मली रासि छु हल्ल ॥ ३ ॥ देखाकी जय चोरनो,
वखाविक मुज सीघ ॥ मुत्तावलीनें कचुकी, आप हसु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेप जपास सार्थे मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठं यंत्र चटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ सकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोरी ॥
तिलु उपाकी मंजूषकी, नाखी नदीयें रोकी ॥ ६ ॥ क
वखघन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर
नदी गोखा अखें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
ठंखखे, जो उजा होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किस्यु, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी हुस्या, गया
करी करतूत ॥ ए ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
खेख ॥ शीश धूणतो आगखें, पूठे कथा उकेख ॥ १० ॥
॥ ढाल दशमी ॥ बेम्खे जार भणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥
॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

दीस ॥ सुख जोगवतां मलया एहवे, धरे गर्भ सुजगीश ॥ सा० ॥ १८ ॥ ऊपजतां मोहोला पीऊ हेजें, पूरे नव नव जातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउं तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ १९ ॥ त्रीजे खंमें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ जांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इंण अवसर महबल प्रत्यें, दीये तात आदेश ॥ वत्स विकट जट साजसुं, करो चढाई वेस ॥ १ ॥ नामें क्रुर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देशमां, ते निर्झांटो दूर ॥ २ ॥ सजा समदों दक्षते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण जणी, गयो जुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पीयु साथ ॥ दूर रहीने किम चडुं, विषम विरहने हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लाजचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरो यतन्न ॥ ते आपी पजणें वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह जरेय ॥ गणया दिवसमां ते जणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ तात वचन जो

पुज सहित मलया त्या, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए॥ चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवती ॥ कू पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुती ॥ ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूछी, रही वदन निरखती ॥ रखें चरित्र मुज चावां पाके, मन मा इम वीहती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुज मनो हर मह्मारो, लीधो तो जिण धूर्ते ॥ ए पापणीने आ णी दीधो, दीसे तेण कुपूर्ते ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु न हीं के लीधो इणुणे, लेसी नवलो फदो ॥ हवणां तो ए द्विज मुज वैरी, कीधो इम विल मदो ॥ सा० ॥ १३ ॥ कहे मलया माता ठो रूडा, एकाकी किम आव्यां ॥ कुश ल न दीसे नाक घणी कां, के किणे कर्में सताव्या ॥ ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर चणे पद्मिणी मत पूछो, क हेशु हु तुम आगें ॥ विन न लमे कारज ठे बहुलां, क हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें आप्यो, शूले मदिर पासें ॥ मुख मीठी हियकामां धी ठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिव सें मलया उपकर्ठे, आवे कनका रगें ॥ थई विश्वा सिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसगें ॥ सा० ॥ ॥ १७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक्य समी निश

लणां ॥पयमां साकर भेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राक्सी रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव
जातें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी जर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन जोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
चलाववी रे गोरी, जे शीखववुं तुज्झ ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे जोली, करो उचित जे
गुज्झ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव०॥
भूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

अवगणु, तो लागे कुललाज ॥ दीठं अनुज्ञा सुदरी, जिम साधु जह काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, ना खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली ए म उदास ॥ए॥ लेइ अनुमति कणे मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो, चल्यो चवनथी वेग ॥ १०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट-महा विषवे लि ॥ अहनिशि जोवे रे छल मलया तणुं ॥ अनुया यी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी चवनें रही रे धीठी, मुज चार्म्ये ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम छलकेलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ वेठी मुखकरमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाळी रे ऊरसे लोयणां ॥ वेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे दुःख भरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकयकथा कहे मेलवी रे धीठी, रीजावे रसि आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाशु रसमाणि ॥ नवनव चर्ते रे करती खेलणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे चोथी, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां थो

लणां ॥ पयमां साकर भेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीगमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राकसी रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव
जातें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी चर रातमां
रे गोरी, काढी कूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तु मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं गाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
चलाववी रे गोरी, जे शीखववुं तुज्झ ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे भोली, करो उचित जे
गुज्झ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव० ॥
भूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो काल ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हुजो कहे राजीयो रे जोषी, कहेसा न कर सकोष ॥ जिम मुज नावे रे मनमा चो सणा ॥ जगमाहे तेहिज वालहा रे जोषी, देखारु जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राकसी रे सामी, तुम वहूअर दीसत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखारु तत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमा रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राकसी रे सामी, साधे राकस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अगणमा नाचे हसे रे सामी, रमे भमे चलगत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणा फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्यु रटत ॥ नव० ॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी उछले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ मह्शो जो जाई निशें रे सामी, करशे काई अ निष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुजटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें वध ॥ जिम तुज नावे रे मनमां चोखणां ॥ पछेसा पण नृपनें हसो रे सामी, पूठवो कष्ट निबध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहमामां एहथी सुण्यु रे सामी, कारण ए असराल ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेलु थयु रे सामी, चित्त चम्क्यो भूपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोखणा ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल श्रोकमा रे

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विषहर रुंक ॥ नृप० ॥ ॥ १८ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जां खे वात ॥ तव इम बोली रे करतीं चालणां ॥ एव ऊधारुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नृपें तिका रे धीठी, पोहोती जुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव जातें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ इणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूम चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारें अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे उसाकी वदनमां, बलबलती वे पीर ॥ ४ ॥ रुंममाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

ठाने रातिमा, आव्यो जोवा भूप ॥ अपर समीप ए
हे चढ्यो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी सुने कुवे घर
साखो मेल्ह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही
होलाल ॥ होजी दीसे ठे ते साच, जे मुजनें कनका
यें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुलने कुयेश ए किस्यु होलाल ॥ होजी एहथी नहीं
जण खेम, मुजने पण विरुद्ध किस्यु होलाल ॥ २ ॥
होजी करवी न परे कचाट, पहेली जो समजावीयें
होलाल ॥ होजी तेह नणी वनमाहिं, एहने हणा
हणावीयें होलाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ,
कोपानलथ्यु परजल्यो होलाल ॥ होजी तेहनी सेवक
साथ, गुप्त पणे जणे चांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला
ल ॥ होजी रथ चाढी वन तेह, गुपत पणे हणजो
परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करता रातें काम, लोक
न जाणे वातनी होलाल ॥ होजी इम सुणी सुजट ग
दाम, जय्या चीनी गातनी होलाल ॥ ६ ॥ होजी कर

लीधें करवाल, आवत सुजट निहालीनें होलाल ॥
होजी जिहां ठे मलया बाल, कनका त्यां गई चाली
नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल
फलती बोले इस्युं होलाल ॥ होजी नृप जट हणवा
मुज, आवे ठे करवुं किस्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज
पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल॥ होजी
ते माटे महाराज, मुज ऊपर रूठा सही होलाल ॥ ए॥
होजी क्यांहिक मुजने ठिपारू, जणनी मीट न ज्यां प
रे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गारू, हाथ रखे
कोइनो अमे होलाल॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
बेसे मांहे एकेंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
तालुं दीध, अजय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी
आव्या सुजट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल
॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वजाव
नें होलाल ॥ होजी ते कहे रूर्यो एण, बदल्यो सांग
कटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी ऊ
ठ, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो
कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥ १४ ॥ होजी
इम कहीनें ग्रही बांहें, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां यांका
वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, दे
खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ
निठ, इण सूखें मारुंरे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
हणवु के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल॥
होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देस्यो किस्यो
होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित इ
आ फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माठा म
र्म, वनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधा आपणा होलाल ॥
होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाल्या विना हो
लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, जाणती
नियति निहालिनें होलाल॥ होजी मूकी वन सधार,
आंसु पाढु नालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी ठानी
ठनक पाहारु, विषम थली मांहे धरी होलाल ॥ होजी
प्रहसमे भीम जिराक, आव्या जण नगरें फरी होलाल
॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, भूपति
महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल॥ होजी दीठी

नहि किण ठार, नृप चणे नाठी खरी होलाल ॥ २३ ॥ होजी त्रीजे खंमें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जीती तेह किरात ॥ ता त चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया चवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक च रित्र प्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कु मर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंठ मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ चटीयाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी कांई कीधुं हो डुःख दीधुं मलया बाल ने, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचास्यो हो नवि धास्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नृ० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ चाला ज्युं चि त्त खटके हो अति चटके अग्निसमा थइ, काम क स्यां विण मर्म ॥ नृ० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो ठल चारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

रावो किहा दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणों श्याम पणु धरी, मद मचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई श्राधी गतें ते किहा, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृ प वयणा हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साधु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धू तारीनें वचणे हो कुल रयणें खठन चाढीउ, गोत्र ठ मूल्यु एण ॥ ठंखंजा इम वेतो हो नृपनंदन पोहोतो मदिरें, अति पीव्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप उठी श्रावे डूमणो, जयाके घर ता स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ढेठी वयिता रा कासी, रूपें करती पास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो श्रवधारो नंदनजी इहा, हुं अपराधें वरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें ठेदीनें, आंगुली करी सरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमखाणा का म नमा हो मविरमां श्रावी आपणो, सत्रासो घर सा र ॥ श्रधमथकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठंगा न सहे धार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

भासे नूपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जाणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नू० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नू० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी डुःख नूखें हो तन लूखे दीन दया मणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नू० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी चारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंज ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठो रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंज ॥ नू० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नूपें कोपें निर्भृंठी हो जणह थीकारें फूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नू० ॥१४॥ शोकाकुल विरहार्थी हो सुत हाथीनेहिं पासीउं, बेठो मौन धरंत ॥ मरवान अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह डुरंत ॥ नू० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो डुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संज्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें खटन चाढीठ, गोत्र ठ मृत्यु पण ॥ ठसंज्ञा इम देतो हो नृपनदन पोहोंतो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप ठठी आवे दूमणो, जघाके घर ता स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ईठी दयिता रा कसी, रूपें करती चाल ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहा, हुई अपराधें दक ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, वांहनसी करी खरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमसाणा का म नमां हो मविरमां आवी आपणो, सच्चालो घर सा र ॥ अधमधकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठंग न सहे चार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्सी, पीके जाणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषनी, उघामे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्सी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी जारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंज ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्सी, तेहिज एह सदंज ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां तारुी आर्गी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणह थीकारें ढूहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥१४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अजिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नमीया हो पुरवासी पमीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवराथी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणां पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रलें, साधु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लछन चाडीउ, गोत्र उ मूत्यु पण ॥ ठेसंजा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, जघा घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज हेठी वयिता रासी, रूपें करती चास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें वरु ॥ माहाली पण जे विपाठी हो ते परठी दीजें ठेदीनें, चाहम्सी करी लरु ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमप्राणा का मनमा हो मविरमां आवी आपणो, सज्यासो घर सार ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठेगा न सहे भार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्सी, पीन्हे जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई बागो जिहां मंजूषनी, उघाने बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्सी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी चारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंज ॥ कुमर पयपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्सी, तेहिज एह सदंज ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताणी आणी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भृंठी हो जणह थीकारें दूहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहार्थी हो सुत हार्थीनहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नमीया हो पुरवासी पमीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूठी शें कारण मूलथी, एहना
पद्द कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो
नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥
जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां,
कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृ
प वयणां हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे
हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज
प्रमदा प्रत्यें साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धू
तारीनें वचणे हो कुल रयणें लछन चाढीउ, गोत्र उ
मूल्यु एण ॥ उलंभा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो
मंदिरें, अनि पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ,
सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूमणो, जघाके घर ता
स ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज हेठी दयिता रा
कासी, रूपें करती पास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को
माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दरू ॥
वाहाली पण जे विगठी हो ते परठी दीजें छेदीनें,
थांडमस्ती करी लरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमधाणा कां म
नमां हो मंदिरमां आवी आपणो, सच्चासो घर सा
र ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आय विणासो
जाणीयें, उंगा न सहे चार ॥ चू० ॥ ए ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी चारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंच ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंच ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आर्मी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भूंठी हो जणह थीकारें हूहवी, काढी देशा ठेह ॥ नृ० ॥१४ ॥ शोकाकुल विरहार्थी हो सुत हाथीनेहिं पासीउं, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हे मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नमीया हो पुरवासी पमीया संभ्रमें,

रावो किहां दीसे हो पूछी शे कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कह्यु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवराधी नवि लाधी हो गई आधी गतें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणा पूरण नाखतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूनारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लठन चाहीउ, गोत्र ठ, मृत्यु एण ॥ ऊलंजा इम देतो हो नृपनदन पोहोतो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वह्लभ सुतनें पूठें हो नृप ऊठी आवे दूमणो, उभाले घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज छेती वनिता राक्षसी, रूपें करती पास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहां, हुई अपराधें दरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेहडीनें, साहस्सी करी खरू ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा का मनमा हो मदिरमां आवी आपणो, सजालो घर सार ॥ अधमथकी जण हासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, ठगा न सहे जार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दया मणी, वस्त्र विहूणी बेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंच ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंच ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भूंठी हो जणह थीकारें झहवी, काढी देशा बेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहार्थी हो सुत हार्थीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैं हैं मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी नूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संभ्रमें,

रावो किहा दीसे हो पूठी शे कारण मूलथी, एहना एह कुसूल ॥ चू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणु धरी, मद वचन कहे एम ॥ जोवराजी नवि साधी हो गर्ड श्याधी गतें स किहा, कहो हवे कीजें केम ॥ चू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणा हो जल नयणा पूरण नाम्वतो, इम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रसें, साधु सहि नरनाथ ॥ चू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें खडन चाहीउ, गोत्र उमृत्यु एण ॥ ठेलजा इम हेतो हो नृपनदन मोहातो मदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ चू० ॥ ६ ॥ वल्लभ सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे छूमणो, उघाडे घर तास ॥ इम कहे सुत में दीठी हो तुज ईडी वयिता रासली, रूपें करती चास ॥ चू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नदनजी इहां, मुई अपराधे दरू ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें वेदीनें, धाहम्सी करी लम ॥ चू० ॥ ८ ॥ कुमसाण कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संचासो घर सार ॥ अधमधकी जण हासो हो घर आय विणासो जाणीयें, ठेठा न सहे चार ॥ चू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

भासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीळे जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीव तां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधी र ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मं जूषकी, उघाडे बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख भूखें हो तन लूखे दीन दया मणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मय कारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंभ ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी रा क्षसी, तेहिज एह सदंभ ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बा हेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंछी हो जणइ थीकारें छूहवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहार्थी हो सुत हाथीनोहिं पासीउं, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अभिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैहै मोह दुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नमीया हो पुरवासी पमीया संभ्रमें,

फूकि फूकि जोलां खाय ॥ चू० ॥ १६ ॥ भीजे ख
कें फावी हो रस जावी वग आवी जसी, तातो तेर
मी ढाल ॥ कांति कहे सांजलजो हो चित्त कलजो
कविता चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ चू० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर अष्टागवी, पुस्तक हस्त भरेय ॥ आव्यो
एक निमित्तिउं, महबल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व
चन मुख उच्चरें, भुज करी आघो सोय ॥ सचिवादि
क तेहनें नमी, थे सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि
र्देशें आसने, बेठो जूपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखु,
खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ जक्ति युक्तिशु मंत्रवी, पू
छे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूउं एक
अम जोश ॥ ४ ॥ अकलकित इण इणी परें, कुमर
वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम उतरी, जिम हा
थें परनाल ॥ ५ ॥ ता दुःखें महीपति हूउं, मरणो
न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहर्यां, न सहे
प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह जणी कहो अम तथे, मा
ग्यें जाग्य विशाल ॥ मलया मलशे जीवती, पजणो
तेहनी जाल ॥ ७ ॥ जोशीनें साहमे मुखें, बेसी विनय
प्रकाश ॥ जूपति योख्योतत दणें, चारुवचन विलास ॥८॥

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयका रे नगर सीरोहीयो
राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयका रे, लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा,
कहेने गुणवंती मलशे क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥
क्षण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो
सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे
वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे दुःखमे व्याकुली हो
सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धीर रे हो सु० ॥ जगमां
जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥
चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें
लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० मलशे मलया
नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो
सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु० ॥
मीठकी जीवाकण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥
अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई
न करे कमी हो सु० ॥ ४ ॥ जो० ॥ पूछे कुमर उदंत रे
हो सु० ॥ कहोने जीवंती किहां छे गोरकी हो सु० ॥
॥ जो० ॥ जोशी तव पभणंत रे हो सु० ॥ सांभल सलू
णा जे कहुं वातकी हो सु० ॥ ५ ॥ जो० ॥ जाणी न जाये
क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी दुःखिणी प्रायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप ति तेड्यो तेह रे हो ॥ सु० ॥ वनमा जाणी सुजटे मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय दीधो सस नेह रे हो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रे हो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां गइ हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवा चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन जाण्युं एहनें राक्षसी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपति मन निर्विघ्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं इणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूका साजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ स्वाति गिरितटें छेव रे हो सु० ॥ एकली आवन्ती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलडी स्वयमेव रे हो सु० ॥ मरशे रुदवन्ती रखडन्ती आफली हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी धाख रे हो सु० ॥ राती वनमाहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

जाण्युं आल रे हो सु० ॥ जयथी तुम आगें कही अ
बती बती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे
ह रे हो सु० ॥ सुहमे ते करुणा रूमे संग्रही हो सु० ॥
॥ जो० ॥ विणठी मुज मति तेह रे हो सु० ॥ त्राठी ते
पेठी जम हीयमे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन
देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिचल चित्त समाप रे हो
सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते
साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र
यण रे हो सु० ॥ पहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी
हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमें ढाल रे हो सु० ॥
सुपरें ए जांखी रूमी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा
समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर जणे मलया तणा, जनक जणी अवदात ॥ क
हेवा चर चंडावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
पामीयें, तो मुज पुण्य प्रवोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

चूपें पुरुष, मूक्या चिहुदिशि चूर ॥ निरखण लागा तेह पण, देश देशांतर दूर ॥ ३ ॥ समआवी निज तनु जनें, चूप जमाके आम ॥ करें उतरतां कवल, पगपग ल्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा, धरापासनी पास ॥ आव्या नर कर जोमीनें, पजणे एम प्रकाश ॥ ५ ॥ढाल पचरमी॥मदनेसर मुख बोल्यो प्रटकी॥ए देशी॥

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या स वि थामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलया किहां ॥ देश नगर गढ कुगर जोया, जलथल वट अ वरोया हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पुर पाटण सवाहण पार्टे, दुर्घट विषमी वार्टे हे ॥ स० ॥ फरिया उदूजट अटवी घार्टे, मलया जोवा माटे हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी ईम चिंता जुत्तो, चिंते मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्वे महापातक मुज विकस्यां, सुचरित सघय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३ ॥ निर्गमशु किम दिन अतिलषा,, जोल्यो दुःखनी छुधा हे ॥ स० ॥ दूठ वियोग प्रियाशुं माहरे, वात न दीसे आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हेहे शून्य महावन मांहिं, दरु खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे हईशु आफा सी, दयिता मुज सुगुणासी हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वनग

हीर फिरती आथमती, किण कर चढशे रमती हे ॥
॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे नि
ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें जय चंगुर म
हिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली
वनइरणी सरखी, मरशे भूखी तरसी हे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयमे में वारी
हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वद
न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोरी तणो विरहो ज
चाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीअरुं पत्र
रथी कावुं, इंणी वेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ए ॥ सुकु
लिणी तुं चतुर चकोरी, द्ये दरिसण गुण गोरी हे ॥ स० ॥
देई विठोहो अलवें जारी, न करो प्रीत ठगोरी हे ॥ स० ॥
॥ १० ॥ संचारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
मोहो हे ॥ स० ॥ अणीआलां चालां ज्यौं खटके, हि
यमे विरहो चटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पीता स
मजावे लेखें, सुतने वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें
हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त लगुं चित्त धारी, कुमर
निरखण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खड्ग ठानो चली चांतें,
निकल्यो माझिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ हूर्ज प्रचात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो किम वहेशे हे ॥ स० ॥ भूमि शयन करशे किम वालो, नदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहित सुत मुखडुं जोस्या, तदीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ भूख गई सुख निद्रा थाकी, नृप नदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर करत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री पचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा सवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स० ॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंड वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इम भांखी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंदरीचरित्रे पंडित श्री कांतिविजयगणि विरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीय खंड संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचतुर्थखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा ससतेह ॥ ३ ॥ त्रीजो खंड कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंड ॥ उछाहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंड ॥ ४ ॥ हवे महाबल वा लही, मूकी निशि वन ठोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती झरती हिये, झरती आंसू नयण ॥ आरडती पडती कहे, विरहालां इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीडां गइती तलाव हे, हे मारुडे मेहेवासी केरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो गुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

॥ अम्मां० ॥ रवीनें कूरु काइ कसक हे, हे गनेशुं अपमानें काढी याहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी प वि षमी दमाकार हे, हे हियम्लु थरकावे नयणें देख ता हे ॥ अ० ॥ सिंहना इला घडुला सचार हे, हे शृ गने चमकावे विरुआ पेखता हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुह री गूजे गोहा ढली हे, हे चित्तानें मनकुत्ता चोटे हो टशु हे ॥ अ० ॥ इसके गेवरिया टोला टोलि हे, हे देखता आफमता चाखर फोटशु हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सक सके सूअरनां मातां यूथ हे, हे तातां हर्षे ग्जाता घा ना आकुला हे ॥ अ० ॥ वढता उछलता मामे युरू हे हे रोपाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके सींगाला चरता फाल हे, हे शवरिया अवरिया खगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखेके कूकता पाला श्याल हे हे रोमालां हठमालां रींछ फरे घणा ह ॥ ५ ॥ अ० ॥ खमता उमयमता ढोके रोक हे, ह हींके ते चिण ढींके पीके मारका हे ॥ अ० ॥ दीपक करता चढना मोझा हे हे टीवरीया गुवरीया मारकपार का हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ यखगे घुररताके स्याहघोष हे, हे ' मामें मद वेगा गेमा आयके हे ॥ अ० ॥ चमके चींचख ..क्षिया राप ह, ह जामा नन पामा आमा आरके हे

॥ ७ ॥ अ० ॥ उलले हुंकलती नाहरकोमि हे, हे लुंकमि यां वांकमियां दरुवमियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोमि हे, हे उथरुता चलचलता मृ तलपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु ख फामी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशक बिलारु हे, हे विंजू ता अति खीजू मदमाता फुके हे ॥ ए ॥ अ० ॥ खसके खोत्रालो खांतें नील हे, हे हूके बल नवि चूके सांकरु वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें त्रिषधरनी अरुखील हे, हे फुंकीनें परजाले जालां झींगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ रुके चमरी वांसांजाल हे, हे वेरु ने वली सावज फूकें रोषमां हे ॥ अ० ॥ खरुके त्ररुके विहगा माल हे, हे खच्चरिया बल त्ररिया दोरुे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ अररुे उन्नाला आरण उंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर त्र घणा उरुेहे ॥ अ० ॥ रुवरुे रोहि बोहिरु लूट हे, हे गोकरुणा कंदलिया मिलि बेसे खूरुे हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघरा मांमी घोर हे, हे त्ररु हरुतां ह रुहरुतां त्रूत घणां त्रमे हे ॥ अ० ॥ चरमा चोरा करता जोर हे, हे धारानें लेई आवे आमा मागमें हे ॥ १३ ॥ ॥ अ० ॥ एहवा त्रीषण वनमां मुज हे, हे निर्दय नृप

ना सेवक मेली ते गया हे॥ अ० ॥ कहियें को आग
ख दु ख गुक्ष हे, हे विण अपरार्धे नृप धीठ थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाठ इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरकुनें अलगु वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पक्रियां
दु खथी साई हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
हा आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानी शुं पलटी बु
द्धि हे, हे पठतावो हवे थाशे श्रेहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीउमे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाड़ा मो पार्खे वली हे॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
का हु न मुई कांई हे, हे दु खकामां नवि पकती इणवेला
व्हा हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवु गोरी त्यांहि हे, हे स
जारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीका पेट हे, हे थालायें त्यां सुत प्रस
व्यो जलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवनरीयो सुरवरीयो पुण्यें कजलो हे ॥ १८ ॥ अ०॥ सु
तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सूति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पजणे पुत्र वधावु कांई हे,
पापिणी हु इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ०॥
सुतनु मुखकु जोती मात हे, हे हरखें ने तिम धरके
वन दम्भी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परजा

त हे, हे ऊठीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन थईने बेठी बाला कांठमे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ रिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठमे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ज्ञानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे हीयकलें हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इम जलि चांतें पजाणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी नदीयें ऊतस्यो, वींट्यो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा रूहकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागु ॥ ए देशी ॥
॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुण आंहीं रे ॥
गोरी कहे साचु ॥ उत्तम कुल सजन प्रत्यें, कहे आकृति
तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह
री, के रीशाणी तु आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट
वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पु
त्र प्रसव ताहरे इहा, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥
वनमांहि बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥
॥ ३ ॥ धनवतो व्यवहारीयो, मार्मे हुं बलसार रे
॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें बसुं, पर द्वीपें व्यापार रे
॥ गो० ॥ ४ ॥ जमु कसु जगदीश्वरे, मेलवतां तु
आज रे ॥ गो० ॥ मुज केरे आवो वही, मूकी मननी
लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए न
र चपल पतग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें,
करशे शील विजग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर मा
लता, रहेशे शील अखंड रे ॥ गो० ॥ इम धारी बो
ली त्रिया, सुण गुणरयण करंड रे ॥ गो० ॥ ७ ॥
तनुजा हुं चमालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥
आवी रही वनमा इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥
॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कहे, नहीं जांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेच्छायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो कुरूपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन नयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती ठानें ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, आपी करण संनाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

अवर नृपण भोजनां, आपें दासी प्रीति रे॥ गो० ॥ नांखे नहिं कन्नु मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥ ॥ १८ ॥ नाम पूछ्युं अन्यदा, वलसारें करी शान रे ॥ गो० ॥ इलुयें सा कहे मादरू, मलयसुंदरी अनिधान रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ व्यवहारी इम चिंतवे, मम कहे ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउ, कुल एहनु सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ २० ॥ चाल्यो तिहां थी वाणीयो, करतो पथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ पुत्र सहित गनी रहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥ दासी एक विना कहे, जाणी न पके जेम रे ॥ गो० ॥ ॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इम पनण त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें इवे, आदर तुं गुण वन रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज सपदनी सामिनी, था सां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो, रहेशुं आणाकार रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ पुत्र नहिं को मा हरे ते गमें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय मालिका, वधशे इम घरसूत्र रे॥ गो० ॥ २५ ॥ व चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुरू रे ॥ गो० ॥ कुलवतानें नवि घटे, करवु लोक विरुद्ध रे ॥ गो० ॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पकजो पण ए पिं
क रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील
अखंक रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वार्यो बहुल प्रकार
थी, नाख्यो वचन निठेक रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो
बापको, न करे वलती जेक रे ॥ गो० ॥ २८ ॥ रोषा
रुण घर बारणें, ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रि
यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मां
हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें जर्यो, रह्यो लक्षण अ
वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यभिचारिणी को नारीयें,
नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
बीजी चोथा खंकनी, कांतें पन्नरमी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर द्वीपें
चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण
नारिनें, पूछी स्वजन कुटुंब ॥ ढानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां, जई बेठो शुभ सब ॥ सप्रपंच फाल्क जनें, लीधां नां गर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल श्रीजी ॥ ईडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूरयो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जल निधिमां जल मारगें रे, चढ़ेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें घाले साथर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इम चिं ते सा सुधि चूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वे चशे रे, के देशे चूकामी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गा नि॥ध०॥२॥हूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कांपे हीयु रे, जिम रोगी काय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिवन मृत सम ते प्रिया रे, गल गलती गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नाथनें रे, चढ़ेती आं सु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शु कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवु रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पकियो निरखी आपमां रे, थाय नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणु रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, चढ़ेसु प्रवहण चल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यों थावरकूल ॥ भ० ॥ ७ ॥ चधारा उतरा विनें रे, आपी ह

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ८ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें सलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकड रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, ते पण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुठ जुवाण ॥ निस्नेहेरा ठोले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर त्रांके करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत वा ला हुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ वि च विच अंतर गालीनें रे, पोपे अशनें अंग ॥ वलती मह्रीरगतारथी रे, मांके रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ वाला चिंते में कीयुं रे, गत जव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं डुःख दोजाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा जूजारणी रे, कां सरजी किरता र ॥ देतां डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गाम न हुंतुं डुखने रे, तो आव्यो मो पांहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ जाल लख्युं बनी आवशे रे,

सुपरें तेह सद्देस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दु ख पूरें अवला जरी रे, नाणे मनमा रोष ॥ एकातें चिंते तिहा रे, स्व चरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परद्वीपें गर्के चल्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही रे, अहो जव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरनी तन छोड़ी स्त्रीयु रे, मूर्छाणी भूपीठ ॥ खरनी रुधिरें एकदा रे, पनी नारक शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पक्षी नज थी ऊतरी रे, आशकी पलपिंक ॥ चंच पुटें लेई ऊ कियो रे, सहसा ते नारक ॥ ध० ॥ २१ ॥ नज मार्गे ज्यां सचरे रे, जलनिधि माहि विहग ॥ तेहवे बीजो सामुहो रे, आव्यो नारक तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आमिष लोजें तेहशु रे, मके जूऊ तिकोई ॥ लमता चच थकी पके रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसुरिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥ के धारा हरिवल्लनी रे, के दामिणी थे दोट ॥ ईम क्षण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट ॥ ध० ॥ ॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती, श्रीनवकार ॥ तरता गज मत्स्य उपरें रे, पनी सुकृत आधार ॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंडें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय
माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पमी, जखपूंठें निर नाथ ॥ पण
जो ए जल बूमशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आरा
धन हेतुक जणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांजले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी
सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि कणिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, जुज
लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी
अबे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इंम म
त्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दी
संत ॥ के सुरपादप वेलमी, चलगिरि शिर विलसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमाकती, खगकुलने गजगेल ॥ चा
ले ठांटी जल कणों, जोती जलनिधि खेल ॥ ७ ॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिष्ठ ॥ उदधितिलक वेला
उलें, कुशलें पोहोतो मञ्च ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंडावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें जूपा

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढियो अरिनो सालो ॥ चढीयो नृपकुल शाल निशलो, दिगिरि कुमारें देखा
मी रूको ॥ रगें रमतो सायर कठें, आव्यो वींट्यो सु
भट उल्लठे ॥ जीराजेंद जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल,
पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे दुर्दंत, सीमाडा भांज
वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहामो जल आवतो
रे, जलमां नूपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे,
बेठो तेहनी पीठो ॥ बेठो तेहनी करी असवारी,
लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा
सारू, मलया माणस खाते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए
क जणे गरुडें चम्पो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह
कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो ॥ आवे ठे नृप
चाखे मान्नो, कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि
रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाटें ॥ जी० ॥
॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥
शुभादर्में सुदरी रे, उतारे मही धीर ॥ उतारि मही
याहिर मोकें, सुदर थल भूमि जई ठोके ॥ प्रणमी व
लियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो ॥
जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य मह्य जलें रे, रयणायरमां
मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय ली

नो॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी ईम कह्युं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मछ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक्र चक्रनां व्रण जुर्ड गातें ॥ ए आहिनाणें सिंधुवगाही, समीप घणुं दीसे जलमांही ॥ जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण जांगे पडी रे, मछवांसे किहां दूरें ॥ मछवांसें बेठी इहां आवी, ईम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंदर्प नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुंण तु किस मीनें धरी रे, आफलती दुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीहा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज बिहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें दुःख तेहखु रे, तात असुर कुल द्वेषी ॥ शीलविलखी माहरु रे, लेशे सुत सपेखी ॥ लेशे सुत इम चिंती नि शासी, बोली बाला दुःख चकासी॥ मुज चिंता तुमनें छे केही, पुण्य विना रजलु हु एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पजणे नृपनें रे, भारी ए दुःख भारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेवु कांई करारें ॥ कहेवु कांई शके मत पूछो, दुःख समा वली वली लागशे ढंगो ॥ मीठें वयण हुवे आसासी, उपचरणा कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूछे मानिनी रे, नो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरु रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नगारो, तेहथकी न लह्यो दुःख आरो ॥ सन्मानी नृप मंदिर आणी, सुख साजें राखी जिह्वा राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ अण सरोहण ओषधि रे, रूऊषियां अण तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आवासो ॥ थापी पृथग वसन शणगारें, सतोषी नृपें तेणी वारें ॥ मुजनें इम नृपति सतकारें, थारु नहीं आगें इम भारे ॥ जी० ॥ १३ ॥ ते दिनथी ततपर हुई रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनुं रे, टालि भ्रम विक्षेप ॥ टालि भ्रम विक्षेप ।ववेकें, आ

धे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंडें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ ज डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बंध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुद्रिका, ग्रहेवा मणि पर जाग ॥ २ ॥ तुज वच नामृत चंद्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजरी, तुं शिरशेखर ओर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ञ शुं, वाखुंही न रहंत ॥ कोकि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाणये आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण छे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश कीहां पाने पडी, नहीं चूकुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे ठवी, ठानी हीये निघट्ट ॥ वचन गमें ते डुष्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लवणिम पडो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ९ ॥ बूडी कां नहीं जलधिमां, क

खे उतारी कांइ ॥ नरकोपम छु खर्मा पकी, हे हैं पाप प साइ ॥ १० ॥ चाहे शील विखरुवा, कामघल नृप धी ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अधकत व्रतनें इठ ॥ ॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, ऊचो निरखी धा स ॥ वधिग्यु तन मन सवरी, बोली ईम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥ ठेको नाजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेको नाजी, नांजी नांजी नांजी, ठेको नाजी ॥ नारी नरकनी कूकी ॥ ठे० ॥ आपे छुर्गति ऊकी ॥ ठे० ॥ अनुचित करनां मीठका बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥ केई विरला हित मारग ढाखे, ते छिज धाजी साजी ॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी सपद निकसे, विकसे अपयश माला ॥ पुरुष पतगा ऊपण पतो, विषम अगनिनी जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे, लागो जिम मशि विंडु ॥ तिम परदारा सगति राहु, म लिन करे गुण इंडु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि णासामे, परनारी रस ढांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ दीपत फ र विषधरना मुखमा, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥ ॥ ५ ॥ निज नारीथी चूक न जांगी, छु मिलखे मुज

माटे ॥ भूत जाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ हे० ॥ ६ ॥ कानननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उंशीसें सलगे ॥ शीखम्ली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ हे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, महि लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंद्रायण फल साचे ॥ हे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलह नुं, मोक्षपथिक पग बेमी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति जथेमी ॥ हे० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदा रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ हे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुं मी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिं मी ॥ हे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय ठंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ हे० ॥ १२ ॥ चूकवतां उ ष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये उ लहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ हे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह ज णी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ हे० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल लाहारुं, जरियो गुण

सदोर्हें ॥ तो कां कुमति प्रसगें चोला, पररमणीशु मो हे ॥ ठे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाकी, रा मायें रस चरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो पण नवि ठसरियो ॥ ठे० ॥ १६ ॥ ए नारीनु जोरें पण हु, मूकीश शील विलकी ॥ सुखें करजो जस्म बपुप ए, इंम चिंति थिति ठकी ॥ ठे० ॥ १७ ॥ विख ख बदन कदर्प्प नरेसर, राज काजमा बलग्यो ॥ प्र मदा मिलन महोत्सव बन्हि, हृदय सदनमा सलग्यो ॥ ठे० ॥ १८ ॥ निर्जल देश पकयो जिम माठो, तिम नृप विरहीं तलपे ॥ दृष्टि प्रसगादिक मन्मथनी, दशे दिशा बशि विलपे ॥ ठे० ॥ १९ ॥ आवर्जन करवा नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि वस्तु विशेषें, सुपनतर नवि चूके ॥ ठे० ॥ २० ॥ वदन बपु जाखु मन पसस्था, चिंता जलधि तरगा ॥ मरणोन्मु ख मलया थई बेठी, राखण शील सुरगा ॥ ठे० ॥ ॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे सकटमा, जे निज मन थिर राखी ॥ ढाल पाचमी चोथे खर्के, कातिविजय बुध जाखी ॥ ठे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूकलो, तरुवर कोइ तका

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें ऊड्यो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नजरथी नृपना अंकमां, ते फल पमियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पम्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अहे एक पुरपरिसरें, छिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अजंग ॥ ४ ॥ आएयुं तिहांथी सूमले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पम्युं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लज प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ कण एक एम विमा सतो, नूपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुजटने फल ग्रही, पोहोंचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नूपति वचन तथा क री, सुजट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मल यानें फल दीध ॥ ८ ॥ विणकालें किम संजवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित इम नृपजणथकी, ली ये अंब तजी लाज ॥ ए ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नूपति धाम ॥ उत्थापी कहे रायनें, पापी नि जकृत काम ॥ १० ॥ महादुःखें दिन नीगमे, तकत

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूर्ड दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एलो चूलो मुज मन वासे हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, काइ न थर्ड मन विशवासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शील थी गोशे, आकु नें अवगुन जोशे हो ॥ नृ० ॥ शाख लाखीणी खोशे, तो सुख किस्यो हवे होशे हो ॥ नृ० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी जगिनी शी ज ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चाबी धज्जा, नवि जाणे ख ज्ज अवज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ ईम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमाथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंबा रस मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४ ॥ नर हूर्ड फीटी नारी, दिव्य रूप कला सचारी हो ॥ ॥ नृ० ॥ सुदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ पेठो मदिर जावें, अंतेउर स्या स निहाले हो ॥ नृ० ॥ सूलो जिम रखो आलें, सुर तरुनी साख पिचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थई राणी सवि कोचाली हो ॥ नृ० ॥ जा णे सचे वाली, इम थजी रही विरहाली हो ॥ नृ०

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ जू० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ जू० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रलक्ष ए सुरवरियो हो ॥ जू० ॥ विद्याधर गुणें जरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ जू० ॥ ए ॥ पीमी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ जू० ॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ जू० ॥ ॥ १० ॥ धामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोखे ए बेठो हो ॥ जू० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ जू० ॥ ११ ॥ जूपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ जू० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ जू० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउ क्रोधें हो ॥ जू० ॥ मलया बदले योर्डे, कुण मूक्यो मुज अवरोधें हो ॥ जू० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या चरु भृकुटी चढावी हो ॥ जू० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥ जू० ॥ १४ ॥ बेठा ठां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ जू० ॥ कहे जूपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ जू० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किश्युं ए जासे हो ॥ जू० ॥ ते कहे

जेहवु देखो, तेहवो तु इहा शु लेखो हो ॥ नृ० ॥ ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण न्यारो हो ॥ नृ० ॥ मलयाना इर्णे जमही, पहेर्यां ठे पट ते सिमही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ में रति रस मागतें, नर रूप धर्खु कोई तर्ते हो ॥ नृ० ॥ जाणु म लया एही, वेठी ठलवानें सनेही हो ॥ नृ० ॥ १८ ॥ महीपति कहे सेवकनें, इम अतेउरमा न घने हो ॥ नृ० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर का ढो हो ॥ नृ० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, का ढ्यो बहि जुज प्रही तामें हो ॥ नृ० ॥ बाह्य एहे नृप राखे, एक दिन बली पहवुं भाखे हो ॥ नृ० ॥२०॥ रूप कसु शे योगें, नरनुं कुण तत्र प्रयोगें हो ॥ नृ० ॥ हतु स्वाभाविक जेहवुं थाशे किम क्यारें तेहवु हो ॥ नृ० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियकामें, विलखे जुर्ढ जोगनें कामें हो ॥ नृ० ॥ मौन करस्थानी वेला, रहेशे ब की पहनी मेला हो ॥ नृ० ॥ २२ ॥ मलया बाजी जी ती, नृपतिनी मति गति बीती हो ॥ नृ० ॥ ठठी जो ये खरें, कांतें कही ढाल घमर्ने हो ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा

॥ कसी कसी नृप पूठीयुं, हसी न मेले मीट ॥

तीखो लागो ते तदा, जिम बावलनो चीट ॥ १ ॥ मलयकुमरी ऊपर हूर्ज, रोषारुण भूपाल ॥ मंमावे तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ ताम्हे ताले ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुकी वली चूकी दीये, पाम्हे नाम्ही घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश भूतलें, आकर्षे पग बंध ॥ हर्षे पर्षद निरखतें, धर्षे दे पग खंध ॥ ४ ॥ सिंचे नीचें कूपमां, निद्दणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटें चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत ईम ताम्ही जतो, चिंते है किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, ल हीशुं दुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निद्रावशें, पड्यो निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन आश ॥ दीठो जमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा स ॥ ८ ॥ तस कंठें ऊजो रही, चित्त चिंते दिलगीर ॥ पम्हशुं जो कर भूपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण नहिं महारें इहां, मरण विणा कोइ ठेर ॥ इष्ट संचारी आपणो, ईम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ ऊधवजी कहेशो बहु न कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुजी दुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ साधी, साम्व मले जो वर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीछो, डु ख स कटमा नाखी ॥ चाम्य रहित ज्यां त्यां हुं भटकु, मधु भूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ देव अटारा महाबल सार्थे, ए जव दीधो वियोगो ॥ परजव कत पणे मुज तेहनो, मेलवजे सयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर क ची नररूपें, वेती इम ढंसजा ॥ सल्ल हूइ कूपें कपावा, प्रेम भरी निरदभा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेर्ये ॥ पछियशाखमां रातें सूतो, निंद सही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावु जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयार्ये जे दीया ढंसंजा ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ पूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागना सूचक प्राईं, पम्छंदे नभ मार्गे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सम्रमथी ऊठ्यो त्यां चमकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस सेर्खे, मरण लीये कां ता णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुतु, इम कही ऊपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूर्ठे तिमहि ज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा जाख्यो, लघु सादें इम जांखे ॥ मुज अब
लाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र०
॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास
उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो कठी पा
सें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे
मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुः
खमां हियमे धाख्यो ॥॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं
कुंण तुं वे, कां पमियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अ
नुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं हे
किम आयो कूपें, पमियो कां मुज केमें ॥ इत्यादिक
पूछी सहु पाछें, काम करो एक नेमें ॥ प्र० ॥ १४ ॥
निजथूंके मांजो मुज बिंदी, जांखुं जिम स्वसरूप ॥
तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥
प्र० ॥ १५ ॥ कूप जींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन
विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमि
विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लज दयिता दर्शन देखी
उल्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी
चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आजें वूठ
घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन
मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ साधी, साख मखे जो दर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीठो, डु ख स कटमा नाखी ॥ जाग्य रहित ज्यां त्यां हु जटकु, मधु जूखि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ देव अटारा महावल सार्थे, ए जव दीधो वियोगो ॥ परजव कत पणे मुज तेहनो, मेलवजे सयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूआ शिर क जी नररूपें, देती इम उलजा ॥ सह्रु हूइ कूपें कपावा, प्रेम जरी निरदजा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महवल ते दिन शेषें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद लही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावु जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया उलजा, ते कानें जई लागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ पूरव वचन प्रियाना, सरला सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पस्तंदे नज मार्गे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ सभ्रमथी उठ्यो त्यां जटकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ता णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महवल पीयुनु, इम कही कपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहि ज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ए ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा चाख्यो, लघु सादें इम चांखे ॥ मुज अव लाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संचास्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियडे धास्यो ॥॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूछ्युं कहे साचुं कुंण तुं छे, कां पडियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं छे किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक पूछी सहु पाछें, कास करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, चांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप भींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लभ दयिता दर्शन देखी, उत्कंठ्यो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आर्ने वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥ इम

कहीनें नयणें जल जरतो, पूठे तस विरतंत ॥ सापि कहे हियमें डुःख पुरी, धुरथी व्यतिकर तत ॥ प्र० ॥ १ए ॥ कहे पिछ तें सकट सायरमां, पेसी डुःख अनुजवें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्या किम जवें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे बलसारें, कणवीनें सुत लीधो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेठें, मूक्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेश्यो किम न वन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि होशे जो इहांथी, बूटक थार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछ्यु वली दायतायें ॥ आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इहायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख सजापण करता बेहु,, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पजणी कांतें उमाहे ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥रयणी गई प्रगमो हूर्ज, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद जोतो राजिर्ज आवे जिहां ढे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण कूपमां, बोल्यो भरणी नाथ ॥ जूर्ज सहजरूपें प्रिया, विलसे ढे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुजगता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोमी जोमता, चू

ल्यो नहिं जगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोजे अनुपम जोमलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अजय हजो तुमनें विन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस वंठ ॥ ५ ॥ जूपें बिहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें जूपति तणो, मलया जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी को रि कर्दथना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी नि खर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप थी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा यो ग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो बोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूमी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू०॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उछरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो इम कहे तो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ जूपति कहे जणनें पहे ली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें सेवक खींचे

जोरशु रू० ॥ गयणागण गहेरो कीधो घहेरो सोरशु रू० १ ॥ आतम तत्त्वकज जाणे करकज सापना रू० ॥ निरखत नराणा कलश पूराणा पापना रू०॥ अंध कूपक आर्रे आवे करार्रे ज्यों त्रिया रू० ॥ चूपें लहि ताघा वे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख माहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिठ विहुणु कणु हुणु मन किये रू० ॥ मदबस तसकेर्रे आव्यो नेर्रे काठमे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो राणो दीठमे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोपें ठंपीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वरकीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी काबी जमणी ए जुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ माद लिर्ठ मार्यो स परिवार्यो गोठिनो रू० ॥ नाखु अध कोठीमां जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ घापी ईस टूंकी कापी मूकी दोरकी रू० ॥ बधनथी लूटी माची छूटी उघरनी रू० ॥ ६ ॥ पक्विर्ठ ततखेवा खातो ठेर्वा फोरनां रू० ॥ नीचें दल जागा लागा कागा जोरना रू० ॥ नारी तस पूर्ठे पक्वा ऊठे साहर्से रू० ॥ चूपें कर साही राखी बाहीर्ने तिर्से रू० ॥ ७ ॥ आणी आवासे राय प्रकासे तेहर्ने रू० ॥ कुण ए रस चार

थो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूछी नवि बोले आंसू ढोले ङुःखनां रु० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न बोटे इकमना रू० ॥॥ ७ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी एहवो रू० जोजन पिउ पाखें न करुं लाखें जेहवो रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पादरु रू० ॥ वेगें जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ या शे किम कूपें नाख्यो जूपें नाहलो रू० ॥ नीसरशे क्यां थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धरती हरकुं चरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो करती दाहाढो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण लहेती, विरहें दहेती देहमी रू० ॥॥ निशिमां एक मागें जूतल जागें ते पमी रू० ॥ रूंकी विषधरियें रोषें जरियें क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे अलगो आंहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संजारे जिन मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाळ्यो नाग उछाल्यो वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो जूपति आयो व्याकुलो रू० ॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा जलेरा जे वल्या रू०॥ साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमल्या रू० ॥ इंडी थयां शूना चेतन ऊना धारणें रू० ॥ एक सास

उसासो मन्नित मासो दाण दार्ये रू० ॥ १३ ॥ ते डु ख निशि महेती न लहे यहेती विभ्रमो रू० ॥क रया तन ताजी प्रगव्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति डु:खें रू० ॥ पमहो मजमावे साद ममाये जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कन्या यधुर रणरग सिंधुर तेहनें रू० ॥ थापे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फरया रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ धोंके संचरया रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि जटकी पाठा ठटकी नें वस्या रू० ॥ नृप जयननी वार्टे आवे उमार्टे लख जस्या रू० ॥ चोथे खर्के चावी हास सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमगें रसने रंगें ए गमी रू०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अचिनवो, पमह उवे त्यां आय ॥ नृप सुजटें नृपति कन्हें, आएयो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उंखखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हएयो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकर्म्म ॥ मुजनें अल गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इम चिंति

आण उलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा
धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, अमर पीवे चाठी
चगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति
उनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या चलें, उपकार
क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे,
मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिखे आजूबलें, पुहवी तल शोभंत रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं, काम
करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं
हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ २ ॥ मो० ॥ लाखिणुं लोकां विचें, ए छे यशनुं
काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बो
ल्याथकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश
मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज
सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥
॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे
॥ मो० ॥ क० मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां, कर

शे कुण प्रतिषध रे ॥ मो० ॥क०॥ ५ ॥ मो० ॥ सकट पकि यो मर्हीपति, कहे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ बीजा पण मुज केटलां, काम करीश जो ठे ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशे नृप का म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले जाईश निज भारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अगी करी, आव्यो मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मूर्छागत दीठी त्रिया, मूकी गरल जहीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥ ॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जजर्जरें नय णा रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोधें मन काबु करी, बो ल इम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ९ ॥ मो० ॥ ग त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अगें आगमी, करशु कु प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तिमद्विज नृपने सेवकें, कीधी धरा सुपवित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥ भूपति आदें जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मन्डल मांडीयु, विष वालक

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंगल
मां पूजी विधें, ध्यान धरी महा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणिनं
त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ ढाली मणि
जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥
मो० ॥ ढांक्या ज्यौं रवि तेजथी, कमल हशे एक दे
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका
श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वगें जल सिं
चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
ऊठी आलस मोमती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधास्या प्रभुजी इहां, कू
पथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं
जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें
एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥
॥ मो० ॥ ताने जइ मूठी हणी, उघमियुं तदा बार रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर मुहें,

पेठो हुं तिण ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥ साहस धरि हु चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीधीधर थयो, आवे पूठें उछाहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ एह सुरगा चोरनी, तिण वली बीजु बार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवु चिंतवी, आघो कीधो प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मुख आगें थई, मणिधर नागो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल ढांकस्यु, जिम जरुता जरु चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसारें हु चालतो, आयरुीयो जई द्वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी ढलटी तिवार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ धार विवरनु उघरुघु, नीसरियो यहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ जन्म्यो गर्भावासथी, सिस्यु इम अकुलाय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघेरो चाख्यो वही, जोतो अहिगति छीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें दीठो अही, बेठो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५ ॥ ॥ मो० ॥ मत्र जपी ते वश कीयो, लीधो तस मणि नग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें सम

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥
॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूर्ख, चिंती इंम शिक्ष तेय रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो
उमहेय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २७ ॥ मो० ॥ छाने पुरमां पेसतां,
निसुएयो परूह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू
च्छुं जाएयुं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे ० मो० ॥
॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसही, प
रुह छव्यो पए बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि
योगें साजी करी, गाल्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ २९ ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकले, धीठो
पए नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ देशे तुजनें मु
ज नणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं
रु विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय
नांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेमीउं, आव्यो अधिक प्रमोद ॥
निरखे बाला हर्षथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर
धूणी नृपति नणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम कुःख
साथें जेएीयें, फेंक्यो गरल उवेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधवें, पुच्छ्यु नाम निवेश ॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जिमी नहीं गत वासरें, विरची वाला एह ॥ उचित जमाको तेह जणी, कहे भूप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाक साकर रसें, पावे कुमर सहाथ ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पथीमा रे सदेशको ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर जणे नूपति प्रत्ये, करो शीख सुजाण ॥ थो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ हुरे विदेशी पथियो, न सहु ढील लगार, ॥ मुज मन ऊ ञ्जु इहाथकी चालण निरधार ॥ हु० ॥ २ ॥ काढ निचारो राजिया, करो कोकि विषाद ॥ रुसया थाशो लोकमा भूसया मरयाद ॥ हु० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी मूके नहिं स्थिति आप ॥ तिम नृप पण नवि उल्लंघे कुलवट स्थिति थाप ॥ हु० ॥ ४ ॥ आपा मलया गहनें वाले राजि प्रसन्न ॥ दपती दुखिया मलयी करो सत्य वचन्न ॥ हु० ॥ ५ ॥ सम जाये इम नृपन पुरना लोक समस्त ॥ आपूच्यो ते मातनी थाप मदमस्त ॥ हु० ॥ ६ ॥ हण तप अण थाया रही। मारे बीजी वात ॥ हे हे निठुर पणा

तणी, जूठे जूठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहशुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुज्ज विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लही आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे चलाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां वाली तेहनुं, कीजें जस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीमा हरे, तेह जस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उंषध ए तुजनें जलें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणे, सोंपें एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे बेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके; दुःख संजव काज ॥ अंगीकरुं में धुरथकी, न कस्या मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज ए में लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्लभ उषध तादृश, करवुं में निरधार ॥ तु पण प्रम
दा श्रापता, मत करजे विचार ॥ दु० ॥ १८ ॥ फो
गट गाल फुलाविनें, कहे भूप हसत ॥ उपकारकनें
श्रापता, कहो शुं खटकत ॥ दु० ॥ १९ ॥ कठिन हृदय
नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दपती जुजु
श्रा, जण थापी नि कृष्ट ॥ दु० ॥ २० ॥ मदिर श्रावे
मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खरुनी,
कातें कही ढाल ॥ दु० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥
काठ शकटजरि जोतरी, मूके क्यां समशान ॥ १ ॥
निरखी विषम कर्त्तव्यता, दुःखियां पूर्यां लोक ॥ हाहा
नरमणि विणसशे, इम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ठे
हला श्राजूषण धरी, बींट्यो राज सुनट्ट ॥ पश्चिम पो
होरें पितृवनें पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर
लोकथकी लहे, मलया विगुनो श्राप ॥ सतापी विर
हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल श्रगीश्रारमी ॥ ऊठ कलालणी जर प
्यो हे, दारुमारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज योवन रूपनें हे, धिग मुज जनम श्र

ाय ॥ आपद पमियो जेहथी हे, मोहें लोजाणी ना
य ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय० ॥ १ ॥ पहेलो
ऽःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरञ्ज ॥ ए वेलामां
नाहेबा हे, कुंण ग्रहशे तुज हञ्ज ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी
मां नीमियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां
थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
ही नृपतिजमें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि
म पीमा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥
कांइ जीवामी पापिणी हे, हुं हुइ जे ऽःखदाय ॥
॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियमे घे
घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन
कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोमीयां हे, ए वेला
जगदीश ॥ तरञोमी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश
॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतमली हीयमे वसी हे, लागें मीठी गा
ढ ॥ साले बूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥
॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पमजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो
जेणे वियोग ॥ पारजन तेहनां रखमजो हे, जिम का
प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ विलपत प्रमदा खीज
ती हे, ऽःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे, थे जस अजखी पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखु नय
णें नाहखो हे, सो मुज भोजन वात ॥ बेठी एहवु
आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
नंदन समशानमा हे, इहां तिहा निरखी ठोर ॥ खरूके
इछित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥
साहस देखी तेहवु हे, पुर जण मलिया थाय ॥ विख
गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
॥ १३ ॥ देव विमास्या विण इस्यो हे, मांड्यो कवण
अन्याय ॥ राखमिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं सि
रूराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो भलें हे,
पण मारो का एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी क
रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप जपें ए पापि
नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे,
जो नर ए जीवत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए बाला विण मा
हरे हे, न पके जक पल मात ॥ मत पकजो ए वात
मा हे, सो वार्ते एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय
तव निहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी
तुमने पकी हे, मेलो ठो इहा तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
पोतानें पापें पची हे, मरशे जो दुःख आणि ॥ तो
नगरीमा केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गारमिशें आरंजियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि दुर्मति ए वेहुनें हे, गारज पडशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पियु लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पत्तणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संजारी आपणो, परवरियो जनवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन सुख हाहा रवें, आपूर्यो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पमे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसर्यां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तमाके तोमी वे दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुजट विकट चयमांहि, पेठो कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाड्यो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ जवाकें जलकी वे दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमार्के चमकी छे सुर बाला ॥ ए श्रांकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी, दिशिदिशि अंबर छायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें, जाणे पावस आयो ॥ क० ॥ २ ॥ वन्हि पतग उमें, तगतगता, खजुआ जिम चिहु ओरें ॥ जाण वीज ज्यु चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ क० ॥ ३ ॥ सात जीन शतजीन थईनें, नजलल चाटण लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां वागो ॥ क० ॥ ४ ॥ धीरपणु पुर लोक प्रशसे, तस हा रव श्रण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानल देखी, सुजट थया गुण थुणता ॥ क० ॥ ५ ॥ जिम कीर्धुं तेणें तिम नृप आगें, जाख्यु सकल बनावी ॥ नृप प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ क०॥ ॥ ६ ॥ हुर्ठ प्रजात मिला ततु तारा, ढाक्या सूर प्रजा वें ॥ तब शिर रक्षा पोटि धरीनें, आवे सिद्ध स्वजा वें ॥ क० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमगें, पग प ग पहवु पूछे ॥ अहो सुगुण तु आव्यो किहांथी, शि शें पद कीस्यु छे ॥ क० ॥ ७ ॥ ते पयनी रक्षा लेइ हु, आव्यो छु नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप जवनें, सिद्ध पुरुष शुन साजें ॥ क० ॥ ए ॥ राख पो

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज माथे एहथी, रहेजो निरुया अंगें ॥ क० ॥ १० ॥ नृप जणे शुं न वल्या चयमां, आव्या दीसो साजा ॥ आग सगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा ॥ क० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूमा आगें, बनशे कू रुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस नवि मोल्युं ॥ क० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण रीज्या, अमृत रसें चय गारे ॥ थयो सजी चित्त फरी हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ क० ॥ १३ ॥ गा र पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा तेह पले तो रूमी, बोली जेह महीपें ॥ क० ॥ १४ ॥ नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ ॥ इहां र ह्यो गाली चय वाली, सुजटें करी दृग ऊंची ॥ क० ॥ ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख न मावी ॥ क० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पा वक पेग स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते चांखो, पी यु कहे अवसर पामी ॥ क० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत जेह सुरंगा, ते मुख में चय खमकी ॥ पृथुल गर्त्त घ रनें आकारें, द्वार शिलायें अमकी ॥ क० ॥ १८ ॥

पेठो ए चयमा यड ठार्ने, द्वार सुरग उघाडी ॥ सबल सुरग शिला तस द्वारें, दीधी पाछी श्राडी ॥ क०॥ १९॥ सुभटें चय सलगाडी मूकी, बली थली थइ टाढी ॥ द्वार उघाडी कुशलें श्राव्यो, ठार नृपति शिर चाढी, ॥ क० ॥ २० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, कोइ श्रागें मत जांखे ॥ डुष्ट नृपति मुज छिद्र विलोके, तुज सेवा श्रजिलाखे ॥ क० ॥ २१ ॥ चोथे खंडें थइ द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ सगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ क० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्राव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धनें जंत ॥ जोजन थो मलया जणी, श्रम हार्थे न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधु कारज ताहरु, हवे श्रम दीयो विदाय ॥ २ ॥ श्रापो मुज धण श्रादरें, थापो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सुणी महेराण ॥ ३ ॥ संकश्री जगव्यो वली, मंत्री ठग नु धाम ॥ श्रहो सिद्ध साध्यु सबल, नृपतिनु ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्वधर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूर्ड मुख सांकडो
रे विंजा, किस करी करुं रे ऊकोल ॥
रायविंजा, सयण सारू ॥ ए देशी ॥
॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकडो रे मित्ता,
नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूडा, सयण म्हारा ॥
॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब
अछे निरशंक ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल लेहनां
अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि०
। सा० ॥ ते शिखरें उंचा चढी रे मित्ता, तलपी
हवे आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें
आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ ऊंपावो वली अंबथी रे मित्ता, भूतल ना
ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें
वही रे मित्ता, मूको फल नृप भेट ॥ सि० ॥ सा० ॥
पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥
॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि
त्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक
मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश
॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे
मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० बिहुं वातें

मृत्यु माहरु रे मित्ता, पडिया भूमि मे साथ ॥ सि० ॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रभावथी रे मित्ता, क
रशु दुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें भुज
सुंदरी रे मित्ता, बे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवु आदरें रे मित्ता, मन्त्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी उठ्यो धणी
रे मित्ता, साहसनु कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणें भरे रे मित्ता, दुःख पूरें दिलगीर
॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण बींट्यो घणे रे मित्ता,
आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम
गिरि उपरे चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥
॥ सि० ॥ सा० ॥ भूपतिनें मन्त्री हस्ये रे मित्ता, सार्थे
हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोचे गिरि
टूंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ नृप सुजटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अथ दे
खाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ कूर्दु जे में उ
पार्ज्यु रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥
सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस
खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेतो अंधा
पथी रे मित्ता, आपे झंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पकडंयो गिरिकंदरें रे मि त्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साह स देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, धोखे चरती भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुओ जन देखतां रे मित्ता, जिम थारों नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहन हाडनो रे मित्ता, जडशे कहो किहां खंड ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं चांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत । ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहमें सकज सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रभातें आवियो रे मित्ता, दै सहकार करंड ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंड ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

मृत्यु माहरु रे मित्ता, पमिया ज्रूमि बे हाथ ॥ सि० ॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रजावथी रे मित्ता, क
रशु डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
॥ सा० ॥ धारी एहवु श्राठरें रे मित्ता, मत्री वचन
तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ श्रासनथी ऊठ्यो धसी
रे मित्ता, साहसनु कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
मलया जल नयणें जरे रे मित्ता, डुःख पूरें दिलगीर
॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता,
श्रावे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम
गिरि ऊचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणाने शोक ॥
॥ सि० ॥ सा० ॥ नृपतिनें मत्री हृद्ये रे मित्ता, वाधे
हर्षना थोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोचे गिरि
टूके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ नृप सुजटें नीचो रह्यो रे मित्ता, श्रध दे
खाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में ऊ
पार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥
सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस
खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ईम कहेतो श्रंधा
धर्को रे मित्ता, श्रापे ऊंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मान ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पकंठ्यो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पकतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुर्ड जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ पकतां एहना हाकनो रे मित्ता, जकशे कहो किहां खंक ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं चांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहृमें सकल सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रजातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंक ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पठें रे मित्ता, हवणां म

पूठशो कांड ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इम जन थी
टोयो रे मित्ता, नृप पासनें गयो धाई ॥ सि० ॥ २०॥
॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा दूठो रे मित्ता, वीहीनो
निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मन्त्री
रे मित्ता, कुशल्यो किम तु मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥
॥ सा० ॥ इमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, मूके
अव करुन ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए स्यो म्हारे सहू
रे मित्ता, ।पच समावो उदरुन ॥ सि० ॥ २२ ॥ सा० ॥
धीठीना हाकें यापका रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मूर
॥ सि० ॥ सा० ॥ वे ग्रण तेह करुनथी रे मित्ता,
सिद्ध भहे फल धून ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें
पूठी सखरे रे मित्ता, मलया पास हसत ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरुनी रे मित्ता, पीठ दीठे
विकसत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित त्रि
धि साधवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग बाल ॥ सि० ॥
॥ सा० ॥ पमितजी रे बोथे खंनें तेरमी रे मित्ता, कां
सें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमी कामिनी कहे, जांखो कत वदत ॥
गत दिन गत आगम कथा, तव मह्वल पभणत ॥

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंकमां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यतर इहां अंबमां, वसिउं मुज जाग्येण ॥ गिरिथी पकियो वचन वदे, उलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनकुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी छाप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयत्न रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमन्न रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाहे तुज्कनें, फहे तो शु हवे शील रे॥मु०॥६॥ में जास्यु एइ पटखे, नहिँ दिरमे जई आप रे ॥ तो पहनें सम जावशु, करी कूमो उपजाप रे॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे, आवी पमे कोई जेय रे॥ सजाख्यो हु ततकर्णे, फरशुं स.निष्य तेय रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ इम क हेतो सुर निहायकी, आव्यो एक करक रे ॥ सरस रमाल तणे फलें, नरीयो तेह अखरु रे॥ मु० ॥ ए ॥ मु जनें तेह करकशु, सुरवर आप जपाकी रे॥ मूकयो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मादर आकी रे॥ मु० ॥ १० ॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हार्थे रे ॥ अदृश्य ग निक रूपें निहा, आवीश हुं तुज सार्थे रे॥ मु० ॥ ११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशु गाने हु तेह रे ॥ शील जियो इम मुज्कनें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ पाप्यो तेह करकीउ, नूपति आगलें जाई रे ॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, वेगो हुं इहां आई रे॥ मु० ॥ ॥ १३ ॥ पहवे तेह करकथी, कमककनो स्वर क्रूर रे॥ उछलियो बलियो महा, परुवले जरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ साग पहेलो हु नूपनें, के धुर खाग प्रधा न २ ॥ एक जणनें बिहु मांहियी, नहिँ मूकं हु नि दान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पमि

थो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें, कर
माहारी संज्ञाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई
सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ डुष्कर काम करे ह
सी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल
मिशें एह करंरुमां, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें
दायकारिणी, वलगाम्ली कुपलाय रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ सचिव
कहे नृपनें प्रज्ञु, एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इंम कहीनें
वारी जतो, आवे करंरुनें मूल रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ क्रूर
सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुन्निनाद रे ॥ कर्ण विवर
त्रिष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु० ॥ २० ॥
फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघाम्ले ततकाल रे ॥ वज्रा
नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे ॥ मु० ॥ २१ ॥
ऊरु ऊरु शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम ऊरु धाम्लि रे ॥
तेह करंरुथी नीसरी, ऊरध जाग धूमाम्लि रे ॥ मु० ॥
॥ २२ ॥ डुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग
रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउ, निर्जीवित दहि अंग
रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउ, अगनि म
हा डुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेरुावे ति
णि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां,
दीसे ठे कांइ कीध रे ॥ इंम धारी ज्ञूपति कनें, आवे

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल पर्ने रा
जियो, बोल्यो एम मरत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
विज्वर एह तुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
छांटीयु, अनल हुर्ड उपशात रे ॥ डांक्यो अब करली
ठ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करलनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शि
वरी, देखी कुण न कराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करलीयो, उघामी फल लेय रे ॥ विस्मित भूपा
दिक पणी, आपहसु जस देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
व महीपति करलो हीये, संचे कर मुख फेरी रे ॥
थापी बीजार्ने करें, खेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
जीवानो नंदन वलो, सचिव करयो गुण खाणी रे ॥
चोथा खमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम उलख्यो, एह महाजय सिद्ध ॥
मत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फुल फ
ल एहना लहेशे तु प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल माहिं
महीपति, जेह करे नय पोप ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह भणी नय गोचरें, निगम विचारी गुज्झ ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महिला मुज्झ ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए वयण ॥ अनय रसें कोपावतो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नररायजिशो रे, पभीयो विमासण मांहिं रे ॥ नारि रस रातो, पेठो उपांपल गोचरें होलाल ॥ हियरु चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥ मंत्र तंत्रादिक योगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥ साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह भणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अभ्यंतर कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कारज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उशीयाला, जोगो प्रकशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मगे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नहीं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ इस करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ नहीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो, बोल्यो एम नरत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
मिज्वर एह डुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
गटीयु, अनल हुर्ठ उपशात रे ॥ ढांक्यो अब करनी
ठं, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
ह करननें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शि
खरी, देखी कुण न नराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
सिद्ध करनीयो, उघाडी फल लेय रे ॥ विस्मित नूपा
विक जाणी, आपहथु जब देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
व महीपति नरतो हीयें, संचे कर मुख फेरी रे ॥
यापी बीजानें करें, खेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
जीवानो नवन थयो, सघिव करयो गुण खाणी रे ॥
चोथा खमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥मु०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम जाणयो, एह महाजय सिद्ध ॥
मंत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था कीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनां, खहेशे तु प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं
महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा
जियो, बोल्यो एम करत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें,
विज्वर एह डुरत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
गटीयु, अनल हुर्ई उपशांत रे ॥ ढांक्यो अब करगी
ठ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कार्नें ते
ह करमनें, वेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधी शि
वरी, देखी कुण न मराय रे ॥ मु० ॥ २० ॥ कुशलें
सिद्ध करमीयो, उघाडी फल लेय रे ॥ विस्मित नृपा
दिक जणी, आपदसु जव वेय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
व महीपति मरतो हीये, मने कर मुख फेरी रे ॥
थापी बीजानें करें, खेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
जीवानो नंदन वनो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥
थोथा सरूनी चौदमी, कार्तें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम ऊजस्यो, एह महाभय सिद्ध ॥
मत्रीनें जेवों हतो, मरण अवस्था वीध ॥ १ ॥ कहे
सिद्ध ए पल्लव्यो, सुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ
ल एहनो, लहेशो तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं
महीपति, जेह करे नयपोष ॥ नासे आपद तेहथी,
वाधे सपद कोप ॥ ३ ॥ नीतिमाहे आपद तणो,

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्ये बेपीर रे॥ मरकी गलनाकी, कांई मरे वाह्यो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सन्नामां वाधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे॥ देखी नृप विरुउ, लोक मव्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातकी रे, पकियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, वीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें ठवे होलाल ॥ पकती रकती सिऊ नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पतिनिक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर बत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रुप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे॥ मोहन रंगीला, न हीं हाय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

स्त्रीजु काम करे हवे रे, तो तूं मह्यिा सगाळ रे ॥ आठी ए तुजनें, वचन थकी हु न कोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखु सदा रे, पुत्रि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे वासो, देखु हु तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमग रे ॥ सुख णा सोभागी, मानीश पाड इहा खरो होलाल ॥ ५ ॥ नृपनदन चींते ईस्यो रे, एह स्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रायनें रे, ए स्यो माक्यो उधाम रे ॥ ए हयी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नथी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुत्र जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय लख हाम रे ॥ इम कहीनें लाचे, नाखी नृप मीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वांकू वस्यु रे, आव्यु मीवानें ग म रे ॥ मीवा मुख गामें, आवी रही तव आपणी हालाल ॥ ७ ॥ पुत्र निहालो खातशु रे, काम थयु तुज ठीक रे ॥ नृपति शुण मानो, वचन सुणी इम तहवे होलाल ॥ स चिव नवो रोपे तस्यों रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ सुण पूरत पीवा, लाज नहीं तुज ने हृय हालाल ॥ ८ ॥ जनक हणयो ते माहरो रे, जीवा नाम वजीर रे ॥ खुनी अ यायी, वीहितो नहीं

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्ये बेपीर रे ॥ मरकी गलनाकी, कांई मरे वाह्लो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सन्नामां वाधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुद्ध, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातकी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, वीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें ठवे होलाल ॥ पमती रमती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पति निक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर छत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

शे. तो थई छे एटले मणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी ए इतु रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणुवाणे, यनमा जिन प्रणमे थुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन अजित जुहारीनें रे, पायें आवे त्यांहि रे ॥ तो थाशे साजो, बीजो उपाय नहीं तिस्यो होलाल ॥ असमरथ् पण राजियो रे, कहे हवे थाशो त्यांहिं रे ॥ साजो जो थाउं, तो मुज अजर अछे किस्यो होलाल ॥ १५ ॥ लोक कहे निज पापथी रे, वलगो आवी वींग रे ॥ भू पतिनें पूछें, करशे नहीं हवे खोजपी होलाल ॥ रूप धन्यु जोवा जिस्यु रे, प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे छे कोई, खेर्च क्षत पाम्यो घणों होलाल ॥ १६ ॥ पुर जन जोवा पेखणु रे, चलिया गोखें भाय रे ॥ तिहां होला होरें, ठामें ठामें टोळें मल्यां होलाल ॥ पाख ण मांहे नृपति रे, पण न पके पग कांई रे ॥ जोतां दुःखदायी, कारण बे वार्ता मल्या होलाल ॥ १७ ॥ ओ मांहे पग पाथरो रे, तो दीसे नहीं माग रे ॥ लो चन उपरांते, अरु चरुतो पगें आथमे होलाल ॥ अ बसे पग ज्यां सचरे रे, खेतो मारग जाग रे ॥ धेरणि त्यां वाधे प्रेरण शक्ति विना पके होलाल ॥ १८ ॥ विद्ध वानें पुर लोकनें रे, करसो कौतुक दुःख रे ॥ जई त्या

ण्यो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स रदू समजाविउ रे, थाशे हवे अनिमुक्त रे ॥ चिंते इम बीजी, खांचे नशा शिद्ध कोटनी होलाल ॥ १९ ॥ वदन वलीनें पाधरुं रे, बेड्डं पाछं ठाम रे ॥ लागी न हिं वेला, हूउं अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो मी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा ससनेही, ओईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि द्ध हवे मागशे इहां रे, चोंथे मलया बाल रे ॥ नृपति पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोखी चो था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ जांखी रस जे ली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥ जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥ गोरमीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम ॥ तो थोमामां प्रीछजो, सरियां मुज सब काम ॥ २ ॥ वचन सुणी राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण ज णी, करे कोमि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप ति, पाछो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो, चिंते एम

निपट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुदरी, राखु किम जग दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस॥५॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशु राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

एहवे अनल उदरु, वाजीशालामांहिं जागीउं जी ॥ उचो ज्वाल अखरु, दारुण गयणें लागीउंजी ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिरूप्रत्यें पभणे इस्यु जी ॥ चोथु वली मुज काज, एक अछे करवा जिस्यु जी ॥ २ ॥ वारु पाट केकाण, एह बले हयशालमां जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां जी ॥ ३ ॥ रीज्यो छु तुज नारि, आजज सोंपु ए घ रीजो ॥ जोता जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघ री जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, भांखे ए नृप चातस्योजी ॥ पाम्या शीक्षा रोक, तो वली इम कां पा तस्योजी ॥ ५ ॥ अति दुष्टाध्यवसाय, लोमे नहीं ए दु र्मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयु शीक्षा रति जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवु त्यांहिं, उछाहें घमणो थइ जो ॥ पसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उभो जइ जी ॥ ७ ॥ मनमा नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घणो जी ॥ धाध्यो कापनें व्याप, इष्ट सत्नारे आपणोजी ॥

॥ ८ ॥ संचारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी ॥ झंपावे ततखेव, दीवें पतंग पडे यथाजी ॥ ९ ॥ हाहा कार करंत, शोक भर्या पुरजन तदाजी ॥ आंसूडे ब रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो भूप प्रमोद, कुमर झंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिरराज, अगनिथी नीसरिउ तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आराह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन भूषण धर्यांजी ॥ झलहल ज्यो ति तुखार, अंगें साज भला भर्याजी ॥ १३ ॥ धौ रादिक गतिपंच, (१ धौरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं) भेदें तुरंग रमाडतोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक भूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो ईम कहे उलटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी भूमि, एह छे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पडियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ वलतां सिद्दतां काज, एहवा थया माहां टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं सक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसग, अमर हुआ विहु रगमेंजी ॥ १८ ॥ साजली वायक एह, राजादिक सवि जूजूआजी ॥ चलवा अगनिमां तेह, पकवानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष त्या स, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ बेहु निहास, तीर्थ प्रजावें इणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इण गाम, तन होम्यां फल ठे बहूजी ॥ धरता मोटी होंश, म, आव्या नर पमवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध विचार, रे रे रुण एक पमखीयेंजी ॥ आणो घृत निरधार, अगनि जुगतिशु पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आवया घृतना कुन्न, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ नणसो मन्न सदन्न, आहूति थे मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहेलो पेशीश आदि, हु इम कही नृप पेशीनेंजी ॥ पूठें सचिव सयाह, जई नृप पासें बेसीनेंजी ॥ २४॥ कुमरें वार्या लोक पमता अवर हुताशनेंजी ॥ पमखो पमखो स्तोक, आववा थो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, लागी नहीं जब आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इम पुरलोकना बोल, साजलीनें सिद्ध बोलीनेंजी ॥ कारे भूल्या अटोल, अगनि पड्यो कोण

जीवीउंजी ॥ २७ ॥ अगनि पमिउं हुं आज, सुरसा न्निध्ययी नीसस्योजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल ए रूमो कस्योजी ॥ २८ ॥ फलियो अनय कुवृक्ष, नृप मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्ष, बोल्या व ली आमंत्रिनेंजी ॥ २९ ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो जो राजा आपणेंजी ॥ इम कही राजा कीध, महो त्सव आरुंबर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिरूरा ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अनुक्रमे विषमे काम, लेजे सुरू संजारिजेजी ॥ आजाखी सुर आम, सिऊँ तेह विसर्जिउंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंमनोषंग, मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढा ल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा

॥ आव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई निरुपम जेटणुं, चली आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप जेटी बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउं, सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें उलख्यां, यातां नयणां जेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न जूले नेट ॥ ३ ॥ रूरतो तुरतज उठीउं, आव्यो मंदिर आप ॥

चिंते हेंहे आवीया, उदय मह्रा मुज पाप ॥ ४ ॥ श्र
हो महोदधिपरतरें, श्राव्यो पहृनें ठोकि ॥ देवें किम
ए चूपशु, मेली सांधा जोकी ॥ ५ ॥ जे कीधु में पहृनें,
श्रनुचित करण श्रन्याय ॥ कहेशे ते जो चूपनें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात'
प्रणमु हो प्रिया प्रणमु पग नार्थे करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो
हो प्रिय निसुणो जे श्राव्यो वाणीयोजी ॥ नार्मे हो प्रि
य नार्मे ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविध हो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो ढानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
करता श्रज्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी
परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण
कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परि
कर हो निज परिकरशुं कारें वीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी
हो नृप कीधी क्रियाणें ढाप, वाकज हो वन्ह वाकज
मास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे
श्राप, सार्थ रह्यो इम सार्थप चिंता जावीयोजी ॥ ४ ॥

ूटण हो मुज तूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे बे एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ वीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरु हो वल धींगरु वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, बोरुण हो मुज बोरुण विधि करशे वहीजी ॥ अरुलख हो हवे अरुलख सोवन डाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आण्या हो घर आण्या परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी गाठ, बूटीश हो हुं बूटीश एह नेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो बानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो विहुं मलिया विहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, नीषण हो जिहां नीषण जिहां रुडाटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

चिते हेंड़ें आवीयां, उदय मह्हा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ
हो महोदधि परतखें, आव्यो पडनें ठोमि ॥ देवें किम
प नृपशु, मेली साथा जोमी ॥ ५ ॥ जे कीधु में पडनें,
अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जो नृपनें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात
प्रणमु हो प्रिया प्रणमु पग नामें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो
हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रि
य नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविध हो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो छानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
करता अभ्यर्थना जी ॥ २ ॥ इणी परें हो प्रिय इणी
परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततखण
कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परि
कर हो निज परिकरशु कांठे दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी
हो नृप कीधी क्रियाणें छाप, वाकअ हो वरु वाकज
नास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे
आप, सार्थ रहो इम सार्थप चिंता नावीयोजी ॥ ४ ॥

टण हो मुज बूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे छे एक डाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वेरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरू हो बल धींगरू वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, छोरूण हो मुज छोरूण विधि करशे बहीजी ॥ अरूलख हो हवे अरूलख सोवन डाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो घर लक्षणधर गज आठ, आएया हो घर आएया परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी ठाठ, बूटीश हो हुं बूटीश एह जेहदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो छानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरित्यांहि, जीषण हो जिहां जीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

हर्षी जनमुखथी फहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति
किम जाति, वीमें हो वन वीमें मलयानें प्रहीजी
॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या केतु नरिंद, निज
निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जो
य हो तेण दुर्जय भीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो
रण बाम्यो महीजी ॥ १२ ॥ जोता हो तिहां जोता
मलया बाल, दीठी हो नहीं दीठी नहीं किण थानक
जी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल, मलियो
हो जई मलियो सोम प्रधानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो
नृप वीरपनो आदेश, पामी हो घर पामी घर तिम
वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणत
हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आयु हो ध
न आयु देतो वीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रसें इ
सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंडीर, सार्जे हो
बहु लोजें बात महे भसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो एह
नृपकुल साथें द्वेष चाल्यु हो नित्य चाल्यु आवे आ
पणोजी ॥ बेठो हो कोइ बेठो नूतन भूप, तेहने हो हवे
तेहने हवे रणशु रणोंजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व
लेशु लूटि, सार्थप हो बली सार्थपनें मूकावशुजी ॥ थाशे
हो श्रम थाशे यशनी त्रुटि, अरिनो हो वली अरिनो

गाम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इम मंत्री दोय नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा डेरा फावताजी ॥ १९ ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंडे ढाल, नांखी हो इम नांखी सत्तरमी चावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदभूत ॥ सि द्ध नरेसर उपरें, मूके डुईम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निर्लोच ॥ स्वामीभक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोभ ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ग्राहक पिशुन, (शत्रुनो चारित्र) ए गुण दूत वहंत ॥

॥ ३ ॥ असवारथो केकाण रथ, पहेस्यो काय कुलिम्म ॥ सिद्धराय जवनागणें, जइ पोहोतो जालिम्म ॥ ४ ॥ द्वारपाल नृप वीनवी, दीधो जवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिद्धरायनें, भाखे इम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ हृदया ते पुररो मारुवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीठाणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दातोनें फोज लेइनें रुकेजी आवे ॥ च डावती नगरी धणी रे, वीरधवल ठोगाल महाराजा ॥ द० ॥ १ ॥ ए बेहु एकमतु थया रे, रुठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस लालशु रे, लेशे नाहारु राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो क्यिो रे, नामें जे धवलसार म० ॥ द० ॥ ते सार्थे बे नृपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ना जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता नहीं रे, मागे नहीं काइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाण गहन नृप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प ल्या र दस्वी दुःखनें कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे पान आवन र कीधें अमशु नेह म० ॥ द० ॥ तु

स नगरें वासो वसे रे, ते जणी मूको एह म० ॥ द० ॥
॥ ६ ॥ कहेवाल्युं महारे मुखें रे, अम जूपें इम तु
ज्ञ म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
सलुज्ञ म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पकिया पण मुख
के ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥
वाहाली पाटु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एवुं पण मामूर म० ॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिहिक पांतरे रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ
म जूपें बांहें ग्रह्यो रे, ते दुःखीयो किम थाय म० ॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण
तुज कटक अलप्प म० ॥ द० ॥ सायरमां जिम सा
थुडे रे, थाइश त्यां तुं गरूप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ द० ॥
एह वातें मत आणजे रे, शंका बल जमहेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, जुजबल
नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उषध एकनुं रे, ए

हयो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ मं पनीश माता मोहमां रे , सकेश्वर जिम सूज म० ॥ द० ॥ उ चित हितारथ धारियें रे,श्रापी मननी सूज म०द०॥१५ ॥ दूत वचन सुणी सहे रे, श्राव्या सुसरो तात म० ॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणु रे, बोल्यो फेरवी धा त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणु जो भूपनें रे, तो शु नहीं भुज दोय म० ॥ द०॥ एक एक देह नहीं किस्युं रे, केवल नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकलको पण दिणयर रे, तेज तणो श्रंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोमिग में तारातणुं रे, हुरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥ ॥ १८ ॥ श्राफलसो श्रापा लगें रे, मानीमां शिरदार म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद् नार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो रे, ते नृप ते बल साज म० ॥ द० ॥ बाणे रणमा ते होनी रे, फेमीश भुजनी लाज म० ॥ द० ॥ २० ॥ बा हलो पण श्रन्याईयो रे, शीलवीर्यें सुत श्राप म० ॥ द० ॥ श्रन्यायें याता पसू रे, लाज्या नही श्रवाप म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही छे भूपनो रे, तो श्रम केहो लाज म० ॥ द० ॥ श्रम सार्थे तो छेकता रे, ज रशे बाथां श्राप म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीयें शिक्षा

दुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ
म सरिखानें रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ द० ॥ २३ ॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग ॥ म० ॥
॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण
जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पू
रीश हुं इणवार म० ॥ द० ॥ जा कहेजे तुज पूठलें रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ द० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो
वही रे, चोथे खंडें अनुप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए
अढारमी रे, कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, बहि मंडपमां आय ॥ ढ
क्का तिहां संग्रामनी, वजडावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मदें, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल
या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मल
या जणी, थे रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रं
गे शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगड्या, वाग्गां वड र
णतूर ॥ रसिया नाद चंचेरिया, अभिंग उलट्यो शूर
॥ ५ ॥ ठपां थे करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

केता सज्ज करे, धोपां केई धरत ॥ ६ ॥ गज गाजे हय हेपणाँ, रथ चितकार अखरू ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउं अबर ॥ ७ ॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण रेखार ॥ रणथम्भे जई वागिया, फोजां तणां कमार ॥ ८ ॥ बे दळ आमा साहमां, अभिया आई सबा हि ॥ तामसिअपणपेठा वही, तारू पक रण मांहि ॥ ९ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कम्खानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे चम्मे सिरूशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनरू घनना महा मद झरया हाथिया, जेम गिरिवर सर्वे आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्यो जेह ते गज चढ्यार्थी अरू रथ चढ्यो रथचढ्यार्थी न मूजे ॥ तुरगधर तुरंगधर साथ झपटा लीये, पायचर पायगा सग फूजे ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणाईया राग सिंधु शिरे, गुहिर निशाण घोसाल गुजे ॥ पूर रणतूर रव वीर जैरव च र्णी युद्ध रस निरखवा अई प्रयुंज ॥ स० ॥ ३ ॥ सुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच जीवा तणा, गहीया निम्वण रोमाच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिखकार झवकार जखनो जिस्यो, गाहीयो गयणघर

पुंमरीकें ॥ खरूग कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर न हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहरू वच नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥ भुजयुगा फालणे भुज युगा फालता, करत रण नयें लीला विवादं ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरवाल रण चालमां उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोजी ॥ ज्वलित मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग न थोजी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार जरू को पिया, चलत धमकारशुं शेष मोले ॥ कर ग्रही ढाल धुंताल धुंकल रसें, ढयल ढंढाल करवाल तोले ॥ स० ॥ ॥ ८ ॥ जाति भुज वीर्य गुण वंश उदजावता, बंदिजन प्रबल शूरां जगामे ॥ उमगिया योध बल बोध करि आपणा, रण तणी सबल बाजी फवामे ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ अश्व खुरताल पमतालथी ऊपमी, खेह अं बर चढी सूर ढायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥ सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी चले अगग गेमी ॥ रणण रणकार जल्ली (फरसी) तणा वागिया, सिल्ल सुहमाण नाखे उखेमी ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ खरूग खटकार गजदंत ऊपर पमे, जरर

जरङ्र झरे श्रगनि बुदा ॥ तप तप्या शुद्ध सिस्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर मई, जोरशु वेरी सनमुख उछालें ॥ वहत नत्र शस्त्र देखी सुर खेचरा, वज्रशकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ श्रोश्या सुभट केइ गांजके गगनमा, ऊरध कीधा जि स्या नट्ट वंशें ॥ ऊरत श्राकाश श्रायास विण गृध्र नें, वलि महोत्सव हुई तास मसें ॥ स० ॥ १४ ॥ श्ररुरु श्ररफाट करि वूटीया शतघनी, घुमल धूम्रां धुखें धुम्मरोला ॥ श्रगनि कण खिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ दरुरु परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, फरुरु नर को परी खरु फूटें ॥ गरुरु गेवरि गर्से नालि मुख श्राह एया, खरुरु खग खाटकें फलक श्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ फलह खय काल सरिखो बुद्ध श्राकरो, सिद्ध नृप सै न्य चाउं दिगतें ॥ थिर करी बल हवे श्राप समरग णें, श्राविया राय रोपाल खंतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक तो सुजटनें युद्ध मर्से तिहा, सिद्ध रणरग गज वेसी मार्जे ॥ विश्व नूषण गर्जे शूर पडि धाईयो, वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

दल मह्ा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नूप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १ए ॥ आवता वेरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नूपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्राज बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वक्ा, तोकियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नूप बहु शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंके ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इंम वारु मंके ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नूप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर ऊजा रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंक चोथे नली ढाल उंग णीशमी, जाति कमखा तणी कांतें नांखी ॥ स०॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ नि रख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे वेहि ॥ १ ॥ इंम इंम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इंम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखें त वी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

जरहर करे अगनि जुदा ॥ तप तप्या शुद्ध सित्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशु बैरी सनमुख उछालें ॥ बहुत नत्र शस्त्र देखी सुर- खेचरा, वज्रशकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ भोश्या सुभट केइ गाजके गगनमां, ऊरध कीधा जि स्या नष्ट वशें ॥ उरूत आकाश आयास विण उभ नें, वलि महोत्सव हुर्ज तास मर्से ॥ स० ॥ १४ ॥ थरुरु थरुफाट करि दूटीयां शतघनी, घुमल घूश्या धुर्खें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत सग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ ठरुरु परनाल ज्यों लाल रुहिरा वहे, करुरु नर को परी खरु फूटें ॥ गरुरु गेवरि गर्मे नालि मुख आइ एया, खरुरु खग खाटकें फलक भूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कलह खय काल सरिखो हुर्ज आकरो, सिद्ध नृप सैन्य चार्यु दिगर्ते ॥ थिर करी बल दृवे आप समरग णें आवियो राय रोपाल खतें ॥ स०॥ १७ ॥ हाक सो सुचटनें युद्ध मर्के तिहां, सिद्ध रणरग गज बेसी ताजें ॥ विश्व चूपण गर्जे शूर पवि धाईयो, वीर सग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
में नुज वीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुनदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांइ विषाद करो
हवे, पगधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूरया हर्ष उन्नाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरलजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ड्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, डुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पकतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

जावतो, चल्यो गगन तनखेव ॥ ३ ॥ पोहवी हेठो ऊ
तरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते शर
थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी खोटेंगणे, मूके खेल
तुरत ॥ सिद्ध नरींद कन्हे गही, फरी आव्यो हमर्गत
॥ ५ ॥ चरित निहाली वाणनां, विस्मित हुआ नरीं
द ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद
॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेले खेल कदापि ॥ प
रमारथ एहनो इहां, किम जाणीशु आप ॥ ७ ॥ एम
कही निज कर ग्रही, तुरत उखेले खेल ॥ जोतो अक्ष
र मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल
मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशवद पत्र
स्यां, वाचे वसुधा कंत ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ चारानें माहारा करहला,
वरला नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री जिनपद नमी, भक्त्या श्रीमती तत्र ॥
सनेही ॥ शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र॥
सनेही ॥ १ ॥ कुशल सदेशो पाठवे, ते अमने सुखशात ए
॥स०॥ तात शरीर नीरोगता, चाहुं हु दिनरात॥स०॥
कु २ ॥ वीरधवल सुसरा भणी, प्रणति करुं कर
जोडि ॥ स० ॥ तास श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
हां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुज
चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
सें जुज बीरज दाखीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥
खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण जेव्या तणी, चाह हती
निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुजदैवें माहरी, पूरी आ
ज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांइ विषाद करो
हवे, पजधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
सुणी, पूरया हर्ष जन्नांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
मानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
समक्त कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरत्नजी, मलियो महब
ल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवा
ज्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख
खाणथी, डुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या
नरक निवासथी, पमतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १० ॥ शूरपाल नृप ईम कही, वीरधवल लेई सं
ग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल
उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विनें साहमा

पगें, दीठा आवत तेह ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि या हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो माहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, गल्यो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन शीयलु, तेथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कण एक इ ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शीस ॥ ॥ स० ॥ वैतालिक (भाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर दीस ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पध राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंध्या निज निज परिक रें आव्या जवने सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती दु ख सनारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला वी सुमगादिक, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥ तुरत करावी महानसें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥ सैनिक सर्व सतोषिया भूपालें भली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, बेठा सुखसमा ध्यांहि ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चेत्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २०॥ सुत आगें जनका
देकें, जांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम
रें वली, जांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥
चोथे खंमें वीशमी, जांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥
कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥
॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी डुःख विरतंत ॥
विषम कर्मगति जावतो, तनुजानें पजणंत ॥ १ ॥ हे
हे नृपकुल ऊपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखमी दि
शि दिशि रंक ज्यौं, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां
विविध डुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म
होदधि डुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए
देशी ॥ अथवा, जठी जावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया कामा मोलें ए,
खोले ए, निज मन डुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री
हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो
कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कर्युं में आण जा
एयुं, जल पीधुं ते विण गएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

पर्गे, दीठा आवत तेह ॥ स० ॥ सहसा हर्षे सामो
हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मवि
या हेजें हरखता, टाली वेर विरोध ॥ स० ॥ माहो
माहिं प्रकाशीउं, पूरण प्रेम नियोध ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, ठार्यो विरह हुताश
॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास
॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलु, तेथी
शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा
हालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ काण एक इ
ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स० ॥ वैतालिक
(भाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील
॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पध
राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंटया निज निज परिक
रें, आव्या भवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती
दुःख सनारीनें, राणी भलया ताम ॥ स० ॥ बोला
वी सुसराविकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥
तुरत करावी महावखें, अशनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥
सैनिक सर्व संतोषियां, भूपालें भली युक्ति ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आवे सहु, येगं सुखमां
त्यांहिं ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २०॥ सुत आगें जनका दिकें, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥कु० ॥२१॥ चोथे खंडें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी डुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें पजणंत ॥ १ ॥ हे हैं नृपकुल रूपनी, पोषी लाड विलास ॥ रखडी दि शि दिशि रंक ज्यौं, पडी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध डुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि डुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें॥ ए देशी ॥ अथवा, ढठी नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥सूरपति महीपति बोले ए, पडिया रामा रोलें ए, खोले ए, निज मन डुःखनी गांठडी ए॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूडो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में आण जा एयुं, जल पीधुं ते विण गएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

में दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम जो गुणवती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा सु सुंदरी, था रखियायत गुणजरी, विद्यधरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तु सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णा, मलया ते धरी धारणा, कारणां, दु खना तुरत विसारीया ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामा तुज मती, साहस करुणा रात ठसी, धृतिगति, सूरिम शुजकृत तुज प र्सा ए ॥ ८ ॥ इम महाबल गुण जांखता, नृपादिक यश दाखता, जणकिता, सलहें महबलने तिहां ए ॥ ए ॥ जनक दिक पूढे तिहां, वत्स कहो सुत ठे कि हां, लीधो इहां, पापीके जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, ठानो किहा किण ठठरे, पण खरें, ख्वबर नहीं ठे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेहनीनें पूठा खरो, ऊतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करता ते देखाडशे ए ॥ १२॥ ततक्षण सुजटें आणियो, पग बांधीनें ता णीया, वाणीयो, दु ख पीड्यो रोवे घणु ए ॥ १३ ॥ कहे र दुर्मति शुं कस्यो, पुत्र लेइनें किहा धस्यो,जाशे ऊस्यो, इम तुजथी भ्रम नहनो ए ॥ १४ ॥करवु घ

टशे तुज शिरें, तेतो करशुंदिज खरें, पण अवसरें, सुत जावा देशुं नहीं ए ॥ २५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आपुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ २६ ॥ छोडो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पाडो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला छे नहीं ए ॥ २७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, तिण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ २८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो झलकतो ए ॥ २९ ॥ नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण जस्यां ए ॥ ३० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निरधारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ ३१ ॥ ते कहे बल इति थापना, कीधी छे करी कल्पना, उत्थापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ ३२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठडी ए ॥ ३३ ॥ दादाने कर गांठडी, सो दीनारनी दीठडी, ऊथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ ३४ ॥ जोरार्थी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ ३५ ॥ सारथपतिनें छोडीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवत दीयो, निज जाचित

में दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि मारो, सम जो गुणवती खरो, श्राफरो, मननो हवे हूरें करो ए ॥ ४ ॥ जिम कोपा तु सुदरी, था रसियायत गुणवरी, विसवरी, करीयें ते हियमें धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तु सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणा, दुःखना तुरत विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामा तुज मती, साहस करुणा रात ठती, धृतिगति, सुरिम शुजकृत तुज न्त्रा ए ॥ ८ ॥ इम महायस गुण जाखता, नृपादिक यश दाखता, जणकिता, सलहें महसखने तिहां ए ॥ ए ॥ जनकादिक पूछे तिहां, वत्स कहो सुत छे कि हां, लीधो इहां, पापीऐ जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, ठानो किहा किण उवरे, पण सरें, खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेहीनें पूछा खरो, रूसरशे नहीं पाधरो, श्राफरो, करता ते वेखारुमो ए ॥ १२ ॥ सतक्षण सुजटें श्राणियो, पग बांधीनें ता णीयो, बाणीयो, दुःख पीड्यो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे दुर्मति शु कस्यो, पुत्र लेइनें किहा धस्यो, जारो रूस्यो, किम तुजथी श्रम नंदनो ए ॥ १४ ॥ कहुं प

टशे तुज शिरें, तेतो करशुं दिज खरें, पण अवसरें, सु
त जावा देशुं नहीं ए॥ १५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आ
उं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें
करो ए ॥ १६ ॥ ढोको मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा
को विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला ठे नहीं ए ॥ १७ ॥
हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति
ण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो
बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला
नो ऊलकतो ए ॥ १९ । नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र
रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण
जस्यां ए॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निर
धारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते
कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, उल्लापना,
चित्त माने ते कीजीयें ए॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो,
तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठमी
ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठमी, सो दीनारनी दीठमी,
ऊथमी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोरार्थी
गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नहीं, दादे वही, शतबल
नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ढोमीयो,
घरवाखर लूंटी लीयो, जीवत दीयो, निज जाचित

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरपातरे, मलया प्रीतमशु खरें, इणिपुरें, निश्चयशु दीसे मली ए ॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मल्यु, वरपांतें दुःख निर्दल्यु, दूरें टल्यु, सकट सघलु आजथी ए ॥ २८ ॥ राज्य महु को तूहर्खे, सिद्ध नृपें पुजनें मखें, ते तिण वेखें, तातन णी आप्यु वही ए ॥ २९ ॥ सकुदुंबा ये महीपति, व हेता स्नेह रसोन्नति, शुभमति, राज काज करता वहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खंडें मीठडी, एकवीशमी रस पूठ ठी, इठडी, ढाल कही कांतें जखी ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंद्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पुरवरने उपवनें, समवसर्या गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रिहु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ भव अनंत चाले यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहु नृपतिने वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवर्या, आवे नृप सतेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जम ॥ धर्मकथा सुणता थक्े वेग विनयी तेम ॥ ५ ॥

ढाल बावीशमी ॥ वणझारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांई छांमो मोहनी निंद, जागो वि षयघारिणीथकी, जवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, छल जोवे छानो तकी ॥ ज० ॥१॥ चि० ॥ थेंतो सांकमे उंरामांही, सूता काल अनादिना ॥ ज० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट के ई दिना ॥ ज० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए हमां स्वाद न को अछे ॥ ज० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल पटाय, पछतावो होशे पछें ॥ ज० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ छां मो मैथुन जूर, परिग्रह मूर्छा मति जजो ॥ ज० ॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छांमजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ प्रेम जाव संचार, तजजो द्वेष नमा मजो ॥ ज० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहने अज्याख्यान, चा मी रति अरति तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ पर परिवादादा न, न करो माया मृषा रजो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ ज० ॥ ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, गण अढारह नित्य थी ॥ ज० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंद्रिय गाम, मन मां कमलुं वश करो ॥ ज० ॥ चि० ॥ वावो वित्त सुठाम,

शील सुरगो आदरो ॥ ज० ॥ ७ ॥ चि० ॥ परचो योगा
न्यास, अह निशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि० ॥ मुगति
दीये विखास, कारण एता पावना ॥ ज० ॥ ए ॥ चि० ॥ क
त्रिम ए ससार, तन धन योवन कारिमां ॥ ज० ॥ चि० ॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज० ॥ १० ॥
॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्राहि, वाल्हानें आपे
दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि
ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे दुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥
चुरु तणु जिम गाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ ज० ॥
॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे ह
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत दुलन्न, मा
नव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लन्न, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥
याखो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जजाल, धर्म मारग वि
च यावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, क्लेशो पढी जाएयु नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ ॥ टालो
जव सताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंडयशायें इम दीयो ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ ज० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलथकी, कहो उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंडयशा सूरीश्वरू, इम कारण पजणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालनें धायमाय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ डुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ फरतां जारंरू मुखथकी, अति डुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मरतनें त्रांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

शील सुरगो आदरो ॥ ज० ॥ ७ ॥ चि० ॥ परचो योगा
भ्यास, अह निशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि० ॥ मुगति
दीये विलास, कारण एता पावना ॥ ज० ॥ ए ॥ चि० ॥ क
त्रिम ए ससार, तन धन यौवन कारिमां ॥ ज० ॥ चि० ॥
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज० ॥ १० ॥
॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे
दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि
ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे छुःख आ
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥
जुरु तणु जिम गाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ ज० ॥
॥ चि० ॥ सुखदा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे ह
स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत डुलज, मा
नव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सु
लज, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥
धावो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाल गमे जजाल, धर्म मारग वि
च धावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
प, कहेशो पठी जाएयुं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ ॥ टालो
जव सताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंरुनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ ज० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलथकी, ऊर्वे उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पजणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ डुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ परूतां जारंरु मुखथकी, अति डुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मरसनें वांसे परुी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

॥ का० ॥ गाँइ नयपद त्या भएयां, श्रवणें सुएया रे, मीनें मनमां तूठ ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह करया थकी, मीनें चकी रे, दीठो गत भव आप॥ का०॥ मीवा वाली नि रखतां, मन हरखता रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ जोतां मलया ठेखरवी, पुत्री दु खी रे, लागो विचारण मीन ॥ का० ॥ हैदे दु खें अवधरी, एह्मां पकी रे, डुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५॥ मुजथी कां ई न नीपजे, नवि सपजे रे, उपकारकना काम ॥ का० ॥ तोपण मूकुं इहां थकी, रूकुं तकी रे, जिहां होवे वस तीनु ठाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली, दु खथी टली रे, पामे वल्लभ योग॥ का० ॥ इम चिं ति तेणे माठलें, धरी पाठलें रे, मूकी थल संयोग ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ कथर वाली निरखतो, पहनें कितो रे, दु ख धरतो कल राय ॥ का० ॥ नेहें हियरु पूरतो, जल पूरतो रे, पाठो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥ गतभव देखी जागीयो, सोजागीयो रे, माछो पामी विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी कल आयुप तिहां, सुगति इहां रे, रूपजशे लघु कर्म ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, भव थाकश

शे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ २० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, नूपादिक नविलोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नव सांजली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ २१ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, जूर्ज मह्न ठतें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाब्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वान्री धारे हेम ॥ का० ॥ २२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिवि जय शुन्न रीति ॥ का० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठे वली नर राजिर्ज, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालार्ये वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेह थकी यौवन समे, लाधां डुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्र बनाव ॥ मलयाने म हबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, ॥ जिहां पांमु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी गण तुज पुरवरें, एक गृहपति हुतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउं, धनवतो पूर्वें प्रसि
द्ध रे ॥ धनवतो पूर्वें प्रसिद्ध, पूरवजव केवली, इम जां
ख्ने रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम दयिता तेहने हूती, रुडा
वली जड्डा नाम रे ॥ बीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस
प्रीतिनुं गाम रे ॥ ना० ॥ २ ॥ वहेन सगी घुरनी बिन्हें,
माहो माहे धारे नेह रे ॥ किहुं उपर प्रिय मित्रनें,
नवि बेठो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी
सार्थे पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते
बेहु अगना, पोषे मनमां अति रोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥
प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, किहुं कलह करे नित्यमेव
रे ॥ प्राहिं सोकलडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥
दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुतो
मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी सार्थे तेणें, मांनी रतिप्रीति वि
चित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अथ
सानें करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीठो तिहां, तव आ
व्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें
कही, तस चरित्र रहस्यनु तेण रे ॥ पुरबाहिर का
ढयो परो, निद्रली कोप क्षेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बो
ल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥
नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करु कोइ परता

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नाठो दिशि धारी एक रे ॥ डुर्वह अटवी मां पड्यो, जूऱ्यो वली तरस्यो ठेक रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेठ रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक देठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, बेठा तरु ठा या ठाम रे ॥ त्नोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं नाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथे वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुदृढ रे ॥ कोइकने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयत्र रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुएय पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

नी एह साधुनें, सारुं मुज वछित काज रे ॥ सा०॥
॥ १८ ॥ धारी मनशु एहवु, कर जोमी आगल आय
रे ॥ पचणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अठे मुनिराय
रे॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ द्रव्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ वाध्यु अनर्गल ना
यथी, मदनें शुज कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
वियो, सरपार्ले थई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे, जल पीवा वेठो सोय रे ॥ ज० ॥ २२ ॥
पग लपस्यो तिहांथी खशी, पमियो जल ऊंमे जाय रे ॥
मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प्प नामे थापियो, तस तात मरण
सपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आक्रमी, थई
वेठो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खमें ए कही, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रु
ड़ा नड़ा नारिशु, बांधे वेर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रने निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय ने टवा, चाल्यो सपरीवार ॥ २ ॥ पंथें वहेतो अधमगें, आव्यो ज्यां वृक्ष हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज देठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशुभ सुकृत ए मुंम ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अशुभ अबूंम ॥ ४ ॥ ईम कहेती प्रियसुंदरी, जन वाहन थोजाय ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांम कुहाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जसोदानें गोरीमें ढोला, पमीरे नगारारी ठोर ढोला, जाग मजा जे रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने ईहां हांजी, परिसह मोटो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नत्थ उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥१॥ पद अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्यान महोदधि लहेरमां हांजी, कीले मुनि अविकार हांजी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं बाकरी हांजी, कजो ए हठ मांमि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपी मछराली ॥ कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट छांडि हांजी ॥ क० ॥३॥
साहमा ए इटवाड्थी हांजी, जारे छाव हुताश हां
जी, ए पापीनें मांजियें हाजी, जिम होये अशुच वि
नाश हाजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे
हांजी, फीटे वली अहकार हांजी, सुदरी सेवक एह
वां हाजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥
कहे में चरणे पाडुका हाजी, पहेरी छे नहीं आज
हाजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विषम थर्से विण
काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हां
जी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पीउ
टासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हाजी ॥ क० ॥ ७ ॥
कहेताः एहवु रे, कोप्यो मछराळो ॥ कुमतें आप्यो रे,
आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुदरी तणा हाजी
बांध्यो वरूण पाय हांजी, भूमी जिहां लागे नहीं हा
जी, वली कटक नव आय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वा
हनथी प्रियसुदरी हाजी, ऊतरे हेठी तुरत हाजी ।
मुनिवर पासें आइनें हांजी, निठुर इम पभणत हा
जी ॥ क० ॥ ९ ॥ इण अपशुकनें अमतणो हाजी,
कदिमत होजो वियोग हाजी ॥ विरह हजो ताहरे स
दा हाजी, वाहालानो वली सोग हाजी ॥ क० ॥ १० ॥

पाखंमी तुं पापीउ हांजी, राक्षसनो अवतार हांजी ॥ सब जयंकर सत्वनें हांजी, डुर्जग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निठुर इंम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी, करती कोप अपार हांजी ॥ क०॥१२॥ उंघो मुनिना हाथ थी हांजी, कमपी लीधे निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी, टाले कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क० ॥ ॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुउ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी ॥ इंम कहेतां परिवारनें हांजी, सुखें दंपती पंथे वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष वचन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेहा करजोमी बिन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी ॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा ली ॥ सुमतें व्यापी रे, आचरणा वाली० ॥ कर जोमी दंपती प्रतें हांजी, समजावे इंम ठेक हांजी ॥ए०॥ १६ ॥ पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें विण काज हांजी, उपशम धर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो रु षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा रुषिनी जेह हांजी ॥ इहजव परजव

मा सहे हांजी, दारिद्र दुख अछेह हांजी ॥ ए० ॥ ॥ १८ ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमा हांजी, वेष कह्यो वद नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १९ ॥ दासी वचनें तेहवा हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी॥दुर्गति दुख थकी बीह ना हांजी, परम्या थई गमक्रोध हांजी ॥ ए० ॥ २० ॥ पछतावो करता हीये हांजी, झरतो लोचन नीर हां जी, दीन मना थइ आपने हांजी, निंदे वली वली धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशसता हां जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासे जइ हांजी, वदे पग शिर नाम हांजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो था खरु तणी हुई हांजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी, काति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हु, पाछो फरी पामेश ॥ तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रतिज्ञा एहवी, तिमहीज रह्यो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी संयम तणा, स खहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो वि

, करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित
वेष्टना, संचारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवें, थ
तां दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोजी ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो
थांशुं कीधी जेरू महारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो
जाउं नामणें साधुजी ॥ राज रूद्धी जांति हो आदरी,
कोप नाख्यो दूरें फेरी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी कीध
हो अवगना, परीयां मोहें बेहु आप ॥ मा० ॥ जव जप
याही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं चुंरुं पाप ॥ मा० ॥
॥ २ ॥ खमजो महोटी एह विराधना, करुणामें रूडे म
नवालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूठें हो जो जसे, पण गज
न पडे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक उंचो कूके हो
रोशमां, जोरे सोरें मुखमांनें पास ॥ मा० ॥ तोही जो
ही मातो हो केसरी, मांडे नहीं हणवानो क्यास ॥
मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यो जारी हो आतमा, थाशे केहा
अमचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें, दू

टा जेथी पातक जास ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्या हो इम कहे, कोपा जो में एम अकरून ॥ चोखा प्रा णी, वारी हो सयमना हो सीजें खामणा प्राणीजी० ॥ जावे कोई नाहीं हो लोकमा, थाशे साधु धरम शत खंन ॥ जो० ॥ ६ ॥ येंतो लेखो शुद्ध विवेकशु, पाखो रुमो जिननो धर्म ॥ जो० ॥ ठाको दूरें गाडी ए मूकता ढेदो जवना पोषक कर्म ॥ जो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शि क्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ जो० ॥ बार व्रत धार्वे हो उच्चरया, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥ जो० ॥ ८ ॥ जर्के पार्ने मुनिने आमत्रिनें, आव्या गेहें दपती हर्षे ॥ जो० ॥ लीना लीना सार सवेगमा, नाखी मनथी कुमति निकर्षे ॥ जो० ॥ ९ ॥ आवे पुरमा साधु ते गोचरी, जमतो जमतो घर घर बार ॥ जो० ॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, देशाधारी उपशम सार ॥ जो० ॥ १० ॥ निरखी येहु साधुनें हरखिया, मानें आतम नें सुकयछ ॥ जो० ॥ फासु आपे हो असना पाणशुं, दपति मनमां रीझी तछ ॥ जो० ॥ ११ ॥ पाले बारे व्रत त्या हो निरमला, मिथ्यामत अछगो त ठोरू ॥ जो० ॥ चोथे खंडें पांची ढवीशमी, कांतें जां खी ढाल मन कोड ॥ जो० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुडा जडा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ म
हा कलह एक दिन हुर्ज, तेणें निभ्रंछी नाथ ॥ १ ॥
शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ स
हे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥
धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥
कलह टले नहीं को दिनें, दुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥
यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परजव कज्ज ॥ मरण श
रण हवे आदरी, नांखां दुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक
मनी बे बेहेनमी, चिंती एम एकांत ॥ जानें जई कूवे
पमी, करवा दुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नायतानी देशी ॥

॥ रुडा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंदपाल
रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति
बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ जांखे गत जव केवली, निसुणे प
रषद धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो
होय हियरु कांई शान रे लाल ॥ जां० ॥ २ ॥ वीरध
वल इंणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥
जडा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे ला
ल ॥ जां० ॥ ३ ॥ जमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

पुर पृथिवीगण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रि यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ चां० ॥ ४ ॥ देखी वैर सत्तारियु, कोपें कलकलती चित्त रे ॥ लाल ॥ सुता बिहू ऊपर जई, नाखे निशिमा घरत्तिं ति रे लाल ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ शुन परिणामें दपती, तिहा पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ चां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते, हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ चां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नदने, परजवें जे बाध्यु वेर रे लाल ॥ रुडा पाडा नारिशु, तस फल इहा लाधा घेर रे लाल ॥ चां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर सत्तारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा बली, रस मारुे प्रथम आण रे लाल ॥ चा० ॥ ए ॥ पुण्य प्रजावें एहनें, न सकी काई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूनो निशि देखी एहें, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ चा० ॥ १० ॥ वस्त्र विचूषण कुमरना, हरिया इणे क्रोधे व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमा मूकीयां, लाधा ने कुमरनें आप रे लाल ॥ चा० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलननें आदि, रूपायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख-

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संभारी वैर अथाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गतज व वहिननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल ॥ कोऊी जवें पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे लाल ॥ जां० ॥ १४ ॥ चोथे खंमे सुंदरू, थई सत्तावी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी रधवल जूपाल रे लाल ॥ जां० ॥ १५ ॥

दोहा

॥ इणे अवसर विस्मित हीये, वीरधवल जूपाल ॥ पूछे ईम केवली प्रत्यें, थापी करतल जाल ॥ १ ॥ स्वयंवर मंरूप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, जांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें जव वैर थो, विरच्यो कूरु प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आखे सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सरथा ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोको रे ॥ कदल कद वधारवा, विष जलधर जोको रे ॥ १ ॥ धिग धिग चित्त नारी तणु, अनरथ फल आपे रे ॥ कुमति कदामह पोषीनें, रस रीतें उछापे रे ॥ धि० ॥ २ ॥ कहे वली आगें केवली, मदृबल निशि मांहीं रे ॥ व्य नरीयें हणवा जणी, अपहारयो ठांहीं रे ॥ धि० ॥ ॥ ३ ॥ मदृबल मूठी आहणी, नाठो विकराली रे ॥ विषम चरित्ता व्यंतरी, न करे वली आली रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ सेवक सुदर ते मरी, थयो चूत छदमो रे ॥ बाहिर पुहवीठाणने, ते वनमां अचको रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जमतो मदृबल विधिवशें, आव्यो वनतरु हेठ रे ॥ न जूतें तिहां ठेलरव्यो, निरखी गतजव देठ रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ वन कार्खे पग एहना, बाध्यो माथे नीचे रे ॥ जिम धरणी अमके नहीं, कटक नवि खुचे रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ वचन सजारी एहवु, प्रियमित्रनु तेणें रे ॥ क ग्वा पीका कुमरनें, सच मारुयो एणें रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ शवना मुखमा अवतरी, ईम बोल्यो हसतो रे ॥ मूढ इम काइ तुजाने, देखी बाध्यो एकतो रे ॥ धि० ॥ ए ॥

तुं पण ए द्विज वरूतलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे ऊंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १०॥ सहेशे बहु दुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण ते द्विज महबलें, सह्यां दुःख कठोर रे ॥ धि०॥ ११॥ रुद्रायें एकण दिनें, लोचें लही लागो रे ॥ चोरी पिउनी मुद्रिका, गतजवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुद्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां ठाने रे ॥ जोतो पियु मुद्रा प्रलें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुद्रा पासें मुद्रिका, दीठी में ठे जाउ रे ॥ मांगी लीयो इम हलफल्या, आकुल कांइ थाउ रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ वचन सुणी सुंदर तणा, रुद्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर साथें चोरटी, लरूवानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपाकुल बोली इस्युं, जूठ इम कांइ नांखे रे ॥ दुर्मति काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ मुद्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज सरखी जूंर्मी नथी, जाणे ठे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रिय मित्रें करी ताडना, लीधी मुद्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ लघुता कीधी शोक्यमां, रुद्रा अपमानी रे ॥ दीन वदन जांखी थई, रही बापडी ठानी रे ॥ धि० ॥ १९ ॥

दुर्वचनें बांध्यां जिके, रुडा नवें पापो रे ॥ भोगवियां फल तेहना, कनका थई आपो रे॥ धि०॥२०॥ सूति पणे ए सुंदरी, नव वैरिणी जाणी रे ॥ कनकवतीनी नासिका, छीधी मुखें ताणी रे॥ धि० ॥२१॥ हसता बांधे जे जीवको, तेह रोतां न बूटे रे ॥ अनरस भा वें परिणमी, चिरकालें ते छूटे रे॥ धि० ॥ २२ ॥ ढाल कही अरूवीशमी, चोथे खमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता भावी रे॥ धि०॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे सुगुरु नूपति भणी, शेष कथा विरतत ॥ सावधानता आदरी, परषद सकल सुणत ॥ १ ॥ म वन धरतो गतजवें, प्रियसुंदरीशु राग॥ कदर्प्प जव तेहथी हुर्ठ, मलयाशु रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वें मलया महबलें, लही सकलपें मर्म ॥ दीधु दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुखवादिक तणी, सामग्री लही आहिं ॥ आराधि विहके नहीं, सुकृत कमाई क्याहिं ॥ ४ ॥ जवतारक जिनधर्मनें, रीजि जजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फलें, नूमि पड्या जो बीज ॥ ५ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥
॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां
णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी द्वेषी ॥ बंधु वियोग ह
जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्षस जाहरे रे ॥ हु० ॥
॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे नयकारी, प्राण नूतनें दे दुःख
नारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म
ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ इम क
हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥
॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे
दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बेहु जणें महापातक
बांध्युं, नीषण नव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पबता
वो करतां वली पाठें, बहु खेपव्युं समजी आठें रे
॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगस्या जेहवुं, इहां फ
ल लह्युं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो
बधु वियोगो, न मटे पूरवकृत नोगो रे ॥ हु० ॥५॥
कनकार्थी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्ष
सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी
में, रखमी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश
विदेश लह्यां दुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे
॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

ट विविध प्रकारें रे ॥ छु० ॥ ७ ॥ जरूपी मुनि रयह रणु लीधु, मलयायें तिम वली दीधु रे ॥ छु० ॥ तेहथी पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी सयोग वहीनें रे ॥ छु० ॥ ८ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे आराध्यो रे ॥ छु० ॥ तेहिज छु उद्मस्थ टलीनें, हुउं केवली तपलीनें रे ॥ छु० ॥ ए ॥ विछु जणनो बीजो जव एही, महारे जव एकज तेही रे ॥ छु० ॥ वचन सुणी मनसा कमलाणो, वली बोल्यो इम महीराणो रे ॥ छु० ॥ १० ॥ जगवन् कनकवती तेम असुरी, तव वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ छु० ॥ करशे एहुनें वली काई मावु, किंवा वैर पुरातन चावु रे ॥ छु० ॥ ११ ॥ सूरि जणे असुरी कर तामी, गई वैर विरोध विठामी रे ॥ छु० ॥ कनकवती जमती इहा आवी, विपमो एक दाव उपावी रे ॥ छु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे कापें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ छु० ॥ कनका असुरी छुरित छुरता, जमशे जव काल अनता रे ॥ छु० ॥ ॥ १३ ॥ मलया महचलनो जव जाख्यो, एहमा अब शप न राख्यो रे ॥ छु० ॥ उंगणत्रीशमी चोथे संर्क्क्, कातें कही ढाल उमगें रे ॥ छु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशाल ॥ नव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल ॥ १ ॥ दंपति सहगुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्त ॥ अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि सेवा करशुं सदा, आणी नक्ति विशेष ॥ ग्रहे अनिग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्द्वेष ॥ ३ ॥ केता संयम आदरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ नद्रक नावी केई हुआ, रागादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांनलीनें बिहुं नूप ॥ नवनिरुक थई ऊमह्या, संयम ग्रहण अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढालत्रीशमी॥ जिनवचनें वैरागीयोहो धन्ना॥ एदेशी॥

॥ जिनवचनें वैरागीउ हो राया, इंम कहे बे कर जोरु ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम पासें मन कोरु रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे ॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण मन हुंस॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी ऊव्या बिन्हे हो राया, आव्या निजनिज गेह रे॥ हो० ॥ ३ ॥ पो

रवीगण तणो कीयो हो राया, सूरे मलयबल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अजिषेका य रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मल यकेतु अजिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांद्विज देई सनमान रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ पद चिंता आ प आपणी हो राया, कीधी जनपद हेत ॥ संयम ले वा सचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे ॥ हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम ल्ये श्री कार ॥ रूमे शिक्षिका भई हो साधु, चरण करण गु णधार रे । हो मोरा साधु, सयम पाले वे ॥ ७ ॥ सयम दूषण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिर्ने सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे ॥ हो० ॥ ८ ॥ गुरु पासें हुआ अन्यसी हो साधु, द्वा दश अंगी जाण ॥ उठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुज जाण रे ॥ हो० ॥ ए ॥ महासती पासें व्रती हो साधु, नृपराणी देइ दीख ॥ सामायिक आदें भई हो साधु शिवपद साधन शीख रे ॥ हो० ॥ १० ॥ दिन केताइ तिहां रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, विहु मुनि सेवे पाय रे ॥ हो० ॥ ११ ॥ शोषी सन तप आकरे हो साधु,

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु, संलेषण संत्तालि रे ॥ हो० ॥ १२ ॥ महाविदेहें सिफ़शे हो साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे ॥ हो० ॥ १३ ॥ चोथे खंमें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अजिराम ॥ कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिनें होजो प्रणाम रे ॥ हो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जगिनी पति जगिनी प्रत्यें, आपुठी अति प्रीति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वरु रीति ॥ १ ॥ सागर तिलकपुरें ठवी, सेनानी निरंग ॥ महबल आवे निजपुरें, शतवल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले राज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अनेक ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहा, करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहयें रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे नक्ति मुनिवर तणी रेहां, बांमी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥ बी

जो सुत मद्दवल्ल तणो रेहां, कुहं सहसवल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्षण गुण सायरू रेहां, वल वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेहां, मद् मल्ल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेहां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ त्रिभिपदनी वक्तव्यता रेहां, चांखी अदृष्ट सरुप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेहां, कथक अदृष्ट अनूप ॥ सा० ॥ ५ ॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेहां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्पणो रेहा, बीजो हेतु अवा च्य ॥ सा० ॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेहां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ जावि प्रमुख अनेक ठे रेहां, ते हना वाचक प्राय ॥ सा० ॥ ७ ॥ परिपाको रस ते दीये रेहां, चिंतित होये अकयल ॥ सा० ॥ शुच अशुजा दिक जावथी रेहां, ये परिणत फल सल ॥ सा० ॥ ८ ॥ अवश्यपणाथी तेहनी रेहां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेहां, हुइ निज मश तेह तत ॥ सा० ॥ ९ ॥ विषय कषाय वशें पड्या रेहां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुज विचावनी रेहा चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो ठ वेसे ध्यापथी रेहां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खी
र ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उलख्यो रेहां, नि
र्मल सहज स्वजाव ॥ सा० ॥ जूली जमी जवमां घणुं
रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव
नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥
जीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इम श्लोकार्थ ॥
सा० ॥ १३ ॥ महबल पण तव ऊजग्यो रेहां, जवथी
विषय विमुक्त ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रे
हां, हुइ विहुंने अजिमुक्त ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या
शीखे शैशवें रेहां, यौवन साधे जोग ॥ सा० ॥ वृद्ध
पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥
॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, जांख्युं नृप कर्त्त
व्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इश्युं रेहां, सजग
हुउ मन जव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें हवे
रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥ सा० ॥ सागरतिलकें थापीउ
रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया
साथें उछवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच
महाव्रत उच्चर्यां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥
॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंमे अहो

प ॥ सा० ॥ कांति कहे सुणतां हुवे रेहा, अध्यातम रस पोष ॥ सा० ॥ २ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्विविह शिक्षा पालता, विष्णु जण तप जप ली न ॥ कहे विहार महीतलें, थया सुगुरु आधीन ॥ १ ॥ गुरु आदेशें विहुं जणा, जइ नदननें पास ॥ चारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, थे बांधव नृप पूत ॥ मांहो माहि सुशीखथी, थया नेह संजुत्त ॥ ३ ॥ विष्णुनी श्रीजिन धर्मथी, नेदी साते धात ॥ बीजानें पण शीखवे, मा रग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजऋषि महबल हवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुउ शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण जणी, मागी गुरु आ देश ॥ रुक्खी महबल महामुनि, विचरे देशविदेश ॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरो रे, सुरगिरि थिर परें चि त्त रे राजे ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चन्द्रमा रे ला जे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वा युनें रे तोलें ॥ फूजे रे परिसहथी जेहयो केसरी अ मोलें ॥ २ ॥ आलंबन ईहे नहीं रे, गगनपरें निरपे

क्ष रे आपें ॥ दीपे रे रवि झींपे ताजा तेजने प्रतापें ॥ ३ ॥ व्रतनो चार उपाड्वा रे, समरथ शक्तें जेह वो रे धोरी ॥ चाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा बल फो री ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदैव रे रूमो ॥ दरियो रे गांजीर्यें जेहनें आगलें न ऊंमो ॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेहवो शंख रे गाजे ॥ आवे रे उपसर्गें सूरिम आदरी रे गाजे ॥ ६ ॥ विहरंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दि सनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे ॥ ७ ॥ शतबल सुत ऋषि रायनो रे, राज करे तिहां राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे पूरो ॥ ८ ॥ ते ऋषि निरखी उलखी रे, हर्ष नस्यो वनपाल रे दोमी ॥ आव्यो रे नृपतिने प्रणमी बीन वे कर जोमी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी सं यम योगमां रे नाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी इश्युं रे, हरषवशें रोमांचशुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपा लकनें मणिनूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिं ते इश्युं रे, आज हुउ बे असूर रे माटे ॥ काले रे वां दीशुं युक्तें ऋद्धिनें रे थाटें ॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे सारू ॥ दीधो रे जे पु
एयें जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पा
डुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वदे ॥ त्यांहि रे अति पर्के
रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग चेटिनो
रे, लोची ते निशि डुःखथी रे काढे ॥ प्रगट्यो रे हवे
प्रगट्यो दिनकर दीपियो प्रगाढे ॥ १५ ॥ ढाल कुई
चत्रीशमी रे, चोथे खंडे एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुज
शातें चाखी रगमा रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जमपद पुर चटकत ॥
दैवयोगथी डुःखणी, तिण पुर आवी रहत ॥ १ ॥
तेहिज दिन सन्ध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि
पड्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ नि
रखी रूपें ठंलखी, हुई महा जय जीती ॥ तेहिज ए
सुत शूरनो, महबल मुनि अपनीत ॥ ३ ॥ मूलथ
की ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां
कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह जणी विरघु
इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं,
मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करु उपेक्षा किम हवे, अ
नरथ घापु पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

इण पुर न वसाय ॥ ६ ॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं, धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर परखती, जई बेठी घर आप ॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ एदेशी ॥

सांज विहाणी पछी रातडीजी, व्यापिउं घोर अंधार ॥ तम तम्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलसमेजी, तमगुणें आप जल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल कारागरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निज निज घर विश्रमेजी, वली मल्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखंती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें झलकंते देह ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिसाथ ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, जावि मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन नाग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

हूरे रे, पावन ए पुर लोक रे थारू ॥ दीधो रे जे पुण्यें जनकें आज्ने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पाडुका रे, मूकीनें नरनाथ रे पदे ॥ त्यांहि रे अति चर्के रातो पापनें निकदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग जेटिनो रे, छोडी ते निशि डुःखथी रे कार्डे ॥ प्रगल्भो रे हवे प्रगट्यो दिनयर दीपियो प्रगार्डे ॥ १५ ॥ ढाल हुई बत्रीशमी रे, चोथे खंरुं एह रे चोखी ॥ कांतिं रे शुन शार्ते जाखी रगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, अमपद पुर नटकत ॥ दैवयोगथी डुःखणी, तिण पुर आवी रहत ॥ १ ॥ तेहिज दिन सध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि पख्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ निरखी रूखें ढलखी, हुई महा जय जीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथकी ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहरे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह जणी बिरचु इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करुं उपेक्षा किम हवे, अनरथ चांपुं पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

॥ढालचोत्रीशमी॥रागबंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीउ क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप
कौं तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप सं
न्नार ॥ मेरे आतमा ॥ हांरे रागादिककी संग निवार
॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर
न उपाव, मत नूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ।
काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न
वजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो
फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके अ
हे नाव जिहाज, तर ले नवसागर बिनु पाज ॥ ज्ञा० ॥
नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रे
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वन्नावें करिकें करार, जैसें प
वें नवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ डुःख पाय तैं नरक निगोद
करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ता डुःख आ
गें या डुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन
॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर श
न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि
र तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन ल
गि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

काष्ट अगारनें कारपोजी, किपाईकें यापिया आप॥ गतढिनें सीममा सहजथीजी, सामटा ते मस्याटा ण ॥ सा० ॥ ७ ॥ तेह काळें करी पापिथीजी, आवरे साधुनें तेम॥ चिहु दिसें निरखता साधुनुजी, अग दीसे नहीं जेम ॥ सा० ॥ ए ॥ भिंटता साधुने कामधुजी, आणी हृत्या मह्ा व्याप ॥ चउगइ डुस्क ससारनेंजी, विंटीयो तपीयें आप ॥ सा० ॥ १० ॥ पूर्वजन्म वैरथी नेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगाडीयो चिहु दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सा० ॥ ११ ॥ मुनियें काउसग्ग ध्यानमाजी, देखी उपसर्ग मरणा त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योगरस शात ॥ सा० ॥ १२ ॥ खम्म चोथे खरी खातशुजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कातिविजय कहे हवे इहाजी, माधशे साधु जयमाल ॥ सा० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उदीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि वरनें तन पाम्वनें, खातो धूम थिघेर ॥ १ ॥ कोमल तनु कु सिरापनुं वाले न हिं तपता॥ मूलपकी फनका तणा, जा ण सुह न दहन॥२ ॥विकटोपद्रव पीमता, सहेतां श्री मुपिनोध। नाणे निज आतम प्रत्यें, देश डम न तिबोध॥

॥ढालचोत्रीशमी॥रागबंगाल॥राजा नहीं नमे ॥एदेशी

॥ रे जीउ क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप कौं तार॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप संजार ॥ मेरे आतमा॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तरन उपाव, मत जूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका जटक्या अनंत, अजुअ न पाया जवजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आवे जाव जिहाज, तर ले जवसागर बिनु पाज॥ ज्ञा०॥ जावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वजावें करिकें करार, जैसें पावें जवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ डुःख पाय तैं नरक निगोद, करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा०॥ ४॥ ता डुःख आगें या डुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इन उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काटन आयु, आइ जई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहिर तनकुं जारेंगी आगि, अन्यंतर तन नहीं इन लागि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सों होय, जीउ सकलसों वैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ आप खमाउ दोपरतीउ, मोसों खमहो सिगरे जीउ ॥ ज्ञा० ॥ असे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीके चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकों प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अतर वाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसों चव उपमाही कर्म्म, जस्म करें तिनुमें तजी चर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अतगम केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद जयो हे अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, जवकों जलां जलि दे निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खर्मे राग बंगाल, चोतीसमी पूरी जइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कातिविजय कहे देखहु खेल, समतासों जयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुर्ड जिव्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, वीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विष सींची ॥ मारे अबलें अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ मति जेहनी पग हेठले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतां तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ जांख्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भृष्ट हुई शुज क र्मथी, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अ ष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल जक्ति विलु ध्धो रे ॥ जनक वदन जोवा जणी, उत्कंठित मन सू धो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आमंबरें, काननमा जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह जस्म मय थयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति दुःखमांहें नमियो रे ॥ जक्कें प्रीतें रे जोल व्यो, धसके धरा तल पमियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें जाख्यो रे राजवी, मूर्छाणो मन जणो रे ॥ सजग हुउ उ पचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प रिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अजिषेको रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ जूपति पजणे रे पापीये, किणे ए क

धु अकाजो रे ॥ निर्जय नि कारण वेरीयें, उपसर्ग्यो मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ तवत्रमणाथी रे कुमति, वीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियकु रे तेहनु, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रा रे तातजी, पामीनें पण कुहिला रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हु पहिला रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहारे अंगें रे ॥ वचन तुमरा रे नवि सुण्या, बेशी क्षण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी गांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख थुउं मुज जेतो रे ॥ इण वेला मुज पापथी, थयो दु खरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हु अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जाता मुन्हें, लीधो काइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकु रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लघु ठी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पुरयो रे जनकनें, विलपे ईम भूपालो रे ॥ कातें चोथा रे खमनी, कही पणती सभी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल नृपाल ॥ निजचर टनें इम आदिसे, करि भृकुटीनो चाल ॥ १ ॥ पग अनुसारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय जाणे तव्यो, बीजो दुष्ट परिणाम ॥ दुःअथर्व रस सींचतां, कर्युं कटक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, बाध्यो चिहुं पख चार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहलुं, अभिमुख हूउं समक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, कठ्या चर मछराल, आज हो छुठा रे जण रूठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां इत उत भूम, मांहे सबली धूम, आज हो धोरे रे अनुसारे पगनें तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय बीठी पेठी ताहमांजी ॥ ३ ॥ नीचे सुख नयनीत, श्याम वसन अविनीत, आज हो बेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी ॥ ४ ॥ सुहर्के साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नृपें ताकी

जोर, पामती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शु छे कारण वेरनुजी ॥ ६ ॥ इणिठर्ले महाचाम, मुनिवरनें इणे जाग, आज हो साखें रे तुज पाखें न करे को इ स्युजी ॥ ७ ॥ इणी घणी नूपाल, सींची तरुनी गल, आज हो चाखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥ ८॥ रुव्यो नूप तिवार, नानाविध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥ ९॥ आप चरितने यो ग, पामी फलनो नोग, आज हो ठठी रे डु ख पूठी न रकें कपनीजी ॥ १० ॥ नरक तणा ससाप, सहेशे अ ति डुःख आप, आज हो वकें रे नवचकें नमशे मापनी जी ॥ ११ ॥ चोथे सर्गे रसाल, ठम्रीशमी एह ढाल ॥ आज हो काते रे नखि नातें नाखी शाखथीजी ॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ नूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण कणा नवि ठामत ॥ १॥ जाणी तेहवु तातनु, डुस्सह मरण विराम ॥ पमियो शोकसमुड्मां, नूप सहसवल ताम ॥ २ ॥ शतवल दशशतवल बिन्हें, जनक शोक चित्त धारि॥ ससमक राम तणी परें, तप अरतिनें वार ॥ ३ ॥ कुष्णादेव पखिचडनें, द्वारावतीने दाह ॥ शोक हुतं पितृनो जि

स्यो, तिस्यो दुर्ज इहां प्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजामी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सात्रमीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्मे नवि पडि वोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुज अवधिनाण ॥ नावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज ॥ म० ॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ म० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज ॥ म० ॥ ४ ॥ साधुयोग वसतीनें ठामें, पशु पंरुग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अनिरामें, विंटी रही आइ सुकामें हो राज ॥ म० ५ ॥ शतबल नूपति अति नक्तें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी युगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज ॥ म० ॥ ६ ॥ राजेंड पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज ॥ म० ॥ ७ ॥ उपसर्गो कनकवतीये, न कलु मन कलुप प्रतीयें ॥ जवसागर तरता तीयें, अवलंबन दीधु श्रीयें हो राज ॥म० ॥ ८ ॥ धन पुत्र कलत्र एह जार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप शोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज ॥ म० ॥ ए ॥ सेवे जे गिरि वन घाटा, सहियें कटुक वचनना काटा ॥ उपसर्ग उरगनी आटा, खमीयें थई धीरजना साटा हो राज ॥म० ॥ १० ॥ डुर्लज ते पद तातें साधु, नीगमीयु प्रवजय बाधु ॥ हवे कां मन शोकें दाधु, करे कांई वपुप ए आधुं हो राज ॥ म० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुर्ज मुनिराय, तियें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, काई शोक करे इणे ठाय हो राज ॥म० ॥ १२ ॥ पोताने वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई, कहे हियमे विचारी जोई हो राज॥म०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानल पीमा तातें, सांसही होशे एह वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथी खिति सहे गातें हो राज ॥ म० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलु तिहां डुःख सहे बाधे ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख साधे हो राज ॥ म० ॥ १५ ॥ पहेलु डुःख सघले दीसे, पार्छे सुख सजन हीसे ॥ इ

मैं जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज ॥ म० ॥ १६ ॥ जेव्या नहीं चरण पिताना, मत कर ईम जरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज जक्तिना गुण नहीं छाना हो राज ॥ म०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे जूप, संसारनो जावि सरूप ॥ हढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए जवकूप हो राज ॥ म० ॥ १८ ॥ छुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुकार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज ॥म० ॥ १९ ॥ तुज सरिखा जो ईम करशे, शोकाकुल हियरुं जरशे ॥ बापमलो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज ॥म० ॥ २० ॥ ईम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबुज्यो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज ॥ म० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य जूपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥सारुत्री शमी ए कही ढाल, चोथेखंम कांति रसालहोराज ॥ म०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शतबल मुनि निर्वृतिथलें, मांम्यो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्तम रंग वधामणा, नर्त्तवे निशिदीश ॥ छे आदे
सवमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल
नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूठी
महचरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुहवीगण म
द्दापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया
महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आन्त्रीशमी ॥ जाजरीया मुनिवर
धन्य धन्य तुम अवतार॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीपति साधवी मुखेजी, निसुणी रे श्रीश्रुत
धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममाजी, थिर थयो प्रीछीनें
मर्म ॥ १ ॥ गुणवतो रे महीपति, जावी सहसबल
नाम ॥ ए आंकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल
नामें नरिंद ॥ महचरा वदन नणीजी, थयो उतकठ
अमद ॥ गु ॥ २ ॥ लघु बांधवना प्रेमथीजी, आकरष्यो
उमगत ॥ आवे तिहा परिवारशु जी, पे बा
धव स्यां मिलत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बांधव तिन
प्रत्यें जइजी, बांदी महचरा पाय ॥ सुणे धरमनी
देशनाजी, मन थिरचावें वहुराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ स
मकितधारी ब्रतधरजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें
पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५ ॥ प

शशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे नक्ति ॥ दान शाला मांके घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥ गु० ॥ ६ ॥ मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतराग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥ गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥ जिनजवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ अठाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचंत ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत ॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मचारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां बेह ॥ गु० ॥ १० ॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्में तिहांजी, ढांक्यो लौकिक नर्म ॥ गु० ॥ ११ ॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी, पुरजनने समजाई ॥ आपूठी बिहुं पुत्रनेंजी, अने थि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें पालीयुंजी, चारित निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करीजी, लघु कस्या डुरितना नार ॥ गु० ॥ १३ ॥ अंतें अणसण आदरेजी, श्रीमती मलया नाम ॥ आराधीनें ऊपनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महाविदेहें

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुजनठाय ॥ गु० ॥ १५ ॥ वो धिजाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु सयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पमिवजीजी, लेहेशे सुगति सुखहेवि ॥गु०॥१६॥ ढाल कही अमत्रीशमीजी, चोथा खरूनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी, पामी जवतणो छेह ॥ गु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनयकी, पामी मलया पार ॥ ते माटे ससारमा, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानाच्यास ॥ डुहिलम स कट ऊरुरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ सकटमा पण पालीयु, जिम मलयायें शिल ॥ तिम वली वीजो पाल शे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महाबलें जिम सासह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो, ले हेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदर्यो, दंप तीयें दृढ चित्त ॥ आदरवा तिम जावथी, वीजे पण सुप वित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें बुर जेम ॥ डुस्क हेतु जाणी तिसी, करशो मा कोई तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामाजीको नदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ जावे जावे रे जवि करजो ज्ञान अच्न्यास ॥ ज्ञानें

संकट कोम्हि पलाये, ज्ञानें कुमति न वाधे ॥ ज्ञानें सु जश लहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां, सुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षमनुं हेतु, पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा नि र्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥ मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इंम संबं ध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीत पगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन्न सूरि ॥ गुण वंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न० ॥ ८ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मक्कन, प्रेमविजय बु ध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

भाव वनाया रे ॥ ज० ॥ ए ॥ संवत सर मुनि मुनि वि धु (१७७५) वर्षे, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयद मा सूरीश्वर राज्ये, गाई मलया उल्लास रे ॥ ज० ॥ १० ॥ अखा त्रीज तणे शुभ दिवसें, रास हुओ सुप्रमाण ॥ चालकनी मानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूना धिक कांई जाख्यु ॥ सघ सकलनी साखें तेहनुं, मि छामिदुक्कम दाख्यु रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण परिचय करता, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लाज अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ पाटण नगरनो सघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥ चिहु खर्मे थई सर्व मलयायें, ढाल एकाणु कीधी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ जे भवि जावें भणशे गुणशे, सेहेशे ते जयमाल ॥ उंगुणचालीशमी कही कानें, चोथा खरु नी ढाल रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४०० ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुं दरीचरित्रेप्रतिकानिविजयगणिविरचितेप्राकृतप्रबंधे शीलावदातपूर्वभववर्णनोनामाचतुर्थखरुःपरिसमाप्तः ॥